फ़ाइल संख्या 2009
वर्गीकृत
आशीष सिंह नायल द्वारा

फाइल संख्या 2009

एक उपन्यास

आशीष सिंह नायल

© 2026 आशीष सिंह नायल
सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक विधियाँ शामिल हैं, पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय समीक्षाओं में शामिल संक्षिप्त उद्धरणों और कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य गैर-व्यावसायिक उपयोगों के मामलों में।
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की

कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या वास्तविक घटना से कोई भी समानता केवल संयोगवश है।
प्रथम संस्करण

उन लोगों को समर्पित जो मानते हैं कि साधारण दिनों में असाधारण सत्य छिपे हो सकते हैं।

“सबसे डरावनी चीजें अंधेरे में नहीं छिपी होती हैं।”
वे सामान्यता की आड़ में छिपे हुए हैं।

अध्याय 1 – वह सुबह जो कुछ ज्यादा ही साधारण सी लगी

गंगटोक में सुबह कभी शोरगुल के साथ नहीं आती। यह धीरे-धीरे शुरू होती है। पहाड़ियों पर धुंध की एक पतली चादर छाई हुई थी, मानो कोई पहाड़ों से सफेद पर्दा हटाना भूल गया हो। हवा में हिमालय की हल्की ठंडक थी—चुभने वाली नहीं, बस इतनी कि आपको अपनी आस्तीनें हथेलियों तक नीचे खींचनी पड़ें।
सिक्किम विश्वविद्यालय में दिन की शुरुआत धीमी रही। छात्र ढलान वाले फुटपाथों पर आ रहे थे, कंधे पर बैग टांगे आलस से चल रहे थे। कुछ छात्रों ने गेट के पास बनी छोटी कैंटीन से चाय के प्याले लिए थे। कुछ पहले से ही जोर-जोर से हंस रहे थे, मानो दिन ने उन्हें समय बर्बाद करने की छूट दे दी हो। यह परिसर किसी सख्त पढ़ाई की जगह जैसा नहीं लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे यह एक ऐसी जगह है जहाँ कहानियाँ चुपचाप जन्म लेती हैं।
एक तरफ पुस्तकालय की इमारत खड़ी थी—शांत और गंभीर, मानो कोई बूढ़ा प्रोफेसर सब पर नज़र रख रहा हो। दूसरी तरफ लंबे गलियारे थे, जो कक्षाओं से जुड़े थे, जहाँ कॉलेज जीवन का असली नाटक चलता था—दोस्ती, प्रतिद्वंद्विता, प्रेम-प्रसंग, गपशप और वो अनकही प्रतिस्पर्धाएँ जिन्हें कोई स्वीकार नहीं करता था। नोटिस बोर्ड आधे फटे पोस्टरों से भरे थे: कोडिंग क्लब में भर्ती, बास्केटबॉल ट्रायल, खोया हुआ कैलकुलेटर, फ्रेशर्स पार्टी की तस्वीरें।
यहां जीवन छोटे-छोटे, साधारण पलों में बीतता था। सीढ़ियों के पास लड़कों का एक समूह क्रिकेट को लेकर बहस कर रहा था। दो लड़कियां धीरे-धीरे चल रही थीं, एक ही ईयरफोन लगाए, मानो दुनिया को अनदेखा कर रही हों। कोई भाग रहा था, हाजिरी लगाने में देर हो रही थी। कोई और धीरे-धीरे चल रहा था क्योंकि उसे किसी बात की

परवाह ही नहीं थी।
और इंजीनियरिंग ब्लॉक की तीसरी मंजिल पर स्थित उन्हीं कक्षाओं में से एक के अंदर... तीन जिंदगियां एक ऐसे तरीके से टकराने वाली थीं जिसकी उन्होंने खुद कभी कल्पना भी नहीं की थी।
उस कक्षा की बड़ी खिड़कियाँ पहाड़ियों की ओर खुलती थीं। सूरज की रोशनी तिरछी रेखाओं में लकड़ी की मेजों पर पड़ती थी, जिन पर पूर्व छात्रों के नाम खुदे हुए थे।
“Rahul ❤ Divya”
“सीएस 2025 लीजेंड्स”
मैं यहाँ था
छत के पंखे धीमी गति से घूम रहे थे, जिससे हवा से ज़्यादा शोर हो रहा था। कुर्सियाँ सीधी कतार में नहीं लगी थीं। थैले इधर-उधर बिखरे पड़े थे। व्हाइटबोर्ड पर कल की क्लास के आधे-अधूरे मिटाए हुए फॉर्मूले अभी भी दिखाई दे रहे थे।
यह कोई अनुशासित कक्षा नहीं थी। यह एक जीवंत कक्षा थी।
कुछ छात्र जल्दी आ गए थे और बातें कर रहे थे। कुछ अपने फोन पर लगे हुए थे। कुछ प्रोफेसर के आने की आशंका में पढ़ने का नाटक कर रहे थे।
और आखिरी बेंच के पास, असामान्य रूप से शांत बैठा था आलोक।
आलोक हमेशा एक ही सीट चुनता था। इसलिए नहीं कि उसे पीछे बैठना पसंद था, बल्कि इसलिए कि वह एकमात्र ऐसी जगह थी जहाँ वह बिना ज्यादा ध्यान खींचे बैठ सकता था। वह दुबला-पतला था। थोड़ा झुका हुआ। उसके कंधे स्वाभाविक रूप से अंदर की ओर झुके हुए थे, मानो उसने भीड़ में खुद को छोटा दिखाने के लिए सालों तक कोशिश की हो। उसकी कमीज़ हमेशा साफ रहती थी, लेकिन कभी ठीक से इस्त्री नहीं की जाती थी; कॉलर के किनारे थोड़े मुड़े हुए रहते थे। उसके जूते साफ थे, लेकिन इतने पुराने थे कि सिलाई में हल्की दरारें दिखाई देती थीं।

उसके बाल बड़े सलीके से कंघी किए हुए थे, और उनमें ज़रूरत से ज़्यादा तेल लगा हुआ था—मानो बाहरी अनुशासन उसे आसपास की अराजकता से बचा सकता हो। उसके बगल में रखा छोटा, पुराना सा थैला हमेशा पूरी तरह बंद रहता था। मानो उसे डर हो कि अगर उसका सामान बाहर निकल गया तो लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकता है।

घबराहट होने पर वह अपनी हथेलियों को आपस में रगड़ता था। कभी-कभी उसकी उंगलियां इतनी कसकर दब जाती थीं कि उनके जोड़ सफेद पड़ जाते थे। उसकी नज़रें शायद ही कभी किसी से मिलती थीं। या तो वे डेस्क पर टिकी रहती थीं... या फिर ज़रा सी भी आवाज़ पर दरवाज़े की ओर उठ जाती थीं।

वह बहुत धीमी आवाज़ में बोलते थे। इतनी धीमी आवाज़ में कि लोग उनसे अपनी बात दोहराने के लिए कहते थे— और दूसरी बार कहने के बाद, वह अक्सर चुप रहना ही बेहतर समझते थे।

उसे सबसे ज़्यादा तकलीफ़ धमकियों से नहीं होती थी। बल्कि उसके बाद गूंजने वाली हंसी से होती थी। उसने अलग-अलग तरह की हंसी में फर्क करना सीख लिया था— दोस्ताना हंसी, बेपरवाह हंसी और वो हंसी जो सीधे उस पर की जाती थी। और उसने उस आखिरी तरह की हंसी को नज़रअंदाज़ करना भी सीख लिया था।

इन सब के बावजूद, आलोक में एक अजीब तरह की ईमानदारी भरी हुई थी, जो अब पुरानी लगती थी। उसकी नोटबुक हमेशा पूरी रहती थी। असाइनमेंट हमेशा समय पर जमा होते थे। उसने कभी परीक्षा में नकल नहीं की। मुसीबत से बचने के लिए उसने कभी झूठ नहीं बोला। उसे लगता था कि अगर वह ईमानदार, हानिरहित और गुमनाम बना रहे... तो शायद ज़िंदगी उसे अकेला छोड़ देगी।

लेकिन जिंदगी ने उससे कभी ऐसा वादा नहीं किया था।

कुछ आगे, खिड़की के पास जहाँ सूरज की सुनहरी किरणें पड़ रही थीं, वहाँ रुद्र अक्सर बैठा करता था। वह अभी तक नहीं आया था—पर उसकी अनुपस्थिति में भी उसकी मौजूदगी साफ़ महसूस हो रही थी। उसका बैग मेज़ पर लापरवाही से पड़ा था, मानो किसी ने उस सीट पर अपना दावा ठोक दिया हो। पास ही एक स्टील की पानी की बोतल रखी थी। एक खुरदरी नोटबुक खुली पड़ी थी, जिसमें न सिर्फ़ नोट्स थे, बल्कि अजीबोगरीब रेखाचित्र, अधूरे विचार, जिम का समय और प्रोफ़ेसरों के बारे में मज़ेदार टिप्पणियाँ भी थीं।

रुद्र उन छात्रों में से एक था जो चुपचाप कमरे में प्रवेश नहीं करता था। वह शोर, हंसी और ऐसी ऊर्जा के साथ आता था जो गपशप से भी तेज़ी से फैलती थी। लंबा, चौड़े कंधों वाला, स्वाभाविक रूप से फुर्तीला - वह ऐसे चलता था मानो उसे दुनिया से कभी डर न लगा हो। उसके बाल हमेशा थोड़े बिखरे रहते थे, मानो उन्हें संवारने का समय ही न मिला हो। आस्तीनें ऊपर चढ़ी हुई। कलाई पर एक काला धागा। एक

आत्मविश्वास भरी मुस्कान जो सहजता से आती थी और तभी गायब होती थी जब मामला वाकई गंभीर हो जाता था।
वह सबसे बात करता था—वरिष्ठों से, कनिष्ठों से, शिक्षकों से, प्रयोगशाला सहायकों से, कैंटीन कर्मचारियों से। ध्यान आकर्षित करने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि उसे चुप्पी से ऊब होती थी।
लेकिन रुद्र की असली पहचान उसकी ताकत या हास्यबोध नहीं थी। बल्कि उसकी आदत थी - उन मामलों में भी कूद पड़ना जिनका उससे कोई लेना-देना नहीं था... सिर्फ इसलिए कि वह कुछ भी गलत होते हुए नहीं देख सकता था। इसी वजह से वह पहले भी मुसीबत में पड़ चुका था।
और उसने इससे कभी कुछ नहीं सीखा।
रुद्र की कुर्सी के ठीक पीछे, दीवार की ओर थोड़ा झुककर, मयंक अक्सर बैठता था। रुद्र की मेज के विपरीत, मयंक की मेज हमेशा व्यवस्थित रहती थी। बैग सही जगह पर रखा होता था। नोटबुक मेज के किनारे से बिल्कुल सटी होती थी। कलम नोटबुक के समानांतर बिल्कुल सीधी रखी होती थी—जैसे नाप-तोल कर रखी हो।
मयंक ज़रूरत पड़ने पर ही बोलता था। और जब बोलता भी था, तो लोग ध्यान से सुनते थे— इसलिए नहीं कि वह ज़ोर से बोलता था, बल्कि इसलिए कि वह शब्दों को व्यर्थ नहीं करता था। वह भाग लेने से ज़्यादा अवलोकन करता था। उसकी आँखें शांत, विचारशील थीं, हमेशा चुपचाप कमरे का जायज़ा लेती रहती थीं। बैठे रहने पर वह अपने हाथों को आपस में जोड़ लेता था, और गहन चिंतन में डूबे रहने पर उसके अंगूठे हल्के से हिलते थे।
वह रुद्र की तरह शारीरिक रूप से बलिष्ठ नहीं थे, लेकिन उनके हावभाव में एक शांत दृढ़ता झलकती थी। ऐसा लगता था मानो उन्होंने कुछ सीमाएँ तय कर रखी हों जिन्हें कोई भी लापरवाही से पार न करे। उन्हें अनावश्यक नाटक पसंद नहीं था। उन्हें अनावश्यक लोग भी पसंद नहीं थे। लेकिन वे ईमानदारी को बहुत महत्व देते थे।
अगर रुद्र अग्नि था, तो मयंक शांत जल था। और किसी तरह, दोनों एक-दूसरे को पूरी तरह से संतुलित करते थे। कक्षा में ज़्यादातर लोग उन्हें महज़ अच्छे दोस्त मानते थे। लेकिन जो ध्यान से सुनते थे, वे जानते थे कि अगर रुद्र कभी किसी विवाद में पड़ता, तो मयंक हमेशा उसके पास ही होता था।
तीन छात्र। तीन व्यक्तित्व। एक कमरा। एक दिनचर्या। एक साधारण कॉलेज जीवन।

इस समय, उनमें कुछ भी खास नहीं लग रहा था। वे बस व्याख्यानों, उपस्थिति पत्रों, असाइनमेंट, प्रयोगशाला रिकॉर्ड और रोजमर्रा की बातचीत के उसी चक्र का हिस्सा थे जो प्रतिदिन इन गलियारों से होकर गुजरता था।
खिड़कियों के बाहर, बादलों के नीचे, पहाड़ खामोशी से खड़े थे। अंदर, छत के पंखे खरोंच लगी मेजों और आधे-अधूरे मिटाए गए फॉर्मूलों पर अपनी धीमी आवाज़ कर रहे थे।
यह एक साधारण कक्षा थी। एक साधारण सुबह। एक साधारण दिन।
इतना साधारण... कि उस कमरे में मौजूद किसी को भी इस बात का एहसास नहीं था कि वे घटनाओं की एक ऐसी श्रृंखला के कितने करीब खड़े हैं जो उनकी इस पूरी दिनचर्या को चकनाचूर कर देगी। ऐसी घटनाएँ जो उन्हें इस कक्षा से बाहर निकालकर किताबों और सेमेस्टर से कहीं दूर ले जाएंगी।
कुछ ऐसा जो वर्षों पहले दफन हो चुके अतीत से जुड़ा है। कुछ ऐसा जो पुरानी, धूल से ढकी फाइलों में दर्ज है।
उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि आने वाले दिनों में उनका जीवन इस तरह बदल जाएगा कि न केवल सिक्किम बल्कि पूरी दुनिया सदमे में आ जाएगी।
एक सुबह आलोक रोज़ से काफ़ी पहले कक्षा में पहुँच गया। बाहर गलियारा अभी भी शांत था। पहाड़ियों से आती हल्की ठंड खिड़कियों से अंदर आ रही थी। खाली कक्षाएँ उसे हमेशा बड़ी लगती थीं। उसने अपना बैग आखिरी बेंच पर रखा और बैठ गया। उसकी उंगलियाँ बेचैनी से डेस्क पर हल्की-हल्की थपथपा रही थीं। उसकी नज़र बार-बार दरवाज़े की तरफ़ उठ रही थी।
वह व्याख्यान का इंतजार नहीं कर रहा था।
वह भय की प्रतीक्षा कर रहा था।

अध्याय 2 – नृत्य, लड़की और डॉन

कुछ मिनट बाद, चरमराते हुए दरवाजे के साथ रॉनी कक्षा में दाखिल हुआ। उसके कदमों में हमेशा की तरह बेफिक्री थी। वह च्युइंग गम चबा रहा था, हर बार चबाने पर उसके गाल हल्के से हिल रहे थे। उसकी आँखें कमरे में चारों ओर ऐसे घूम रही थीं मानो वह रोज़ की आदत के अनुसार हर किसी को परख रहा हो।

लेकिन उनकी नजर तुरंत आलोक पर टिक गई।
आलोक हमेशा की तरह आखिरी बेंच पर दुबका बैठा था। अपनी उंगलियों को आपस में रगड़ रहा था। उसकी निगाहें दरवाजे पर टिकी थीं। मानो वह किसी का नहीं, बल्कि खुद डर का इंतजार कर रहा हो।
रॉनी पास आया। झुककर उसके कान के पास फुसफुसाया— "चिंता मत करो... पापा आज कॉलेज नहीं आ रहे हैं।"
ये शब्द बहुत धीमी आवाज़ में बोले गए थे। लेकिन आलोक को वे एक तेज़ घंटी की तरह सुनाई दिए।
रॉनी रसायन विज्ञान के प्रोफेसर का बेटा था। बाकी छात्रों के लिए यह एक सामान्य जानकारी थी। लेकिन आलोक के लिए... यह वाक्य मानो किसी ने उसके सिर से तलवार हटा दी हो। जैसे किसी ने अचानक उसके सिर से तलवार हटा दी हो।
कुछ क्षणों के लिए आलोक बस रोनी को घूरता रहा।
उसकी आँखें स्थिर थीं। होंठ थोड़े से खुले हुए थे। मानो उसका मन अभी भी उन शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश कर रहा हो।
फिर धीरे-धीरे उसके कंधे शिथिल होने लगे।
उसकी छाती से एक लंबी, गहरी सांस निकली—जैसे उसने उसे कई मिनटों तक रोक रखा हो।
उसके चेहरे का सारा तनाव धीरे-धीरे पिघलने लगा। उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक आ गई। वैसी चमक जो केवल तब दिखाई देती है जब भय अचानक, बिना किसी चेतावनी के, गायब हो जाता है।
अचानक वह खड़ा हो गया।
इतनी जल्दी कि रॉनी भी चौंक गया।
और फिर... उसने नाचना शुरू कर दिया।
कोई लय नहीं। कोई कदम नहीं। बस छोटी-छोटी, अटपटी, बेढंगी हरकतें। उसके हाथ हवा में धीरे-धीरे घूम रहे थे। उसका चेहरा चमक उठा। वह मुस्कुरा रहा था - खुलकर, बिना किसी झिझक के, बिना सोचे-समझे।
यह बचपन की उस खुशी जैसी थी, जो अचानक स्कूल की छुट्टी की घोषणा होने पर होती है।
रॉनी ने उसे देखा और हल्की सी मुस्कान दी। उसकी मुस्कान उपहास भरी नहीं थी,

बल्कि समझदारी भरी थी।
ठीक उसी क्षण, गलियारे से ऊँची एड़ी के जूतों की हल्की, सटीक ध्वनि गूंज उठी।
टैप... टैप... टैप...
दरवाजे पर एक परछाई ठहर सी गई।
रिया अंदर आई।
हमेशा की तरह, उनका प्रवेश शांत लेकिन प्रभावशाली था। उन्होंने किसी की ओर देखने की कोशिश भी नहीं की, फिर भी कमरे का माहौल बदल गया।
उसके बाल करीने से उसके कंधों पर बिखरे हुए थे, हल्के से लहरा रहे थे। उसके साथ एक हल्की सी खुशबू आ रही थी, तेज नहीं, लेकिन हवा में महसूस हो रही थी। उसकी वर्दी एकदम सलीके से रखी हुई थी। आस्तीनें बराबर तह की हुई थीं। उसकी कलाई पर घड़ी चमक रही थी। कानों में इयरफ़ोन लगे हुए थे।
वह ऐसे चल रही थी मानो उसे पता हो कि लोग उसे देख रहे हैं... और उसे इसकी आदत हो चुकी हो।
कक्षा के लगभग हर लड़के ने एक पल के लिए उसकी तरफ देखा और फिर तुरंत नज़रें हटा लीं।
रिया में एक अजीब सी दूरी थी। वह असभ्य नहीं थी, लेकिन वह किसी को भी बहुत करीब आने का मौका नहीं देती थी। वह विनम्रता से बोलती थी, लेकिन बहुत कम। उसके चेहरे पर मुस्कान शायद ही कभी आती थी। और उसने बिना कुछ कहे किसी को अनदेखा करने की कला में महारत हासिल कर ली थी।
जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुंची, उसकी नजर आलोक पर पड़ी।
वह वहीं रुक गई।
आलोक अभी भी कक्षा के बीच में था, अपने उन छोटे-छोटे कदमों से नाच रहा था, अपनी अजीब सी खुशी में खोया हुआ था।
एक पल के लिए, रिया के चेहरे पर स्पष्ट आश्चर्य के भाव छा गए।
उसने एक ईयरफोन को थोड़ा सा हिलाया, मानो यह सुनिश्चित करना चाहती हो कि वह सही से देख रही है।
फिर, उसके होठों पर एक बहुत ही हल्की, नन्ही सी मुस्कान आई। यह उस तरह की मुस्कान थी जिसे वह कभी किसी को दिखाने की बात स्वीकार नहीं करती।
कुछ बोली नहीं।

वह चुपचाप अपनी सीट की ओर चली गई।
उतारा।
लेकिन अब उसकी नजरें फोन पर नहीं थीं।
वह चुपचाप आलोक को देख रही थी।
तभी, कक्षा का दरवाजा फिर से खुल गया।
दरवाजा खुलने की आवाज उतनी तेज नहीं थी... लेकिन उसका असर ऐसा था मानो किसी ने कमरे में हवा की दिशा बदल दी हो।
कबीर अंदर आया।
लंबा कद। भारी कदम। चौड़े कंधे जो लगभग दरवाजे के फ्रेम को भर देते थे। उनके चलने का तरीका ही ऐसा था कि लोग अनजाने में उनके लिए रास्ता बना देते थे।
हमेशा की तरह उनके पीछे बृजेश और साहो थे—जैसे उनकी परछाईं हों, जो बिना कुछ कहे उनके इशारे समझ जाते थे।
आम तौर पर कबीर की चाल में एक अलग ही तरह का दबदबा होता था। एक धीमी, सधी हुई शान। मानो उसे पता हो कि इस कमरे में उसकी उपस्थिति मात्र ही काफी है।
लेकिन आज का दिन अलग था।
उसका जबड़ा कसा हुआ था। उसकी गर्दन की नसें हल्की-हल्की दिखाई दे रही थीं। उसकी आँखों में झुंझलाहट साफ झलक रही थी। उसके चेहरे पर झुंझलाहट साफ दिख रही थी, मानो कक्षा में आने से पहले ही किसी ने उसका पूरा दिन खराब कर दिया हो।
बृजेश पास आकर धीरे से पूछा,
“क्या हुआ भाई? आज तुम इतने परेशान क्यों दिख रहे हो?”
कबीर जवाब देने ही वाला था कि अचानक उसकी नजर सामने की ओर पड़ गई।
आलोक।
वह अब भी कक्षा के बीचोंबीच खड़ा था। अब भी अपने उन अनाड़ी, मासूम, आनंद से भरे छोटे-छोटे कदमों से नाच रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसकी आँखों में एक चमक थी।
कबीर के चेहरे का भाव उसी क्षण बदल गया। मानो उसकी सारी झुंझलाहट को अचानक एक निशाना मिल गया हो।
बिना कुछ कहे, वह भारी कदमों से आलोक की ओर बढ़ा। उसके जूतों की आवाज़

ज़मीन पर गूंज उठी।
और बिना कुछ बोले, उसने आलोक को सीने पर जोर से धक्का दिया।
धक्का इतना अचानक और तेज़ था कि आलोक को अपना संतुलन संभालने का मौका ही नहीं मिला। उसका शरीर पीछे की ओर झटका खाकर ज़मीन पर गिर गया।
गिरने की आवाज शांत कक्षा में गूंज उठी।
रॉनी तुरंत आगे बढ़ा। उसने आलोक को पकड़कर उठाने की कोशिश की। "क्या तुम इसे रोकोगे नहीं, कबीर?"
साहो तुरंत रॉनी के सामने आ गया। उसकी आवाज़ तेज़ थी। “बॉस पहले से ही खराब मूड में हैं। तुम बीच में क्यों पड़ रहे हो? उन्हें क्या फर्क पड़ता है?”
आलोक ज़मीन पर बैठा था। उसकी आँखों में फिर से डर लौट आया था। वही पुराना डर। उसने कांपते हाथों से उठने की कोशिश की।
कबीर भाई... मुझे माफ कर दीजिए...
वह अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया था कि बृजेश ने उसे फिर से धक्का दे दिया।
इस बार आलोक की हथेलियाँ खुरदरी ज़मीन से रगड़ खा गईं। उसके चेहरे पर दर्द की एक तीखी लकीर उभर आई।
Brijesh laughed.
"बॉस के पैर पकड़ लो... शायद तब वो तुम्हें माफ कर दे।"
अब रॉनी का धैर्य टूट चुका था।
“ये किस तरह की दादागिरी है? उसने तो तुमसे कुछ कहा भी नहीं। अगर तुम्हारा बॉस खराब मूड में है, तो क्या पूरी क्लास को खुश रहना बंद कर देना चाहिए?”
आलोक के शब्द पूरे होने से पहले ही, साहो अचानक आगे बढ़ा। और बिना किसी चेतावनी के, उसने आलोक के चेहरे पर ज़ोरदार मुक्का मार दिया।
पूरे कमरे में एक भारी, सूखी सी आवाज गूंज उठी।
आलोक जमीन पर गिर पड़ा। इस बार वह कुछ सेकंड तक बिल्कुल भी नहीं हिला। उसके होंठ के कोने से खून की एक पतली सी धार टपक कर उसकी ठुड्डी पर बहने लगी।
पूरी कक्षा मानो स्तब्ध रह गई थी।
कोई खड़ा नहीं हुआ। कोई बोला नहीं। वे बस देखते रहे।
कुछ बेंचों की दूरी पर बैठी रिया ने चुपचाप अपना एक ईयरबड निकाल लिया। उसकी

आँखें सिकुड़ गईं। उसका चेहरा सख्त हो गया। वह बिना पलक झपकाए सब कुछ देख रही थी।

रॉनी फिर से नीचे झुक गया।

“तुम गलत हो, कबीर। यह हद से ज्यादा है।”

जैसे ही उसने आलोक को उठाना शुरू किया, बृजेश ने पीछे से उसका कॉलर पकड़कर उसे जोर से पीछे की ओर खींच लिया।

“उसे भी मारो, भाई!” बृजेश ने साहो से कहा। “उसे जाने मत दो! वह बॉस का मजाक उड़ा रहा था!”

और वहीं, कक्षा के ठीक बीचोंबीच, आलोक—जिसने कुछ भी गलत नहीं किया था—की पिटाई हो रही थी। वह अपना बचाव करने की कोशिश भी नहीं कर पा रहा था।

कमरे में बाकी लोग... बस देखते रहे।

असहाय।

चुपचाप।

ठीक उसी क्षण गलियारे से ज़ोरदार हंसी की आवाज़ आई। हल्की, बेफिक्र, अनभिज्ञ।

रुद्र और मयंक अंदर आए। दोनों किसी बात पर हंस रहे थे। "सच में यार... बहुत मज़ा आया!" रुद्र अभी भी हंस रहा था।

लेकिन जैसे ही मयंक की नजर कक्षा के बीचोंबीच पड़ी, उसकी हंसी अचानक रुक गई।

वह बीच रास्ते में ही रुक गया।

“रुद्र... उधर देखो। उन्होंने फिर से शुरू कर दिया है। पता नहीं कब सबक सीखेंगे...”

रुद्र ने उसकी निगाहों का पीछा किया।

आलोक फर्श पर पड़ा है।

Brijesh holding Ronny.

कबीर उनके ऊपर खड़ा था।

रुद्र के चेहरे से मुस्कान धीरे-धीरे गायब हो गई।

उसका जबड़ा कस गया।

“हाँ... इस कबीर के साथ कभी कुछ नहीं बदलता,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

और बिना कुछ कहे, वे दोनों उस दिशा में चल पड़े।

अध्याय 3 – अहम का टकराव

साहो ने उन्हें सबसे पहले देखा।

उसने अपना सिर थोड़ा झुकाया, मानो कोई शिकारी दूर से अपने शिकार को देख रहा हो। उसके होठों के कोने धीरे-धीरे ऊपर की ओर मुड़े, और उसके चेहरे पर एक टेढ़ी-मेढ़ी मुस्कान फैल गई—ऐसी मुस्कान जो किसी को देखकर नहीं, बल्कि किसी को गिरते हुए देखकर आती है।

उसने आलोक की ओर देखा, जो अभी भी ज़मीन पर पड़ा था। आलोक अभी भी उठने की कोशिश कर रहा था, उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं और उसकी आँखों में घबराहट साफ़ झलक रही थी।

साहो ने जानबूझकर अपनी आवाज ऊंची की ताकि पूरी कक्षा सुन सके—

“आलोक... आज तुम्हें हमसे कौन बचाएगा?”

उसकी आवाज में कोई उपहास नहीं था... बस शिकार के साथ खेलने का आनंद था।

कमरे में हल्की फुसफुसाहट फैल गई। कुछ छात्रों ने अपना सिर घुमाया। कुछ ने अपनी नज़रें नीचे कर लीं।

फिर पीछे से एक शांत, स्थिर आवाज आई— “क्या अपने से कमजोर किसी को सताने से तुम्हें कोई खुशी मिलती है?”

आवाज इतनी संयमित थी कि कुछ सेकंड के लिए किसी को समझ नहीं आया कि किसने बात की है।

फिर सबकी निगाहें दरवाजे की ओर चली गईं।

रुद्र खड़ा था।

उसके चेहरे पर गुस्सा नहीं था। उसकी आँखों में घबराहट नहीं थी। उसकी आवाज़ में कोई तेज़ी नहीं थी। बस एक सीधा सवाल।

साहो धीरे से मुड़ा। उसकी आँखें सिकुड़ गईं।

“देखो, रुद्र... ये हमारा मामला है। बीच में मत पड़ो... वरना—”

रुद्र ने हल्की सी मुस्कान दी।

यह कोई उकसाने वाली मुस्कान नहीं थी। यह आत्मविश्वास से भरी मुस्कान थी।

"लगता है तुम पिछली बार की मार भूल गए हो।"

उसके बगल में खड़ा मयंक अपनी बहुत धीमी हंसी को दबा रहा था। इतनी धीमी कि

केवल रुद्र ही उसे सुन सका।
अब तक चुपचाप खड़े कबीर अचानक आगे बढ़े।
उसके कदम भारी थे। उसके जूते ज़मीन पर धड़धड़ा रहे थे। उसकी आँखें ठंडी थीं।
“तुम दोनों... यहाँ से निकल जाओ। अभी। अगर मेरा गुस्सा फूट पड़ा, तो मैं तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ दूँगा।”
मयंक ने उसकी आँखों में सीधे देखते हुए कहा— “अरे? अपने साथ दो चमचों को रखकर खुद को आकाश समझते हो? अपनी ताकत पर घमंड करना कभी अच्छा नहीं होता, कबीर... घमंड पर बना घर ज्यादा दिन नहीं टिकता।”
कुछ सेकंड का सन्नाटा।
तब-
कबीर, साहो और ब्रिजेश ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।
वह हंसी, उपहासपूर्ण और व्यंग्यात्मक, पूरे कमरे में गूंज उठी। मानो उन्होंने अभी-अभी कोई मजेदार चुटकुला सुना हो।
बृजेश ने धीरे-धीरे ताली बजाई।
“क्या शानदार भाषण था यार... मेरा दिल पिघल गया।”
कबीर के होठों पर एक ठंडी मुस्कान तैर रही थी।
अब आप हमें सिखाएंगे कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? मुझे तो आप जैसे लोगों से बात करना भी पसंद नहीं है।
रुद्र ने गहरी सांस ली। वह झगड़े को बढ़ाना नहीं चाहता था। "हम लड़ने नहीं आए हैं। बस उसे जाने दो।"
साहो ने अपना सिर झुकाया। उसकी आँखों में चुनौती झलक रही थी। "ठीक है। हम उसे जाने देंगे... अगर तुम बॉस के पैर पकड़ लो।"
वाक्य अभी पूरा भी नहीं हुआ था कि—
"दरार!"
आवाज इतनी तेज थी कि पीछे बैठे दो छात्र चौंक गए। मयंक का हाथ साहो के गाल पर लग गया था।
बल के कारण साहो का चेहरा एक तरफ झुक गया। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं।
पूरा कमरा एक पल के लिए पत्थर जैसा हो गया।
फिर बृजेश ने छलांग लगाई।

लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, रुद्र ने हवा में ही उसका हाथ पकड़ लिया।
एक ज़ोरदार झटका।
एक तेज़ मोड़।
बृजेश के होंठों से दर्द भरी चीख निकली और वह एक घुटने पर गिर पड़ा।
अब कक्षा में हंगामा मच गया।
कुछ छात्र अपनी बेंचों पर खड़े हो गए। कुछ बेहतर देखने के लिए आगे झुक गए।
मानो स्टेडियम में अचानक कोई मैच शुरू हो गया हो।
रुद्र ने बृजेश को और नीचे दबाते हुए दांत पीसते हुए कहा, "मैंने पिछली बार भी तुमसे कहा था कि मुझसे पंगा मत लेना... लेकिन तुम लोग कुत्ते की पूंछ की तरह हो। कभी सीधे नहीं होते।"
कबीर अब तक यह सब देख रहा था।
उसकी सांसें भारी हो गई थीं।
यह आखिरी चीज थी जिसे वह बर्दाश्त कर सकता था।
अचानक, वह आगे बढ़ा।
एक ही झटके में उसने रुद्र का कॉलर पकड़ लिया।
पूरे कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था।
उसी क्षण रुद्र ने कबीर का कॉलर पकड़ लिया। दोनों की मुट्ठियाँ एक-दूसरे की कमीज़ों में गड़ी हुई थीं।
रॉनी ने किसी तरह आलोक को उठने में मदद की। रिया अब खड़ी थी। उसकी निगाहें बिना पलक झपकाए उन दोनों पर टिकी हुई थीं।
कमरे में सन्नाटा छा गया।
केवल उनकी भारी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
वे इतने करीब थे कि उनके माथे लगभग एक-दूसरे को छू रहे थे।
कबीर ने दांत भींचते हुए कहा—
"तुम्हें लगता है तुम हीरो हो? अगर मैंने आज तुम्हारे इस आत्मविश्वास को चूर-चूर नहीं किया, तो मेरा नाम कबीर नहीं है।"
रुद्र ने हल्की सी हंसी हंसी।
"कबीर, आत्मविश्वास को कुचला नहीं जा सकता। जितना तुम इसे दबाओगे... उतना ही यह ऊपर उठेगा।"

“तुम खुद को क्या समझते हो? कक्षा के मसीहा? रॉबिन हुड?”
नहीं। जब मैं कुछ गलत होते देखता हूँ तो चुप नहीं रह सकता। लेकिन बताओ... क्या तुम्हें लगता है कि तुम किसी तरह के डॉन हो?
कबीर की पकड़ और भी कस गई।
“यह मेरी कक्षा है। मैं जो चाहता हूँ, वही यहाँ होता है।”
रुद्र की आवाज अब बहुत धीमी हो गई थी।
"क्लास आपकी हो सकती है... लेकिन सम्मान किसी की निजी संपत्ति नहीं है।"
लोग मेरा नाम सुनते ही कांप उठते हैं!
“डर के जरिए कमाया गया सम्मान... सम्मान नहीं होता, कबीर। वह तो बेबसी होती है।”
उनके पीछे बैठी पूरी कक्षा सांस रोककर देख रही थी।
अब तो पंखे की आवाज भी असामान्य रूप से तेज लग रही थी।
कबीर की आवाज अब पहले जितनी तेज नहीं थी।
माहौल शांत हो गया था... लेकिन उस शांति में एक अजीब सी ठंडक थी। जैसे बर्फ के नीचे बहता पानी—शांत, लेकिन खतरनाक।
उसने रुद्र की आंखों में आंखें डालकर देखा।
"याद रखना... आज के बाद, तुम या तो झुक जाओगे... या टूट जाओगे।"
उनके शब्दों में धमकी से ज़्यादा निश्चितता झलक रही थी। मानो वे कोई भविष्यवाणी कर रहे हों।
रुद्र की सांसें अब स्थिर थीं। चेहरा शांत था। उसकी आंखों में न डर था, न घबराहट।
उन्होंने बहुत ही सामान्य स्वर में कहा—
मुझे झुकना नहीं आता।
और जो भी मुझे तोड़ सकता है... वो अभी पैदा ही नहीं हुआ है। अपनी पूरी ताकत लगा दो।
यह जवाब सुनकर कुछ सेकंड के लिए उनके बीच का माहौल और भी तनावपूर्ण हो गया।
रुद्र ने एक झटके से अपना कॉलर छुड़ा लिया।
कबीर का हाथ हवा में खाली रह गया।
कबीर ने दांत पीसते हुए कहा—

तुम आग से खेल रहे हो।
रुद्र ने बिना पलक झपकाए जवाब दिया—
"गलत।
मैं आग बुझा रहा हूँ।
मयंक यह सब पीछे से देख रहा था। उसकी आँखों में हल्की सी चमक थी। उसने बहुत धीमी आवाज़ में खुद से कहा—
"पहली बार... किसी ने कबीर को जवाब दिया है।"
कमरे में तनाव इतना बढ़ गया था कि उसे महसूस किया जा सकता था।
कोई हिल-डुल नहीं रहा था।
कोई नहीं बोल रहा था।
केवल उनकी तेज सांसों की आवाज ही सुनाई दे रही थी।
और तब-
"धड़ाम!"
दरवाजा इतनी ज़ोर से खुला कि कुछ छात्र चौंक गए और खड़े हो गए।
गलियारे में ऊँची एड़ी के जूतों की आवाज़ गूंज रही थी—
टैप... टैप... टैप...
तीन साफ-सुथरे, सधे हुए कदम।
और जैसे ही वह आवाज़ कक्षा में दाखिल हुई...
सारा शोर, सारी हलचल, सारी गर्मी—अचानक थम गई। मानो किसी ने कमरे की आवाज़ बंद कर दी हो।
खिड़की से आती सूरज की रोशनी फर्श पर एक लंबी, सुनहरी पट्टी के रूप में फैलकर दरवाजे तक पहुंच रही थी।
उस रोशनी में डीन खड़े थे।
सीधा।
नियमित।
आंखें तेज हैं।
उनकी उपस्थिति में किसी को कुछ भी कहने की जरूरत नहीं थी।
उसकी निगाह सीधे रुद्र और कबीर पर पड़ी, जो अभी भी एक-दूसरे के कॉलर पकड़े खड़े थे।

एक सेकंड।
दो सेकंड।
तीन सेकंड।
उन तीन सेकंड में, ऐसा लग रहा था मानो पूरी कक्षा सांस रोककर खड़ी हो गई हो।
केवल रुद्र और कबीर की भारी साँसें ही सुनाई दे रही थीं।
फिर डीन की आवाज सुनाई दी।
ठंडा।
मापा गया।
इस तरह कि इसके लिए चिल्लाने की जरूरत ही न पड़े।
“छोड़ दो। अभी।”
उस आवाज में एक आदेश था।
और उसी क्षण, बिना एक शब्द कहे, उन दोनों ने धीरे-धीरे एक-दूसरे के गले के पट्टे खोल दिए।
डीन की निगाह वहां से हटकर आलोक पर पड़ी।
उसके होंठ के कोने से खून निकल रहा था।
उसके कपड़ों पर धूल लगी हुई थी।
कांपता हुआ शरीर।
रॉनी उसके बगल में खड़ा होकर उसे सहारा दे रहा था।
उसने एक भी सवाल नहीं पूछा।
एक भी नहीं।
मैंने पूरी कक्षा को एक नज़र में देखा।
एक ऐसी निगाह जिसमें शब्दों से कहीं अधिक अनुशासन झलक रहा था।
सभी लोग अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाएं।
कोई विरोध नहीं।
फुसफुसाना मना है।
कुर्सियों के हल्के से घिसने की आवाज।
फिर उसने बहुत ही सामान्य स्वर में कहा—
“रुद्र।”
कबीर।

मयंक।
आलोक।
आप चारों मेरे साथ आइए।
वह एक पल के लिए रुक गई।
तब कही-
"बाकी कक्षा के सभी छात्र चुप रहे।"
डीन का कार्यालय
वे चारों चुपचाप डीन के पीछे-पीछे चल रहे थे।
गलियारा अचानक बहुत लंबा लगने लगा। दीवारों पर लगे नोटिस, पोस्टर, विभाग के बोर्ड—सब कुछ धुंधला सा दिखने लगा। केवल कदमों की आवाज ही साफ सुनाई दे रही थी।
टैप... टैप... टैप...
डीन की एड़ियों की आवाज आगे गूंजी, और उनके पीछे, उनके जूतों की आवाज दीवारों से टकराकर वापस लौटी।
किसी ने कुछ नहीं कहा।
आलोक की साँसें अभी भी थोड़ी तेज़ चल रही थीं। मयंक की चाल स्थिर थी, लेकिन उसकी उंगलियाँ अभी भी हल्की-हल्की काँप रही थीं। रुद्र का चेहरा शांत था, लेकिन उसका जबड़ा कसा हुआ था। कबीर का सिर थोड़ा झुका हुआ था—जैसे वह पहली बार किसी बात पर गंभीरता से सोच रहा हो।
कार्यालय के बाहर पहुँचकर डीन रुक गए। उन्होंने दरवाजा खोला और कहा, "अंदर आइए।"
चारों ने प्रवेश किया।
जैसे ही उन्होंने दहलीज पार की, कमरे की हवा में एक अलग ही एहसास हुआ।
यह वही कार्यालय था जहां वे कई बार आ चुके थे - प्रमाण पत्रों पर हस्ताक्षर करवाने, अनुमतियां लेने और कुछ औपचारिक कार्यों के लिए।
लेकिन आज...
आज वही कमरा भारी-भारी सा लग रहा था।
दीवार पर सजे पदक और प्रमाण पत्र अब सजावट मात्र नहीं लगते थे—वे अनुशासन के गवाह प्रतीत होते थे। सामने रखी बड़ी लकड़ी की मेज पर सब कुछ एकदम सीधी

रेखाओं में रखा था। कलम रखने का स्टैंड, फाइलें, पेपरवेट—सब अपनी-अपनी जगह पर।

डेस्क के पीछे दीवार पर टंगा हुआ फ्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था— “अनुशासन नियंत्रण नहीं है। यह चरित्र है।”

वे चारों खड़े रहे।

बिना कहे कुर्सी पर बैठने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

डीन अपनी कुर्सी पर बैठी थीं। उन्होंने कुछ देर उन चारों को देखा। फिर डेस्क के कोने से एक छोटा सा रिमोट उठाया।

"क्लिक।"

बगल की दीवार पर लगी सीसीटीवी स्क्रीन अचानक रोशन हो गई। कमरे की हल्की रोशनी उस स्क्रीन पर पड़ी।

धुंधली छवि वाली फुटेज चलने लगी।

वही कक्षा।

वही आलोक।

वही धक्का।

वही पंच।

कॉलर पकड़ने की वही घटना।

वे चारों स्क्रीन पर अपनी-अपनी गतिविधियों को देख रहे थे।

कोई आवाज नहीं थी, लेकिन हर दृश्य चीखता हुआ प्रतीत हो रहा था।

कबीर की निगाहें स्क्रीन पर टिकी हुई थीं। पहली बार उनके चेहरे पर बेचैनी के भाव दिखाई दिए।

रुद्र चुपचाप खड़ा था, लेकिन उसकी साँसें अब थोड़ी गहरी हो गई थीं। मयंक ध्यान से देख रहा था, मानो हर दृश्य को याद कर रहा हो। आलोक की उंगलियाँ इतनी कसकर आपस में गुंथी हुई थीं कि उसकी उंगलियों के जोड़ सफेद पड़ गए थे।

वीडियो अचानक रुक गया।

स्क्रीन काली हो गई।

कमरे में फिर से वही सन्नाटा छा गया।

डीन ने रिमोट को धीरे से वापस डेस्क पर रख दिया।

उसकी निगाहें सीधे कबीर पर टिक गईं।

"आपका गुस्सा मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।"
वह कुछ सेकंड के लिए रुक गई।
"लेकिन मुझे बताओ—क्या तुम यहाँ पढ़ने आते हो... या दूसरों को सताने के लिए?"
कबीर ने कोई जवाब नहीं दिया।
अब उसकी नजरें फर्श पर टिकी थीं।
फिर डीन की निगाह रुद्र पर टिक गई।
“और तुम... तुम तो लड़ाई रोकने गए थे। फिर तुमने हाथ क्यों उठाया?” रुद्र ने अपना सिर नीचे कर लिया।
मयंक कुछ कहने के लिए थोड़ा आगे ही बढ़ा था कि डीन ने उसकी होंठों पर उंगली रख दी।
एक छोटा सा इशारा।
मुझे ठीक-ठीक पता है कि क्या हुआ था। मुझे किसी को कुछ भी समझाने की जरूरत नहीं है।
कुछ सेकंड के लिए, कमरे में केवल घड़ी की टिक-टिक की आवाज ही सुनाई दे रही थी।
तब डीन ने अत्यंत शांत स्वर में कहा—
आज आप में से किसी को भी दंड नहीं मिलेगा।
चारों ने एक साथ ऊपर देखा।
आलोक की आँखों में हैरानी थी। कबीर ने अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाया। रुद्र ने सीधे उसकी ओर देखा। मयंक स्थिर खड़ा रहा।
डीन की आवाज और भी धीमी हो गई।
आज आपको एक कार्य सौंपा जा रहा है।
एक छोटा सा विराम।
और अगर तुम असफल हुए... तो तुम्हें दंड मिलेगा।
कमरा अचानक और भी ठंडा लगने लगा।
डीन ने धीरे से अपनी दराज खोली।
जैसे ही दराज खुली, पुराने कागजों की हल्की सी गंध हवा में फैल गई।
उसने अंदर हाथ डालकर एक पुरानी, पीली पड़ चुकी फाइल निकाली।
फाइल के किनारों पर धूल जमी हुई थी। कवर थोड़ा मुड़ा हुआ था। मानो सालों से

किसी ने इसे छुआ ही न हो।
उसने फाइल को बहुत ही धीरे से मेज पर रख दिया।
चारों जोड़ी आंखें उस पर टिकी हुई थीं।
कमरे में मौजूद किसी ने सांस तक नहीं ली।
कवर पर मोटे, धुंधले अक्षरों में लिखा था— "प्रतिबंधित क्षेत्र रिपोर्ट — 2009"

अध्याय 4 – फ़ाइल के पन्नों में छिपा अंधकार

डीन के कार्यालय में घड़ी की टिक-टिक की आवाज असामान्य रूप से स्पष्ट सुनाई दे रही थी।
ऐसा नहीं था कि पहले यहाँ कोई आवाज़ नहीं आती थी—अक्सर फ़ोन बजते थे, कागज़ों की सरसराहट होती थी, कर्मचारी आपस में बातचीत करते थे। लेकिन इस पल... उस कमरे की खामोशी एक अलग ही रूप ले चुकी थी। भारी। दबाव डालने वाली।
डेस्क पर एक पुरानी, पीली पड़ चुकी फाइल पड़ी थी, जो उन चारों को अपनी ओर खींच रही थी।
इसके कोनों पर जमी धूल, थोड़ा मुड़ा हुआ आवरण, फीका पड़ा रंग—ये सब बातें बयां कर रही थीं कि यह फाइल सालों से किसी दराज के अंधेरे में बंद पड़ी थी। मानो इसे जानबूझकर भुला दिया गया हो। मानो इसमें कुछ ऐसा छिपा हो जिसे कोई याद नहीं करना चाहता हो।
रुद्र, कबीर, मयंक और आलोक—ये चारों सबसे आगे खड़े थे।
किसी में भी बैठने का साहस नहीं था।
सबकी निगाहें उस फाइल पर टिकी हुई थीं।
आलोक को ऐसा लग रहा था मानो उसे अपने कानों में अपनी धड़कन सुनाई दे रही हो। मयंक के अंगूठे धीरे-धीरे आपस में रगड़ रहे थे। कबीर की गर्दन की नसें तन गई थीं। रुद्र की आँखें स्थिर थीं—लेकिन उनमें एक अजीब सी गंभीरता छा गई थी।
डीन ने बहुत धीरे से फाइल को अपनी ओर सरका दिया।
कमरे में वह हल्की सी खरोंच की आवाज भी तेज लग रही थी।
कुछ क्षणों के लिए उसकी उंगलियां पन्ने के ऊपर ठहर गईं... मानो वह खुद सोच रही

हो कि इन पन्नों को दोबारा खोले या नहीं। मानो यादों का कोई द्वार खुलने ही वाला हो।
फिर उसने फाइल खोली।
कमरे में कागज रगड़ने की सूखी, बासी आवाज गूंज रही थी।
पुराने कागजों से एक हल्की सी गंध उठ रही थी—धूल, समय और बंद अलमारी की मिली-जुली गंध।
“वर्ष 2009…” उसने पढ़ना शुरू किया।
उसकी आवाज तो सामान्य थी... लेकिन शब्दों में एक असामान्य गहराई थी।
“उस समय जैव प्रौद्योगिकी विभाग में एक विशेष शोध गतिविधि चल रही थी। छात्रों को रात में एक ‘विशेष वैज्ञानिक प्रयोग’ दिखाने के बहाने शोध प्रयोगशाला में बुलाया गया था।”
रुद्र का पूरा ध्यान फाइल पर था।
कबीर अब दीवार के सहारे नहीं खड़ा था। वह सीधा खड़ा होकर सुन रहा था।
मयंक के हाथ आपस में जुड़े हुए थे। उसके अंगूठे हल्के से हिल रहे थे—जो उसके सोचने का संकेत था।
आलोक की उंगलियां कांप रही थीं और उसे महसूस हो रहा था कि उसकी हथेलियां पसीने से भीग गई हैं।
डीन ने आगे पढ़ा—
“उस रात बी.टेक बायोटेक्नोलॉजी के पूरे समूह को बुलाया गया। उन्हें बताया गया कि वे अपनी पढ़ाई से संबंधित कुछ देखने जा रहे हैं... लेकिन वह बहुत खास होगा।”
कमरे की हवा भारी हो गई।
उसने पन्ना पलट दिया।
इस बार कागज पलटने की आवाज और भी तीखी थी।
"उसके बाद... जो कुछ हुआ... वह भी इस रिपोर्ट में पूरी तरह से दर्ज नहीं है।"
मौन।
इतनी गहरी कि चारों अपनी-अपनी सांसें सुन सकते थे।
रुद्र खुद को रोक नहीं पाया। उसने धीमी आवाज़ में पूछा, "मतलब... इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है?"
उसकी ओर देखे बिना, डीन ने कहा, "कुछ चीजें दर्ज नहीं की जातीं। और कुछ... ऐसी

स्थिति में नहीं छोड़ी जातीं जिन्हें दर्ज करने लायक समझा जाए।"
यह वाक्य हवा में लटका रहा।
जैसे दीवारों से टकराकर वापस लौट रहा हो।
वह पढ़ती रही—
"लगभग आधी रात 12 बजे के बाद, प्रयोगशाला के अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। दरवाजा अंदर से बंद था। बार-बार पुकारने पर भी कोई जवाब नहीं आया। अंदर से किसी भी तरह की हलचल, बातचीत या चीखने की कोई आवाज नहीं आई।"
आलोक की सांसें तेज हो गईं।
डीन की आवाज धीरे-धीरे धीमी होती जा रही थी।
प्रयोगशाला के बाहर खड़े कर्मचारियों ने सोचा कि शायद छात्र प्रयोग में व्यस्त होंगे। लेकिन समय बीतता गया। रात के 1 बज गए... रात के 2 बज गए... रात के 3 बज गए...
कमरे में घड़ी की टिक-टिक की आवाज फिर से सुनाई देने लगी।
“जब सुबह होने के समय दरवाजा तोड़कर खोला गया...”
उसने पढ़ना बंद कर दिया।
कुछ सेकंड के लिए वह पन्ने को देखती रही।
मानो आगे आने वाले शब्द कहना आसान न हो।
कमरे में खड़े चारों लोगों को यह महसूस हुआ कि वे जो सुनने वाले हैं वह सामान्य नहीं होगा।
आलोक की सांस अचानक अटक गई। उसे ऐसा लगा जैसे कमरे की हवा खत्म हो रही हो।
डीन ने पढ़ना जारी रखा—
सुबह के समय दरवाजा तोड़कर खोला गया था।
उसकी आवाज अब पहले से कहीं ज्यादा धीमी थी... मानो हर शब्द सोच-समझकर ही निकल रहा हो।
"उस समूह के आधे छात्र... अंदर नहीं पाए गए।"
कमरे में सन्नाटा छा गया।
कबीर खुद को रोक नहीं पाया। उसने झट से पूछ लिया— “मतलब वे भाग गए?”
पहली बार डीन ने सीधे उसकी ओर देखा।

उसकी आंखें स्थिर थीं। बिना पलक झपकाए।
अगर कोई भाग जाता है... तो उसके सुराग मिल जाते हैं।
कबीर की जुबान वहीं रुक गई।
"जो छात्र बाहर पाए गए... उनकी हालत सामान्य नहीं थी।"
मयंक ने पहली बार अपना सिर उठाया। उसकी भौंहें सिकुड़ गईं।
डीन ने कहा—
“वे किसी को नहीं पहचान रहे थे। न अपने दोस्तों को, न प्रोफेसरों को, न स्टाफ को... किसी को भी नहीं। उन्हें तेज रोशनी से चिढ़ हो रही थी। मानो रोशनी उनकी आंखों को जला रही हो। वे अंधेरे कोनों में दुबके बैठे थे। और उनका व्यवहार...”
उसने अपने शब्दों का चुनाव करने के लिए एक पल के लिए विराम लिया।
“...मानव जैसा नहीं था।”
रुद्र की भौंहें और भी सिकुड़ गईं। "कैसा व्यवहार?"
डीन की आवाज अब लगभग फुसफुसाहट जैसी हो गई थी—
“वे गुर्रा रहे थे... अपने दांत दिखा रहे थे... चारों पैरों पर चल रहे थे... मानो जंगली जानवर हों। अगर कोई उनके पास आता, तो वे झपट्टा मारते। वे किसी को भी अपने पास नहीं आने दे रहे थे।”
आलोक का गला सूख गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसके हाथ बर्फ की तरह ठंडे हो गए हों।
डॉक्टरों ने इसे मानसिक आघात बताया। रिपोर्ट में कहा गया है—रासायनिक दुर्घटना, गैस रिसाव, दहशत।
उसने फाइल पर उंगली रखी।
लेकिन वहां मौजूद लोग... जानते थे कि यह उससे कहीं अधिक था।
कुछ क्षणों के लिए कमरे में मौजूद कोई भी व्यक्ति अपनी जगह से हिला तक नहीं।
मयंक ने धीमी आवाज में पूछा, "तो फिर... उन छात्रों का क्या हुआ?"
डीन की आंखें कुछ सेकंड के लिए खाली हो गईं... मानो वह कोई पुराना दृश्य देख रही हो।
कुछ ही दिनों के भीतर... उनमें से अधिकतर की मृत्यु हो गई।
कमरे की हवा और भी भारी हो गई।
“अलग-अलग कारण। किसी का दिल धड़कना बंद हो गया। कोई अचानक बेहोश

होकर गिर गया। कोई रात को सो गया... और सुबह नहीं उठा।”
समय की टिक-टिक अब बिल्कुल स्पष्ट थी।
“उस घटना को तुरंत दबा दिया गया। एक आधिकारिक रिपोर्ट जारी की गई - रासायनिक दुर्घटना। उसी दिन प्रयोगशाला को सील कर दिया गया।”
रुद्र ने धीमी आवाज में पूछा, "मैडम... आपको यह सब कैसे पता है?"
पहली बार डीन ने उन चारों की ओर सीधे देखा।
उसकी आँखों में एक अजीब सी गहराई थी।
"क्योंकि मैं उस समय यहीं था।"
चारों जोड़ी आंखें एक साथ उठीं।
मैंने उन्हें उस हालत में देखा था।
एक पल के लिए उसकी आँखों में एक चमक कौंधी—डर की नहीं... बल्कि स्मृति की।
उनकी आंखों में जो कुछ था... मैं उसे आज तक नहीं भूल पाया हूं।
कमरे में ऐसी खामोशी छा गई कि आवाज करना भी गलत लग रहा था।
तभी मयंक ने शांत लेकिन सीधे-सीधे एक सवाल पूछा—
“मैडम... हमें ही क्यों चुना गया?”
डीन ने कुछ सेकंड तक उसकी ओर देखा।
फिर, बहुत धीमी, रहस्यमयी आवाज़ में उसने कहा—
कुछ जगहों पर... हर किसी को अंदर नहीं आने दिया जाता। वे खुद तय करते हैं... कि किसे बुलाना है।
चारों ने एक दूसरे की ओर देखा।
यह एक जवाब था... लेकिन इसका कोई मतलब नहीं था।
कबीर अचानक हंस पड़ा।
कमरे की खामोशी में उसकी हंसी अजीब सी लग रही थी।
“यह सब किसी कहानी जैसा लगता है, महोदया। यह विज्ञान महाविद्यालय है, कोई हॉरर फिल्म नहीं। मैं इस बकवास में नहीं पड़ना चाहता।”
वह मुड़ा और दरवाजे की ओर बढ़ा।
उसके कदमों की आवाज फर्श पर गूंज रही थी।
तभी डीन की आवाज सुनाई दी—इस बार पहले से कहीं अधिक कठोर, अधिक

आदेशात्मक—
“रुक जाओ, कबीर।”
कबीर के कदम वहीं रुक गए।
डीन ने कहा—
"एक और कदम बढ़ाओ, और आज कक्षा में जो कुछ भी हुआ उसकी पूरी रिपोर्ट सीधे प्रशासन के पास चली जाएगी।"
उसकी आवाज तेज नहीं थी... लेकिन उसमें इतनी कठोरता थी कि शब्द मानो दीवार से टकराकर वापस उछल रहे हों।
कमरे में सन्नाटा मानो जम सा गया था।
कबीर के कदम वहीं रुक गए। उसकी पीठ दरवाजे की ओर थी, लेकिन उसका शरीर मानो पत्थर का बन गया था।
बिना पलक झपकाए, डीन ने आगे कहा—
और यकीन मानिए... आपको कॉलेज से निष्कासित होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।
यह कोई धमकी नहीं थी।
यह एक घोषणा थी।
कबीर धीरे से मुड़ा।
अब उनके चेहरे पर कुछ मिनट पहले वाली चुनौती का भाव नहीं था। उनका जबड़ा कसा हुआ था, लेकिन उनकी आँखों में थोड़ी बेचैनी झलक रही थी।
डीन ने दीवार पर लगी घड़ी की ओर देखा।
हाथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।
आज रात दस बजे।
ऐसा प्रतीत हुआ कि चारों के दिल की धड़कनें एक साथ तेज हो गईं।
कमरे की खामोशी अब उनके कानों में गूंजने लगी थी। घड़ी की टिक-टिक पहले से कहीं ज़्यादा साफ़ सुनाई दे रही थी... और हर पल भारी होता जा रहा था।
उनकी आंखों में देखते हुए डीन ने बहुत स्पष्ट और संयमित शब्दों में कहा—
"आप चारों आज रात उस सीलबंद प्रयोगशाला में जाएंगे।"
यह सुनकर ऐसा लगा मानो कमरे की हवा एक पल के लिए थम गई हो।
यह अब बातचीत नहीं रह गई थी।
यह एक आदेश था।

आलोक के होंठ सूख गए। उसने जीभ से उन्हें गीला करने की कोशिश की, लेकिन उसका गला सूखा ही रहा।
उसकी आवाज थोड़ी कांप रही थी— “क्या... है, महोदया?”
डीन के चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
डरने की कोई बात नहीं।
बिना किसी संकोच के।
जल्दी मत करो।
शांत और सपाट स्वर में उसने कहा—
आपको ठीक यही पता लगाना होगा।
यह उत्तर जितना संक्षिप्त था, उतना ही सारगर्भित भी था।
उसने फाइल बंद कर दी।
पुराने कागज़ आपस में टकराए। थोड़ी सी धूल हवा में उड़ गई, जो खिड़की से आती सूरज की हल्की किरणों में साफ दिखाई दे रही थी।
उसने फाइल को बहुत धीरे से उठाया... और उसे वापस दराज में रख दिया।
दराज के बंद होने की आवाज कमरे में अजीब तरह से गूंज उठी।
मानो किसी निर्णय पर अंतिम मुहर लगा दी गई हो।
डीन ने कहा, "जाओ, तैयारी करो। आज रात... साधारण नहीं होगी।"
वे चारों कुछ सेकंड के लिए वहीं खड़े रहे।
मानो उनके पैर आदेश का पालन करने के लिए तैयार ही न हों।
फिर वे मुड़ गए।
दरवाजा खोला।
बाहर गलियारे की ठंडी हवा उनके चेहरों से टकराई।
गलियारा अचानक असामान्य रूप से लंबा प्रतीत होने लगा।
उनके कदमों की आवाज दीवारों से टकराकर वापस गूंज उठी।
टैप... टैप... टैप...
कोई भी किसी दूसरे की तरफ नहीं देख रहा था।
कोई कुछ नहीं कह रहा था।
लेकिन चारों के मन में बार-बार एक ही सवाल गूंज रहा था—
"सत्रह साल पहले उस सीलबंद प्रयोगशाला के अंदर वास्तव में क्या हुआ था?"

अध्याय 5 – जंगल की ओर

डीन दरवाजे तक पहुँच गया...
उन चारों को लगा कि बातचीत खत्म हो गई है। अब उन्हें बस जाना था।
लेकिन ठीक दहलीज पर पहुँचकर वह रुक गई।
ऐसा लगा मानो कोई अदृश्य स्मृति उसके कदमों को थाम रही हो।
वह कुछ सेकंड के लिए वहीं खड़ी रही। उसकी पीठ उनकी तरफ थी, लेकिन अचानक ही माहौल फिर से गंभीर हो गया।
धीरे-धीरे वह मुड़ी।
उसकी एड़ियों की हल्की सी आवाज फर्श पर गूंजी—"टैप"...
कमरे की सफेद रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। उसका चेहरा शांत, बिल्कुल सामान्य था... लेकिन उसकी आँखों में एक अजीब सी गहराई छा गई थी। मानो जो वह कहने वाली थी, वह महज़ एक चेतावनी नहीं, बल्कि एक अनुभव था।
उसकी निगाहें उन सभी पर घूम गईं।
पहले, रुद्र।
फिर कबीर।
फिर आलोक।
और अंत में... यह मयंक पर आकर रुका।
धीमी, संयमित आवाज़ में उसने कहा—
'एक और बात...'
वे चारों सहज रूप से अपने कदम रोक बैठे।
किसी ने कुछ नहीं पूछा। सबने बस सुना।
‘याद रखना... अगर यह मामला तुम चारों के अलावा किसी और तक पहुँचता है...’
वह एक पल के लिए रुक गई।
कमरे में घड़ी की टिक-टिक की आवाज फिर से स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगी।
अब उसकी निगाहें विशेष रूप से मयंक पर टिकी हुई थीं—मानो वह यह देखना चाह रही हो कि क्या वह मामले की गंभीरता को समझता है या नहीं।
‘...फिर 2009 में जो हुआ... तुम्हारे साथ उससे भी बुरा होगा।’

ये शब्द धमकी जैसे नहीं लग रहे थे।
उनकी बातें सुनकर ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई तथ्य बता रही हो।
मौन।
आलोक ने अनजाने में अपने होंठ आपस में दबा लिए।
कबीर की गर्दन सीधी हो गई।
रुद्र की आंखें थोड़ी सिकुड़ गईं।
फिर डीन ने एक और वाक्य कहा—बहुत ही शांत स्वर में, लेकिन ऐसा वाक्य जो सीधे मन में उतर जाए—
और हां... अगर आपको अंदर कुछ अजीब दिखे तो उसे देखने की कोशिश मत करना।'
चारों ने एक साथ उसकी ओर देखा।
रुद्र के माथे पर एक हल्की सी रेखा उभर आई।
कबीर के चेहरे पर उलझन साफ झलक रही थी।
आलोक का गला सूख गया।
मयंक खुद को रोक नहीं पाया। उसने बहुत धीमी आवाज़ में पूछा—
'मतलब, महोदया?'
डीन ने कोई जवाब नहीं दिया।
उसने कुछ पल के लिए उनकी ओर देखा।
फिर, बहुत धीमी, लगभग फुसफुसाती हुई आवाज़ में, उसने कहा—
कभी-कभी... जो चीज आपकी ओर देखती है... आपको उसकी ओर नहीं देखना चाहिए।
कमरे में हवा मानो रुक सी गई।
यह वाक्य समझ में नहीं आया... लेकिन इसने गहरा प्रभाव छोड़ा।
कुछ सेकंड के लिए उसकी निगाहें उन पर टिकी रहीं। मानो वह यह सुनिश्चित कर रही हो कि यह बात उनके दिमाग में अच्छी तरह बैठ गई है।
फिर वह मुड़ी...
और वह वापस अपने केबिन के अंदर चली गई।
दरवाजा बंद हो गया।
उस बंद होने की हल्की सी आवाज कमरे में अजीब तरह से गूंज उठी...

जैसे किसी चीज की शुरुआत हो चुकी हो, जिसका असली मतलब वे अभी नहीं समझ पाएंगे... बल्कि बहुत बाद में समझ पाएंगे।"

"""

“रात के 9:40 बज रहे थे। वे निर्धारित समय से पहले ही आ गए थे - उनमें से कोई भी ठीक दस बजे नहीं पहुंचना चाहता था।”

कैंपस का पिछला हिस्सा दिन के समय भी कम भीड़भाड़ वाला रहता था, लेकिन रात में... वह जगह मानो दुनिया से कटी हुई सी लगती थी। स्ट्रीट लाइटें केवल कॉलेज की 'सुरक्षित' सीमा तक ही पहुँचती थीं। उसके आगे घना अंधेरा था—शांत, और अजीब तरह से जीवंत।

उस घोर अंधकार से एक पतला पैदल मार्ग निकला।

पुराने अनुसंधान ब्लॉक की ओर।

उसी दिशा में... जहाँ सीलबंद प्रयोगशाला थी।

वे चारों एक साथ चल रहे थे।

किसी को कोई जल्दी नहीं थी। किसी ने तेज चलने को भी नहीं कहा था।

फिर भी, कदम अपने आप तेज होते जा रहे थे—मानो शरीर मन से पहले ही वहां पहुंचना चाहता हो।

पहाड़ों की ठंडक हवा में घुल गई थी। सांस लेते ही सीने में ठंडक महसूस होती थी।

दूर कहीं बादल चांद को ढकते और खोलते रहते थे, और जब भी चांद निकलता, उसकी रोशनी पेड़ों की ऊँचाई से बिखरती हुई, टेढ़ी-मेढ़ी, असमान सी पड़ती थी।

मोबाइल नेटवर्क तो बहुत पहले ही गायब हो चुका था।

रुद्र ने अपनी स्क्रीन चेक की—‘नो सर्विस’।

उन्होंने हल्की हंसी के साथ कहा, 'अद्भुत... यहां तो SOS भी काम नहीं करेगा।'

किसी ने जवाब नहीं दिया।

सभी ने अपनी टॉर्च जला लीं।

प्रकाश की चार पतली किरणें अंधेरे को चीरने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन अंधेरा पीछे हटने के बजाय और गहराता जा रहा था।

प्रकाश पेड़ों के तनों से टकराकर वापस लौटता था, और उनकी लंबी परछाइयाँ जमीन पर अजीबोगरीब आकृतियाँ बनाने लगती थीं—कभी किसी व्यक्ति की तरह, कभी किसी दुबके हुए जानवर की तरह।

सूखी पत्तियों पर जूतों की चरमराहट की आवाज असामान्य रूप से स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

"क्रंच... क्रंच... क्रंच..."

ऐसा लग रहा था मानो हर कदम जंगल को बता रहा हो कि वे आ रहे हैं।

कभी-कभी अचानक हवा तेज़ हो जाती और पेड़ों की डालियाँ हिलने लगतीं, और पत्तों की सरसराहट कानों को अजीब सी लगती। फिर अचानक सब कुछ शांत हो जाता।

इतनी खामोशी कि अपनी सांसें भी भारी लगने लगीं।

ठीक तभी...

कुछ दूरी पर, दाहिनी ओर, झाड़ियों से हल्की सरसराहट की आवाज आई।

आवाज बहुत धीमी थी... लेकिन उस सन्नाटे में, वह चौंकाने के लिए काफी थी।

आलोक एकदम रुक गया।

उसकी टॉर्च से निकलती किरण कांपते हुए उस दिशा में गई।

‘क्या तुमने वो आवाज़ सुनी?’ उसकी आवाज़ फुसफुसाहट से भी धीमी थी।

बाकी तीनों भी रुक गए।

रुद्र ने वहां अपनी रोशनी डाली। कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

फिर हवा चली। पत्ते हिलने लगे।

लेकिन अब आवाज बंद हो गई थी।

जंगल में फिर से सन्नाटा छा गया।

इतनी खामोशी... मानो वहां कुछ था ही न।

लेकिन आलोक के दिल की धड़कन अब तेज हो गई थी।

‘वहाँ कुछ था...’

आलोक की आवाज गले में अटक गई। उसकी टॉर्च की रोशनी कांपती हुई झाड़ियों पर पड़ी, मानो रोशनी भी डर गई हो।

रुद्र ने तुरंत अपनी टॉर्च उस दिशा में घुमा दी।

‘यह जंगल है, आलोक... हवा भी आवाज करती है।’

वाक्य सामान्य था... लेकिन उसकी अपनी आवाज में भी वह आत्मविश्वास नहीं था जो वह दिखाना चाहता था।

कुछ सेकंड के लिए चारों वहीं खड़े रहे। कोई हलचल नहीं, कोई आवाज़ नहीं।

फिर वे आगे बढ़े।

लगभग पाँच मिनट तक, केवल कदमों की आहट सुनाई दी। कोई बातचीत नहीं, कोई मज़ाक नहीं। बस अँधेरा, ठंडी हवा और पेड़ों से छनकर आती टॉर्च की रोशनी।
तभी कबीर ने चुप्पी तोड़ते हुए धीरे से कहा—
'धिक्कार है... पता नहीं तुम दोनों की वजह से मैं किस मुसीबत में फंस गया हूँ।'
उनकी आवाज धीमी थी, लेकिन झुंझलाहट साफ झलक रही थी।
रुद्र ने तुरंत उसकी ओर देखा।
‘हमारे बीच? तुम्हें आने के लिए किसने कहा?’
कबीर रुक गया। उसने अपनी मशाल नीचे कर ली।
‘क्या मेरे पास कोई विकल्प था? तुमने निष्कासन की धमकी तो सुनी ही होगी।’
रुद्र ने उसकी ओर दो कदम बढ़ाए।
‘तो यह तुम्हारे अपने कर्मों का परिणाम है।’
कबीर का गुस्सा फिर से बढ़ने लगा। उसकी सांसें तेज हो गईं।
‘हीरो बनने की कोशिश मत करो। यहां तुम्हें कोई मेडल नहीं देने वाला।’
हवा एकदम शांत हो गई।
पेड़ अभी भी मौजूद हैं।
पत्ते अभी भी स्थिर हैं।
मानो जंगल भी उनकी आवाज़ें सुन रहा हो।
दोनों का आमना-सामना हुआ।
टॉर्च की रोशनी उनके चेहरों पर पड़ रही थी—उनकी आंखों में कोई चमक नहीं थी, बस तनाव था।
मयंक तुरंत उनके बीच आ गया। उसने बिना किसी घबराहट के, लेकिन दृढ़ स्वर में कहा—
'बस करो। यह लड़ने की जगह नहीं है।'
उनकी आवाज में न तो कोई विनती थी और न ही कोई आदेश—बस एक सच्चाई थी, जिसे उन दोनों ने महसूस किया।
आलोक ने भी बहुत धीमी आवाज़ में कहा,
‘कृपया... अभी नहीं...’
उसकी आवाज कांप रही थी।
कुछ सेकंड तक दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे। टॉर्च की रोशनी कांप रही थी, मानो इस

टकराव से प्रकाश भी असहज महसूस कर रहा हो।
फिर कबीर ने नजरें फेर लीं। उसने गहरी सांस ली, मुड़ा और बिना कुछ कहे आगे बढ़ गया।
रुद्र कुछ देर वहीं खड़ा रहा, फिर उसने भी एक कदम आगे बढ़ाया।
वातावरण में अब भी तनाव व्याप्त था। ऐसा लग रहा था मानो जंगल की ठंड भी उस तनाव को कम नहीं कर पा रही हो।
चलते-चलते मयंक ने चुप्पी तोड़ी—
क्या आपको यह अजीब नहीं लगता?
तीनों ने उसकी ओर देखा।
'इतना बड़ा कॉलेज... सैकड़ों छात्र... और डीन ने हम चारों को ही चुना।'
रुद्र ने धीमी आवाज में कहा,
और वो भी यह कहकर कि... जगह खुद ही चुन ली जाती है।
यह वाक्य उनके दिमाग में बार-बार घूमने लगा।
आलोक ने हिचकिचाते हुए कहा,
‘मतलब… हमें किसी कारण से बुलाया गया है?’
किसी के पास इसका जवाब नहीं था।
पेड़ों से होकर गुजरती हवा की आवाज के अलावा और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, मानो कोई लंबी आह भर रहा हो।
वे कुछ और कदम आगे बढ़े।
तभी टॉर्च की रोशनी किसी जंग लगी चीज पर पड़ी।
एक टेढ़ा लोहे का ढांचा।
एक पुराना, आधा टूटा हुआ तख्ता।
वे चारों उसके पास गए।
उन्होंने अपने हाथों से धूल साफ की।
जंग उखड़ गई थी, रंग फीका पड़ गया था... लेकिन शब्द अब भी पढ़े जा सकते थे—
प्रतिबंधित क्षेत्र — प्रवेश निषेध (2009)
चारों ने कुछ सेकंड तक उसे देखा।
किसी ने कुछ नहीं कहा।
अब यह कहानी जैसी नहीं लग रही थी।

यह सच था।
आलोक की आवाज बड़ी मुश्किल से निकली—
मतलब... यह सच है...
उसकी टॉर्च की रोशनी बोर्ड पर टिकी हुई थी। उसके हाथ कांप रहे थे।
जो अब तक एक कहानी, एक अफवाह या किसी डरावनी फाइल का हिस्सा लग रहा था... वह अचानक ठोस रूप ले चुका था। उनके सामने। जिसे छुआ जा सकता था।
वे आगे बढ़े।
जंगल अब पहले से कहीं अधिक घना हो गया था। पेड़ों की शाखाएँ ऊपर आसमान को ढकते हुए आपस में लिपटी हुई थीं। चाँदनी अब लगभग गायब हो चुकी थी। मशालें ही उनका एकमात्र सहारा थीं।
रास्ता संकरा होता जा रहा था।
हवा ठंडी है।
और सबसे अजीब बात यह थी कि जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, जंगल की आवाजें कम होती गईं।
कोई झींगुर नहीं।
पत्तों की सरसराहट नहीं सुनाई दी।
किसी भी जानवर की दूर तक कोई हलचल नहीं देखी गई।
सिर्फ उनके कदमों की आहट।
"टैप... टैप... टैप..."
मानो जंगल भी उनकी बातें सुन रहा हो।
मानो पेड़, झाड़ियाँ, हवा—सभी चुपचाप उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे हों।
लगभग दस मिनट बाद, टॉर्च की रोशनी पेड़ों के बीच किसी ठोस चीज पर पड़ी।
एक धुंधली आकृति उभरी।
चारों रुक गए।
प्रकाश स्थिर हो गया।
एक पुरानी इमारत।
दीवारें आधी काई से ढकी हुई थीं। जगह-जगह से प्लास्टर उखड़ रहा था। खिड़कियाँ टूटी हुई थीं, जिनका शीशा अब नुकीले टुकड़ों में बदल गया था। एक जंग लगा लोहे का फाटक थोड़ा टेढ़ा लटका हुआ था।

यह जगह सक्रिय नहीं लग रही थी।
यह एक सुनसान जगह थी।
एक भुला हुआ स्थान।
वे चारों वहीं खड़े रहे।
टॉर्च की रोशनी सीधे गेट पर पड़ी।
धूल और जंग के बीच, बड़े अक्षरों में धुंधला पेंट अभी भी दिखाई दे रहा था—
"बायोटेक रिसर्च लैब"
नीचे, एक पीली चेतावनी टेप अभी भी लटकी हुई थी, जो हवा न होने पर भी थोड़ी हिल रही थी... मानो किसी ने उसे छुआ हो।
रुद्र ने बहुत धीमी आवाज में कहा—
'यह बात है...'
किसी ने जवाब नहीं दिया।
किसी ने भी आगे बढ़कर कदम नहीं उठाया।
वे सभी बस उस गेट को देखते रहे।
अंदर घोर अंधेरा था।
ऐसा अंधकार... जो केवल प्रकाश की कमी से नहीं बनता। ऐसा अंधकार जो प्रकाश को अंदर आने से रोकता है।
उन चारों के दिल की धड़कनें उनके कानों में गूंज रही थीं।
"धड़कन...धड़कन...धड़कन..."
और ठीक उसी क्षण, बिना किसी के कहे, हर किसी ने एक ही भावना महसूस की—
शायद डीन ने उन्हें यहाँ नहीं भेजा था...
यह जगह उन्हें बुला रही थी।
जैसे ही वे अंदर दाखिल हुए... उनके पीछे एक जोरदार धातु की खड़खड़ाहट गूंजी।

अध्याय 6 – दीवारों में रहने वाला जीव

द्वार बंद था।
चारों निगाहें उस जंग लगे लोहे के दरवाजे पर टिकी हुई थीं, जो अब उनके और बाहर के जंगल के बीच एक दीवार बन गया था। टॉर्च की रोशनी उस पर उनकी सांसों की

तरह कांप रही थी।
“ये... ये... हमने इसे बंद नहीं किया,” आलोक की आवाज़ कांप रही थी। वह बिना सोचे समझे दरवाजे की ओर दौड़ा और उसे खोलने के लिए हाथ बढ़ाया। “ये खुल ही नहीं रहा! अंदर से बंद है!”
एक धक्का। एक लात। एक चीख। लेकिन दरवाजा जरा भी नहीं हिला। मानो उसे वेल्ड करके बंद कर दिया गया हो।
रुद्र ने उसे पीछे खींच लिया। “रुको, आलोक! शांत हो जाओ।” उसकी आवाज़ में भी घबराहट थी, लेकिन वह उसे दबा रहा था। “पागल मत हो जाओ। इसे जबरदस्ती खोला नहीं जा सकता।”
कबीर ने अपनी टॉर्च ऊपर-नीचे, बाएँ-दाएँ घुमाई। “क्या यहाँ कोई है? सामने आओ!” उसकी आवाज़ में गुस्सा था, लेकिन गुस्से की परत के नीचे डर की एक पतली सी झलक साफ़ दिखाई दे रही थी। “ये कोई मज़ाक है! डीन ने ही किया होगा! वो हमारी परीक्षा ले रही है!”
दीवार से टेक लगाकर, आंखें बंद किए मयंक गहरी सांसें ले रहा था। “नहीं... ये कोई परीक्षा नहीं है, कबीर,” उसने धीरे से कहा। “डीन ने जो चेतावनी दी थी... ‘अगर कोई तुम्हें घूरे... तो उसे देखने की कोशिश मत करना।’ यही वो चेतावनी है।”
उनके शब्दों ने माहौल को और भी तनावपूर्ण बना दिया।
आलोक का शरीर कांप रहा था। "हमें यहाँ से निकलना होगा... निकलना होगा..." वह आँखें फाड़कर बुदबुदा रहा था।
“और हम बाहर कैसे निकलें?” रुद्र ने बंद गेट पर टॉर्च की रोशनी डालते हुए कहा।
“यह रास्ता बंद है। अगर यहाँ कोई और है... या कुछ और है... तो इसने हमें अंदर फंसा लिया है। हमें कोई दूसरा रास्ता ढूंढना होगा। शायद कोई दूसरा दरवाजा, कोई खिड़की।”
“खिड़कियाँ?” कबीर ने ताना मारा, “क्या तुमने ध्यान नहीं दिया? इस पूरी इमारत की खिड़कियाँ बाहर से सीमेंट से बंद कर दी गई हैं। हम एक बंद डिब्बे में फँस गए हैं, रुद्र।”
यह सच था। डीन ने खुद कहा था कि 2009 के बाद पूरी प्रयोगशाला को सील कर दिया गया था। यहां तक कि वेंटिलेशन के दरवाजे भी बंद कर दिए गए थे।
तभी एक आवाज आई।

"टप...टप...टप..."
धीमी, लेकिन स्पष्ट। पानी की एक बूंद गिरने की आवाज़।
चारों ने कान खड़े कर लिए। टॉर्च की रोशनी एक साथ आवाज़ की दिशा में मुड़ गई—वही मुख्य हॉल जहाँ वे पहले थे, और उसके आगे का अँधेरा गलियारा।
कबीर ने कहा, "पानी टपक रहा है," लेकिन उनकी आवाज में पहले जैसा आत्मविश्वास नहीं था।
“इतने सालों से बंद पड़ी जगह में पानी कहाँ से आएगा?” मयंक ने आँखें खोलकर सवाल किया। उसकी निगाहें तेज़ थीं, दिमाग तेज़ी से चल रहा था। “यहाँ की पाइपलाइनें तो बहुत पहले ही काट दी गई होंगी।”
"टप...टप...ड-..."
आवाज बदल गई। अब यह नियमित नहीं थी। बूंदों के बीच एक घर्षण की आवाज आ रही थी, मानो कोई गाढ़ा तरल पदार्थ फिसल रहा हो।
रुद्र ने गहरी सांस ली। “हमें साथ रहना होगा। अलग मत होइए। देखते हैं आगे क्या होता है। शायद कोई दूसरा रास्ता हो।”
“क्या तुम पागल हो?” आलोक ने उसका हाथ पकड़ लिया, “हम वहाँ नहीं जा रहे! यहीं रहो!”
“हम यहाँ खड़े रहकर क्या करेंगे?” रुद्र ने अपना हाथ धीरे से हटा लिया। “आलोक, डरना स्वाभाविक है। मुझे भी डर लग रहा है। लेकिन डर से परे भी जीत होती है। हम यहाँ यूँ ही नहीं बैठ सकते।”
मयंक ने सिर हिलाया। “रुद्र सही कह रहा है। हमें कार्रवाई करनी होगी। लेकिन सावधानी से। बहुत सावधानी से।”
कबीर चुपचाप सुन रहा था। अचानक उसने अपनी जेब से एक छोटा सा स्विस आर्मी चाकू निकाला। चाकू खोलते हुए उसने कहा, "जो भी हो जाए, मैं बिना लड़े नहीं मरूंगा।"
बाकी लोगों को यह थोड़ा अजीब लगा। कबीर, जो कक्षा का गुंडा था, यहाँ चाकू में सुरक्षा का भाव ढूंढ रहा था। लेकिन इस समय, कोई भी हथियार सुकून देने वाला लग रहा था।
चारों एक के पीछे एक, धीरे-धीरे उस गहरे गलियारे की ओर बढ़ने लगे। चारों मशालों की रोशनी भी घने अंधेरे को भेद नहीं पा रही थी। दीवारों पर नमी के काले धब्बे फैले

हुए थे। फर्श चिपचिपा लग रहा था।
"टपकना... चिपचिपा पदार्थ... टपकना..."
आवाज करीब आती जा रही थी।
गलियारा एक दरवाजे पर आकर समाप्त हुआ। यह दरवाजा बाकी दरवाजों से अलग था—मजबूत लकड़ी का बना हुआ, जिसमें एक छोटी खिड़की थी, जो अंदर से काले रंग से रंगी हुई थी। दरवाजे के ऊपर एक बोर्ड लटका हुआ था, जिस पर लिखा था:
मुख्य प्रयोगशाला – केवल अधिकृत कर्मियों के लिए
दरवाजा बंद नहीं था। वह थोड़ा सा खुला हुआ था, बस एक इंच।
और उसी से वह आवाज आ रही थी।
सब लोग थम गए। केवल उनकी सांसों की आवाज सुनाई दे रही थी। रुद्र ने मयंक की ओर देखा। मयंक ने आंखों से इशारा किया—'तैयार रहो।'
रुद्र ने धीरे से अपना पैर आगे बढ़ाया और दरवाजे को धक्का दिया।
दरवाजा बिना किसी चरमराहट के, एक अजीब सी खामोशी के साथ खुल गया।
टॉर्च की रोशनी से अंदर का भयावह दृश्य सामने आया।
यह विशाल प्रयोगशाला थी। एक तरफ लंबी-लंबी प्रयोगशाला की मेजें थीं, जिन पर अब भी सूक्ष्मदर्शी, टेस्ट ट्यूब होल्डर, पेट्री डिश और अनगिनत उपकरण रखे हुए थे, मानो सब कुछ जल्दबाजी में वहीं छोड़ दिया गया हो। मेजों पर पड़े कुछ कागजों पर नोट्स अभी भी दिखाई दे रहे थे। कुर्सियाँ इधर-उधर बिखरी हुई थीं।
लेकिन यह सब सामान्य नहीं था।
दीवारों पर... उन भयानक दीवारों पर...
पूरी दीवारें काले, लाल और भूरे धब्बों से ढकी हुई थीं। ये पेंट नहीं था। ये कुछ और ही था, सूखा हुआ, फटा हुआ, उखड़ा हुआ। कुछ जगहों पर लंबे निशान थे, मानो किसी जानवर ने अपने पंजे दीवार पर घसीटे हों। फर्श पर भी वैसे ही धब्बे थे, और फर्श के ठीक बीच में एक बड़ा काला धब्बा था, जहाँ से "टप...टप..." की आवाज़ आ रही थी।
ऊपर, छत से एक टूटा हुआ पाइप लटका हुआ था। उससे गाढ़ा, काला तरल टपक रहा था, जो फर्श पर जमे हुए उसी बड़े धब्बे में गिर रहा था। हर बूंद के साथ हल्की भाप उठ रही थी, और सड़े हुए अंडों और रसायनों की तीखी दुर्गंध हवा में मिलकर और भी घनी होती जा रही थी।
हे भगवान..." आलोक ने अपना मुंह ढँक लिया। उसे उल्टी आने जैसा महसूस हो रहा

था।
कबीर का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने उस दृश्य की कल्पना भी नहीं की थी जो वह देख रहा था।
मयंक ने अपनी टॉर्च मेज की ओर घुमाई। उस पर एक लैब कोट पड़ा था। कोट साफ नहीं था। उस पर वही काले धब्बे थे। और उसके बगल में एक डायरी पड़ी थी। कवर पर नाम लिखा था – "अनुराग शर्मा (बैच 2009)"।
मयंक दबे पांव मेज तक गया। उसने डायरी उठाई। पन्ने चिपचिपे थे, मानो नमी से फूले हुए हों। उसने धीरे से पहला पन्ना खोला।
टॉर्च की रोशनी में लिखावट साफ दिखाई दे रही थी।
""प्रोजेक्ट 'एंडोजेनस म्यूटेशन'। डॉ. मीरा कहती हैं कि यह क्रांतिकारी होगा। लेकिन रात के प्रयोगों से... मुझे डर लग रहा है। आज नमूना X-7 ने दीवार पर हमला कर दिया। वह मरा नहीं था। बस... बदल गया था।"
मयंक ने पन्ना पलटा।
वे हमसे झूठ बोल रहे हैं। यह सिर्फ शोध नहीं है। यह कुछ और है। कुछ ऐसा जिसे उन्होंने जमीन के नीचे से, पुरानी खानों से खोदा है। यह... जीवित है। और यह हमारे डीएनए के साथ खिलवाड़ कर रहा है।
अगले पृष्ठ पर लिखी लिखावट और भी ज्यादा घबराहट भरी और कांपती हुई थी।
आज रात आखिरी इंजेक्शन है। डॉ. मीरा ने कहा, या तो हम इतिहास रचेंगे, या इतिहास में गुम हो जाएंगे। मुझे नहीं पता मैंने हाँ क्यों कहा। सब कुछ गलत हो रहा है। आवाजें आ रही हैं। दीवारों में। पाइपों में। यह हमें देख रहा है।
आखिरी प्रविष्टि सिर्फ एक पंक्ति की थी, बड़े-बड़े, फैले हुए अक्षरों में, मानो लिखते समय हाथ बुरी तरह कांप रहा हो:
""इस दरवाजे को मत खोलो। यह बाहर जाने का रास्ता है। मदद करो —""""
लेखन वहीं समाप्त हो गया। उसके बाद के पन्ने खाली थे, या शायद इतने दागों से भरे हुए थे कि उन्हें पढ़ा नहीं जा सकता था।
मयंक ने डायरी बंद कर दी। उसका हाथ कांप रहा था। उसने डायरी में लिखी बातें सबके सामने जोर से पढ़ीं।
"यह दरवाजा..." आलोक ने धीमी आवाज़ में कहा, "...यह वही दरवाजा होना चाहिए जिसे 2009 की रात तोड़कर खोला गया था।"

“और वो क्या है?” कबीर ने पूछा, उसकी आवाज़ में अब क्रोध नहीं, केवल भय था।
“वो कौन सी चीज़ बाहर निकल गई थी?”
तभी, दूर कोने में एक मेज के पीछे से एक आवाज आई।
"स्क्रू..."
ऐसा लग रहा था मानो कोई भारी चीज फर्श पर घसीटी जा रही हो।
चारों की रीढ़ की हड्डी में एक झनझनाहट दौड़ गई। मशालें तुरंत उस कोने की ओर मुड़ गईं।
वहाँ कुछ भी नहीं था। बस एक उलटी हुई मेज और उसके पीछे गहरी छाया।
“क्या कोई है?” रुद्र ने पुकारा। उसकी आवाज हॉल में गूंजी और फिर शांत हो गई।
जवाब में मौन।
फिर वही आवाज़ आई। "स्क्रू..." लेकिन अब दूसरी दिशा से—उनके पीछे, दरवाजे के पास से।
वे तेजी से घूम गए।
एक खाली दरवाजा।
“यह हमारे साथ खेल रहा है,” मयंक ने फुसफुसाते हुए कहा। “यह हमें चारों ओर से घेर रहा है।”
आलोक का मन पूरी तरह भय के आगे झुक गया था। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। “मैं घर जाना चाहता हूँ... माँ... मुझे अपनी माँ की बहुत याद आ रही है...”
यह देखकर कबीर के भीतर कुछ टूट गया। शायद पहली बार उसे एहसास हुआ कि आलोक सिर्फ एक डरा हुआ लड़का था, उसके गुस्से का निशाना नहीं। अनजाने में ही उसने आलोक के कंधे पर हाथ रख दिया। "शांत हो जाओ। हम सब साथ हैं।"
आलोक के लिए उस छोटे से इशारे का बहुत महत्व था।
अचानक, प्रयोगशाला की बंद दीवारों के भीतर कहीं गहराई में, एक पुराना बैकअप जनरेटर कर्कश धातुई गर्जना के साथ चालू हो गया। एक पल बाद, पूरी प्रयोगशाला की बत्तियाँ टिमटिमा उठीं।
‘फज़ज़ज़...’ एक तीखी आवाज़ के साथ, ऊपर लगी कुछ ट्यूबलाइटें जल उठीं, जिससे कमरे में एक बुझती हुई पीली रोशनी फैल गई। रोशनी धीमी गति से टिमटिमा रही थी, मानो कोई दीपक अपनी आखिरी साँस ले रहा हो। लेकिन यह टॉर्च पर उनकी निर्भरता को कम करने के लिए काफी था।

अब वे पूरी प्रयोगशाला को स्पष्ट रूप से देख सकते थे।
और जो उन्होंने देखा, उसे देखकर वे चीखने ही वाले थे।
छत पर... पूरी छत पर... आकृतियाँ थीं।
छत के प्लास्टर पर लंबी, टेढ़ी-मेढ़ी, घुमावदार आकृतियाँ उभरी हुई थीं। जैसे बेलें फैल रही हों। लेकिन ये बेलें नहीं थीं। इनमें जोड़ थे। ये अंगों की तरह थीं। कुछ आकृतियों पर तो पाँच उंगलियों के निशान भी थे, मानो छत में धंसे हुए हों। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने छत के ऊपर से, या छत के अंदर से धक्का देकर ये आकृतियाँ बनाई हों।
“यह क्या है...?” रुद्र ने ऊपर देखा, उसका मुंह खुला रह गया था।
“छत के ऊपर कुछ है...” मयंक ने कहा।
कबीर ने लड़खड़ाती आवाज में कहा, "नहीं, छत के 'अंदर' कुछ है।"
टिमटिमाती रोशनी में वे आकृतियाँ और भी भयावह लग रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो वे एक इंच प्रति घंटे की धीमी गति से आगे बढ़ रही हों।
तब उन्हें समझ आया कि बत्तियाँ क्यों जली होंगी।
उन्होंने देखा कि प्रयोगशाला के दूसरे छोर पर एक और दरवाजा था, जो अब तक अंधेरे में छिपा हुआ था। उसके ऊपर एक लाल बत्ती जल रही थी और एक चिन्ह लगा हुआ था: "आपातकालीन निकास"।
“निकास द्वार!” आलोक ने आशा से चिल्लाते हुए कहा।
लेकिन उस निकास तक पहुँचने के लिए उन्हें पूरी प्रयोगशाला पार करनी पड़ी। और प्रयोगशाला के ठीक बीचोंबीच वह विशाल काला धब्बा था, जहाँ से टपकने की आवाज़ आ रही थी। उसके आसपास की ज़मीन में जगह-जगह दरारें थीं।
“देखो,” मयंक ने इशारा किया।
आपातकालीन निकास द्वार के पास, ज़मीन पर कुछ चमक रहा था। एक मोबाइल फ़ोन। उसकी स्क्रीन ऊपर की ओर थी और उस पर एक संदेश की सूचना चमक रही थी।
"भागो। यह हर जगह है।"
संदेश में प्रेषक का नंबर नहीं था। उसमें केवल 'अज्ञात' लिखा था।
“यह किसका फोन है?” रुद्र ने पूछा।
“शायद 2009 बैच के छात्रों में से एक होगा,” मयंक ने कहा। “लेकिन संदेश... हाल

का लगता है। यहाँ सिग्नल नहीं आता। तो यह संदेश कैसे आया?”
वे फिर से स्तब्ध रह गए। कोई उन्हें देख रहा था। कोई उनसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा था। या... यह एक जाल था।
"स्क्रू... क्लंक!"
यह आवाज ठीक उनके ऊपर से आई थी।
उन्होंने ऊपर की ओर देखा।
छत पर, ठीक उनके ऊपर, वह आकृति... हिल गई थी।
टिमटिमाती रोशनी में ऐसा लग रहा था मानो उस आकृति ने अपना 'सिर' घुमा लिया हो और अब उसका 'चेहरा' उनकी ओर हो। उसमें न तो आंखें थीं, न नाक, न मुंह, लेकिन उभरे हुए प्लास्टर में दो गहरे निशान थे, जो सीधे उन चारों को घूर रहे थे।
फिर एक आवाज आई।
यह शब्दों की आवाज़ नहीं थी। यह एक कराह थी। एक लंबी, दर्द से भरी, निराशा से लथपथ कराह। यह पूरी प्रयोगशाला में गूंज उठी, दीवारों से टकराई और ऐसा लगा मानो उनके कान के पर्दे फाड़ देगी।
यह आवाज़ उन्हें बता रही थी कि यहाँ जो कुछ हुआ था उसका दर्द अभी खत्म नहीं हुआ था। यह दर्द अभी भी जीवित था, इन दीवारों में, इस छत में, इस हवा में।
आलोक चीख उठा। उसने अपने कान ढँक लिए।
कबीर ने अपनी छुरी लहराई, लेकिन उसका हाथ इतना कांप रहा था कि छुरी फर्श पर गिर गई।
रुद्र ने फैसला कर लिया। “हमें उस निकास तक पहुंचना ही होगा। अभी!”
“लेकिन छत पर वो चीज—” मयंक ने कहा।
“हमें चुनना होगा! यहाँ खड़े-खड़े हम पागल हो जाएँगे!” रुद्र ने आलोक का हाथ पकड़ लिया। “भागो! सीधे भागो! फ़ोन मत उठाओ! बस दरवाज़े तक पहुँचो!”
वे चारों एक साथ दौड़ने लगे।
चिपचिपी ज़मीन पर चलने से उनके पैरों से आवाज़ें आ रही थीं। जैसे ही वे प्रयोगशाला के बीचोंबीच पहुँचे, उनके सामने काला धब्बा दिखाई दिया। उन्होंने उससे बचकर दाईं ओर से जाने का फैसला किया।
लेकिन जैसे ही रुद्र ने दाहिनी ओर मुड़ने के लिए एक कदम बढ़ाया...
छत से कुछ गिरा।

"धड़ाम!"

यह एक गाढ़ा, काला गोला था जो फर्श पर गिरा और फैल गया। यह पाइप से टपकते तरल पदार्थ जैसा था, लेकिन उससे भी अधिक गाढ़ा। और इससे एक तीखी, दम घोंटने वाली दुर्गंध आ रही थी।

वे रुक गए। आगे का रास्ता अवरुद्ध था।

“बाएं!” मयंक चिल्लाया।

वे बाईं ओर भागे। लेकिन वहाँ भी, एक और मेज के पीछे से, वही "स्क्रू..." की आवाज़ आई, और इस बार और करीब से।

अब वे बीच में फंस गए थे। सामने आपातकालीन निकास द्वार था, लेकिन उस तक पहुँचने का रास्ता अवरुद्ध प्रतीत हो रहा था। और जिस रास्ते से वे आए थे, वह भी अब सुरक्षित नहीं लग रहा था।

तभी दरवाजे के पास पड़ा मोबाइल फोन फिर से चमक उठा।

इस बार उस पर एक वीडियो चल रहा था। सुरक्षा कैमरे की फुटेज।

ब्लैक एंड व्हाइट फुटेज में यही लैब दिखाई दे रही थी। रात का समय था। लैब कोट पहने कई छात्र काम कर रहे थे। लैब कोट पहने एक महिला नोट्स ले रही थी। तभी अचानक सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। एक छात्र चीखा, फिर दूसरा। वे इधर-उधर भागने लगे। कैमरे का एंगल ऊपर की ओर झुका और फिर अचानक नीचे गिर गया। गिरे हुए कैमरे के आखिरी फ्रेम में सिर्फ पैर दिखाई दे रहे थे—भागते हुए पैर। और फिर... कुछ और पैर। पतले, लंबे, जोड़ों से मुड़े हुए... दीवार पर चलते हुए।

फुटेज वहीं रुक गया।

मोबाइल की स्क्रीन फिर से काली हो गई।

उन चारों के दिमाग सुन्न हो गए थे। उन्हें जो कुछ उन्होंने देखा था, उसे समझने में समय लग रहा था।

“दीवार पर... वे चल रहे थे...” आलोक ने बुदबुदाया।

“तो वो आकृतियाँ...” मयंक ने छत की ओर देखा, “...ये वही हैं। 2009 के वो छात्र... या जो भी वो बने। वे यहीं हैं। हमारे ऊपर। हमारे चारों ओर।”

यह सुनकर सबका हौसला पस्त हो गया। डर अब एक ठोस, सजीव वस्तु बन गया था, जो उनकी सांसें रोक रहा था।

अचानक, आपातकालीन निकास द्वार हिल गया।

सबकी निगाहें उसी पर टिकी हुई थीं।
दरवाजे के हैंडल पर एक हाथ बना हुआ था।
एक इंसान का हाथ। पीला, पतला, लेकिन इंसान का।
दरवाजा धीरे-धीरे अंदर की ओर खुलने लगा।
उसकी दरार से अंधेरा दिखाई दे रहा था।
और फिर एक आवाज़ आई। एक इंसान की आवाज़। कमज़ोर, थकी हुई, लेकिन साफ़।
"अंदर आ जाओ... जल्दी... यह जाग रहा है।"
दरवाजा पूरी तरह खुल गया। अंदर एक संकरा, अंधेरा सुरंग जैसा रास्ता था। और उसके प्रवेश द्वार पर, टिमटिमाती लाल रोशनी के सामने, एक आकृति खड़ी थी।
वह एक आदमी था। या कम से कम कभी आदमी रहा होगा।
उसके कपड़े फटे हुए थे, शरीर पर निशान थे। उसका चेहरा बेहद मुरझाया हुआ था, आँखें धँसी हुई थीं। लेकिन उन आँखों में अब भी जागरूकता की एक चिंगारी बाकी थी।
उन्होंने उनकी ओर देखा और अपने शब्दों को दोहराया।
“अगर आप जिंदा रहना चाहते हैं, तो अंदर आ जाइए। अभी।”
उन चारों के पास कोई चारा नहीं था। उनके पीछे छत पर एक चीज़ थी, जो अब तेज़ी से हिल रही थी, मानो छत का प्लास्टर गिरने ही वाला हो। उनके चारों ओर एक भिनभिनाहट गूंज रही थी, मानो हजारों मक्खियाँ भिनभिना रही हों।
रुद्र ने फैसला सुनाया। "चलो चलें!"
चारों उस आपातकालीन निकास की ओर भागे। अजनबी ने रास्ता दे दिया। एक-एक करके वे उस अंधेरी सुरंग में दाखिल हुए। रुद्र सबसे आखिर में अंदर गया।
अजनबी के दरवाजा बंद करने से पहले, रुद्र ने आखिरी बार देखने के लिए मुड़कर देखा।
उसने जो कुछ देखा, वह जीवन भर उसके सपनों में उसे सताता रहेगा।
छत से, जहाँ वह आकृति थी, प्लास्टर का एक बड़ा टुकड़ा टूटकर गिर गया। और उसके पीछे से... कुछ निकला। एक लंबा, काला, जुड़ा हुआ अंग, किसी इंसान की बांह जैसा—लेकिन पूरी तरह नहीं। उसके सिरे पर पाँच लंबे, तेज धार वाले हिस्से थे, नुकीली उंगलियों की तरह, जो पत्थर पर धातु की तरह दीवार से रगड़ते हुए धीरे-धीरे

फर्श की ओर बढ़ रहे थे।
और फिर, उस अंधेरी, टिमटिमाती प्रयोगशाला में, रुद्र को लगा कि उसने एक आंख देखी है।
एक बड़ी, काली, भावहीन आंख, सीधे उसकी आंखों में घूर रही थी।
दरवाजा जोर से बंद हो गया।
बाहर से सुनाई देने वाली आखिरी आवाज एक लंबी, दर्द भरी कराह थी, जिसमें क्रोध, भूख और एक अंतहीन दुख का मिश्रण था।
फिर सन्नाटा छा गया।
अब वे एक घोर अंधेरी सुरंग में थे, जहाँ केवल उनकी हांफने की आवाज़ और अजनबी की सिसकती साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। टॉर्च की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी।
“तुम… तुम कौन हो?” मयंक ने कांपती हुई आवाज में पूछा।
उस आदमी ने कड़वी मुस्कान दी। उसके दांत पीले और टूटे हुए थे।
“मैं वो हूँ जो 2009 में नहीं मरा,” उसने कहा। “मेरा नाम रोहित है। रोहित सिंह। और अगर आप ज़िंदा रहना चाहते हैं, तो मेरी बात ध्यान से सुनिए… क्योंकि आप ही वो लोग हैं जो अब इस सब का अंत कर सकते हैं।”

अध्याय 7: सुरंग के अंदर की सच्चाई

उस घने, चिपचिपे सन्नाटे में, केवल साँसों की सरसराहट और दिलों की तेज़ धड़कन ही सुनाई दे रही थी। वह बंद दरवाज़ा अब उनके और उस भयानक दुनिया के बीच एक पतली, लोहे की दीवार मात्र रह गया था, जिसके पार से निकली आखिरी लंबी, टूटी हुई कराह—क्रोध, भूख और गहरे, अंतहीन दुख से भरी हुई—अभी भी उनकी रीढ़ की हड्डी में जमी हुई थी। रुद्र, कबीर, आलोक और मयंक अब एक अलग ही दुनिया में खड़े थे। एक अंधेरी, नम और सिकुड़ी हुई दुनिया, जिसकी हवा में न केवल सड़न थी, बल्कि एक तीखी, धातु जैसी रासायनिक गंध भी थी जो जीभ पर कड़वाहट छोड़ जाती थी।
टॉर्च की रोशनी झिलमिला रही थी, अजनबी के चेहरे की बनावट पर नाच रही थी, जिसने अपना परिचय 'रोहित सिंह' के रूप में दिया था। उसकी आँखें - धँसी हुई थीं,

लेकिन उनकी गहराई में एक अविश्वसनीय जीवंत चमक थी - चारों के चेहरों पर ऐसे घूम रही थीं जैसे कोई अनुभवी योद्धा नए रंगरूटों का आकलन कर रहा हो।
मयंक, जिसका दिमाग हमेशा सूचनाओं का जाल बुनने और कारण-परिणाम की कड़ियों को जोड़ने में व्यस्त रहता था, सबसे पहले बोला। उसकी आवाज़ सामान्य से थोड़ी भारी थी, लेकिन उसमें एक तीखापन था। "तुम... तुम असल में कौन हो? और इतने सालों से यहाँ अकेले हो?"
रोहित के फटे होंठों पर एक कड़वी, थकी हुई मुस्कान फैली। वह मुस्कान उसकी आँखों तक नहीं पहुँची। "मैं वही भूत हूँ जो 2009 की उस रात का गवाह बना रहा। वह जो मर नहीं सका... या शायद मरने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।" उसने गहरी साँस ली, जिससे उसकी पतली पसलियाँ उभर आईं। "और अगर तुम्हारी साँसें अब भी तुम्हारे बस में हैं, अगर उस 'चीज़' का सामना करने के बाद भी तुम्हें अपने नाम याद हैं, तो मेरी बात ध्यान से सुनो। क्योंकि तुम चारों ही इस पुराने अध्याय... इस पूरे अभिशाप को खत्म करने की चाबी रखते हो।"
उनके शब्दों में अटूट विश्वास और दृढ़ संकल्प था, जो उनके अपने भय के सागर में एक लंगर की तरह खड़ा था।
"लेकिन पहले," रोहित ने दरवाजे से पीठ टिकाते हुए कहा, "हमें यहाँ से निकलना होगा। यह दरवाजा इसे रोक नहीं पाएगा। यह जाग चुका है।"
बिना कोई और स्पष्टीकरण दिए, वह सुरंग की गहरी, धुएं से भरी अंधेरी सतह की ओर मुड़ा और चलने लगा। केवल उसके पैरों की आहट से ही पता चल रहा था कि वह किस दिशा में जा रहा है।
उनके पास कोई विकल्प नहीं था। उनके पीछे दरवाज़ा था, जिसके पार अकल्पनीय सच्चाई छिपी थी। आगे, बस एक अजनबी और एक अंधेरी गुफा। एक-दूसरे की ओर देखे बिना, मौन सहमति से, वे उसके पीछे चल दिए। चिपचिपी नमी में फिसलते उनके कदमों की आवाज़ सुरंग की गूंज में डूब गई।
यह सुरंग इमारत की धमनियों जैसी थी। पुरानी हीटिंग पाइपों, बिजली की नलियों और शायद गुप्त रासायनिक पदार्थों के निपटान के लिए बनी यह जगह अब सड़ रही थी। दीवारें ठंडी और पसीने से तर थीं, उनसे लगातार मटमैला, भूरा पानी टपक रहा था। "टप...टप..." की आवाज़ पूरी तरह नियमित नहीं थी। कभी-कभी कई बूँदें एक साथ तेज़ी से गिरतीं, फिर लंबे समय तक सन्नाटा छा जाता। ऐसा लग रहा था मानो

इमारत खुद अपने घावों से रिस रही हो। हवा में फफूंद, सड़ी हुई लकड़ी और एक अजीब सी मीठी-सी सड़न की गंध थी—जैसे सड़े हुए मांस और एंटीसेप्टिक का मिला-जुला स्वाद हो। गंध इतनी तेज़ थी कि आलोक ने अपनी कमीज़ का कॉलर अपने मुँह पर लपेट लिया, लेकिन गंध त्वचा में समाती हुई लग रही थी, जिससे उसे मतली हो रही थी।

टॉर्च की रोशनी जहाँ भी पड़ती, वहाँ एक विकृत जीवन दिखाई देता। असामान्य रूप से बड़े, काले, चमकदार तिलचट्टे दीवारों पर तेज़ी से दौड़ते और रोशनी पड़ते ही दरारों में गायब हो जाते। कुछ कीड़े ऐसे थे जो आपको विज्ञान पत्रिका के बाहर देखने को नहीं मिलते—छोटे, रेंगने वाले, पारदर्शी शरीर वाले और जिनके अंदर हरा तरल पदार्थ दिखाई देता था। कुछ जगहों पर, सफेद, बिना आँखों वाले कीड़ों के झुंड नम दीवारों से चिपके हुए थे, रोशनी पड़ते ही गायब हो जाते। फर्श पर मोटी, मखमली काली फफूंद की परत बिछी थी, जो जूतों के नीचे दबने पर एक अजीब सी गर्माहट पैदा करती थी।

लगभग दस मिनट चलने के बाद कबीर अचानक रुक गया। उसने हाथ उठाया, मुंह बंद कर लिया। उसकी आंखें सुन्न थीं, कान चौकन्ने थे। "रुको... सुनो।"

सब लोग स्तब्ध रह गए। चारों ओर बस टपकते पानी की आवाज़ और उनकी हांफती साँसें सुनाई दे रही थीं। तभी एक आवाज़ आई—एक गहरी, लंबी, कर्कश गुर्राहट। यह किसी कुत्ते या बिल्ली की गुर्राहट नहीं थी। यह ज़्यादा "खोखली", ज़्यादा "वीरान" थी। जैसे किसी विशाल, खाली सुरंग के मुँह से हवा का दबाव निकल रहा हो। आवाज़ दूर से आ रही थी, सुरंग की उस दिशा से जहाँ अभी तक कोई नहीं गया था, लेकिन उसमें इतनी नज़दीकी थी कि ऐसा लग रहा था मानो वह उनके चारों ओर की दीवारों में समा गई हो।

आलोक का शरीर एकदम अकड़ गया। उसकी साँसें तेज़ और छोटी हो गईं, आँखें डर से चौड़ी हो गईं। "नहीं... यह यहाँ भी है... यह यहाँ भी है!" वह बुदबुदाया, और फिर, बेसुध डर के आगे हार मानकर, उसी बंद दरवाजे की ओर पीछे की ओर भागा, जहाँ से वे आए थे। उसके पैर फिसले, वह गिर गया, तुरंत उठा और दोनों हाथों से दरवाजे की कुंडी खींचने लगा, जबकि उन्हें पता था कि वह बंद है।

"आलोक, रुक जाओ, मूर्ख!" कबीर की दहाड़ सुरंग में गूंज उठी। वह दो लंबे कदम बढ़ाते हुए आलोक के पास पहुंचा, उसके कंधे पकड़े और उसे ज़ोर से घुमा दिया। "पीछे क्या है, समझ रहे हो? वह बड़ा हाथ! वह आंख! कम से कम यहां यह आदमी

तो है!" कबीर का चेहरा गुस्से से लाल था, लेकिन उसकी आंखों में गुस्सा नहीं, बल्कि एक दृढ़, बेचैन चिंता थी—एक ऐसी चिंता जो उसके लिए बिल्कुल नई थी।
"लेकिन मैं नहीं कर सकता, कबीर!" आलोक चीखा, धूल से सने उसके चेहरे पर आँसू बह रहे थे। उसकी आवाज़ काँप रही थी। "मुझे तो अँधेरे से भी डर लगता है! मुझे छिपकलियों से भी डर लगता है! ये सब... ये नरक... मैं इसे सहन नहीं कर सकता! मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?"
कबीर ने उसे गौर से देखा। सचमुच गौर से। आलोक, जिसे वह कक्षा में चिढ़ाता था, जिसकी हर हरकत पर हँसता था, जिसे वह दुनिया का सबसे कमज़ोर और निकम्मा लड़का समझता था, अब डर से पूरी तरह टूटा हुआ, घुटता हुआ इंसान था। कबीर के सीने में कुछ हलचल हुई। उसके चेहरे की कठोर रेखाएँ थोड़ी नरम पड़ गईं। उसकी आवाज़, जो अब तक गर्जना जैसी थी, अचानक धीमी और सपाट हो गई। "तुम अकेले नहीं हो, समझे? हम सब यहाँ फँसे हुए हैं। मैं यहाँ हूँ। देखो," उसने अपना हाथ उठाया, जो अभी भी गंदगी से सना हुआ था। "अगर तुम भागोगे, तो अकेले मरोगे। कोई तुम्हारी मदद नहीं करेगा। साथ रहो। बस... साथ रहो।"
कबीर के मुंह से ऐसे शब्द सुनना आलोक के लिए अविश्वसनीय था। उसने हिचकिचाते हुए सिर हिलाया और अपने आंसू पोंछे। कबीर ने उसकी पीठ पर अजीब तरह से भारी थपथपाया— यह सांत्वना देने का प्रयास नहीं था, बल्कि यह कहने का प्रयास था कि 'मैं तुम्हारे साथ हूं।'
रुद्र और मयंक यह सब चुपचाप देख रहे थे। कबीर के प्रति रुद्र के मन में एक अलग ही भावना उमड़ी—शायद सम्मान की। वह आगे बढ़ा और रोहित की ओर मुड़ा, जो इस पूरे दृश्य को शांत, थकी हुई धैर्य से देख रहा था। "बस करो। अब बहुत हो गया।" उसकी आवाज़ में एक नेता का दबाव था। "अब तुम्हारी बारी है, रोहित। हमें सब कुछ बताओ। यहाँ क्या हुआ? दीवारों में रेंगने वाली वह चीज़ क्या है? और सबसे महत्वपूर्ण बात... हम चारों को ही क्यों चुना गया? खासकर उसे?" उसने आलोक की ओर इशारा किया।
रोहित ने एक लंबी, दर्द भरी साँस ली, मानो वह किसी बहुत पुराने और दर्दनाक सच को फिर से छूने के लिए खुद को तैयार कर रहा हो। वह धीरे से एक नम सुरंग की दीवार से टेक लगाकर बैठ गया, उसकी पीठ में हल्की सी कंपकंपी थी। बाकी लोग भी, थके-हारे और मानसिक रूप से टूटे हुए, उसके चारों ओर ज़मीन पर बैठ गए। चारों

मशालों की रोशनी मिलकर एक छोटा, गर्म प्रकाश का घेरा बना रही थी, जो आसपास के घने अंधेरे को थोड़ा सा पीछे धकेल रही थी।

"साल 2009," रोहित ने अपनी बात शुरू की, उसकी आवाज़ एकदम सपाट हो गई थी, मानो वह कोई रिपोर्ट पढ़ रहा हो। "मैं जैव प्रौद्योगिकी विभाग में जूनियर रिसर्च असिस्टेंट था। डॉ. मीरा शर्मा के अधीन। प्रोजेक्ट का कोडनेम 'एंडोजेनस म्यूटेशन' था। ऊपरी तौर पर, यह एक उन्नत जीन-एडिटिंग तकनीक पर शोध था जिससे आनुवंशिक रोगों का इलाज किया जा सकता था। लेकिन असलियत... असलियत कुछ और ही थी।"

"वह चीज़ जो ज़मीन के नीचे मिली थी?" अनुराग शर्मा की डायरी की उस प्रविष्टि को याद करते हुए मयंक ने तुरंत पूछा।

रोहित ने मयंक को हैरानी से देखा, फिर धीरे से सिर हिलाकर चुपचाप 'हाँ' कहा।

"तुम्हें पता है... अच्छा। हाँ। डॉ. मीरा को पास की पुरानी, बंद कोयला खदानों में एक 'नमूना' मिला था। एक प्राचीन, अर्ध-जीवित जैविक पदार्थ। हमने इसे 'एनोमली एक्स' नाम दिया। यह पत्थर नहीं था। यह जीवित भी नहीं था। यह किसी मध्यवर्ती अवस्था में था। गहरी सुप्त अवस्था में। और इसका सबसे भयानक गुण यह था कि... यह मानव डीएनए के संपर्क में आते ही प्रतिक्रिया करता था। यह उसे 'पढ़' लेता था, और फिर उसे बहुत तेज़ी से, बेतरतीब ढंग से उत्परिवर्तित कर देता था।"

उसने अपने फटे, गंदे कोट की आस्तीन ऊपर खींची। टॉर्च की रोशनी में, उसकी बांह पर गहरे काले और नीले निशान दिखाई दे रहे थे, जो त्वचा के नीचे जड़ों की तरह फैल रहे थे। जहां ये निशान खत्म होते थे, वहां की त्वचा सख्त और पपड़ीदार हो गई थी। सबकी सांसें थम गईं।

"उस रात," रोहित की आवाज़ कांप उठी, "हमने अंतिम प्रयोग की योजना बनाई। चुने हुए छात्रों को बुलाया गया। उन्हें बताया गया कि वे एक ऐतिहासिक, क्रांतिकारी चिकित्सा प्रयोग के साक्षी बनने वाले हैं जो मानवता को बदल देगा। डॉ. मीरा उत्साह से भरी हुई थीं। हम सब भी थे। हम सब भगवान बनने वाले थे।" एक पल के लिए उनकी आवाज़ में पुराने उत्साह की झलक दिखी, लेकिन तुरंत ही कड़वाहट में डूब गई।

"हमने 'एनोमली एक्स' को एक विशेष विद्युत-रासायनिक घोल में सक्रिय किया। शुरुआत तो ठीक रही। फिर... फिर कुछ हुआ। यह 'अपने आप' प्रतिक्रिया करने लगा।

यह बेकाबू हो गया। यह बढ़ने लगा... फैलने लगा। अपने पात्र को तोड़कर, यह एक प्रोटोप्लाज्मिक द्रव्यमान बन गया, एक जीवित, सांस लेने वाला हलवा जो सब कुछ आत्मसात कर लेता था। और फिर... इसने 'हमला' कर दिया।"
रोहित की आँखें फटी रह गईं, डर से उसकी पुतलियाँ फैल गईं, हालाँकि घटना कई साल पुरानी थी। "यह कोई जानवर नहीं था जो काटता या मारता हो। यह... यह 'आत्मसात' हो गया। इसने सबसे नज़दीक खड़े छात्रों पर हमला किया... अनुराग, प्रिया, विकास..." उसकी आवाज़ भर्रा गई। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। "इसने उन्हें निगल लिया। पूरी तरह से। उनकी चीखें अचानक बंद हो गईं। और फिर... फिर जिन लोगों को इसने छुआ था, या जिनकी त्वचा पर इसकी बूँदें गिरी थीं... उनका डीएनए... विकृत होने लगा। यह एक तेज़, दर्दनाक प्रक्रिया थी। हड्डियाँ चटकने और मुड़ने लगीं, त्वचा चमड़े की तरह सख्त हो गई, मानसिकता... मानसिकता एक आदिम, पशुवत स्तर पर गिर गई। वे दीवारों और छतों पर रेंगने लगे, अपने ही साथियों पर गुर्राने लगे। हम जो देख रहे थे उस पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। यह विज्ञान नहीं था... यह नरक था।"
"और तुम?" रुद्र ने धीरे से पूछा, "तुम कैसे बच गए?"
"मैं... मैं बहुत दूर था," रोहित ने आँखें खोलते हुए कहा। "एक स्टील की अलमारी के पीछे, डेटा लॉग रिकॉर्ड कर रहा था। शायद उसने मुझे देखा ही नहीं। या शायद मेरे शरीर की रासायनिक संरचना... मेरे खून... में कुछ ऐसा था जो उसे 'बेस्वाद' लगा। जब सब कुछ शांत हो गया, तो वे रूपांतरित छात्र... दीवारों के पीछे, वेंटिलेशन शाफ्ट में, छत के ऊपर की जगहों में चले गए। मूल समूह भी... धीरे-धीरे उनमें समाहित हो गया। वे अब अलग-अलग इकाई नहीं रहे। एक सामूहिक चेतना बन गए... दर्द, भ्रम और एक अतृप्त भूख की।" रोहित ने अपना सिर हाथों में छिपा लिया, उसकी उंगलियाँ उसके बालों में उलझ गईं। "जब बाहर से लोग आए... प्रशासन, डॉक्टर... वे जो कुछ उन्होंने देखा उसके सामने बेबस थे। उन्होंने प्रयोगशाला को सील कर दिया। उसे एक मकबरा बना दिया। मुझे लगा कि मैं धीरे-धीरे भूख से मर जाऊँगा या पागल हो जाऊँगा। लेकिन मैं नहीं मरा। मैंने इस सुरंग में शरण ली, जो पुरानी भाप लाइनों और रासायनिक कचरे के निपटान के लिए बनाई गई थी। और तब से... मैं यहीं हूँ। इसकी गर्जना सुनता हूँ। दीवारों में कंपन के माध्यम से इसकी उपस्थिति महसूस करता हूँ। एक चौकीदार जो अपनी ही जेल की रखवाली कर रहा है।"

उनकी कहानी समाप्त होते ही गहरी खामोशी छा गई। कहानी ने उस अस्पष्ट भय को आकार दे दिया था, उसे ठोस, वास्तविक और सौ गुना अधिक भयावह बना दिया था।
"लेकिन तुम्हारा शरीर... ये निशान..." मयंक ने पूछा, उसकी वैज्ञानिक बुद्धि अभी भी सक्रिय थी, "तुम पूरी तरह से 'इसमें' क्यों नहीं परिवर्तित हो गए?"
रोहित ने अपनी बांह पर बने निशानों को ऐसे देखा जैसे किसी पुराने युद्ध के घाव को देख रहा हो। "संक्रमण तो हुआ, लेकिन पूरी तरह नहीं। शायद मेरे खून में कोई दुर्लभ जीन था... या शायद जो दवाइयां मैंने लीं उनका कुछ असर हुआ... या शायद बस किस्मत। मैं बदल गया, लेकिन पूरी तरह नहीं। मेरा दिमाग... मेरी सोचने की क्षमता, मेरी यादें... सब ठीक हैं। शायद इसीलिए मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था। शायद इसीलिए मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"
कबीर ने खड़े होते हुए कहा, "हमारी मदद करो? उसकी आवाज़ में हताशा भरी थी। हम इस जाल में फँसे हुए हैं! हमें बस इससे बाहर निकलना है!"
"नहीं," रोहित ने दृढ़ता से सिर हिलाते हुए कहा और खड़ा हो गया। "तुम फँसे हुए नहीं हो। तुम्हें 'चुना' गया है। तुम्हें यहाँ आने के लिए मजबूर किया गया है।"
ये वही शब्द थे जो डीन ने कहे थे। रुद्र तुरंत आगे बढ़ा और पूछा, "क्यों? हम चारों में ऐसी क्या खास बात है? खासकर उसमें?" उसने आलोक की ओर इशारा किया, जो अभी भी डरा हुआ था, लेकिन कबीर के पास बैठा था। सबकी निगाहें आलोक पर टिक गईं।
रोहित ने आलोक की ओर देखा। इस बार उसकी निगाहों में एक अजीब सी कोमलता और समझदारी थी। "क्योंकि यह 'विसंगति'... यह सिर्फ शारीरिक डीएनए से ही नहीं जुड़ती। यह 'भावनाओं' की आवृत्तियों से भी जुड़ती है। भय, आतंक, आघात, गहरा दुख... ये सब इसके लिए ऊर्जा के स्रोत हैं, प्रकाशस्तंभ हैं। यह संवेदनशील लोगों की ओर आकर्षित होती है। जिनकी भावनात्मक तरंगदैर्ध्य इसकी विकृत तरंगदैर्ध्य से मेल खाती है। आलोक, तुम्हारा भय... तुम्हारा शुद्ध, मिलावट रहित, शारीरिक भय... यह तुम्हें इसके लिए एक चमकती मशाल बना देता है। जैसे अंधेरे समुद्र में प्रकाशस्तंभ। और तुम तीनों...", उसकी निगाहें रुद्र, कबीर और मयंक पर गईं, "तुम इससे जुड़े हुए हो। शायद तुम्हारे अतीत में कोई गहरा आघात है, कोई छिपा हुआ भय है, जिसकी प्रतिध्वनि इस जगह से मेल खाती है। डीन यह जानती थी। वह तुम्हारी मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को जानती थी। इसीलिए उसने तुम्हें चुना। या शायद... यह जगह तुम्हें

खुद चुनती है, और डीन तो बस दरवाजा खोलने वाली है।"
इस जवाब ने सबको स्तब्ध कर दिया। आलोक की आँखों में भय के साथ-साथ एक अजीब सी पहचान का भाव भी था—क्या सचमुच उसका अपना डर ही उसे इस नरक में ले आया था? कबीर का चेहरा उदास हो गया, उसकी भौंहें तन गईं, मानो कोई पुरानी, दबी हुई याद अचानक ताजा हो गई हो। मयंक सोच में डूबा हुआ था, शायद अपने अतीत के पन्ने पलट रहा था। रुद्र ने गहरी साँस ली, इस भारी जानकारी को समझने की कोशिश कर रहा था।
"ठीक है," रुद्र ने नेतृत्व की मुद्रा में कहा। "तो अब क्या? आपने कहा था कि हम इसे खत्म कर सकते हैं। हमें रास्ता दिखाइए।"
रोहित ने अपने फटे हुए कोट की भीतरी जेब से एक पीला पड़ा, सिकुड़ा हुआ, नमी से भीगा हुआ कागज़ निकाला। यह हाथ से बना एक प्रयोगशाला आरेख था, जो रासायनिक सूत्रों और गणनाओं से भरा हुआ था। "एक ही तरीका है - 'विसंगति' को उसकी स्थिर, निष्क्रिय अवस्था में वापस भेजना। एक उदासीनीकरण एजेंट। डॉ. मीरा ने इसकी संरचना तैयार की थी, लेकिन इसे संश्लेषित करने का मौका नहीं मिला। मैंने यहाँ, छुपकर, बचे हुए रसायनों से, इसे वर्षों से बनाने की कोशिश की है। मैंने अधिकांश सामग्री एकत्र कर ली है। लेकिन अंतिम घटक... एक विशेष प्रोटीन एंजाइम... केवल मुख्य प्रयोगशाला के डीप-फ्रीज़ में रखा गया था। ठीक वहीं, जहाँ से हम अभी-अभी भागे हैं।"
"क्या मतलब, हमें उसी प्रयोगशाला में वापस जाना होगा?" आलोक की आवाज फिर से कांप उठी, उसकी आंखों में भय लौट आया।
"नहीं," रोहित ने तुरंत कहा, "मुख्य प्रयोगशाला तक पहुँचने का एक और रास्ता है। यह सुरंग एक पुराने भंडारगृह में खुलती है, जो सीधे प्रयोगशाला के पिछले हिस्से से जुड़ा हुआ है। परियोजना के शुरुआती दिनों में इसका इस्तेमाल किया गया था। वहाँ, एक अग्निरोधक अलमारी में, शायद वह एंजाइम अभी भी सुरक्षित हो। चलो, हमारे पास समय कम है।"
वे फिर से चलने लगे। सुरंग और भी संकरी होती जा रही थी, कभी-कभी उन्हें घुटनों के बल रेंगना पड़ता था। ऊपर से लगातार ठंडे पानी की बूँदें गिर रही थीं, उनके कपड़े भीग रहे थे। दूर से आती गुर्राहट की आवाज़ कभी-कभार सुनाई देती थी, लेकिन पास नहीं आती थी। एक अजीब सी बात थी—ऐसा लग रहा था मानो वह 'चीज़' उन्हें देख

रही हो, उनके हर कदम पर नज़र रख रही हो, लेकिन जानबूझकर हमला करने से खुद को रोक रही हो, जैसे कोई बिल्ली चूहे के साथ खेल रही हो।

लगभग बीस मिनट की कठिन और थका देने वाली यात्रा के बाद—जिसमें चढ़ाई, रेंगना और डरावने अंधेरे कोने शामिल थे—सुरंग अचानक चौड़ी हो गई और एक दरवाजे पर आकर समाप्त हुई। यह दरवाजा मोटे लोहे का था, बुरी तरह जंग लगा हुआ था, और बीच में एक बड़ा बोल्ट लगा था। रोहित ने अपनी बची हुई ताकत का इस्तेमाल करते हुए बोल्ट को सरकाया। एक तेज चीखती हुई आवाज के साथ, दरवाजा अंदर की ओर खुल गया।

अंदर एक मध्यम आकार का कमरा था। यह स्पष्ट रूप से एक भंडारगृह था। चारों ओर धूल की मोटी परतों से ढके बक्से, टूटे हुए कांच के बर्तनों से भरे डिब्बे और खाली रासायनिक धातु के ड्रम बिखरे पड़े थे। हवा में धूल, पुरानी किताबों और बासी प्लास्टिक की गंध थी। एक कोने में एक मजबूत स्टील की मेज थी, जिस पर प्रयोगशाला के कुछ बचे हुए उपकरण रखे थे—एक छोटा, पुराना सेंट्रीफ्यूज, कुछ कांच की पिपेट, एक बन्सन बर्नर और एक स्टेनलेस स्टील की ट्रे जिस पर कई शीशियां, सिरिंज और कांच के एम्प्यूल रखे थे।

"यह मेरी... शरणस्थली रही है," रोहित ने थोड़ी शर्मिंदगी के साथ कहा। "मैंने यहीं पर उस औषधि को तैयार करने की कोशिश की थी।" उसने मेज की ओर इशारा किया।

मयंक तुरंत मेज की ओर गया और टॉर्च की रोशनी उपकरणों पर डाली। उसने ध्यान से एक एम्प्यूल उठाया। वह खाली था। उसने दूसरे को देखा—वह भी खाली था। तीसरा, चौथा... सभी खाली थे। उसने सिरिंजों की जाँच की—सभी खाली थीं। "सब खाली हैं, रोहित," मयंक ने निराशा भरे स्वर में कहा। "वह एंजाइम... यहाँ नहीं है।"

रोहित का चेहरा एकदम उतर गया। उसकी आँखों में उम्मीद की जो हल्की सी किरण थी, वो भी बुझ गई। "नहीं... ऐसा नहीं हो सकता। मैंने इसे यहीं, इस मेज की दराज में रखा था..." वह बेचैनी से मेज पर इधर-उधर खोजने लगा, दराजें खोलने लगा, डिब्बे पलटने लगा। उसकी साँसें तेज़ होती जा रही थीं।

तभी कबीर की टॉर्च, जो कमरे में इधर-उधर भटक रही थी, अचानक दूसरे कोने में एक ऊंचे ढेर के पीछे एक बड़ी, गहरी छाया पर रुक गई। कबीर ने एक शब्द भी नहीं कहा। उसका हाथ एकदम जम गया।

धीरे-धीरे, बाकी सभी की रोशनी भी उसी कोने पर आकर आकर ठहर गई।

वहाँ ज़मीन पर एक शव पड़ा था। लेकिन यह कोई साधारण मानव शव नहीं था। यह एक हट्टे-कट्टे आदमी के आकार का था, लेकिन इसका शरीर घने, लंबे भूरे-काले बालों से ढका हुआ था, जो भालू की खाल जैसा लग रहा था। चेहरे की बनावट तो मनुष्य जैसी थी, लेकिन जबड़ा असामान्य रूप से चौड़ा और आगे की ओर निकला हुआ था, जिसके नीचे लंबे, पीले दाँत दिखाई दे रहे थे। हाथ-पैर मोटे, मांसल और पंजे जैसे थे, नाखून मोटे और पंजों की तरह मुड़े हुए थे। शरीर पर कपड़े लटके हुए थे—एक फटा हुआ लैब कोट और जींस—जिन पर गहरे, सूखे खून के धब्बे और कटने के निशान थे। लेकिन सबसे दिल दहला देने वाली बात यह थी कि शव बिल्कुल ताजा लग रहा था। कोई सड़न नहीं थी। कोई गंध नहीं थी। त्वचा (या बाल) अभी भी हल्की चमक लिए हुए थे। मानो मृत्यु कुछ ही दिन पहले हुई हो।
इतनी गहरी खामोशी कि वे अपनी धमनियों में बहते अपने खून की आवाज भी सुन सकते थे।
रोहित की सांसें रुक गईं। उसके होंठ पीले पड़ गए। "यह... यह कौन है?" उसने फुसफुसाते हुए कहा। "2009 के बाद... कोई अंदर नहीं आया! मैं अकेला था... बस मैं!"
मयंक ने धीमी, ठंडी और कठोर आवाज़ में कहा, जो सच्चाई को और भी भयावह बना देती है: "डीन ने कहा था। उन्होंने साफ़-साफ़ कहा था कि 2009 की घटना के बाद, इस प्रयोगशाला को हमेशा के लिए सील कर दिया गया था। कोई नहीं आता था, कोई नहीं जाता था। लेकिन यह लाश... यह तो एक हफ़्ते पुरानी भी नहीं लगती।"
रुद्र की आँखों में एक भयानक, धीरे-धीरे पनपता संदेह उभर आया। उसका गला सूख गया। जब उसकी आवाज़ निकली, तो वह बिल्कुल सपाट, भारी और बर्फ़ जैसी ठंडी थी। उसने वह सवाल पूछा, जिसका जवाब शायद उनकी दुनिया को चकनाचूर कर देने वाला था।
"तो... क्या डीन ने हमसे झूठ बोला?"
कमरे की हवा मानो जम सी गई। और फिर, दूर से नहीं, बल्कि उसी सुरंग की गहराई से, जिससे वे अभी-अभी निकले थे, वह गुर्राहट फिर गूंजी। इस बार यह दूर से आने वाली आवाज़ नहीं थी। यह स्पष्ट, साफ और बेहद नज़दीक से आ रही थी। और अब इसमें सिर्फ़ भूख ही नहीं, बल्कि एक विजयी, शिकारी प्राणी की गंध भी थी।

अध्याय 8 – भूलभुलैया से बाहर

उस गहरी, विजयपूर्ण दहाड़ ने कमरे की जमी हुई हवा को चीर दिया। अब वह दूर नहीं थी। वह सुरंग के मुहाने पर, ठीक उस दरवाजे के पीछे थी जिससे वे अभी-अभी अंदर आए थे। उसकी आवाज़ में एक खुरदुरापन था, मानो कंकड़ घसीटे जा रहे हों, और उसके नीचे एक ऐसी भूख थी जिसने हर किसी की आत्मा को कंपा दिया।

"बाहर निकलो! अभी!" रोहित ने पल भर में अपने सदमे और डर को दबाते हुए चीख मारी। उसने ताज़ा लाश पर आखिरी बार हैरानी भरी नज़र डाली, फिर कमरे के दूसरे छोर की ओर इशारा किया, जहाँ कुछ लोहे के बक्से दीवार से टिके हुए थे। "वहाँ! वहाँ से बाहर निकलने का कोई और रास्ता होना चाहिए!"

रुद्र ने बिना एक पल भी बर्बाद किए आलोक और मयंक को आगे धकेल दिया। कबीर ने ज़मीन पर पड़ा एक भारी लोहे का पाइप उठाया, उसकी मुट्ठियाँ सफ़ेद पड़ गई थीं। वे बक्सों के पीछे भागे। रोहित ने जल्दी से फर्श में बने एक छिपे हुए, जंग लगे ढक्कन को खोला। नीचे और भी अंधेरा था, और एक सड़ी हुई, नम हवा ऊपर उठ रही थी। एक-एक करके वे संकरे छेद में उतर गए। रोहित सबसे आखिर में उतरा और अपने पूरे वजन से ऊपर से दरवाजा बंद कर दिया। ठीक उसी क्षण, दरवाजे की दिशा से लोहे के मुड़ने और टूटने की एक भयानक आवाज सुनाई दी।

नीचे का स्थान और भी तंग था। यह किसी तहखाने जैसा लग रहा था, शायद पुरानी सीवर लाइनों या रासायनिक कचरे को फेंकने के लिए बनाया गया हो। हवा में अब सीवेज और क्लोरीन की तेज़ गंध आ रही थी। टॉर्च की रोशनी में आगे एक लंबा, नीचा गलियारा दिखाई दिया, जिसकी दीवारें हरे-काले रंग के कीचड़ से ढकी हुई थीं। वे तेज़ी से भागे। ज़मीन पर फिसलन भरी काई होने के कारण उनके पैर कई बार फिसले। पीछे से दरवाज़े पर ज़ोरदार टक्करों की आवाज़ सुनाई दी—'धड़! धड़! धड़!'—साथ ही लोहे के मुड़ने की तेज़ आवाज़ भी आई। वह 'चीज़' उनके पीछे थी।

गलियारा अचानक दो हिस्सों में बंट गया। एक रास्ता ऊपर की ओर गया, दूसरा नीचे की ओर। "ऊपर! हमें बाहर निकलना होगा!" रुद्र ने कहा।

"रुको!" रोहित हांफते हुए बोला। "ऊपर वाला रास्ता मुख्य इमारत के तहखाने में जाता है, जो बंद है। नीचे वाले रास्ते का... मुझे पक्का पता नहीं, लेकिन शायद वहां से निकलने का कोई रास्ता हो।"

'धड़ाम! धमाका!' पीछे से हैच के टूटने की आवाज़ आई। अब कोई चारा नहीं था। वे नीचे वाले रास्ते की ओर भागे।

यह रास्ता और भी गीला और घिनौना था। जगह-जगह पानी जमा था, जिसमें अजीबोगरीब चीजें तैर रही थीं। तभी दाहिनी दीवार पर किसी चीज पर रोशनी पड़ी—जंग लगी, मोटी सलाखों वाली कोठरी जैसी संरचना। यह एक छोटी सी जेल कोठरी थी, शायद कभी जानवरों पर प्रयोग करने के लिए इस्तेमाल की जाती थी। इसके फर्श पर, सलाखों के पीछे, एक और लाश पड़ी थी। यह पहले से भी ताजा लग रही थी। कपड़े आधुनिक थे—जींस और एक चमकदार जैकेट। चेहरा बुरी तरह से क्षत-विक्षत था, लेकिन बाल छोटे और स्टाइलिश थे। और सबसे भयानक बात—लाश के बगल में एक नया सा दिखने वाला मोबाइल फोन पड़ा था, जिसकी स्क्रीन टूटी हुई थी।

"हे भगवान... ये तो..." आलोक की आवाज धीमी पड़ गई।

"चलो! देखो मत!" कबीर उसे घसीटते हुए ले गया।

लेकिन उस तस्वीर ने उनके मन पर गहरी छाप छोड़ दी थी। कोई और भी यहाँ आया था। हाल ही में। डीन का झूठ अब पत्थर पर खींची गई लकीर की तरह स्पष्ट था।

गलियारा अचानक समाप्त हो गया और एक बड़ी, गोल नाली या सीवर लाइन में खुल गया। नीचे काला, गंदा पानी रुका हुआ बह रहा था, जो दूर के अंधेरे में गायब हो रहा था। पीछे से रेंगने और घसीटने की आवाज़ें नज़दीक आती जा रही थीं। वही गुर्राहट हवा में गूंज रही थी, अब और भी उत्तेजित, और भी नज़दीक।

"यही एकमात्र रास्ता है," रोहित हांफते हुए बोला, उसकी आँखों में दृढ़ निश्चय की चमक थी। "यह पाइप कैंपस की मुख्य सीवर लाइन से जुड़ता है और फिर नदी की ओर जाता है।"

"इस गंदे पानी में?" आलोक ने डरते हुए कहा।

"जीने और मरने में फर्क होता है, आलोक!" रुद्र ने कहा। उसने पहले अपनी टॉर्च मुंह में डाली और बिना किसी झिझक के काले, बदबूदार पानी में कूद गया। पानी घुटनों तक गहरा, ठंडा और चिपचिपा था। मयंक और कबीर ने आलोक को पकड़ा और उसे खींचकर ले गए। रोहित ने आखिरी बार पीछे मुड़कर देखा—घने अंधेरे में, कई टेढ़े-मेढ़े अंग दीवार के सहारे तेजी से उनकी ओर बढ़ रहे थे। वह भी कूद गया।

वे पाइप के अंदर से भागे, पानी उनके जूतों को डुबो रहा था। पीछे से एक चीख सुनाई दी—गुस्से और हताशा से भरी हुई। उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे बस भागते रहे।

पाइप बार-बार मुड़ा, दो हिस्सों में बंट गया, फिर से जुड़ गया। हवा लगभग न के बराबर थी। सांस लेना मुश्किल होता जा रहा था। आलोक घबरा रहा था, लेकिन कबीर ने उसका हाथ कसकर पकड़ रखा था।

अचानक, दूर कहीं एक हल्की सी रोशनी दिखाई दी। ताज़ी हवा का एक झोंका आया। उन्होंने अपनी आखिरी ताकत लगा दी। रोशनी तेज़ हो गई। वे नदी किनारे लगी एक धातु की जाली से बाहर निकले। ताज़ी रात की हवा ने उनके चेहरों को छुआ। वे हांफते-कांपते हुए, कांपते हुए, गंदे पानी और कीचड़ से भीगे कपड़ों के साथ किनारे पर गिर पड़े।

रुद्र ने चारों ओर देखा। वे कैंपस के पीछे नदी के किनारे थे, जंगल से ज़्यादा दूर नहीं। दूर शहर की जगमगाती रोशनी दिखाई दे रही थी। उसने अपने साथियों को देखा—सभी सुरक्षित थे। फिर उसकी नज़र रोहित पर पड़ी। "रोहित, तुम... क्या तुम ठीक हो?"

रोहित ने सिर हिलाया, लेकिन उसका चेहरा पीला पड़ गया था। "मैं... मुझे आपके साथ नहीं आना चाहिए। मैं... मैं अभी भी संक्रमित हूँ। आप लोग जाइए। डीन से मिलिए। सच बताइए। और... धन्यवाद।" इतना कहकर वह मुड़ा और जंगल की ओर चल पड़ा, लंगड़ाता हुआ एक अकेला व्यक्ति जो अंधेरे में गायब हो गया।

"रुको!" रुद्र ने पुकारा, लेकिन रोहित रुका नहीं, वह गायब हो गया।

'''

रुद्र की आंखें एक धुंधली, सफेद छत पर खुलीं। एक तेज, सफेद रोशनी ने उसकी आंखों को चकाचौंध कर दिया। उसके शरीर में एक अजीब सा भारीपन महसूस हुआ और सिर में हल्का दर्द हुआ। वह अस्पताल के बिस्तर पर था, उसकी बांह में IV ड्रिप लगी हुई थी। उसने चारों ओर देखा। बगल वाले बिस्तर पर कबीर था, जो अभी-अभी जागा था और आश्चर्य से इधर-उधर देख रहा था। दूसरी तरफ, मयंक अपना सिर पकड़े बैठा था। आलोक अभी भी सो रहा था, लेकिन उसके चेहरे पर शांति थी।

दरवाजा खुला और डीन अंदर आई, उसके साथ एक डॉक्टर और एक नर्स भी थे। डीन के चेहरे पर चिंता थी, लेकिन उसकी आँखें... उसकी आँखें एकदम शांत और भावहीन थीं।

"तुम जाग गए हो," डीन ने सामान्य, स्नेहपूर्ण स्वर में कहा। "तुम्हें नदी किनारे बेहोश पाया गया था। हल्की निर्जलीकरण और सदमे की वजह से। मुझे बताओ, क्या हुआ

था?"
रुद्र ने कोहनियों के बल उठने की कोशिश करते हुए अपना सिर हिलाया। उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी। "रोहित... रोहित सिंह कहाँ है?"
डीन ने डॉक्टर से एक नज़र मिलाई, फिर चारों लड़कों की ओर देखा। "रोहित सिंह? आपका मतलब 2009 बैच के उस छात्र से है? रुद्र, आधिकारिक फाइलों में रोहित सिंह की उस दुर्घटना में मृत्यु दर्ज है - रिकॉर्ड तो यही कहते हैं। सच तो यह है कि परियोजना के कई रिकॉर्ड में हेराफेरी की गई थी और सच्चाई को दबा दिया गया था।"
यह बयान किसी थप्पड़ की तरह लगा। मयंक और कबीर भी सदमे में देखते रह गए।
"नहीं! वह हमारे साथ था!" कबीर बिस्तर पर बैठते हुए बोला। "उसने हमें बचाया! सुरंग से! उसने हमें सब कुछ बताया—एनोमली एक्स, डॉ. मीरा, सब कुछ!"
डीन ने बच्चों की बात सुनने की तरह उदास मुस्कान दी। "तुमने बहुत गंभीर आघात झेला है। कभी-कभी मन ऐसी कहानियां गढ़ लेता है, खासकर जब हम बहुत डरे हुए होते हैं। डॉक्टर का कहना है कि तुम्हें आराम की जरूरत है।"
रुद्र ने गुस्से से, लेकिन कमजोर आवाज में कहा, "यह कोई कहानी नहीं है! हमने देखा! वहाँ ताजा लाशें थीं! एक जेल कोठरी में! हाल ही में कोई और भी वहाँ गया था! आपने कहा था कि 2009 के बाद कोई नहीं गया!"
डीन का चेहरा गंभीर हो गया। उन्होंने डॉक्टर और नर्स को इशारा किया और वे कमरे से बाहर चले गए। जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, डीन का व्यवहार बदल गया। वह एकदम शांत और गंभीर हो गईं। "आपको एक अलग कमरे में ले जाया जाएगा। आराम कीजिए। फिर हम बात करेंगे। अभी नहीं।"
वह जाने के लिए मुड़ी।
"मैडम!" रुद्र ने कहा, "हमें अकेले में बात करनी है। अभी।"
डीन रुक गईं। धीरे से मुड़ीं। उनकी आँखों में कुछ उदासी छाई रही, फिर उन्होंने सिर हिलाया। "ठीक है। डॉक्टर साहब, इन्हें छुट्टी दे दीजिए। ये ठीक हैं।"
कुछ देर बाद, वे चारों डीन के केबिन में बैठे थे। सामने चाय के चार प्याले रखे थे, जिन्हें किसी ने छुआ तक नहीं था। डीन उनकी ओर मुख करके बैठी थीं, उनकी निगाहें सीधी और तीखी थीं।
"मुझे बताओ," उसने कहा।
रुद्र ने पूरी कहानी सुनाई। गेट का बंद होना, मुख्य प्रयोगशाला, डायरी, छत पर बनी

आकृतियाँ, रोहित से मुलाकात, सुरंग, ताजा लाशें, जेल की कोठरी, नाले से भागना... सब कुछ। मयंक और कबीर ने ज़रूरी विवरण जोड़े।
डीन चुपचाप सुनती रहीं, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। रुद्र के बोलने के बाद, काफी देर तक सन्नाटा छा गया।
"तो आप कह रहे हैं," डीन ने धीरे से कहा, "कि मैंने आपसे झूठ बोला? कि वह जगह सीलबंद नहीं है? कि मैंने जानबूझकर आपको ऐसी जगह भेजा है जहाँ हाल ही में लोगों की मौत हुई है?"
"हां," रुद्र ने सीधे-सीधे कहा। "रोहित ने कहा कि आपको पता था। आपने हमें चुना।"
डीन ने अपनी चाय का कप उठाया, एक घूंट पिया। फिर उन्होंने कहा, "सुनो बच्चों। 2009 के बाद, वह प्रयोगशाला वास्तव में बंद थी। आधिकारिक तौर पर। लेकिन... हाँ, जब मैंने कहा कि कोई अंदर नहीं गया, तो मैं झूठ बोल रही थी। क्योंकि मुझे खुद भी नहीं पता था।"
यह स्वीकारोक्ति चौंकाने वाली थी।
"तुम्हारा क्या मतलब है?" मयंक ने पूछा।
"इसका मतलब है कि जिसने उस लैब को सील किया, जिसने उस घटना को दबाया... वो मैं नहीं था। वो प्रशासन था। कुछ लोग उस शोध, उस 'एनोमली एक्स' को गुप्त रखना चाहते थे। मुझे बताया गया था कि सब कुछ बंद कर दिया गया है। चांसलर ने गुप्त रूप से जो काम किया, उसकी मुझे कभी जानकारी नहीं मिली। लेकिन आपकी बात सुनकर... लगता है कि कुछ लोग अभी भी वहाँ जा रहे हैं। शायद नमूने लेने के लिए, शायद शोध जारी रखने के लिए... और शायद, उनका भी वही हाल हुआ।" डीन की आवाज़ में सचमुच हैरानी और अफ़सोस था। "मैंने आपको इसलिए भेजा था क्योंकि मुझे लगा था कि आप चारों ही उस जगह की 'विशेषता' को समझ सकते हैं। मुझे लगा था कि आप कुछ सबूत लेकर आएंगे, कुछ ऐसा जिसका इस्तेमाल मैं उस प्रोजेक्ट को हमेशा के लिए बंद करने के लिए कर सकूँ। लेकिन मैंने ये नहीं सोचा था कि आपकी जान इतने खतरे में होगी। मुझे माफ़ करें।"
यह जवाब उनकी उम्मीदों से मेल नहीं खाता था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि डीन सच बोल रहा है या कोई और जाल बुन रहा है।
"अब आप सब आराम करें," डीन उठते हुए बोले। "इस बारे में किसी से बात मत करना। वरना आपका करियर, आपकी सुरक्षा, सब कुछ खतरे में पड़ जाएगा।

समझे?"
वह चली गई। चारों एक-दूसरे को देखते रहे।
"क्या तुम उस पर विश्वास करते हो?" कबीर ने पूछा।
"नहीं," रुद्र ने कहा। "लेकिन उस जेल कोठरी में मिली लाश का क्या? किसी को तो उसे देखना चाहिए!"
"और रोहित?" मयंक ने कहा, "वह कहाँ गया? क्या वह सचमुच में था, या... क्या हमने उसे अपने दिमाग से गढ़ा था?"
वे अलग-अलग सिद्धांत बनाने लगे। शायद रोहित एक भूत था। शायद यह सब सामूहिक मतिभ्रम था। शायद डीन सच कह रहा था। शायद नहीं।
उन्हें पता नहीं था कि डीन, जो दरवाजे के ठीक बाहर खड़ी थी, चुपचाप उनकी बातचीत सुन रही थी। जब उसने 'जेल कोठरी' शब्द सुना, तो उसके होठों पर एक हल्की, रहस्यमयी मुस्कान फैल गई। वह उसी मुस्कान के साथ धीरे-धीरे चली गई।
'''
अगले कुछ दिन सबके लिए अजीब थे। उन्हें अपने परिवारों को बताना पड़ा कि वे कॉलेज की एक नाइट एग्ज़िबिशन में गए थे और देर रात तक बाहर रहे। हैरानी की बात यह थी कि किसी के परिवार ने ज़्यादा सवाल नहीं पूछे। रुद्र की माँ ने कहा, "अच्छा हुआ तुमने मुझे बता दिया। डीन मैडम ने फ़ोन करके हमें सब कुछ बता दिया था, कि तुम एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे।"
यह सुनकर रुद्र की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। डीन ने तो पहले ही सब कुछ छुपा दिया था।
वह जिम गया, वज़न उठाने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि शारीरिक तनाव उसके दिमाग से दूर हो जाएगा। लेकिन हर बार जब वह अपनी आँखें बंद करता, तो उसे वही काली, भावहीन आँख दिखाई देती जो प्रयोगशाला में उसे देख रही थी।
मयंक अपने कमरे में बैठा लैपटॉप पर 'एंडोजेनस म्यूटेशन', 'डॉ. मीरा शर्मा', '2009 लैब दुर्घटना' जैसी जानकारियाँ खोज रहा था। सारी जानकारी अस्पष्ट थी; आधिकारिक रिपोर्टों में इसे 'रासायनिक रिसाव' बताया गया था। लेकिन एक पुराने अखबार के संग्रह में उसे एक छोटी सी खबर मिली: "प्रतिभाशाली छात्र रोहित सिंह लापता, परिवार न्याय की मांग कर रहा है।" तारीख 2009 थी। बाद में इस मामले को चुपचाप बंद कर दिया गया और 'मृत मान लिया गया' के रूप में दर्ज कर लिया

गया।
कबीर अपने दोस्तों साहो और बृजेश के साथ शहर के एक पुराने पब में था। वे उससे पूछ रहे थे, "अरे, इतने दिनों से कहाँ थे? कुछ हुआ क्या? तुम्हारे हाथ पर ये चोट कैसे लगी?"
कबीर ने अपने हाथ को देखा, जहाँ सुरंग में किसी नुकीली चीज़ से खरोंच लग गई थी। उसने एक गहरी साँस ली। "कुछ नहीं। कॉलेज का काम।" डीन की चेतावनी उसके कानों में गूँज उठी। उसने देखा कि बृजेश की जेब से एक नई, चमकदार जैकेट का कफ़ झाँक रहा था... बिलकुल वैसी ही जैकेट जैसी जेल की कोठरी में लाश पर थी। उसकी साँस अटक गई। उसने अपना गिलास नीचे रख दिया। "मुझे जाना है," उसने कहा और अपने दोस्तों की पुकारों को अनसुना करते हुए बिना कुछ कहे बाहर चला गया।
और आलोक... आलोक अपने कमरे में एक मोटे कंबल में लिपटा हुआ था। वह खिड़की से बाहर देख रहा था। पहले की तरह डर से कांप नहीं रहा था। बल्कि गहरी, एकाग्रचित्त सोच में डूबा हुआ था। रोहित के शब्द उसके मन में गूंज रहे थे—"तुम्हारा डर... तुम्हें उसका प्रतीक बना देता है।" क्या उसका डर सचमुच कमजोरी थी? या... एक ताकत? एक ऐसी समझ जो दूसरों के पास नहीं थी? वह जानता था कि अब कुछ बदल गया है। वह अब भी डरा हुआ था। लेकिन अब उस डर के साथ एक नई समझ भी जुड़ गई थी। और शायद, बदलाव की एक छोटी सी चिंगारी...।

अध्याय 9: परछाइयों में नृत्य

सुबह की धूप कॉलेज की पुरानी पत्थर की इमारतों पर पड़ रही थी, लेकिन रुद्र को वह रोशनी बनावटी लग रही थी। हर चीज़ के पीछे—लॉन पर ओस की बूँदें, पुस्तकालय की खिड़कियों की चमक, छात्रों के हँसने की आवाज़—एक अदृश्य परत थी, वह भयानक सच्चाई जो ज़हर की तरह उसकी रगों में दौड़ रही थी। वह और मयंक लॉन के एक कोने में खड़े थे, जहाँ एक पुराना पीपल का पेड़ अपनी जड़ें फैलाए बैठा था, मानो उनकी बातें सुन रहा हो।
मयंक ने अपना चश्मा उतारा और कमीज़ के किनारे से उसे पोंछा। यह उसकी घबराहट की आदत थी। "मैं पूरी रात सोचता रहा," उसने इतनी धीमी आवाज़ में कहा

कि पास के पेड़ के पत्ते भी नहीं सुन पाए। "रोहित के बारे में... उस अख़बार की कतरन के बारे में... उसमें 'लापता' लिखा था, 'मृत' नहीं।"

रुद्र ने अपने जूते की नोक से एक पत्थर को ठोकर मारी। "तो वह सचमुच में था। और जो हमने पाया वह सिर्फ हमारा भ्रम नहीं था।" उसने मुट्ठी भींची, उसके नाखून हथेली में चुभ रहे थे। "लेकिन डीन... वह इसे क्यों नकार रही है? वह हमारे परिवारों से झूठ क्यों बोल रही है?"

"नियंत्रण," मयंक ने चश्मा वापस लगाते हुए कहा। उसकी आँखें बड़ी और गंभीर लग रही थीं। "वह हमें डराकर रखना चाहती है। हमें बेबस रखना चाहती है। ताकि हम वही करें जो वह कहती है। बस देखते रहो... आज कुछ ऐसा होगा जो साबित कर देगा कि हम उसके चंगुल में हैं।"

उनकी बातचीत एक भयानक प्रतीक्षा की तरह महसूस हुई—तूफान से पहले हवा में छाई खामोशी की तरह।

कक्षा का माहौल हमेशा शोरगुल भरा रहता था, लेकिन आज कबीर की खामोशी ने उसके चारों ओर एक अलग ही माहौल बना दिया था। वह अपनी सीट पर पीछे की ओर झुका बैठा था, भौंहें थोड़ी सिकुड़ी हुई थीं, और आँखें खिड़की से दूर अनंत आकाश की ओर टकटकी लगाए हुए थीं। वह अब वह कबीर नहीं था जो कक्षा की हर गतिविधि पर टिप्पणी करता था, ज़ोर से हँसता था, दूसरों को चिढ़ाता था। यह एक नया कबीर था—शांत, गंभीर और खतरनाक रूप से सचेत।

उसके बगल में बैठे उसके साथी साहो और बृजेश बेचैन थे। बृजेश अपनी नई जैकेट की कफ़ को बार-बार ठीक कर रहा था—चमकीली काली जैकेट जिसमें चांदी की ज़िप लगी थी। साहो ने मज़ाक करने की कोशिश की, "क्या हुआ बॉस? आज आप इतने चुप हैं, जैसे कोई..."

कबीर ने उसकी ओर देखा। बस देखता रहा। कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उस नज़र में इतना गहरा भाव था कि साहो के शब्द उसके मुँह में ही अटक गए। बृजेश ने कबीर के हाथ पर खरोंच देखी—वही खरोंच जो सुरंग में लगी थी। एक पल के लिए उसकी आँखों में कुछ चमक उठा, शायद पहचान, शायद डर। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। तभी दरवाजा खुल गया।

सबकी निगाहें दरवाजे पर टिक गईं। आलोक अंदर आया। वह पहली बार कक्षा में देर से आया था। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि वह हांफ नहीं रहा था और न ही

शर्मिंदा था। उसके कदम धीमे और सधे हुए थे। उसकी आंखें—जो हमेशा डर से चौड़ी रहती थीं—आज छोटी और चौकस थीं। वह किसी ऐसे जानवर की तरह लग रहा था जो अपने नए वातावरण को सूंघ रहा हो, हर आवाज, हर हरकत का विश्लेषण कर रहा हो।

वह अपनी सीट की ओर बढ़ा। उसके कंधे पर टंगा बैग थोड़ा सा झुक गया और अंदर रखी पानी की बोतल फिसलकर गिर गई। यह हल्की सी आवाज़ नहीं थी। एक भारी, बेढंगी 'धड़ाम' की आवाज़ के साथ वह ज़मीन पर गिरी। ढक्कन, जो ठीक से बंद नहीं था, खुल गया। गंदा, हल्का भूरा पानी (शायद कल का) एक छोटी सी धारा के रूप में फैलने लगा और सीधे कबीर के नए, दूधिया सफेद जूतों पर जा गिरा।

एक पल के लिए ऐसा लगा मानो समय रुक गया हो।

सबने यह देखा। तभी साहो की आवाज़ ने सन्नाटा तोड़ दिया। "अरे! ओए! क्या तुम्हारी आंखें हैं या नहीं?" वह गुस्से से लाल होते हुए खड़ा हो गया।

बृजेश भी खड़ा हो गया। उसकी निगाहें आलोक पर टिकी थीं, मानो उसे परख रही हों। "क्या तुम बहरे हो? बॉस के जूते... नए हैं। अब इन्हें कौन साफ करेगा? तुम ही करोगे ना?" वह आलोक की कमीज़ का कॉलर पकड़ने के लिए आगे बढ़ा।

आलोक पीछे हट गया। उसके चेहरे पर डर था, लेकिन पहले की तरह चुपचाप रोने वाला डर नहीं था। यह एक सक्रिय, सचेत डर था। वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन शब्द उसके मुंह से नहीं निकल रहे थे।

पूरी कक्षा ने अपनी सांसें थाम लीं। यह वही दृश्य था जिसे वे देखने के आदी थे—कबीर का गिरोह किसी को निशाना बनाता था। लेकिन आज कुछ अलग था।

तभी कुर्सी के पैर ज़मीन पर घिसटते हुए सुनाई दिए। एक आवाज़ गूंजी, न कर्कश, न चीख-पुकार वाली। एकदम सपाट, लोहे जैसी मज़बूत। "उसे जाने दो।"

कबीर खड़ा था। वह बृजेश के हाथ को देख रहा था, जो आलोक के कॉलर से बस एक इंच दूर था। "छोड़ दो," उसने दोहराया।

बृजेश दंग रह गया। "लेकिन बॉस, वो..."

“मैंने कहा, छोड़ दो।” कबीर की आवाज़ में फटकार थी। “अगर किसी को मारना है तो मुझे बता दो। मैं खुद संभाल लूंगा।” फिर वह आलोक की ओर मुड़ा। उसकी आँखों में कुछ भाव था—शायद ‘चले जाओ’। “चलो आलोक, अपनी जगह बैठो।”

आलोक ने एक पल के लिए कबीर की आँखों में देखा। उनमें पहले जैसी दुर्भावना नहीं

थी। एक अजीब सी समझदारी थी। उसने हल्का सा सिर हिलाया और जल्दी से बैठ गया।

कक्षा में हलचल मच गई। छात्र एक-दूसरे को देखने लगे। क्या हुआ? कबीर ने आलोक की मदद की? यह तो किसी साइंस फिक्शन फिल्म जैसा लग रहा था। बृजेश और साहो अवाक खड़े थे, अपने नेता के बदले हुए रूप को समझ नहीं पा रहे थे।

रुद्र और मयंक ने एक-दूसरे को देखा। उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ। उन्हें राहत महसूस हुई। उस सुरंग में, उस भय में, कुछ टूट गया था—शायद कबीर का वर्षों से पहना हुआ मुखौटा। और कुछ जुड़ गया था—एक अदृश्य धागा जो उन चारों को बांध रहा था।

तभी दरवाजा खुला और रसायन विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. खन्ना अंदर आए। कक्षा शुरू हुई। सब कुछ सामान्य लग रहा था, जब तक कि डॉ. खन्ना ने होमवर्क के बारे में नहीं पूछा।

"कल का असाइनमेंट? जमा कर दो।"

कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने अपनी नोटबुकें निकालीं। रुद्र, मयंक, कबीर और आलोक ने एक-दूसरे को देखा। उन्होंने कल कुछ नहीं किया था। भला वे कैसे कर सकते थे? वे अभी-अभी नरक से निकले थे।

डॉ. खन्ना ने चारों की ओर देखा। उनकी आँखें, जो हमेशा सख्त और नियमों से बंधी रहती थीं, आज कुछ और ही कह रही थीं। उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी।

"तुम चारों ने यह नहीं किया?"

कक्षा में सन्नाटा छा गया। सबको पता था कि आगे क्या होगा—डांट-फटकार, धमकियाँ, और बाहर निकाल दिया जाना।

लेकिन डॉ. खन्ना ने बस अपना सिर हिलाया। "कोई बात नहीं। इसे कल तक जमा कर दीजिए।"

यह छोटा सा वाक्य बम की तरह फट गया। पूरी कक्षा स्तब्ध रह गई। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था! डॉ. खन्ना किसी को रियायत नहीं देते थे!

रुद्र, मयंक, कबीर और आलोक की निगाहें मिलीं। यह कोई रियायत नहीं थी। यह एक संदेश था। एक चेतावनी। "डीन का इशारा।" वह उन्हें देख रही थी। उन्हें 'विशेष' दर्जा देकर वह उन्हें याद दिला रही थी कि वे उसकी मुट्ठी में हैं और जब चाहे उन्हें कुचल सकती है। यह उदारता नहीं, दबाव था।

क्लास खत्म होने से ठीक पहले, दरवाजा फिर खुला। और इस बार खुद डीन शर्मा

कमरे में दाखिल हुईं। उनकी मौजूदगी से कमरे का तापमान मानो ठंडा पड़ गया। सब लोग चुप हो गए।

“मुझे एक घोषणा करनी है,” उसने कहा। उसकी आवाज़ मधुर थी, लेकिन उस मधुरता के पीछे एक दृढ़ निश्चय छिपा था। “कल से कॉलेज में एक सप्ताह तक चलने वाला ‘नवरात्रि डांडिया महोत्सव’ आयोजित किया जाएगा। सभी कक्षाएं स्थगित रहेंगी। पूरा परिसर सजाया जाएगा। डीजे, खाना, नृत्य—हर तरह का मनोरंजन होगा। यह एक अनिवार्य... सह-पाठ्यक्रम गतिविधि है।”

कक्षा में खुशी की लहर दौड़ गई। चीखें, तालियाँ, उत्साह भरी आवाज़ें। लेकिन चारों कोनों में बैठे चार लड़के बर्फ की मूर्तियों की तरह जमे रहे। यह कोई त्योहार नहीं था। यह एक और जाल था।

घोषणा समाप्त करते ही, डीन ने अपनी दृष्टि सीधे उन चारों पर डाली। और फिर, बहुत हल्के से, लगभग अदृश्य ढंग से, उनके होठों के कोने ऊपर उठे। "वह मुस्कुराईं।" वो मुस्कान रुद्र की रीढ़ की हड्डी में चुभने वाली बर्फीली सुई जैसी थी। वो कह रही थी —'मज़े करो। नाचो-गाओ। लेकिन याद रखना... मैं तुमसे ऊपर हूँ। तुम मेरे हो।'

क्लास खत्म हुई। टीचर ने उन चारों को रोका। "तुम्हें डांडिया में हिस्सा लेना ही होगा। यह एक आदेश है।" एक आदेश। कोई विकल्प नहीं था। झूठी मुस्कान के साथ, वे मान गए।

'''

अगले दिन, कैंपस पूरी तरह बदल चुका था। रंग-बिरंगे झंडे, फूलों की मालाएँ, झूमते बल्ब। जैसे ही रात हुई, डीजे का संगीत शुरू हो गया—तेज़ धड़कनों से हवा में कंपन होने लगा। यह सब इतना ज़बरदस्त था कि ऐसा लग रहा था मानो कॉलेज जानबूझकर इतना शोर और रोशनी फैला रहा हो ताकि अपने काले रहस्यों को छुपा सके।

रुद्र और मयंक एक साथ आए। रुद्र ने सादे लेकिन स्टाइलिश काले कपड़े पहने थे जो उनके सुगठित शरीर के हर कोण को उभार रहे थे। अंदर आते ही वो कई लड़कियों का ध्यान अपनी ओर खींचने लगे। मयंक भी साफ-सुथरा और सलीके से तैयार दिख रहा था। वे एक तंबू के नीचे खड़े होकर इस उत्सव के पीछे छिपी भयावह राजनीति को समझने की कोशिश कर रहे थे। नींबू पानी का गिलास पकड़े मयंक ने कहा, "यह सब एक तमाशा है। और हम मंच पर कठपुतलियाँ हैं।"

कबीर अपने साथियों के साथ आया। उसने साधारण जींस और सफेद कमीज पहनी हुई थी, जो उसके लंबे कद पर खूब जंच रही थी। "वाह बॉस! आज तो हीरो लग रहे हो!" साहो ने कहा। कबीर ने बस हल्का सा सिर हिलाया। उसकी निगाहें भीड़ में डीन को ढूंढ रही थीं। बृजेश वहां नहीं था। कबीर ने उसे पुकारने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। उसके चेहरे पर एक अजीब सी बेचैनी थी।

फिर आलोक आया। उसने अच्छे कपड़े पहने थे—नई कमीज़, सलीके से संवारे हुए बाल। लेकिन भीड़ में किसी ने उसे पहचाना नहीं। वह अकेला खड़ा रहा, जब तक रुद्र ने उसे नहीं देखा और इशारा नहीं किया। चारों फिर से इकट्ठा हो गए। "हमें साथ रहना होगा," रुद्र ने दोहराया। सबकी आँखों में सहमति थी। वे एक टीम थे, चाहे कितनी भी अनिच्छा से बने हों।

तभी भीड़ में से एक दमकती हुई आकृति उनकी ओर बढ़ी। रिया। उसने कढ़ाईदार पारंपरिक लहंगा पहना हुआ था और बालों में फूल लगाए हुए थे। वह इतनी खूबसूरत लग रही थी कि आलोक का मुंह खुला रह गया। उसकी सांसें थम गईं।

रिया सीधे रुद्र और मयंक के पास गई। "हाय! आप लोग भी आ गए!" उसकी आवाज़ मधुर थी। फिर उसकी नज़र आलोक पर पड़ी। एक पल का ठहराव। फिर उसके चेहरे पर एक सच्ची, प्यारी सी मुस्कान खिल उठी। "हाय आलोक। तुम भी बहुत अच्छे लग रहे हो।" यह एक छोटी सी, सरल सी तारीफ़ थी, लेकिन आलोक के लिए यह मानो पूरी दुनिया जीत लेने जैसा था। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा, उसके गालों पर एक गर्माहट सी दौड़ गई। वह बस मुस्कुराता रहा। रिया ने थोड़ी देर और बातें कीं और फिर अपने दोस्तों के पास जाने के लिए मुड़ गई। जाते समय उसके कंधे से लटका हुआ छोटा सा पर्स गिर गया।

आलोक तुरंत नीचे झुका और उसे उठा लिया। "लो," उसने थोड़ी कांपती हुई आवाज में कहा।

"धन्यवाद, आलोक!" रिया ने कहा और एक प्यारी सी मुस्कान के साथ चली गई। आलोक उसे देखता रहा। उस पल, उसका सारा डर, सारी चिंता गायब हो गई। एक इंसान, एक खूबसूरत इंसान ने उसे देखा था। भले ही सिर्फ एक पल के लिए।

दूसरी ओर, रुद्र को प्यास लगी थी। वह पानी की दुकान की ओर जा रहा था कि तभी तेज़ी से चल रही एक लड़की से उसकी टक्कर हो गई। "ओह! माफ़ कीजिए!" दोनों ने एक साथ कहा। रुद्र ने गिरी हुई लड़की को कोहनी से पकड़कर संभाला। जब वह उठी

और रुद्र की ओर देखा, तो रुद्र की सांसें थम गईं।
वह किसी मॉडल की तरह खूबसूरत नहीं थी। लेकिन उसकी आँखें... उसकी आँखों में एक अद्भुत चमक थी। गहरी भूरी आँखें जो रुद्र की आत्मा में झाँकती थीं। उनमें एक बुद्धिमत्ता, एक शक्ति थी जो उसे सबसे अलग बनाती थी। उसके चेहरे पर कुछ हल्के धब्बे थे, और उसके होंठों पर हैरानी भरी, फिर भी प्रसन्न मुस्कान थी।
"मुझे बहुत जल्दी थी," लड़की ने अपने कपड़े ठीक करते हुए कहा। उसकी आवाज़ स्पष्ट और आत्मविश्वास से भरी थी।
"कोई बात नहीं," रुद्र ने उसकी आँखों से नज़रें हटाए बिना कहा। "मैं रुद्र हूँ।"
"मायरा," उसने जवाब दिया। और फिर वो हुआ—एक पल के लिए नज़रें मिलीं, लेकिन वो इतनी गहरी थीं कि आसपास का शोर, संगीत, भीड़ सब धुंधला हो गया। ये सिर्फ़ आकर्षण नहीं था। ये एक पहचान थी, जैसे दो अलग-अलग धुनें अचानक एक सुर में मिल गई हों। फिर मायरा मुस्कुराई और भीड़ में खो गई। रुद्र वहीं खड़ा रहा, उस छवि, उस एहसास को भुला नहीं पा रहा था। वो मयंक की तरफ़ लौट गया।
रुद्र के चेहरे के भाव देखकर मयंक ने पूछा, "क्या हुआ?"
"मैंने एक लड़की को देखा..." रुद्र ने धीरे से कहा। मयंक मुस्कुराया और उसे चिढ़ाने लगा, लेकिन रुद्र की आँखों में एक नई चमक थी, जो उस रात के बाद पहली बार जगी थी।
इसी बीच बृजेश अपने फोन पर बात करने की कोशिश कर रहा था। "माँ, आवाज नहीं आ रही... बहुत शोर है... ठीक है, बाद में बात कर लेता हूँ।" नेटवर्क बहुत खराब था। बेहतर सिग्नल की तलाश में वह अनजाने में कैंपस के पीछे की ओर, उस जंगल की तरफ बढ़ गया जहाँ से वे उस रात लैब गए थे। डांडिया की धुन धीरे-धीरे धीमी पड़ गई और उसकी जगह जंगल की सरसराहट और झींगुरों की आवाज सुनाई देने लगी। अंधेरा घना था, दूर से कैंपस की रोशनी की हल्की सी चमक ही दिखाई दे रही थी। एक बड़े पेड़ के पास उसे दो-तीन बार सिग्नल मिला। उसने जल्दी-जल्दी अपनी माँ से फोन पर बात की।
फोन पर बात खत्म करने के बाद जब उसने मुड़कर देखा तो उसे एहसास हुआ कि वह रास्ता भूल गया है। घबराहट में उसने एक और गलत मोड़ ले लिया और घने पेड़ों के झुंड में घुस गया। हवा ठंडी हो गई थी। तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी।
दूर से, मानो हवा में घुलती हुई... किसी के चीखने की आवाज़। "बृजेश... मुझे

बचाओ..."
यह आवाज़... कबीर जैसी लग रही थी। लेकिन दूर से आती हुई, दबी हुई, डरी हुई। और उसमें दर्द झलक रहा था।
बृजेश का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। "कबीर? बॉस? आप कहाँ हैं?" वह आवाज़ की दिशा में दौड़ा, अपने नए जूतों से पत्तों और टहनियों को कुचलता हुआ। पेड़ों के बीच से दौड़ते हुए, वह उसी पुराने, परिचित रास्ते पर पहुँच गया जो सीलबंद प्रयोगशाला की ओर जाता था। टूटा हुआ, जंग लगा हुआ "प्रतिबंधित क्षेत्र" का बोर्ड उसे चाँदनी में एक धुंधली परछाई की तरह दिखाई दिया।
उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं। डर तो था, लेकिन कबीर की चिंता उस पर हावी हो गई। "बॉस! मुझे जवाब दीजिए! आप कहाँ हैं?"
प्रयोगशाला का वही जंग लगा हुआ दरवाज़ा... आज खुला था। बस एक इंच का गैप। अंदर से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, बस एक गहरी, भयानक खामोशी छाई थी। बृजेश हिचकिचाया। फिर उसे कबीर की चीख याद आई। उसने दरवाज़े को धक्का दिया। जंग लगी कुंडी की तेज़ आवाज़ ने रात की खामोशी को चीर दिया।
अंदर का अंधेरा उसे निगल गया। उसने अपने फोन की टॉर्च जलाई। हॉल वैसा ही था —गंदा, टूटा-फूटा, उन्हीं काले, सूखे लार के धब्बों से भरा हुआ। वह धीरे-धीरे कदम बढ़ा रहा था, टॉर्च की रोशनी कांप रही थी। "कबीर बॉस? ये मज़ाक नहीं है... बताओ तुम कहाँ हो? अगर ये मज़ाक है तो मैं..."
तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी... पानी टपकने की नहीं। यह एक... फिसलने की आवाज़ थी। जैसे कोई भारी और गीली चीज़ नम ज़मीन पर घिसट रही हो। और आवाज़ ऊपर से आ रही थी।
धीरे-धीरे, अपनी सांस रोककर, बृजेश ने ऊपर देखा।
छत पर, टूटे हुए प्लास्टर के बीच, कुछ हिल रहा था। एक लंबी, काली, चिकनी चीज़, जिसमें जोड़ थे। यह एक विशालकाय अंग था, जो छत से लटका हुआ था और धीरे-धीरे, इंच-इंच करके नीचे उतर रहा था, जैसे मकड़ी का पैर। इसके सिरे पर पाँच लंबी, नुकीली, हड्डी जैसी चीज़ें थीं... उंगलियों जैसी, लेकिन उनके सिरे ब्लेड की तरह तेज़ थे।
बृजेश का खून जम गया। उसका मुंह खुला रह गया। वह चीखना चाहता था, लेकिन उसकी आवाज गले में ही अटक गई और एक घुटती हुई गड़गड़ाहट में बदल गई। वह

पीछे हटने लगा, तभी उसका पैर एक उलटे हुए बीकर पर पड़ा और वह चटक कर टूट गया।

आवाज सुनकर वह अंग झटक गया! और छत के दूसरे हिस्से से, दीवार के पास से, एक दूसरा अंग निकला। वह बिल्कुल अलग था—पतला, हड्डियों से बना हुआ, और उसके सिरे पर एक बड़ी, गोल, काली, चमकदार चीज थी... एक आंख।

वह आँख धीरे-धीरे घूमी और सीधे बृजेश पर टिक गई। उसमें कोई भावना नहीं थी। न घृणा, न क्रोध। बस एक खालीपन, अथाह, प्राचीन भूख। उसमें देखना किसी अंतहीन खाई में झाँकने जैसा था।

बृजेश ने मुड़कर भागने की कोशिश की, उसका मन अब जमे हुए भय के बजाय आतंक से जल रहा था। लेकिन तभी, ठीक उसके सामने की दीवार का प्लास्टर फट गया। धूल के बादल में, एक तीसरा अंग बाहर निकला—छोटा, फुर्तीला, और उसके सिरे पर एक नुकीला, हड्डी जैसा डंक था, जिससे गाढ़ा, काला तरल टपक रहा था।

एक पल का सन्नाटा। बृजेश की टॉर्च की रोशनी उसके तीनों अंगों पर पड़ी, जो अब उसे तीन तरफ से घेरे हुए थे।

फिर डंक युक्त अंग तेजी से आगे बढ़ा।

हवा में एक फुफकार जैसी आवाज गूंज उठी।

बृजेश की आखिरी, छोटी सी चीख—डर और सदमे का मिश्रण—प्रयोगशाला की दीवारों में समा गई, दूर से आ रही हल्की डांडिया संगीत की धुन में खो गई।

उस काली, भावहीन आंख ने बिना पलक झपकाए देखा, जब उसका शरीर ढह गया और पूरी तरह से स्थिर हो गया - लकवाग्रस्त, लेकिन मरा नहीं।

अध्याय 10: खोई हुई धुन

प्रयोगशाला के सन्नाटे और डांडिया के तेज़ संगीत के बीच एक पतली, कांपती हुई रेखा थी। एक तरफ, बृजेश का शरीर ठंड से जम रहा था, उसकी चमकदार जैकेट अब अंधेरे में एक मैली सी धब्बों जैसी लग रही थी। दूसरी तरफ, कैंपस रंगों, रोशनी और हंसी की लहर में डूबा हुआ था। यह विरोधाभास इतना तीव्र था कि अपने आप में ही भयावह था।

कबीर ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। आधा घंटा बीत चुका था। बृजेश अभी तक नहीं

लौटा था। उसके सीने में सुलग रही एक अजीब बेचैनी अब धीरे-धीरे भड़क उठी। उसने भीड़ में नज़र घुमाई। बृजेश का चेहरा कहीं नज़र नहीं आ रहा था।
कबीर ने अपने दूसरे साथी से कहा, "साहो," उसकी आवाज में एक अजीब सी बेचैनी छिपी हुई थी, "बृजेश कहाँ गया?"
साहो पानी के गिलास से खेलते हुए कंधे उचकाते हुए बोला, "पता नहीं बॉस। उसकी माँ का फोन था। नेटवर्क खराब था, इसलिए वो बात करने के लिए कहीं बाहर चला गया।"
“कितना समय बीत गया है?” कबीर ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
“लगभग चालीस मिनट,” साहो ने थोड़ी चिंता जताते हुए कहा। “लेकिन उसने कहा कि वह जल्द ही वापस आ जाएगा।”
उसी क्षण, साहो के फोन पर एक संदेश की सूचना आई। एक तीखी, यांत्रिक 'डिंग' की आवाज़। साहो ने अपना फोन निकाला। स्क्रीन पर एक नाम चमक उठा - "बृजेश"।
“देखो, एक संदेश आया है,” साहो ने राहत की सांस लेते हुए कहा। उसने संदेश खोला और जोर से पढ़ा, “बॉस, मम्मी अचानक बीमार पड़ गईं। मुझे जल्दी घर जाना होगा। कबीर को बता देना बॉस, मुझे माफ़ कर देना। फिर मिलते हैं।”
कबीर ने फोन उठाया और खुद मैसेज पढ़ा। शब्द सीधे-सादे थे। बृजेश की वही जानी-पहचानी झिझक। लेकिन कुछ गड़बड़ थी। बहुत बड़ी गड़बड़। "उसने मुझे सीधे फोन क्यों नहीं किया?" कबीर ने संदेह भरी आवाज में पूछा।
“शायद नेटवर्क में कोई समस्या थी, बॉस। उन्होंने कहा था कि सिग्नल नहीं आ रहा था,” साहो ने कहा, अब कबीर की चिंता उसे भी महसूस होने लगी थी।
कबीर ने बृजेश के नंबर पर कॉल करने की कोशिश की। पहली बार—फोन बंद था। दूसरी बार—वही हाल। उसकी उंगलियां फोन पर कस गईं। बृजेश कभी अपना फोन बंद नहीं करता था। कभी नहीं। वह ऐसा लड़का था जो हर दस मिनट में सोशल मीडिया चेक करता था। और अगर उसकी मां बीमार होती, तो वह सबसे पहले कबीर के पास दौड़कर आता, चिल्लाता, गाड़ी मांगता। यह सब... बनावटी लग रहा था। जैसे कोई बहाना गढ़ा गया हो। लेकिन किसने? और क्यों?
उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसकी निगाहें अनायास ही परिसर के उस कोने की ओर उठीं जहाँ से जंगल शुरू होता था। अँधेरा घना और शांत था। बृजेश वहाँ गया था...

किसी संकेत की तलाश में।
“बॉस? क्या कुछ गड़बड़ है?” साहो ने पूछा।
“नहीं... कुछ नहीं,” कबीर ने फोन वापस देते हुए कहा। लेकिन उसके दिमाग में एक दरवाजा खुल गया था, और उसमें से ठंडी हवा का एक झोंका बह रहा था।
'''
मैदान के दूसरे छोर पर, डांडिया का खेल तेज़ होता जा रहा था। डीजे ने धुन बदल दी थी—एक मध्यम गति का, रोमांटिक गुजराती गाना। जोड़े आपस में भिड़ रहे थे। रुद्र और मयंक अलग खड़े थे, हाथों में डांडिया लिए। रुद्र का दिल अजीब तरह से धड़क रहा था—आधा उस रात के डर से, आधा किसी और उम्मीद से।
तभी भीड़ में से एक आकृति उसकी ओर बढ़ी। मायरा। उसने एक साधारण सलवार-कमीज़ पहनी हुई थी, लेकिन उसके चेहरे पर पड़ रही रोशनी ने उसे सबसे अलग बना दिया। वह रुद्र के ठीक सामने आकर रुक गई, उसके एक हाथ में एक छड़ी थी।
“मेरा कोई साथी नहीं है,” उसने थोड़ी हिचकिचाहट भरी आवाज़ में, लेकिन आँखों में स्पष्ट भाव लिए कहा। “क्या आप मेरे साथ डांडिया खेलेंगे?”
रुद्र के मुंह से शब्द निकलने से पहले ही, उसने हां में सिर हिलाया। उसके होंठों पर एक मुस्कान आ गई, जिसके बारे में उसे खुद भी नहीं पता था कि वह अब भी उसके चेहरे पर आ सकती है। "ज़रूर," उसने कहा।
वे घेरे में शामिल हो गए। पहले कदम लड़खड़ाते हुए थे। रुद्र का मन अभी भी उस चोटिल आँख और डंडों के सटीक समय को लेकर उलझन में था। लेकिन मायरा की उपस्थिति... मानो एक गर्माहट का एहसास करा रही थी। जब रुद्र ने बेताल डंडा मारा, तो मायरा की हंसी संगीत से भी मधुर लग रही थी।
“तुम इंजीनियरिंग में हो, है ना?” मायरा ने छड़ियों को खटखटाते हुए पूछा।
“हाँ। यांत्रिक। आप?”
“कंप्यूटर साइंस। तीसरा सेमेस्टर,” उसने कहा। फिर मुस्कुराते हुए बोली, “और हाँ, मैंने तुम्हारे बारे में सुना है। जिम वाला रुद्र। मशहूर।”
रुद्र हँसा, एक ऐसी हँसी जो उसके गले से निकली थी। "मशहूर? शायद सिर्फ़ भारी बैग उठाने के लिए।"
“शायद किसी और चीज़ के लिए भी,” मायरा ने कहा और तुरंत अपनी छड़ी पर ध्यान केंद्रित कर लिया, मानो ये शब्द अनजाने में निकल गए हों। रुद्र ने देखा कि उसके

गालों पर हल्की सी लाली आ गई है। उसका दिल ज़ोर से धड़का और फिर शांत हो गया।
उन्होंने कुछ और चक्कर लगाए। बातचीत सहज होती चली गई—कॉलेज, पसंदीदा गाने, पिज़्ज़ा में गांठों की शिकायतें। मायरा होशियार और समझदार थी, और उसकी आँखों में एक ऐसी समझदारी थी जिससे रुद्र को लगा कि उसने बहुत कुछ देखा और समझा है। जब संगीत की गति तेज़ हुई और उनकी छड़ें और तेज़ी से बजने लगीं, तो रुद्र ने अपना सारा ध्यान उस पल पर केंद्रित कर दिया। उस पल में बस संगीत था, मायरा की आँखों की चमक थी, और जब छड़ें आपस में टकराती थीं तो कभी-कभार उनकी उंगलियों के स्पर्श से उसके हाथों का गर्म एहसास होता था।
गाना खत्म होने पर दोनों की सांस थोड़ी फूल गई थी, लेकिन वे मुस्कुरा रहे थे। रुद्र ने कहा, "यह... बहुत मजेदार था।"
“हाँ,” मायरा ने कहा, उसकी साँसें भी तेज़ चल रही थीं। “शायद कभी फिर।” और फिर, एक और मुस्कान के साथ, वह भीड़ में गुम हो गई, लेकिन इस बार रुद्र के चेहरे पर एक ऐसी गर्माहट छोड़ गई जो ठंडी रात की हवा में भी फीकी नहीं पड़ी।
'''
मयंक ये सब पास से देख रहा था। उसने खुद भी एक सहपाठी लड़की के साथ डांडिया खेला था, लेकिन उसका ध्यान हमेशा विश्लेषण पर ही रहता था। उसने रुद्र और मायरा के बीच के 'आंकड़ों' पर गौर किया था—निकटता, आंखों का संपर्क, शारीरिक हावभाव। ये सब सकारात्मक थे। लेकिन उसकी नज़र कबीर पर भी थी, जो अब साहो से अलग होकर एक खंभे से टिककर बार-बार अपना फोन देख रहा था।
मयंक के मन में एक पहेली बन रही थी: बृजेश का गायब होना + कबीर की बेचैनी + डीन का नियंत्रण = एक नया, खतरनाक पहलू।
कबीर मानो खुद को सजा दे रहा हो, डांडिया के घेरे में घुस गया। वह एक लड़की के साथ जोड़ी बनाकर घूम रहा था, पर उसकी हरकतें मशीनी थीं। उसकी मुट्ठियाँ डंडे पर इतनी कसकर जकड़ी थीं कि उसकी हड्डियाँ सफेद दिखने लगी थीं। हर बार डंडे टकराने पर एक तीखी, आक्रामक आवाज़ आती थी, मानो वह कुछ कुचल देना चाहता हो। उसकी नज़रें बार-बार मैदान के बाहर, अंधेरे की ओर भटक रही थीं। बृजेश का संदेश उसके दिमाग में बार-बार गूंज रहा था। 'माँ की सेहत... घर जा रहे हैं...' यह बात उसे समझ नहीं आ रही थी।

उसने दोबारा अपना फोन उठाया। बृजेश की मां का नंबर डायल किया। फोन बजता रहा... और बजता ही रहा। कोई जवाब नहीं। एक और सिहरन। अगर बृजेश सचमुच घर गया होता, तो उसकी मां ने फोन उठाया होता। या कम से कम बृजेश खुद... लेकिन नहीं। सब कुछ सुन्न था।

डांडिया रात भर चलता रहा, लेकिन हमारे चारों मुख्य पात्रों के लिए उसका जादू गायब हो चुका था। मायरा की याद रुद्र के मन में एक सुलगती चिंगारी की तरह थी, लेकिन उसके आसपास का वातावरण अभी भी ठंडा था। मयंक नोट्स बना रहा था। कबीर एक बार फिर एक अंधेरे कोने में खड़ा था। और आलोक... आलोक ने रिया को जाते हुए देखा था, और उस पल की खुशी को अपने भीतर संजो कर रखा था, मानो इस भयानक दुनिया में कोई अनमोल चीज बची हो।

'''

अगली सुबह, कॉलेज फिर से 'सामान्य' दिखने की कोशिश कर रहा था। डांडिया की सजावट हटाई जा रही थी, टूटे हुए फूलों के गुच्छे ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। कक्षा में वही पुराना, थका हुआ माहौल लौट आया था।

कबीर सीधे साहो के पास गया। “बृजेश का कोई संदेश आया? कोई फोन आया?”

साहो ने सिर हिलाया। “नहीं, बॉस। मैंने कोशिश भी की। फोन बंद है।”

“क्या तुमने उसके घर फोन किया था?” कबीर ने गुस्से भरी आवाज में पूछा।

“हां... उसकी बहन ने जवाब दिया। उसने कहा कि बृजेश कल रात घर नहीं आया। उन्हें लगा कि वह कॉलेज के समारोह में ही रुक गया है।”

ये शब्द कबीर को पेट में मुक्के की तरह लगे। 'घर आया ही नहीं।' वो संदेश... वो झूठा था। पूरी तरह से। उसने अपना फोन निकाला, उस संदेश को दोबारा पढ़ा। अब हर शब्द जहर की तरह चुभ रहा था। किसने भेजा था? बृजेश ने तो नहीं... तो फिर किसने? और क्यों?

उसकी साँसें तेज़ होने लगीं। उस रात का डर, जो डांडिया की आवाज़ में दब गया था, अब एक विशाल परछाई की तरह लौट रहा था। उसकी नज़र अनायास ही रुद्र, मयंक और आलोक की ओर गई। वे भी उसे देख रहे थे। उनकी आँखों में भी वही सवाल था —वही डर।

तभी, कक्षा का दरवाजा खुला और डीन शर्मा अंदर आईं। आज उनके चेहरे पर मुस्कान नहीं थी। एक गहरी, औपचारिक गंभीरता थी। कक्षा में सन्नाटा छा गया।

“छात्रों,” उसने भारी और सपाट आवाज़ में कहना शुरू किया। “मुझे आपको एक दुखद खबर देनी है। हमारे तीसरे सेमेस्टर के छात्र बृजेश वर्मा कल रात से लापता हैं। उनके परिवार ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा दी है।”
कक्षा में हलचल मच गई। कानाफूसी शुरू हो गई। “लापता?” “लेकिन वो तो कल डांडिया में था!” “शायद वो घर चला गया हो…”
लेकिन हमारे चारों लड़के स्तब्ध रह गए। उनके कानों में एक तेज़ झनझनाहट गूंज उठी। डीन की आवाज़ धीमी होती जा रही थी। लापता। आधिकारिक रिपोर्ट। ये शब्द हवा में ऐसे लटके हुए थे, जैसे कोई ज़हरीला फल।
डीन ने आगे कहा, “कॉलेज प्रशासन पुलिस को पूरी सहायता प्रदान कर रहा है। यदि किसी के पास कोई जानकारी हो, तो कृपया तुरंत अधिकारियों को सूचित करें।”
और फिर, मानो किसी पूर्व-निर्धारित नाटक का हिस्सा हो, डीन ने अपनी निगाहें उन चारों पर घुमाईं। यह दृष्टि महज़ एक पल की थी, लेकिन इतनी तीव्र थी कि रुद्र को लगा जैसे किसी बर्फीली सुई ने उसकी आँख में चुभन पैदा कर दी हो। उस नज़र में कोई आश्चर्य नहीं था। कोई चिंता नहीं। बस एक… "निरीक्षण" था। मानो वह उनकी प्रतिक्रिया पर नज़र रख रही हो।
क्लास दोबारा शुरू हुई, लेकिन कोई भी पढ़ाई नहीं कर पा रहा था। कबीर के दिमाग में तरह-तरह के विचार चल रहे थे। बृजेश जंगल की तरफ गया था। किसी सिग्नल की तलाश में। उसी जंगल में जो लैब तक जाता था। और अब वह गायब था।
उसने धीरे से रुद्र की ओर देखा। रुद्र की निगाहें उससे मिलीं। बिना कुछ कहे, एक सवाल हवा में तैर रहा था: 'क्या वह वहाँ गया था? क्या उसने… वह चीज़ ढूंढ ली?'
मयंक ने अपनी नोटबुक के कोने में लिखा: "बृजेश -> जंगल -> प्रयोगशाला? -> लापता। क्या डीन को पहले से पता था?" उसने नीचे एक बड़ा प्रश्न चिह्न बनाया।
आलोक अपनी सीट पर सिकुड़ने की कोशिश करने लगा। बृजेश का नाम सुनते ही उसके शरीर में एक झनझनाहट सी दौड़ गई। जिस व्यक्ति ने कल उसे धमकी दी थी… वह गायब था। यह डरावना था। लेकिन एक अजीब सच्चाई भी थी—उन चारों को पता था कि बृजेश कहाँ गया होगा। और शायद… उसके साथ क्या हुआ होगा। यह जानकारी उसके लिए एक भारी बोझ थी।
जब क्लास खत्म हुई, तो वे चारों अपने आप ही लॉन के उसी सुनसान कोने में इकट्ठा हो गए, जहां रुद्र और मयंक एक दिन पहले खड़े थे।

“तो?” कबीर ने कर्कश आवाज में कहा। “वह वहाँ गया था। मुझे पता है।”
“हम सब जानते हैं,” रुद्र ने स्थिर स्वर में कहा। “सवाल यह है कि अब क्या करें? क्या हम डीन को बताएं? क्या पुलिस को बताएं कि वह एक सीलबंद प्रयोगशाला में है जहाँ एक राक्षस रहता है?”
“वे हमें पागलखाने में डाल देंगे,” मयंक ने तुरंत कहा। “और डीन... डीन ने हमें पहले ही चेतावनी दे दी है कि हम किसी से बात न करें। उन्हें बृजेश के लापता होने के बारे में पता था। उनकी आँखों को देखो। उन्हें ज़रा भी हैरानी नहीं हुई।”
“तो उसे पता है कि वह लैब में है,” आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा, मानो वह अपने ही विचारों से डरा हुआ हो। “और उसने कुछ नहीं किया। उसने पुलिस को वहाँ नहीं भेजा।”
चारों ओर सन्नाटा छा गया। इस सच्चाई का बोझ उन सभी पर भारी पड़ रहा था। डीन सिर्फ झूठ ही नहीं बोल रही थी; वह अपना रहस्य छुपाने के लिए एक लापता छात्र, शायद एक मृत छात्र को, उसी नरक में छोड़ने को भी तैयार थी।
रुद्र ने अचानक कहा, "हमें वहां जाना होगा।"
“क्या?” कबीर ने आँखें चौड़ी करते हुए कहा।
“हमें पता लगाना होगा। इसकी पुष्टि करनी होगी। और... अगर वो... अगर बृजेश वहाँ है...” रुद्र ने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। वे सब जानते थे कि ‘अगर’ के बाद क्या आएगा।
"यह तो पागलपन है," मयंक ने कहा, लेकिन उसकी आवाज में विरोध नहीं, बल्कि डर था।
“हाँ,” रुद्र ने मुट्ठी भींचते हुए कहा। “लेकिन हमारे पास कोई चारा नहीं है। डीन हम पर नियंत्रण कर रहा है। बृजेश लापता है। और वह ‘चीज़’... वह अभी भी मौजूद है। हम इसमें अकेले नहीं हैं। हम सब साथ हैं। और हमें पता लगाना होगा कि वहाँ क्या चल रहा है, वरना अगला शिकार हममें से ही कोई होगा।”
उनकी बात खत्म होते ही, उनके बीच से ठंडी हवा का एक झोंका गुजरा, जिससे पेड़ के पत्ते सरसरा उठे। दूर, प्रशासनिक भवन की एक खिड़की पर, एक शांत चेहरा उन्हें देख रहा था। डीन। बातचीत खत्म होते ही, वह खिड़की से दूर हट गईं, उनके होठों पर एक हल्की, संतुष्टि भरी मुस्कान थी। शिकार अपने आप जाल की ओर बढ़ रहा था। उन्हें बस थोड़ा और धक्का चाहिए था।

अध्याय 11: जो देखा गया, वह चला गया

जिस कोने में वे चारों खड़े थे, वहाँ का वातावरण विषैला हो गया था। खिड़की से झांकती डीन की निगाहों का एहसास उन्हें एक अदृश्य मकड़ी के जाले की तरह जकड़े हुए था। रुद्र का प्रयोगशाला में वापस जाने का प्रस्ताव एक बेतुका, खतरनाक फल था जो हवा में लटका हुआ था, जिसे न तो नकारा जा सकता था और न ही स्वीकार किया जा सकता था।

"आज रात," रुद्र ने दोहराया, उसकी निगाहें बारी-बारी से अपने साथियों के चेहरों पर टिकी थीं। "हमें पता लगाना होगा। बृजेश का फोन... वो संदेश... ये लैब का मामला है।"

मयंक ने अपनी नोटबुक बंद कर दी। "तर्क गलत नहीं है। लेकिन यह आत्महत्या करने जैसा है। डीन ने पहले ही हमें चेतावनी दी थी कि अगर पांचवा व्यक्ति इसमें शामिल हो गया, तो स्थिति 2009 से भी बदतर हो जाएगी। बृजेश वह पांचवा व्यक्ति हो सकता है। और देखो उसके साथ क्या हुआ।"

“तो हम बस यहीं बैठे रहें?” कबीर की आवाज़ में गुस्से और व्यर्थ पीड़ा का भाव था। “वह मेरा अपना है। चाहे वह जैसा भी हो। मैं उसे ऐसे नहीं छोड़ सकता।” पहली बार कबीर के लहजे में अहंकार नहीं, बल्कि एक गहरी, बेबस ज़िम्मेदारी झलक रही थी। यह नया कबीर, यह बदलाव, रुद्र और मयंक के लिए भी चौंकाने वाला था।

आलोक ने चुपचाप अपना बैग कसकर पकड़ लिया। "लेकिन... अगर हमें वो... चीज़ वहाँ मिल जाए तो? वो जो छत पर है?"

सबके रोंगटे खड़े हो गए। 'वह चीज़'—यह शब्द सुनते ही उस अमानवीय आँख, उन लंबे, जोड़ों वाले अंगों और उस दहाड़ की याद ताज़ा हो गई।

"हम सावधानी बरतेंगे," रुद्र ने खुद को दिलासा देते हुए कहा। "हम बस जाएंगे, जांच करेंगे और तुरंत वापस आ जाएंगे। अगर बृजेश वहां हुआ तो... हम जो कर सकते हैं वो करेंगे।"

यह एक झूठी उम्मीद थी, और वे सब यह जानते थे। लेकिन उस झूठ के सहारे ही वे उस सन्नाटे से बाहर निकल सकते थे। एक योजना बनाई गई: रात 9 बजे पुराने गेट पर मिलना। हथियार? केवल टॉर्च, और रुद्र द्वारा जिम के लिए रखी गई एक मजबूत

टॉर्च-कम-स्टिक। यह मूर्खतापूर्ण था, लेकिन इससे बेहतर कोई विकल्प नहीं था।
'''
कॉलेज से निकलते समय रुद्र का सिर भारी था। सूरज डूब रहा था और बढ़ती हुई परछाइयाँ उसे प्रयोगशाला में लगे उन काले धब्बों की याद दिला रही थीं। वह विचारों में इतना खोया हुआ था कि उसने पास में आती आहट भी नहीं सुनी, सीधे बस स्टॉप की ओर चल पड़ा।
"रुद्र?"
एक मीठी, जानी-पहचानी आवाज़ ने उसे चौंका दिया। वह मुड़ा। मायरा वहाँ खड़ी थी, किताबों से भरा उसका बैग उसके कंधे पर टंगा हुआ था। उसके चेहरे पर दोस्ताना मुस्कान थी, लेकिन उसकी आँखों में गहरी चिंता झलक रही थी।
"ओह... हाय मायरा," रुद्र ने अपने भावों को जल्दी से नियंत्रित करते हुए कहा।
"क्या तुम ठीक हो?" उसने पास आते हुए पूछा। "आज क्लास में तुम बहुत... शांत लग रही थी। और तुम्हारे दोस्त भी। क्या हुआ?"
रुद्र का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। 'वह देख रही थी। उसने ध्यान दिया।' यह खतरनाक था। "कुछ नहीं," उसने जल्दी से कहा, अपनी आवाज़ में बनावटी हल्कापन लाने की कोशिश करते हुए। "बस... कॉलेज का असाइनमेंट, प्रोजेक्ट का दबाव। थोड़ी थकान है।"
मायरा ने अपना सिर झुकाया। उसकी निगाहें इतनी तीखी थीं कि रुद्र को लगा मानो वह उसकी आत्मा पर छाए दिखावे की हर परत को भेद रही हो। "यह महज़ थकान नहीं लग रही," उसने धीरे से कहा। "तुम डरे हुए लग रहे हो।"
सीधा निशाना लगा। रुद्र ने मुस्कुराने की कोशिश की। "डरा हुआ? मैं? नहीं... बस, तुम्हें पता है, परीक्षाएँ नज़दीक आ रही हैं..."
"रुद्र," मायरा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, उसकी आवाज़ कोमल लेकिन दृढ़ थी। "कल रात डांडिया में... तुम एक पल के लिए खुश थे। फिर तुम्हारे दोस्त ने तुमसे कुछ कहा, और तुम्हारा चेहरा बदल गया। मानो सारी रोशनी गायब हो गई हो। और आज सुबह जो खबर आई... बृजेश के लापता होने की। क्या तुम्हें कुछ पता है?"
मानो हवा थम सी गई हो। रुद्र के मन में एक भयानक संघर्ष चल रहा था। मायरा ईमानदार लग रही थी। उसकी चिंता सच्ची थी। लेकिन डीन की चेतावनी—'पांचवें व्यक्ति को मत बताना'—उसके कानों में गूंज रही थी। फिर भी... अकेलेपन और भय

के इस अंधेरे में, मायरा की उपस्थिति एक दीपक की लौ जैसी थी। उसे सब कुछ बताने, अपना बोझ बांटने की तीव्र इच्छा हो रही थी।
"तुम गलत समझ रही हो," रुद्र ने नज़रें झुकाते हुए आखिरकार कहा। "बस थकान है। मुझे जल्दी घर जाना है। फिर मिलेंगे।" और पीछे मुड़े बिना, वह तेज़ी से बस की ओर चल पड़ा। मायरा की निगाहें उसकी पीठ पर पड़ना उसे ऐसा लगा जैसे कोई चाकू मार रहा हो।
'''
आज रात का अंधेरा कुछ ज़्यादा ही घना लग रहा था। रात के 9 बजे, कैंपस का पिछला हिस्सा सुनसान और डरावना था। रुद्र, मयंक और कबीर गेट के पास इकट्ठा हुए। आलोक देर से पहुँचा, उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं और आँखें डर से चौड़ी हो गई थीं।
“चलो शुरू करते हैं,” रुद्र ने अपनी टॉर्च को कसकर पकड़ते हुए कहा। एक बार फिर, वही रास्ता, वही डरावना जंगल का मार्ग। आज रात जंगल पूरी तरह शांत नहीं था। कभी-कभी दूर से किसी टहनी के टूटने की आवाज़ आती, या कोई अजीब सी सरसराहट, मानो कोई बड़ा जानवर झाड़ियों के बीच से सरक रहा हो। हर आवाज़ पर उनकी बत्तियाँ तेज़ी से इधर-उधर चमकने लगीं।
जैसे ही वे प्रयोगशाला की जंग लगी चारदीवारी के पास पहुँचे, मयंक की रोशनी ज़मीन पर पड़ी किसी चीज़ पर पड़ी। एक चमकदार, नीले रंग का कवर। एक मोबाइल फोन।
"यह..." कबीर ने झट से उसे उठा लिया। स्क्रीन टूटी हुई थी, लेकिन बिजली चालू थी। वॉलपेपर पर बृजेश और कबीर की सेल्फी थी, दोनों अजीब से चेहरे बना रहे थे। "यह बृजेश की है।" उसकी आवाज़ खोखली हो गई। "वह यहाँ था।"
यह पक्का सबूत था। अब कोई शक नहीं बचा था। सबकी निगाहें उस विशाल, काली इमारत की ओर उठीं, जो अंधेरे में एक भयानक खोपड़ी की तरह खड़ी थी। आज उसका द्वार खुला नहीं, बल्कि बंद था। हालांकि, ताला टूटा हुआ था, मानो किसी ने जबरदस्ती अंदर घुसने की कोशिश की हो।
तभी पीछे झाड़ियों से एक तेज सरसराहट की आवाज आई। सब चौंककर मुड़ गए।
"वहाँ कौन है?" रुद्र ने अपनी लाठी तैयार करते हुए पुकारा।
कोई जवाब नहीं। बस एक और हलचल, भागते कदमों की आवाज।

"रुको!" रुद्र चिल्लाया और बिना सोचे समझे उस आवाज़ की ओर दौड़ पड़ा। मयंक और कबीर की चेतावनी भरी आवाज़ें उसके कानों में गूंज रही थीं, लेकिन अब उसका शरीर एड्रेनालाईन के तेज़ बहाव से नियंत्रित हो रहा था। वह झाड़ियों के पास से भागा, एक पेड़ के पीछे गया और एक खुले मैदान में रुक गया। वहाँ, ज़ोर-ज़ोर से साँस लेते हुए, उसकी पीठ रुद्र की ओर थी, एक औरत खड़ी थी।
"मायरा?" रुद्र की सांस अटक गई।
वह धीरे से मुड़ी। उसके चेहरे पर डर था, लेकिन दृढ़ संकल्प भी। "रुद्र, मुझे माफ़ करना। मैं तुम्हारे पीछे आई थी। तुम्हारा व्यवहार... मुझे चिंता हो रही थी।"
रुद्र के मन में क्रोध, राहत और भय की एक अजीब लहर दौड़ गई। "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? यह जगह सुरक्षित नहीं है! तुम्हें अभी वापस जाना होगा!"
"नहीं," मायरा ने दृढ़ता से कहा और उसकी ओर बढ़ी। "तुमने मुझसे झूठ बोला है। तुम मुसीबत में पड़ जाओगे। मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूंगी।"
"तुम समझते नहीं हो—" रुद्र ने कहना शुरू किया।
"तो मुझे समझाओ!" मायरा ने उसे बीच में ही रोक दिया। "यह किसका फोन है? यह बंद इमारत क्या है? तुम लोग रात के अंधेरे में यहाँ क्यों हो?"
रुद्र ने चारों ओर देखा। मयंक और कबीर अब उनके पास पहुँच चुके थे, उनके चेहरों पर झुंझलाहट और निराशा के भाव थे। आलोक भी वहीं था, मायरा को देखकर वह और भी भयभीत हो गया था।
अंततः हार मानते हुए रुद्र ने कहा, "यह बृजेश का फोन है। हमें लगता है कि वह इस प्रयोगशाला के अंदर है। यह प्रयोगशाला... 2009 से सील है। यहाँ एक दुर्घटना हुई थी।"
"सील बंद है? तो फिर अंदर कोई कैसे जा सकता है?" मायरा ने तर्क को परखते हुए पूछा।
कबीर ने कर्कश आवाज में कहा, "हम भी अंदर गए थे। कल रात। और हमने वहाँ कुछ देखा... कुछ ऐसा जो इंसान नहीं था।"
मायरा की आँखें चौड़ी हो गईं। उसने रुद्र के चेहरे की ओर देखा, जो गंभीर था। उसने मयंक की ओर देखा, जो सिर हिला रहा था। उसने आलोक की ओर देखा, जो काँप रहा था। यह कोई मज़ाक नहीं था।
"तुम पागल हो," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "तुम सब पागल हो।"

"शायद," रुद्र ने कहा। "लेकिन तुम्हें जाना होगा, मायरा। यह जगह खतरनाक है। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कुछ हो।"
मायरा ने कांपती हुई लंबी सांस ली। उसने प्रयोगशाला की ओर देखा, फिर उन चार डरे हुए, लेकिन दृढ़ चेहरों को देखा। "अगर यह सच है... तो आपको मदद की ज़रूरत है। मैं नहीं जा रही।"
बहस का समय समाप्त हो चुका था। बृजेश के लिए हर पल की देरी खतरनाक थी। रुद्र ने आत्महत्या करने की इच्छा से सिर हिलाया। "ठीक है। लेकिन तुम हमारे पीछे रहना। सब कुछ मानना।"
वे पाँचों टूटे हुए ताले वाले द्वार की ओर बढ़े। दरवाज़ा चरमराते हुए खुला। अंदर का अँधेरा और भी गहरा, और भी जीवंत प्रतीत हुआ। हवा में एक मीठी-सी सड़ी हुई गंध थी, मानो फूल और मांस एक साथ सड़ रहे हों।
उनकी निगाहें एक बार फिर उन काले धब्बों पर पड़ीं। आज वे धब्बे ताज़े लग रहे थे। चमकदार, गीले। वे मुख्य प्रयोगशाला की ओर चल पड़े। दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था। अंदर प्रवेश करते ही उनकी सांसें थम गईं।
प्रयोगशाला के बीचोंबीच, फर्श पर बृजेश लेटा हुआ था।
लेकिन वह बृजेश जैसा नहीं दिखता था। उसके कपड़े फटे हुए थे। उसके शरीर पर अजीब से बैंगनी निशान थे, मानो उनमें जान हो। उसकी आँखें खुली थीं, लेकिन पुतलियाँ इतनी फैली हुई थीं कि आँखें पूरी तरह काली लग रही थीं। उसकी उंगलियाँ अजीब तरह से मुड़ी हुई थीं, मानो उनमें अतिरिक्त जोड़ आ गए हों। सबसे भयानक उसकी छाती थी—वहाँ एक गहरा, असमान घाव था, मानो किसी ने कुछ खोदा हो। और उसके शरीर के चारों ओर, ज़मीन पर, एक चिपचिपा, काला पदार्थ फैला हुआ था।
"हे भगवान..." मायरा ने अपना मुंह हाथ से ढक लिया, एक दबी हुई चीख उसके गले में अटक गई।
कबीर चीखा नहीं। वह बस बेजान होकर आगे बढ़ा, अपने दोस्त के शव के पास गया और घुटनों के बल बैठ गया। उसने बृजेश का हाथ छुआ। ठंडा, बेजान। उसके गले से एक अजीब सी गड़गड़ाहट निकली, दर्द और पछतावे की एक कठोर आवाज़। "मैं तुम्हें बचा नहीं पाया," उसने फुसफुसाया। "मैं तुम्हें रोक नहीं सका।"
रुद्र को जी मिचलाने लगा। उसने अपनी भावनाओं से बचने के लिए, सुरक्षा के लिए,

बृजेश के शरीर के अन्य हिस्सों पर ध्यान केंद्रित किया। फिर उसकी नज़र बृजेश की खुली हथेली पर पड़ी। वहाँ, उसके अपने खून और उस काले पदार्थ से कुछ लिखा हुआ था। एक संख्या, या शायद कोई तारीख।
"2009"
और उसके नीचे, एक अधूरा शब्द: "एक..."
"देखो," रुद्र ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। मयंक पास आकर देखने लगा। "यह वही साल है। और यह शब्द... 'एक...' शायद 'अंदर'? 'अंधकार'?"
"पुलिस," मायरा ने कांपती हुई आवाज़ में कहा, लेकिन उसकी आवाज़ में व्यावहारिकता झलक रही थी। "हमें अभी पुलिस को बुलाना चाहिए।"
रुद्र ने अपना फोन निकाला। नेटवर्क नहीं था। "यहां सिग्नल नहीं है। हमें बाहर जाना होगा।"
"हम उसे यहाँ नहीं छोड़ सकते," कबीर ने खोखली आवाज़ में कहा, अभी भी बृजेश के शव को देखते हुए।
मयंक ने तर्क दिया, "हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। हमें मदद लेनी ही होगी। और यह लेख... यह सबूत है।"
उन्होंने कबीर को समझाने की कोशिश की। आखिरकार, वह खड़ा हुआ, बृजेश के चेहरे पर आखिरी नजर डाली और सिर हिलाया। वे पांचों जल्दी से प्रयोगशाला से बाहर निकले और जंगल के रास्ते से वापस भागने लगे। इस बार, डर नहीं, बल्कि एक तीव्र, निर्णायक तत्परता थी जिसने उन्हें प्रेरित किया।
कैंपस की सीमा के पास सिग्नल वापस आ गया। रुद्र ने फोन उठाया और 100 डायल किया। कनेक्शन जुड़ते ही उसने तेज़ी से बोलना शुरू किया: "हमें एक शव मिला है। सिक्किम विश्वविद्यालय की पुरानी बायोटेक रिसर्च लैब में। बृजेश वर्मा... जी हाँ, वही लापता छात्र। हालत बहुत खराब है। कृपया जल्दी आइए।"
फोन रखने के बाद, वे सभी सड़क किनारे खड़े होकर पुलिस का इंतज़ार करने लगे। मायरा सहमी हुई थी, लेकिन उसने रुद्र का हाथ थाम रखा था। उसकी गर्माहट ही उसके लिए एकमात्र सहारा थी। कबीर की आँखें बंद थीं। मयंक ने अपनी नोटबुक में '2009' और 'एक...' लिखा और उनके चारों ओर गहरे गोले बनाए। आलोक ज़मीन की ओर घूर रहा था, शायद बृजेश की आँखों की याद से बचने की कोशिश कर रहा था।

लगभग बीस मिनट बाद, दूर से पुलिस सायरन की आवाज़ सुनाई दी। लाल-नीली बत्तियाँ रात के अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ीं। दो पुलिस कारें और एक फोरेंसिक वैन रुकीं। एक इंस्पेक्टर नोटबुक लिए हुए बाहर निकला।
"क्या आपने ही फोन किया था?" उसने पूछा।
"जी सर," रुद्र ने आगे बढ़ते हुए कहा। "शव प्रयोगशाला के अंदर है। हम आपको रास्ता दिखा देंगे।"
उन पांचों के मार्गदर्शन में पुलिस दल जंगल के रास्ते पर फिर से चल पड़ा। पुलिस अधिकारियों की तेज टॉर्च से रास्ता रोशन हो रहा था। वे रेडियो पर बात कर रहे थे। यह सामान्य प्रक्रिया थी, और इस सामान्यता से रुद्र के मन को थोड़ी राहत मिली।
प्रयोगशाला का द्वार दोबारा खोला गया। निरीक्षक ने अपनी टीम को अंदर जाने का इशारा किया। कैमरे और उपकरणों से लैस फोरेंसिक विशेषज्ञ प्रयोगशाला में दाखिल हुए।
रुद्र और बाकी लोग बाहर huddled होकर इंतजार कर रहे थे। अब सब कुछ खत्म हो जाएगा। सच्चाई सामने आ जाएगी। डीन का राज खुल जाएगा।
कुछ मिनट बीत गए। प्रयोगशाला के अंदर से कोई आवाज़ नहीं आई। फिर निरीक्षक बाहर आया। उसके चेहरे पर उलझन और झुंझलाहट के भाव थे।
"क्या हुआ?" रुद्र ने पूछा।
इंस्पेक्टर ने उन्हें घूरकर देखा। "वहाँ कोई शव नहीं है।"
मानो हवा जम सी गई। "क...क्या?" कबीर आगे बढ़ा और बोला। "वह बीच में लेटा हुआ था! उसके चारों ओर काला पदार्थ फैला हुआ था! उसकी हथेली पर कुछ लिखा हुआ था!"
"देखो लड़कों," इंस्पेक्टर ने गुस्से भरी आवाज़ में कहा। "वहाँ धूल, पुरानी चीज़ें और कुछ गंदे धब्बों के अलावा कुछ नहीं है। न कोई लाश, न खून, न कोई लिखावट।"
"यह असंभव है!" मायरा ने हैरानी से कहा। "मैंने खुद देखा! उसकी आँखें... वह घाव..."
"क्या तुम सबने कुछ नशा किया है?" एक अन्य पुलिस अधिकारी ने संदेह भरी नजरों से उनकी ओर देखते हुए पूछा।
रुद्र पुलिसकर्मियों को धक्का देकर लैब में वापस दाखिल हुआ। उसकी टॉर्च ने उसी जगह को रोशन किया। फर्श साफ था। बस सामान्य धूल थी। काले धब्बे मौजूद थे,

लेकिन वे पुराने और सूखे लग रहे थे। बृजेश का शरीर, खून, लिखावट... सब गायब हो गया था। मानो कुछ हुआ ही न हो।
उसने चारों ओर देखा। छत वैसी ही थी, लेकिन उस पर कोई हिलती-डुलती आकृति नहीं थी। सब कुछ स्थिर, शांत और निर्मल था।
इंस्पेक्टर उसके पीछे आकर बोला, "बस करो। यह मज़ाक हद से ज़्यादा बढ़ गया है। हमारा समय बर्बाद कर रहे हो, हमें एक सीलबंद परिसर में घुसने के लिए मजबूर कर रहे हो... तुम्हारे खिलाफ़ केस दर्ज किया जा सकता है।"
रुद्र मुड़ा। उसकी नज़रें अपने साथियों से मिलीं। कबीर का चेहरा पीला पड़ गया था। मयंक की आँखें अविश्वास से चौड़ी हो गई थीं। आलोक थोड़ा काँप रहा था। और मायरा... उसकी आँखों में डर नहीं, बल्कि एक गहरा, भयानक खौफ था—ऐसा खौफ जो तब पैदा होता है जब आपका अपना मन आपको धोखा देने लगता है।
"लेकिन... हमने देखा," रुद्र केवल इतना ही कह सका, उसकी आवाज धीमी होकर फुसफुसाहट में बदल गई। "हम सबने देखा।"
"कुछ नहीं देखा," इंस्पेक्टर ने सख्ती से कहा। "अब आप लोग यहां से चले जाओ। अगली बार अगर तुमने ऐसा कुछ किया तो तुम्हें पछतावा होगा।"
पुलिस की गाड़ियाँ सायरन बजाते हुए चली गईं, मानो अपनी मूर्खता का ऐलान कर रही हों। और वे पाँचों उस सीलबंद प्रयोगशाला के सामने खड़े रहे, जो अब एक निर्जीव, खाली ढाँचे जैसी लग रही थी। उनके और सच्चाई के बीच एक अदृश्य, शक्तिशाली दीवार खड़ी हो गई थी। कोई, या कुछ, सबूत मिटा सकता था। उनकी आँखों के सामने घटी उस भयानक घटना को हवा में गायब कर सकता था।
और सबसे भयावह सवाल यह था: अगर बृजेश का शव वहां था ही नहीं, तो उन्होंने क्या देखा? और वह लिखावट... "2009... एक..." उसका क्या हुआ?
रात की हवा कराह की तरह सीटी बजा रही थी। मानो प्रयोगशाला की इमारत खुद हंस रही हो। रुद्र ने मायरा का हाथ कसकर पकड़ लिया। अब वे पांचों एक नए, और भी भयावह सच से बंध गए थे—एक ऐसा सच जिसे दुनिया देख नहीं सकती थी।

अध्याय 12 – सत्य का दफ़न

प्रयोगशाला के सामने का अंधेरा अब उनकी आत्माओं में समा गया था। पुलिस की

गाड़ियों की लाल-नीली बत्तियाँ और सायरन की आवाज़ उनके जाते ही धीमी होकर एक मंद गूंज में बदल गई थी, लेकिन उनके रोंगटे अभी भी खड़े थे। उन पाँचों के बीच एक भारी, घुटन भरी खामोशी छा गई थी। हवा में उसी मीठी-मीठी गंध के अंश थे, जो अब उनके कपड़ों में समा गई थी।

"यह कैसे... यह कैसे संभव है?" मायरा ने फुसफुसाते हुए कहा। उसकी आवाज़ कांप रही थी और उसकी आँखें रुद्र के चेहरे पर जवाब की तलाश कर रही थीं, जो वहाँ नहीं था। "हम सबने इसे देखा। हमने इसे छुआ भी... यह ठंडा था..."

"जादू नहीं," मयंक ने सपाट और विश्लेषणात्मक स्वर में कहा, हालांकि उसकी उंगलियां अपनी बाहों पर गोले बना रही थीं, जिससे सफेद निशान पड़ रहे थे। "किसी ने इसे निकाला है। हमारे जाने और पुलिस के आने के बीच के उन बीस मिनटों में। यह कोई ऐसा व्यक्ति था जिसे पता था कि हमने पुलिस को बुलाया है।"

कबीर ने कर्कश स्वर में कहा, "डीन।" उसकी आँखों में अब भय नहीं, बल्कि भयंकर क्रोध था। "उसने हमें देखा। उसे पता था। उसने किसी को ज़रूर बुलाया होगा... उस शव को... उस सबूत को..." उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। बृजेश के शव को 'सबूत' कहना उसे और भी अधिक पीड़ा दे रहा था।

आलोक थरथरा रहा था, उसकी निगाहें प्रयोगशाला के खुले दरवाजे पर टिकी थीं, जो अब किसी चुड़ैल के अंधेरे, हंसते हुए मुंह जैसा लग रहा था। "लेकिन... वह लिखावट... वह हमें कुछ बताने की कोशिश कर रहा था। अब वह भी गायब हो गया।"

रुद्र ने मायरा का हाथ कसकर पकड़ लिया। इस असमंजस के सागर में मायरा का स्पर्श ही एकमात्र सहारा था। "हम यहाँ नहीं रुक सकते," उसने दृढ़ता से कहा। "हमें अलग होना होगा। हमें सोचना होगा। कल... हम कल मिलेंगे।"

वे बिना कुछ कहे अलग-अलग रास्तों पर चले गए। रुद्र ने मायरा का हाथ नहीं छोड़ा। वह उसे उसके हॉस्टल तक छोड़ने गया। पूरे रास्ते वे चुप रहे, लेकिन उनकी चुप्पी में डर, अविश्वास और एक अटूट बंधन की शुरुआत के धागे बुने हुए थे।

हॉस्टल के गेट पर पहुँचकर मायरा ने पीछे मुड़कर देखा। गली के पीले लैंप की रोशनी उसकी आँसुओं से भरी आँखों में चमक उठी। "रुद्र... आज रात हमने जो देखा, दुनिया उसे कभी नहीं समझ पाएगी। अब हम हमेशा के लिए इस सच्चाई में फँस गए हैं, है ना?"

रुद्र ने हल्के से उसके कंधों को थाम लिया। "हम अकेले नहीं हैं, मायरा। हम पाँच लोग

हैं। और हमने जो देखा वह सच है, भले ही दुनिया उसे मिटा दे।" वह थोड़ा झुककर उसकी आँखों में देखने लगा। "आज तुम बहुत बहादुर थीं। तुम्हारे बिना... मैं शायद टूट जाता।"

मायरा ने लड़खड़ाती मुस्कान के साथ कहा, "तुम मुझसे झूठ बोल रहे थे, लेकिन फिर भी मैं तुम्हारे पीछे आई। शायद मैं ही पागल हूँ।" उसने एक कदम आगे बढ़ाया, और बिना सोचे समझे रुद्र ने उसे अपनी बाहों में भर लिया। वह गर्माहट, उसकी साँसों की गर्माहट, उस पल की स्थिरता—यह सब रात के सन्नाटे और अराजकता के खिलाफ एक जीवंत, स्पंदित प्रतिरोध था।

"डरो मत," रुद्र ने उसके कान के पास फुसफुसाते हुए कहा। "हम इसका हल निकाल लेंगे। बृजेश के लिए... अपने लिए।"

मायरा ने सिर हिलाया और धीरे से पीछे हट गई। "कल मिलते हैं। अपना ख्याल रखना।"

रुद्र तब तक देखता रहा जब तक वह अंदर नहीं चली गई। फिर वह धीरे-धीरे घर की ओर चलने लगा। पूरे रास्ते उसके मन में बस एक ही छवि गूंज रही थी—बृजेश की काली, खुली हुई आंखें, और उसकी हथेली पर लिखा हुआ अधूरा शब्द—'अन...'। क्या वह 'अंदर' लिखना चाहता था? या 'अंधेरा'? या... 'अंकित'? क्या उसने किसी का नाम लिखना शुरू कर दिया था?

'''

अगली सुबह कॉलेज का माहौल अजीब तरह से 'सामान्य' था। डांडिया की सजावट के अवशेष हटा दिए गए थे। सूरज की किरणें गंगटोक की घाटी से कोहरे को हटाने लगी थीं, लेकिन अब वह कोहरा कक्षाओं में बैठे छात्रों के चेहरों पर छाया हुआ प्रतीत हो रहा था। हर कोई फुसफुसा रहा था, नज़रें मिलाने से बच रहा था। बृजेश का नाम हवा में एक भूत की तरह मंडरा रहा था।

रुद्र, मयंक और आलोक हमेशा की तरह तय समय पर कक्षा में दाखिल हुए। कबीर अनुपस्थित था। उसकी सीट खाली थी, मानो एक गहरी, दर्दनाक खालीपन की चीख सी सुनाई दे रही हो।

व्याख्यान शुरू होने से ठीक पहले, डीन काव्या शर्मा कक्षा में दाखिल हुईं। उनके चेहरे पर एक गंभीर, शोकपूर्ण भाव था। कक्षा में तुरंत सन्नाटा छा गया। "प्रिय विद्यार्थियों," उन्होंने भारी और संयमित स्वर में बोलना शुरू किया। "पुलिस प्रशासन ने हमें एक

दुखद खबर दी है: बृजेश वर्मा का शव बरामद कर लिया गया है और उसकी मृत्यु आत्महत्या के रूप में दर्ज की गई है - एक ऐसा संस्करण जिसे प्रशासन सबको स्वीकार करवाना चाहता था, हालांकि बाद में यह साबित हुआ कि यह एक मनगढ़ंत रिपोर्ट थी जिसमें उसे प्रयोगशाला में ले जाने की बात को छुपाया गया था।"
कक्षा में सबने एक साथ हैरानी भरी सांस ली। रुद्र की धड़कन तेज हो गई। उसने मयंक की ओर देखा, जिसकी भौंहें तन गई थीं।
"पुलिस ने उसके निजी सामान से एक आत्महत्या पत्र बरामद किया है," डीन ने कागज पकड़े हुए आगे कहा। उन्होंने जोर से पढ़ा, और हर शब्द रुद्र पर कोड़े की तरह प्रहार कर रहा था:
"मैं अब और लड़ नहीं सकता। परीक्षा का दबाव, असफल होने का डर... जीवन मुझे अर्थहीन लगने लगा है। क्षमा करें, माँ। क्षमा करें, कबीर भाई, मैं कमजोर निकला। - बृजेश"
डीन ने बनावटी उदासी भरे स्वर में कहा, "आधिकारिक तौर पर इस मामले को आत्महत्या के रूप में दर्ज किया गया है। कॉलेज प्रशासन परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है। सभी छात्रों के लिए परामर्श सेवाएं उपलब्ध हैं।"
इतना कहकर वह चली गई, लेकिन जाते समय उसकी निगाह एक पल के लिए उस खाली सीट पर टिकी, और फिर रुद्र, मयंक और आलोक पर। उस निगाह में कोई दुःख नहीं था। बस एक ठंडी, गहरी जांच-पड़ताल थी।
जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, कक्षा में हंगामा मच गया।
“आत्महत्या? बृजेश?” एक लड़के ने चिल्लाकर कहा। “वह तो बिल्कुल बेफिक्र था! उसे असफलता की कभी परवाह ही नहीं थी!”
"लेकिन एक नोट है..." एक लड़की ने फुसफुसाते हुए कहा।
"यह नोट नकली है!" एक तेज़, कर्कश आवाज़ सब पर गूँज उठी। कबीर दरवाज़े पर खड़ा था, उसकी आँखें लाल थीं, चेहरा विकृत गुस्से और नींद की कमी से तना हुआ था। वह सीधे कक्षा के सामने आ गया। "बृजेश को कभी असफल होने का डर नहीं था! उसके तो कोई बैकलॉग भी नहीं थे! वह अगले सेमेस्टर के लिए पार्टियों की योजना बना रहा था! यह... यह एक साज़िश है!"
शिक्षक ने बीच-बचाव करने की कोशिश की, लेकिन कबीर की मौजूदगी अब एक तूफान की तरह थी। "उन्होंने उसे मार डाला! और अब वे इस फर्जी नोट से इसे छुपाना

चाहते हैं! मैं... मैं..." उसकी आवाज अचानक रुक गई। गुस्से का पहाड़ दर्द की नदी में बह निकला। उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और उसके कंधे बुरी तरह कांपने लगे।

यह दृश्य इतना हृदयविदारक और अप्रत्याशित था कि पूरी कक्षा स्तब्ध रह गई। कबीर, जो हमेशा एक अटूट, आक्रामक शेर जैसा लगता था, अब टूट चुका था और रो रहा था। रुद्र उठने की सोच रहा था, लेकिन मयंक ने उसका हाथ पकड़ लिया और चेतावनी भरे लहजे में सिर हिलाया। यह कबीर का दर्द था, और इसे प्रकट करना ही उसके प्रति एकमात्र सम्मान था।

कबीर ने अपना चेहरा पोंछा और किसी से भी नज़रें मिलाए बिना कक्षा से बाहर निकल गया। उसके जाने के बाद सन्नाटा और भी गहरा हो गया।

'''

उस दिन पूरे कॉलेज ने मानो एक अजीब सी सामूहिक राहत की सांस ली। 'आत्महत्या' एक डरावना, लेकिन जाना-पहचाना भूत था। 'हत्या' या 'रहस्यमय गुमशुदगी' की तुलना में इसे समझना और संभालना आसान था। अब फुसफुसाहट बृजेश के 'मानसिक दबाव' और 'परीक्षा तनाव' पर केंद्रित थी। मामला बंद हो चुका था। दुनिया आगे बढ़ने के लिए तैयार थी।

लेकिन हमारे चारों मुख्य पात्रों के लिए दुनिया और भी संकीर्ण, और भी शत्रुतापूर्ण हो गई थी। दोपहर में, वे उसी सुनसान मैदान पर फिर से इकट्ठा हुए।

मयंक ने अपनी नोटबुक खोलते हुए कहा, "यह नोट पूरी तरह से नकली है। मैंने बृजेश की लिखावट करीब से देखी है। उसने 'म' अक्षर को ऊपर से बिल्कुल अलग तरीके से लिखा था। इस नोट में वह शैली नहीं है। यह एक नकल है, घटिया नकल।"

आलोक ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "लेकिन पुलिस ने इसे स्वीकार कर लिया है। और अब शव नदी में मिल गया है... कोई और सबूत नहीं बचा है।"

"लाश वाली बात सबसे ज़्यादा डरावनी है," रुद्र ने मुट्ठी भींचते हुए कहा। "कल रात वह लैब में थी। आज सुबह नदी में। मतलब किसी ने उसे उठाया, ले गया और नदी में फेंक दिया। सब कुछ रातोंरात हुआ। इसके लिए योजना, संसाधन और... बेरहमी चाहिए।"

कबीर ने दोहराया, "डीन।" वह अब शांत था, लेकिन उसकी शांति खतरनाक, नुकीली बर्फ की तरह थी। "वह अकेली नहीं हो सकती। उसके पीछे कोई और है। कोई बड़ी

ताकत।"
मयंक ने सुझाव दिया, "हमें प्रयोगशाला में वापस जाना होगा। शायद दिन के उजाले में हमें कुछ और दिखाई दे। कोई निशान... कुछ तो।"
रुद्र ने सिर हिलाया। यह जोखिम भरा था, लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें गुमराह किया जा रहा हो—उन्हें अपनी आँखों और अपनी यादों पर शक करने के लिए मजबूर किया जा रहा हो। उन्हें हर हाल में ठोस सबूत चाहिए थे।
उसी शाम, सूर्यास्त से ठीक पहले, वे चारों फिर से जंगल के रास्ते पर थे। दिन के उजाले में भी, रास्ता उदास और डरावना लग रहा था। पक्षियों का चहचहाना बहुत कम था, हवा एकदम शांत थी।
प्रयोगशाला के द्वार के पास पहुँचकर उन्होंने एक बार फिर हर कोने का निरीक्षण किया। टूटा हुआ ताला अभी भी वहीं था। अंदर, प्रयोगशाला ठीक वैसी ही थी जैसी पुलिस ने छोड़ी थी—धूल भरी, सुनसान और बिल्कुल सामान्य। कोई ताज़ा, काले धब्बे नहीं थे। कोई लिखावट नहीं थी। जहाँ बृजेश गिरा था, वहाँ केवल धूल के निशान थे।
आलोक ने निराशा से कहा, "यहां कुछ भी नहीं है। मानो... मानो कुछ हुआ ही न हो।"
“लेकिन ऐसा हुआ था,” कबीर ने ज़मीन पर घुटने टेकते हुए कहा। उन्होंने अपनी उंगलियों से उस जगह को छुआ, जैसे कोई श्रद्धालु मंदिर के फर्श को छूता है। “मैंने उनका हाथ पकड़ा था। वह ठंडा था। यह सचमुच हुआ था।”
मयंक ने अपने फोन से आसपास की हर जगह की, हर कोने की, हर दरार की तस्वीरें लीं। "शायद सबूत हमारी आंखों से दिखाई न दे रहे हों। इन्फ्रारेड में? या किसी रासायनिक प्रतिक्रिया में... हमें और उन्नत उपकरणों की ज़रूरत है।"
रुद्र ने छत की ओर देखा। वहाँ भी कुछ नहीं था। न कोई हिलती-डुलती आकृति, न कोई काला तरल पदार्थ। क्या यह सब सचमुच एक सामूहिक मतिभ्रम था? नहीं। मायरा ने भी इसे देखा था। वह उनके समूह का हिस्सा नहीं थी। उसने भी वही देखा था।
थकान और हताशा से भरे हुए वे वापस लौट गए। शाम की धुंध फिर से छाने लगी थी, गंगटोक की रोशनी मंद पड़ने लगी थी। विदा होने से पहले रुद्र ने कबीर से पूछा, "तुम क्या करोगे?"

कबीर ने सीधे उसकी आँखों में देखा। उसकी आँखों में अब आँसू नहीं थे, बल्कि दृढ़ निश्चय था। "मैं उस नोट की सच्चाई का पता लगाऊंगा। मैं उसके परिवार से मिलूंगा। मैं उन लोगों को ढूंढ निकालूंगा जिन्होंने मेरे दोस्त को महज़ एक 'केस' बना दिया। और मैं उन्हें दिखाऊंगा कि कबीर सिंह रावत कभी हार नहीं मानता।"
वह अपने दर्द और गुस्से से प्रेरित होकर बिना अलविदा कहे चला गया।
रुद्र अपने घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसका फोन बज उठा। मायरा का संदेश था: "पूरे कैंपस में राहत की लहर है कि मामला बंद हो गया है। मुझे डर लग रहा है, रुद्र। हम किसके खिलाफ लड़ रहे हैं?"
रुद्र ने जवाब टाइप किया, उसे डिलीट किया, फिर दोबारा टाइप किया: "हम उस चीज़ से लड़ रहे हैं जो हमें पागल साबित करना चाहती है। हम सच्चाई से लड़ रहे हैं। और हम अकेले नहीं हैं। कल मिलते हैं।"
उसने अपना फोन एक तरफ रख दिया और शहर की ओर देखा। नीचे, तीस्ता नदी एक पतली चांदी की रेखा की तरह बह रही थी—वही नदी जिसने उस सुबह 'सत्य' को निगल लिया था। लेकिन रुद्र जानता था कि सत्य कहीं और दफन है। और वह उसे खोदकर निकालेगा, चाहे उसे खुद उसकी कब्र में उतरना ही क्यों न पड़े।

अध्याय 13 – अंधेरे में छिपा सच

कबीर के अचानक हुए विस्फोट से कक्षा में घंटों पहले जो सन्नाटा छाया हुआ था, वह अब भी उनके कंधों पर बोझ की तरह था। डीन द्वारा पढ़ा गया 'आत्महत्या पत्र' अब हवा में जहरीली गंध की तरह फैल चुका था। पूरा कॉलेज उस सरल, दबी हुई सच्चाई को स्वीकार करने में व्यस्त था—एक छात्र ने दबाव में आत्महत्या कर ली थी। मामला बंद।
लेकिन हमारे चारों के लिए, यह अंत नहीं था; यह एक नई, भयावह शुरुआत थी। दोपहर के समय, जब कैंपस में एक सुस्त सी शांति छाई हुई थी, वे चारों उसी सुनसान लॉन पर फिर मिले। हवा ठंडी होती जा रही थी और आसमान में स्लेटी रंग के बादल घिर रहे थे, मानो आने वाली रात बेहद अंधेरी होगी।
“ये नोट…” मयंक ने अपनी नोटबुक खोली, जिसमें उसने बृजेश के असली नोटों और आत्महत्या के नोट की तस्वीर की तुलना करते हुए चित्र बनाया था। “देखो। बृजेश ‘म’

अक्षर के ऊपर एक छोटा सा गोला बनाता था। यहाँ नहीं है। उसके 'र' का निचला हिस्सा हमेशा घुमावदार होता था। यहाँ सीधा है। ये नकल है। बहुत ही घटिया नकल।"
"लेकिन पुलिस ने इसे स्वीकार कर लिया," आलोक ने अपनी बाहों को कसकर पकड़ते हुए कहा। "और अब शव मिल गया है... सबूत पूरे हो गए हैं।"
"सबूत पूरे हो गए हैं!" कबीर का गुस्सा फिर से भड़क उठा, लेकिन अब यह एक नियंत्रित, खतरनाक उबाल था। उसकी आँखें लाल थीं, पर आँसू नहीं थे—सिर्फ़ एक सुलगता दर्द था। "बृजेश को असफलता से कभी डर नहीं लगता था! बैकलॉग? उसे तो पता ही नहीं था कि बैकलॉग क्या होते हैं! वह अगले सेमेस्टर में कौन सी बाइक खरीदनी है, इसकी योजना बना रहा था! यह एक साजिश है... एक स्पष्ट साजिश!"
कुछ क्षणों के लिए लॉन की शांति में उसकी आवाज़ गूंजती रही। रुद्र ने उसे शांत करने के लिए उसके कंधे पर हाथ रखा, लेकिन कबीर ने उसे झटक दिया।
"मुझे शांत होने के लिए मत कहो, रुद्र। मैंने उसे देखा था। प्रयोगशाला में। उसकी आँखें... वो ज़ख्म..." कबीर की आवाज़ भर्रा गई, लेकिन उसने खुद को संभाला। "और अब वे कहते हैं कि वह नदी में कूद गया? क्यों? क्योंकि उसे जीवन 'बेकार' लगने लगा था? बिलकुल नहीं।"
मयंक ने अपना फोन निकाला। "एक और बात। मैंने बृजेश का सोशल मीडिया प्रोफाइल चेक किया। आखिरी पोस्ट—डांडिया नाइट की एक सेल्फी, कैप्शन: 'दोस्तों से बढ़कर कुछ नहीं।' क्या कोई ऐसा व्यक्ति जो जीवन को अर्थहीन समझता हो, ऐसी पोस्ट करेगा?"
"शायद वो दिखावा कर रहा था," आलोक ने डरे हुए स्वर में कहा। "लोग अंदर से टूटे हुए होते हैं, बाहर से मजबूत दिखते हैं..."
"नहीं, आलोक," रुद्र ने दृढ़ता से कहा। "कबीर सही कह रहा है। हम सब जानते हैं कि बृजेश कैसा था। वह सभ्य नहीं था, लेकिन एक जुझारू इंसान था। उसके लिए ज़िंदगी का मतलब पार्टियां, दोस्त और मौज-मस्ती था। यह नोट... किसी और के दिमाग की उपज है। किसी ऐसे व्यक्ति की सोच है जिसे लगता है कि उसे पता है कि एक 'आदर्श' आत्महत्या नोट कैसा होता है।"
उनके बीच से ठंडी हवा का एक झोंका गुजरा, जिससे पत्तियाँ सरसरा उठीं। मयंक ने अपना कोट कसकर पकड़ लिया। "तो सवाल यह है: अगर यह कोई साजिश है, तो इतनी बड़ी साजिश रचने की शक्ति किसके पास है? पुलिस, मेडिकल रिपोर्ट, सब

कुछ कौन अपने हिसाब से चला सकता है?”
उस सवाल का जवाब सबके मन में था, लेकिन किसी में उसे कहने की हिम्मत नहीं थी। डीन का चेहरा, प्रशासनिक बाधा, वह अदृश्य नियंत्रण... ये सब एक ऐसे जाल की ओर इशारा कर रहे थे जो उनसे कहीं बड़ा था।
रुद्र ने फैसला करते हुए कहा, “हमें प्रयोगशाला में वापस जाना होगा। दिन के उजाले में नहीं... शाम को। जब रोशनी कम हो। शायद हमें कुछ और मिल जाए। कोई ऐसा सबूत जो रात में छिपा रह गया हो।”
यह जोखिम भरा था, लेकिन अब वे जोखिम से भाग नहीं सकते थे। उनकी आत्मा उनसे सवाल कर रही थी। क्या उन्होंने सचमुच वह सब देखा था? या डर ने उनकी आँखों को धोखा दिया था? इस संदेह से मुक्ति पाने के लिए उन्हें उस जगह का फिर से सामना करना ही था।
'''
शाम के पाँच बज रहे थे। सूरज पहाड़ों के पीछे छिपने ही वाला था, और लंबी परछाइयों ने जंगल के रास्ते को और भी डरावना बना दिया था। इस बार उन्होंने अलग-अलग रास्ते अपनाने का फैसला किया—रुद्र और मयंक साथ में, कबीर अकेला, और आलोक उनके पीछे-पीछे, डरा हुआ लेकिन खुद को मजबूर करते हुए चल रहा था।
आज जंगल का रास्ता अजीब तरह से जीवंत लग रहा था। पक्षी चहचहा रहे थे, कीड़ों की आवाजें आ रही थीं। यह सामान्यता भी असामान्य लग रही थी। मानो जंगल ने जानबूझकर कोई मुखौटा पहन रखा हो।
प्रयोगशाला की चारदीवारी तक पहुँचकर वे फिर से इकट्ठा हुए और दरवाज़ा जाँचा। वही टूटा हुआ ताला। वही चरमराता हुआ दरवाज़ा।
अंदर का वातावरण बदल गया था। शाम की तिरछी रोशनी खिड़कियों से अंदर आ रही थी, जिससे धूल के कण चमक रहे थे। सब कुछ शांत, स्थिर और निर्मल सा लग रहा था। कोई काले धब्बे नहीं थे। कोई गंध नहीं थी। बस पुराने उपकरणों और धूल की महक थी।
“यहाँ कुछ नहीं है,” आलोक ने राहत और निराशा के मिले-जुले भावों के साथ फुसफुसाते हुए कहा। “जैसे कि... कुछ हुआ ही नहीं।”
“लेकिन ऐसा हुआ था,” कबीर ने ज़मीन पर घुटने टेकते हुए कहा। उसने उन जगहों

पर हथेलियाँ फिराईं जहाँ बृजेश लेटा था। “मैंने उसे छुआ था। यह सचमुच हुआ था।”
मयंक ने अपना फोन निकाला, टॉर्च चालू की और दीवारों व फर्श का बारीकी से मुआयना करने लगा। “खून के धब्बे तो हट सकते हैं। ब्लीच या किसी तेज़ क्लीनर से। लेकिन एक छोटा सा सुराग... एक रेशा, एक निशान...” उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई जब टॉर्च दीवार के एक कोने पर रुकी। वहाँ, प्लास्टर में, एक गहरा खरोंच का निशान था, मानो किसी नुकीली और सख्त चीज़ को ज़ोर से घसीटा गया हो।
“इसे देखो,” मयंक ने कहा। सब लोग उसके चारों ओर जमा हो गए। खरोंच ताज़ी लग रही थी। उसके आसपास का प्लास्टर थोड़ा सा उखड़ा हुआ था।
"शायद किसी उपकरण से कोई निशान पड़ गया हो," रुद्र ने कहा।
“या फिर एक पंजा,” आलोक ने डरी हुई आवाज में कहा और तुरंत चुप हो गया।
कबीर ने खरोंच के निशान का ध्यान से अध्ययन किया। “यह इंसानी नहीं लग रहा। यह... लंबा है। एक से ज़्यादा तीखे निशान हैं।”
उन सभी के शरीर में एक सिहरन दौड़ गई। उनकी यादों में, वे लंबे, जुड़े हुए अंग फिर से तैरने लगे, छत पर रेंगते हुए।
फिर, उनके पीछे से एक धीमी, कर्कश आवाज़ आई। एक लंबी, दर्द भरी साँस की आवाज़।
सब चौंककर मुड़ गए। मुख्य हॉल का दरवाजा अंधेरे में खुला हुआ था। अंदर कुछ हलचल हुई। एक ऊँची, टूटी हुई अलमारी के पीछे।
“वहाँ कौन है?” रुद्र ने अपनी मशाल उठाते हुए पुकारा।
कोई जवाब नहीं। बस एक और सरसराहट।
कबीर दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ा। "अगर कोई है, तो सामने आ जाओ। छिपने से कुछ नहीं होगा।"
वे धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़े। हॉल में अंधेरा था और उनकी टॉर्च की रोशनी कुछ ही फीट तक पहुँच पा रही थी। फिर वही आवाज़ आई—इस बार और करीब से। एक फुसफुसाहट, शब्दों जैसी, लेकिन समझ से परे।
आलोक ने कांपते शरीर के साथ रुद्र का कोट पकड़ लिया। "चलो यहाँ से चलते हैं... प्लीज़, चलो चलते हैं।"
लेकिन पीछे हटना अब संभव नहीं था। जिज्ञासा और भय ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मयंक ने अपने फोन का कैमरा चालू किया और सबूत के तौर पर

रिकॉर्डिंग शुरू कर दी।
टॉर्च की रोशनी से शेल्फ के पीछे का कोना रोशन हो गया।
वहां, दीवार से सटकर, एक आकृति बैठी हुई थी।
वह एक इंसान था... या हो सकता था। उसके कपड़े फटे हुए थे, उसकी त्वचा पर अजीब से बैंगनी निशान थे जो हल्के से फड़फड़ाते हुए प्रतीत होते थे। उसका सिर झुका हुआ था, लंबे उलझे हुए बाल उसके चेहरे को ढके हुए थे। उसके हाथ... उसके हाथ सामान्य से लंबे थे, और उंगलियां अजीब कोणों पर मुड़ी हुई थीं।
“हे भगवान...” मायरा के बाद आलोक ने पहली बार खुलकर कुछ कहा था।
उस आकृति ने धीरे-धीरे अपना सिर उठाया। बालों के पीछे से दो आँखें चमक उठीं—पूरी तरह से काली, बिना पुतलियों वाली। वे आँखें उन्हें देख रही थीं, लेकिन किसी इंसान की तरह नहीं—किसी और चीज़ की तरह, अपने शिकार को परख रही थीं, उसका अध्ययन कर रही थीं।
उस आकृति के मुंह से एक कर्कश, तरल जैसी आवाज निकली। "जाओ... यहां मत रुको... वह जाग रहा है।"
आवाज इतनी टूटी-फूटी और अजीब थी कि उसमें किसी भी मानवीय भावना का पता लगाना मुश्किल था। लेकिन शब्द स्पष्ट थे।
“तुम कौन हो?” रुद्र ने अपनी आवाज को स्थिर रखने की पूरी कोशिश करते हुए पूछा।
“जो बच गया... और मर नहीं सका,” उस आकृति ने कहा। उसने एक हाथ उठाया, और उन्होंने उसकी त्वचा के नीचे कुछ हिलता हुआ देखा, जैसे कीड़े रेंग रहे हों।
“2009... यह खत्म नहीं हुआ। यह और गहरा गया। तुम लोग... तुम्हें चुना गया है। तुम्हारा डर... तुम्हारा दर्द... यही उसका भोजन है।”
"किसका खाना?" मयंक ने फोन को स्थिर रखते हुए पूछा।
वह आकृति पक्षी की तरह अपना सिर एक तरफ झुकाती है। “उसका... जो अंधेरे में रहता है। जो डीएनए को अपनी कहानी में फिर से लिखता है। तुमने बृजेश को देखा? वह अब उसका अंश है। उसकी यादें... उसका डर... सब कुछ उसी में समाहित है।”
कबीर आगे बढ़ा, उसके चेहरे पर आक्रामकता और करुणा का अजीब मिश्रण था।
“बृजेश... क्या तुमने उसे देखा? क्या तुम्हें पता है उसके साथ क्या हुआ?”
उस आकृति ने एक अजीब, कर्कश आवाज़ निकाली, शायद दर्द भरी हंसी। “मैंने

देखा... जब वे उसे ले गए। वे उसे नीचे ले गए... जहाँ वह रहता है। नदी में पड़ा शव? वह तो बस एक परछाई थी... एक झूठ। असली शव... असली सबूत... वह अभी भी यहीं है। नीचे।"

"कहां नीचे?" रुद्र ने झट से पूछा।

"वह जगह जहाँ से वह आया था... उस गुफा में। जहाँ से पत्थर खोदा गया था।" उस आकृति ने अपना हाथ ज़मीन की ओर झुकाया। "तुम्हारी डीन... वह जानती है। लेकिन वह डरी हुई भी है। वह भी एक कठपुतली है... बड़े खिलाड़ियों के हाथों की।"

फिर अचानक, उस आकृति ने अपना सिर ऊपर उठाया, मानो उसने कुछ सुना हो। उसकी काली आँखें चौड़ी हो गईं। "वह आ रहा है... तुम्हें देखना नहीं चाहिए। जाओ! अभी!"

"कौन आ रहा है?" मयंक ने पूछा।

लेकिन उस आकृति ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने लंबे हाथों से दीवार से खुद को धक्का दिया और अविश्वसनीय गति से छत की ओर सरक गई। उसकी चाल मकड़ी जैसी थी—अस्वाभाविक, भयावह। वह छत में बने एक पाइप में गायब हो गई। वे चारों सांस रोककर देखते रहे। वह मीठी-मीठी सी गंध फिर से हवा में फैल गई थी। फिर, दूर से कदमों की आहट सुनाई दी। भारी, मानवीय कदमों की आहट। कोई आ रहा था।

"चलो चलते हैं," रुद्र ने फुसफुसाते हुए कहा। वे पीछे की ओर भागे और उसी टूटे हुए दरवाजे से बाहर निकल गए। जंगल के रास्ते पर दौड़ते हुए उनके दिल ज़ोर से धड़क रहे थे और दिमाग उलझन से भरा हुआ था।

सुरक्षित दूरी पर रुककर आलोक ने हांफते हुए कहा, "यह... यह क्या था?"

मयंक ने अपना फोन देखते हुए कहा, "2009 का एक जीवित व्यक्ति। उसने कहा... 'वह जो बच गया और मर नहीं सका।'"

"उन्होंने बृजेश के बारे में कहा था—'वह अब उसका अंश है,'" कबीर ने अपनी आँखों में एक नए, गहरे गुस्से के साथ दोहराया। "मतलब बृजेश मरा नहीं... वह... वह उस चीज़ का हिस्सा बन गया?"

रुद्र ने अपने विचारों को व्यवस्थित करते हुए कहा, "और उसने एक 'गुफा' के बारे में बात की। एक पत्थर जिसे खोदा गया था... और उसके नीचे कुछ था। डीन को पता है, लेकिन वह डरी हुई भी है।"

वे चुप हो गए, इस नई जानकारी के भार को समझने की कोशिश कर रहे थे। वे न केवल एक रहस्यमयी शक्ति से लड़ रहे थे, बल्कि एक ऐसी सत्ता से लड़ रहे थे जो मनुष्यों को किसी और चीज़ में बदल देती थी। और अब उनके मन में संदेह बढ़ने लगा था। क्या जो उन्होंने देखा वह सच था? या वह आकृति भी उनके डर का ही प्रतिबिंब थी? क्या उनका दिमाग उन्हें धोखा दे रहा था?

मयंक ने अपना फोन खोला और रिकॉर्ड किया हुआ वीडियो चलाया। टॉर्च की रोशनी में स्क्रीन पर वह आकृति साफ दिखाई दे रही थी, उसकी अमानवीय आंखें, उसके लंबे हाथ-पैर। लेकिन जैसे ही वह आकृति छत की ओर बढ़ी, वीडियो में तेज शोर भर गया और छवि धुंधली हो गई। जब छवि साफ हुई, तो स्क्रीन पर सिर्फ एक खाली कोना दिखाई दिया। वह आकृति गायब हो चुकी थी।

“यह संभव नहीं है,” मयंक ने हैरानी से कहा। “मैंने लगातार रिकॉर्डिंग की। यह वहां था... और फिर अचानक गायब हो गया।”

आलोक ने डरते हुए कहा, "शायद कैमरा भी इसे कैद नहीं कर पा रहा है। शायद यह सचमुच... एक भूत है।"

“नहीं,” रुद्र ने दृढ़ता से कहा, हालाँकि उसकी आवाज़ में संदेह भी था। “यह सचमुच हुआ था। हम सबने इसे देखा। हम सबने इसे सुना। लेकिन इसमें कहा गया था कि हमारा डर... हमारा दर्द... उसका भोजन है। मतलब, जितना हम डरते हैं, उतना ही वह शक्तिशाली होता जाता है।”

यह विचार सबसे भयावह था। उनका अपना डर ही उनका दुश्मन था। और वे डरे बिना कैसे रह सकते थे? जब सच्चाई ही इतनी डरावनी थी?

शाम की आखिरी रोशनी में, वे अलग-अलग रास्तों से वापस लौट आए। लेकिन अब वे अकेले नहीं थे। उनके साथ नई जानकारी, नए सवाल और एक गहरा, घुटन भरा संदेह था—क्या वे अपनी आँखों, अपने दिमाग पर भरोसा कर सकते थे? या वे धीरे-धीरे उसी अंधेरे का हिस्सा बनते जा रहे थे जिससे वे भाग रहे थे?

अध्याय 14 – बंधन और प्रकाश

बृजेश के लापता हुए चौदहवीं रात थी। चौदहवीं रात, जब रुद्र की पलकों से नींद उड़ रही थी। वह अपनी खिड़की से बाहर देख रहा था—गंगटोक की टिमटिमाती रोशनी

कोहरे में धुंधली होती जा रही थी, मानो दुनिया अपनी आँखें बंद कर रही हो। उसकी उंगलियाँ बेतरतीब ढंग से फोन के कीपैड पर घूम रही थीं, और मायरा के नाम से ठीक पहले रुक गईं।

उसका मन दो ध्रुवों के बीच उलझा हुआ था। एक तरफ प्रयोगशाला में दिखाई देने वाली वह अमानवीय आकृति थी—उसकी काली आँखें, उसकी चेतावनी। दूसरी तरफ मायरा थी—उसकी गर्माहट, उसका सामान्य स्वभाव, जो अब उसके लिए सबसे अनमोल चीज़ बन गया था। लेकिन क्या उसे उस सामान्य स्वभाव को अपने अभिशाप में घसीटने का अधिकार था?

फोन की रिंगटोन ने उसके सारे विचार तोड़ दिए। स्क्रीन पर मायरा का चेहरा चमक उठा।

"नमस्ते?"

"तुम जाग गए," मायरा की आवाज़ में चिंता और राहत दोनों के भाव थे। "मुझे लगा था... शायद तुम सो रहे होगे।"

"नींद आना मुश्किल है," रुद्र ने खिड़की के शीशे पर अपनी सांसों से एक गोला बनाते हुए कहा।

मैं आपके हॉस्टल के पास वाले पार्क में हूँ। अगर... अगर आप बात करना चाहें तो।

रुद्र ने एक पल भी बर्बाद किए बिना अपनी जैकेट उठा ली।

'''

रात का पार्क सुनसान था, दूर की एक स्ट्रीटलाइट की पीली रोशनी ही मायरा को घेरे हुए थी। वह एक बेंच पर बैठी थी, दोनों हाथों में थर्मस कप पकड़े हुए। जैसे ही रुद्र उसके पास आया, उसने मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन उसकी आँखों में वही डर था जो सबकी आँखों में समा गया था।

"हॉट चॉकलेट," उसने कप उसे देते हुए कहा। "तुम्हारी आवाज़ से लग रहा था कि तुम्हें कुछ गर्म पीने की ज़रूरत है।"

रुद्र ने प्याला उठाया और उसकी उंगलियाँ उसकी उंगलियों से छू गईं। एक पल के लिए, वह स्पर्श ही उसकी दुनिया की एकमात्र वास्तविकता बन गया। "तुम्हें यहाँ अकेले नहीं आना चाहिए था।"

"और तुम्हें अकेले उस जगह वापस नहीं जाना चाहिए था," मायरा ने हल्के से फटकार भरे स्वर में जवाब दिया। "लेकिन हम दोनों में से कोई भी सुनता नहीं है, है ना?"

रुद्र उसके बगल में बैठ गया। गर्म प्याले से उठती भाप ने उन दोनों के बीच एक धुंधला सा पर्दा बना दिया। "आज हमने फिर कुछ देखा, मायरा।"
उसने उसे सब कुछ बताया—वह आकृति, उसकी चेतावनी, उसमें उल्लिखित "गुफा" और "पत्थर"। मायरा चुपचाप सुनती रही, उसका चेहरा गंभीर होता चला गया।
"यह सब... यह अब विज्ञान नहीं रहा, है ना?" उसने आखिरकार कहा। "यह किसी हॉरर फिल्म की कहानी जैसा लगता है।"
"लेकिन यही हमारी हकीकत है," रुद्र ने अपने हाथों में सिर रखकर कहा। "और मैं... मैं तुम्हें इसमें और घसीटना नहीं चाहता, मायरा।"
मायरा ने मुड़कर उसकी ओर देखा। स्ट्रीट लैंप की रोशनी में उसके चेहरे की कोमल आकृतियाँ उभरकर सामने आ रही थीं। "तुम मुझे 'घसीट' नहीं रहे हो, रुद्र। मैं खुद आई हूँ। क्योंकि..." उसने गहरी साँस ली। "क्योंकि यहाँ अकेले बैठकर, तुम्हारे बिना एक सामान्य जीवन जीने की कोशिश करना ज़्यादा डरावना है। कम से कम यहाँ, मैं सच्चाई के साथ हूँ। तुम्हारे साथ।"
रुद्र का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने मायरा की आँखों में देखा—डर तो था, पर उससे कहीं ज़्यादा दृढ़ संकल्प भी। एक ऐसी शक्ति जो उसके अपने कांपते हुए इरादे को सहारा दे रही थी।
"पर अगर तुम्हें कुछ हो गया तो..." रुद्र की आवाज़ भर्रा गई। "याद है वो दिन जब तुमने मुझसे पूछा था कि मैं इतना उदास क्यों हूँ? तब मैंने तुमसे झूठ बोला था। लेकिन आज मैं तुम्हें सच बताऊँगा... मायरा, मुझे तुमसे डर लगता है।"
मायरा की भौंहें तन गईं। "मुझसे? क्यों?"
"क्योंकि मुझे तुमसे प्यार हो गया है," रुद्र के मुँह से ये शब्द बेहिचक निकल पड़े, मानो कोई सच्चाई लंबे समय से दबी हुई हो। "और इस भयानक, अंधेरी दुनिया में... किसी से प्यार करना सबसे खतरनाक बात है। प्यार करने का मतलब है किसी को अपनी कमजोरी बनाना। और अगर तुम मेरी कमजोरी बन जाओ... और वे तुम्हें निशाना बनाएँ..." उसकी आवाज़ पूरी तरह टूट गई।
सन्नाटा छा गया। दूर से आती कुत्ते के भौंकने की हल्की सी आवाज़ सुनाई दे रही थी। तभी मायरा ने धीरे से हाथ बढ़ाकर रुद्र के गाल को छुआ। उसका स्पर्श इतना कोमल था कि रुद्र की आँखों में आँसू आ गए।
"मैं तुमसे प्यार करती हूँ, रुद्र," मायरा ने फुसफुसाते हुए कहा, हर शब्द स्पष्ट और दृढ़

था। "और प्यार कमजोरी नहीं है। प्यार... प्यार वह ताकत है जो हमें इस अंधकार से लड़ने का साहस देती है। तुम मेरी रक्षा करना चाहते हो, और मैं तुम्हारी रक्षा करना चाहती हूँ। क्या यही प्यार नहीं है?"
रुद्र ने उसकी आँखों में देखा और सारे संदेह दूर हो गए। उसने अपना हाथ उसकी गर्दन के पीछे रखा और धीरे से उसके करीब आया। उनकी साँसें आपस में मिलीं, फिर उनके होंठ। चुंबन कोमल था, भय और आशा से भरा हुआ, मानो कोई प्रतिज्ञा हो। जब वे अलग हुए, तो मायरा की आँखों में आँसू थे, लेकिन वे खुशी के आँसू थे।
"हम साथ हैं," मायरा ने अपना माथा उसके माथे से टिकाते हुए कहा। "और हम इस सच्चाई का पता लगाएंगे। बृजेश के लिए। अपने लिए। अपने प्यार के लिए।"
रुद्र ने उसे कसकर गले लगा लिया, और उस पल, प्रयोगशाला का अंधेरा, वह आकृति, बृजेश की याद—सब कुछ धुंधला पड़ गया। केवल यह गर्माहट रह गई, यह विश्वास कि वे अकेले नहीं हैं।
'''
उसी रात, एक और टूटा हुआ दिल सुकून की तलाश में भटक रहा था।
आलोक अपने हॉस्टल के कमरे में बैठा था, लेकिन उसे ऐसा लग रहा था जैसे चारों दीवारें उस पर गिर रही हों। हर परछाई हिलती हुई सी लग रही थी, हर आवाज़ उस शख्स की फुसफुसाहट जैसी लग रही थी। उसने अपने फोन में रिया का नंबर ढूंढा। उसने उसे पहले कभी फोन नहीं किया था। लेकिन आज... आज उसे किसी ऐसे इंसान की ज़रूरत थी जो उसके डर को समझ सके, कोई ऐसा जो उस क्लास का हिस्सा न हो।
फोन की घंटी बजी और फिर बंद हो गई। "हेलो?" रिया की आवाज शांत थी, थोड़ी हैरान भी।
"रिया... मैं आलोक हूँ। मुझे... इस समय फोन करने के लिए खेद है..."
"कोई बात नहीं, आलोक। क्या तुम ठीक हो?" उसकी आवाज़ में सच्ची चिंता थी।
"नहीं... मैं बिल्कुल ठीक नहीं हूँ। क्या... क्या मैं आपसे मिल सकता हूँ? बस... बात करनी है।"
कुछ पल का मौन। "हाँ। पुस्तकालय के पीछे वाली बेंच पर। आधे घंटे में।"
'''
आधे घंटे बाद आलोक रिया के सामने बैठा था और बेचैनी से अपनी उंगलियां मरोड़

रहा था। रिया ने उसके हाथों में गर्म कॉफी का एक कप रख दिया। "पी लो। तुम्हारे हाथ एकदम ठंडे हैं।"
"धन्यवाद," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा। उसने एक घूंट लिया, और फिर सब कुछ उसके दिमाग में उमड़ पड़ा—प्रयोगशाला का दृश्य, वह आकृति, उसकी चेतावनी, और सबसे बढ़कर, यह भयानक संदेह कि शायद उसका अपना दिमाग ही उसे धोखा दे रहा है।
रिया शांति से सुन रही थी, उसकी निगाहें आलोक के चेहरे पर टिकी हुई थीं। जब आलोक ने बोलना समाप्त किया, तो उसने एक लंबी, कांपती हुई सांस छोड़ी।
"तुम पागल नहीं हो, आलोक," उसने आखिरकार कहा। "तुम्हारा दिमाग तुम्हें धोखा नहीं दे रहा है। क्योंकि... क्योंकि मैं भी उसी अंधकार का हिस्सा हूँ, बस एक अलग तरीके से।"
आलोक ने हैरानी से उसकी ओर देखा। "तुम्हारा क्या मतलब है?"
रिया ने अपना बैग खोला और उसमें से एक पुरानी, फटी हुई डायरी निकाली। उसके कवर पर '2009' लिखा था। "यह मेरे चाचा की डायरी है। वह भी इसी विश्वविद्यालय में पढ़ते थे। बायोटेक के छात्र थे। और 2009 में लापता हो गए थे।"
आलोक की सांस अटक गई। "2009 में गायब हो गया...?"
रिया ने डायरी के पन्ने पलटे और एक पुराना, पीला पड़ा पत्र निकाला। "यह उनका आखिरी पत्र है, जो उन्होंने मेरी माँ को लिखा था। इसे पढ़ो।"
आलोक ने कांपते हाथों से पत्र लिया। लिखावट जल्दबाजी में लिखी हुई लग रही थी, कुछ शब्द धुंधले पड़ गए थे।
""प्रिय बहन,"
"मैं जो कर रही हूँ उसके बारे में लिखना मुश्किल है। डॉ. शर्मा (आप उन्हें जानती ही होंगी, जो अब डीन हैं) का प्रोजेक्ट... अब सिर्फ़ शोध नहीं रह गया है। उन्होंने कुछ खोज निकाला है। वह इसे 'प्रोजेक्ट एनोमली एक्स' कहती हैं। यह एक जीव है... लेकिन जीवित नहीं। एक ऊर्जा? एक परजीवी? यह डीएनए पढ़ सकता है... उसे बदल सकता है। यह हमारे डर को भांपता है, हमारे दर्द से पोषण पाता है।"
"कल रात, प्रयोगशाला में... कुछ हुआ। एक नमूना लीक हो गया। जो भी उसके संपर्क में आए... वे बदल गए। मैंने अपनी आँखों से देखा, बहन। इंसान... वे अब इंसान नहीं रहे। वे दीवारों पर रेंगने लगे, जानवरों की तरह गुर्राने लगे। और उनकी

आँखें... हे भगवान, उनकी आँखें..."
"डॉ. शर्मा ने सब कुछ छिपाने की कोशिश की। लेकिन मुझे लगता है कि वह खुद डरी हुई हैं। उनके ऊपर कोई है... कोई बड़ी शक्ति। वे इस 'विसंगति' को हथियार में बदलना चाहते हैं।"
"अगर आपको यह पत्र मिले, और मैं वापस न लौटूं... तो समझ लेना कि मैं शायद इसका हिस्सा बन चुका हूं। इस 'विसंगति' का हिस्सा। मेरा डर... मेरी यादें... यह सब कुछ निगल जाएगा।"
"रिया का ख्याल रखना। उसे कभी इस विश्वविद्यालय में मत आने देना।"
"तुम्हारा छोटा भाई,"
"अनुराग"'
पत्र पढ़ने के बाद आलोक ने रिया की ओर देखा। उसकी आँखों में आँसू थे, लेकिन वे सूख चुके थे, मानो बहुत पहले बह गए हों।
"तुम्हारा चाचा..." आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा।
"वह कभी वापस नहीं लौटा," रिया ने सपाट, भावहीन आवाज़ में कहा। "पुलिस ने कहा कि वह भाग गया। कॉलेज ने कहा कि यह एक दुर्घटना थी। लेकिन मेरी माँ जानती थी। और मैं... मैं यहाँ इसलिए आई क्योंकि मैं सच जानना चाहती थी। मुझे लगा कि शायद मुझे कोई सुराग मिल जाए। और फिर... फिर आप लोगों के साथ जो कुछ हुआ वह सब हो गया।"
आलोक खुद को रोक नहीं पाया। उसने रिया का हाथ थाम लिया। "तुम अकेली नहीं हो, रिया। हम... हम भी इसी चीज़ के शिकार हैं। और अब हमें इसका नाम पता चल गया है—'एनोमली एक्स'।"
रिया ने उसकी तरफ देखा और पहली बार उसके चेहरे पर एक कमजोर, दर्द भरी मुस्कान आई। "तुम्हारे अंदर बहुत हिम्मत है, आलोक। तुम इतने डरे हुए हो... फिर भी लड़ रहे हो।"
आलोक ने अपनी आवाज़ में एक नई समझदारी के साथ कहा, "मैं लड़ाई नहीं कर रहा हूँ। हम लड़ रहे हैं। रुद्र, मयंक, कबीर... और अब तुम। और यह पत्र... यही हमारा सबूत है। इससे हमें पता चलता है कि शायद डीन भी उतनी दोषी नहीं है जितना हमने सोचा था। वह भी डरी हुई है। उसके ऊपर कोई है।"
रिया ने सिर हिलाया। "मेरे चाचा ने लिखा था—'वे इस अनोखी चीज़ को हथियार में

बदलना चाहते हैं।' मतलब कोई संगठन... शायद कोई निगम। और बृजेश... शायद उसने उनके मौजूदा प्रयोगों के बारे में कुछ देख लिया था। इसीलिए उन्होंने उसे चुप करा दिया।"

ठंडी हवा ने उन्हें घेर लिया। आलोक ने अपनी जैकेट उतारकर रिया के कंधों पर डाल दी। एक सहज और सरल भावपूर्ण इशारा। रिया ने हैरानी से उसकी ओर देखा, फिर धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, "धन्यवाद।"

आलोक ने कहा, "हमें यह पत्र रुद्र और बाकी लोगों को दिखाना चाहिए। इससे सब कुछ बदल सकता है।"

"हां," रिया ने कहा। "लेकिन सावधान रहना। अगर ये लोग हत्या को आत्महत्या में बदलने जितने शक्तिशाली हैं... तो यह पत्र हमारे लिए खतरनाक हो सकता है।"

उन्होंने अगले दिन सबसे मिलने का फैसला किया। आलोक रिया को उसके हॉस्टल तक छोड़ने गया। दरवाजे पर पहुँचकर रिया पीछे मुड़ी। "आलोक... तुमने आज मुझ पर भरोसा किया। तुम्हें पता है, क्लास में मैं हमेशा तुम्हें देखती रहती थी। तुम्हारा शांत स्वभाव... तुम्हारी संवेदनशीलता। दुनिया इसे कमजोरी समझती है। लेकिन यही तुम्हारी ताकत है। तुम्हारी भावनाएँ उस 'विसंगतता' के खिलाफ हथियार बन सकती हैं। क्योंकि वह डर पर पनपती है... और प्यार डर से ज़्यादा ताकतवर होता है।"

आलोक के गाल गर्म हो गए। उसने कुछ नहीं कहा, बस कृतज्ञता भरी मुस्कान दी।

वापस लौटते समय उसके कदम हल्के हो गए। डर अभी भी था, लेकिन अब वह अकेला नहीं था। उसे एक नया सुराग मिला था, एक नया साथी मिला था, और एक नया विश्वास मिला था कि उनकी भावनाएँ—उनका डर, उनका प्यार, उनका दर्द—शायद उस अंधकार के विरुद्ध उनकी सबसे बड़ी ताकत थीं।

जैसे ही वह अपने कमरे में दाखिल हुआ, उसका फोन बज उठा। रुद्र का संदेश था: "कल सुबह। पुस्तकालय। ज़रूरी काम है। और... आलोक, क्या तुम ठीक हो?"

आलोक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया: "हाँ। हम सब ठीक हो जाएंगे।"

उस रात, पहली बार आलोक बिना बुरे सपनों के सोया। उसके सपनों में काली आँखें नहीं थीं, केवल एक पुराने पत्र की स्याही से खुदे हुए शब्द थे—"'प्रोजेक्ट एनोमली एक्स'"—और यह उम्मीद कि अंततः सच्चाई सामने आएगी।

अध्याय 15 – डिजिटल भूत

मयंक की आंखें स्क्रीन की नीली रोशनी में डूबी हुई थीं। उसके कमरे की घड़ी में सुबह के दो बज चुके थे, लेकिन नींद का कोई नामोनिशान नहीं था। उसकी मेज पर तीन लैपटॉप खुले हुए थे—एक में कोडिंग इंटरफेस था, दूसरे में विश्वविद्यालय के नेटवर्क का नक्शा और तीसरे में बृजेश के सोशल मीडिया प्रोफाइल के स्क्रीनशॉट की एक श्रृंखला थी।

पिछले चौबीस घंटों से मयंक एक ही सवाल का पीछा कर रहा था: "अगर बृजेश नदी में नहीं कूदा, तो उसका फोन आखिरी बार कहां था?"

रिया के चाचा के पत्र ने एक नया रास्ता दिखाया था—'प्रोजेक्ट एनोमली एक्स'। लेकिन मयंक के लिए ठोस आंकड़े अमूर्त रहस्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। और आंकड़े उसकी पहुंच में थे; उसे बस उन्हें सुलझाना था।

उसने हर तरीका आजमाया। यूनिवर्सिटी के वाई-फाई लॉग्स—पहुँच नहीं मिली। मोबाइल टावर की लोकेशन—उसे एक ऐसे दोस्त की ज़रूरत थी जो टेलीकॉम कंपनी में इंटर्नशिप कर रहा था। लेकिन उस दोस्त ने साफ इनकार कर दिया: "मयंक, यह गैरकानूनी है। और तुम्हारे दोस्त का मामला पुलिस ने बंद कर दिया है।"

लेकिन मयंक जानता था कि डेटा कभी पूरी तरह नष्ट नहीं होता। यह कहीं न कहीं छिप जाता है। उसने बृजेश के फोन का आईएमईआई नंबर (हर फोन का विशिष्ट पहचानकर्ता) ढूंढ निकाला। फिर उसने डार्क वेब पर कुछ फ़ोरम में घुसपैठ की और ऐसे टूल की तलाश की जो सेल टावर पिंग को ट्रैक कर सकें।

यह अनैतिक था। शायद गैरकानूनी भी। लेकिन जब सच्चाई को दबाया जा रहा हो, तो नियमों का क्या फायदा?

रात करीब एक बजे, आखिरकार एक टूल ने काम करना शुरू किया। एक नक्शा खुला, जिसमें गंगटोक का मोबाइल नेटवर्क हरे-नीले ग्रिड के रूप में दिखाया गया था। उसने बृजेश के फोन का आईएमईआई नंबर दर्ज किया और समयरेखा को डांडिया की रात पर सेट किया—जिस रात बृजेश गायब हुआ था।

शुरुआती कुछ घंटे सामान्य रहे। फोन कैंपस में था, फिर डांडिया मैदान के आसपास। फिर, रात करीब ग्यारह बजे, फोन अचानक जंगल की ओर चला गया। यह वही रास्ता था जो लैब की ओर जाता था। मयंक का दिल तेजी से धड़कने लगा। यह वही बात थी जो वे पहले से जानते थे।

लेकिन फिर, ठीक आधी रात को, कुछ अजीबोगरीब घटना घटी।

फोन का सिग्नल अचानक गायब हो गया। बिल्कुल। जैसे फोन बंद कर दिया गया हो। मयंक ने स्क्रीन को ज़ूम करके देखा। फोन की आखिरी लोकेशन... लैब में नहीं थी। यह विश्वविद्यालय के पुराने प्रशासनिक भवन के पास था।

"यह..." मयंक ने धीरे से खुद से कहा। उसकी भौंहें तन गईं। उसने टाइमलाइन दोबारा देखी। फोन जंगल में गया, फिर अचानक उसकी लोकेशन बदल गई—सीधे एडमिन ब्लॉक के पीछे। यह शारीरिक रूप से असंभव था। जंगल और एडमिन ब्लॉक के बीच की दूरी पैदल तय करने में कम से कम बीस मिनट लगते। लेकिन टाइमलाइन में यह बदलाव सिर्फ दो मिनट में होता दिख रहा था।

दो संभावनाएं थीं: या तो डेटा गलत था, या बृजेश का फोन किसी वाहन में था। लेकिन आधी रात को, जंगल में, किस वाहन में?

उसने अगले दिन के डेटा को देखा। फोन का सिग्नल कभी वापस नहीं आया। तब तक नहीं जब तक पुलिस को तीस्ता नदी के किनारे 'आत्महत्या नोट' वाला फोन नहीं मिल गया।

लेकिन यहाँ मुख्य मुद्दा यह था: "बृजेश का फोन कभी नदी के पास नहीं था।" उसकी आखिरी ज्ञात लोकेशन विश्वविद्यालय का प्रशासनिक भवन थी।

मयंक पीछे झुक गया और एक गहरी सांस ली। स्क्रीन की रोशनी की धुंधली छवि उसकी आंखों में घूम रही थी। यह जानकारी सब कुछ बदल सकती थी। लेकिन साथ ही यह एक नए, गहरे रहस्य को भी उजागर कर रही थी।

उसने अपना फोन उठाया। ग्रुप चैट में एक संदेश टाइप किया: ""सभी लोग सुबह ठीक 6 बजे पुस्तकालय के तहखाने में स्थित अध्ययन कक्ष में आ जाएं। बहुत जरूरी है। किसी को मत बताना।""

फिर वह खिड़की के पास गया। बाहर अंधेरा था, लेकिन चांदनी में ऊंचे प्रशासनिक भवन की आकृति दिखाई दे रही थी। उस इमारत के अंदर क्या चल रहा था? और डीन का इससे क्या संबंध था?

'''

शाम के छह बज रहे थे। पुस्तकालय का तहखाना सुनसान और ठंडा था। हवा में किताबों की धूल और पुराने फर्नीचर की गंध फैली हुई थी। रुद्र, कबीर और आलोक एक साथ पहुंचे, उनके चेहरे नींद और चिंता से भरे हुए थे।

"क्या हुआ?" रुद्र ने सीधे मुद्दे पर आते हुए पूछा। "पूरी रात जागते हुए तुम्हें क्या

मिला?"
मयंक ने अपना लैपटॉप खोला और स्क्रीन उनकी ओर घुमाई। उसने अपनी खोज के बारे में बताया—आईएमईआई नंबर, सेल टावर पिंग, टाइमलाइन। फिर उसने वह महत्वपूर्ण नक्शा दिखाया जहाँ पुराने एडमिन ब्लॉक के पास एक लाल बिंदु रुका हुआ था।
"यह बृजेश के फोन की आखिरी लोकेशन है," मयंक ने सपाट लेकिन भारी आवाज में कहा। "तीस्ता नदी से साढ़े तीन किलोमीटर दूर।"
कबीर स्क्रीन की ओर झुक गया, मानो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही न हो रहा हो। "तो... तो वो कभी नदी तक गया ही नहीं? इसका मतलब है कि पुलिस ने जिस शव को वहाँ मिलने का दावा किया था... वो बृजेश का था ही नहीं। ये सब नाटक था।"
"उसका फोन गायब नहीं हुआ," मयंक ने बात सुधारते हुए कहा। "और जब तक किसी ने उससे फोन अलग नहीं किया, तब तक हमें यही मानना पड़ेगा कि बृजेश खुद भी नदी के पास नहीं था।"
आलोक का गला सूख गया। "लेकिन पुलिस ने कहा कि फोन नदी के किनारे मिला था..."
मयंक ने कहा, "फोन मिल गया है, लेकिन कब और कैसे, यह सवाल है। मेरे डेटा से पता चलता है कि फोन आधी रात को प्रशासनिक ब्लॉक के पास था। उसके बाद उसका सिग्नल गायब हो गया। फिर अचानक अगले दिन वह नदी किनारे मिला। कोई उसे वहां ले गया था।"
"डीन का कार्यालय प्रशासनिक ब्लॉक में है," रुद्र ने धीमी आवाज़ में कहा, मानो उसे कोई बड़ा सच समझ आ रहा हो। "वह वहीं से आई थी जब उसने हमें वह फाइल दी थी।"
कबीर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। "तो वो सबसे बड़ी झूठी है! उसने बृजेश को मार डाला... और फिर आत्महत्या दिखाने के लिए उसका फोन नदी में फेंक दिया!"
"शांत हो जाओ, कबीर," रुद्र ने कांपती हुई आवाज़ में कहा। "हमें सोचना होगा। रिया के चाचा के पत्र के अनुसार, डीन भी डरी हुई है। हो सकता है वह किसी बड़ी शक्ति के अधीन काम कर रही हो।"
"तो फिर हमें एडमिन ब्लॉक के अंदर देखना होगा," मयंक ने कहा। "पता लगाना होगा कि वहां क्या चल रहा है। बृजेश का फोन वहां क्यों गया? क्या वहां कोई लैब है? कोई

गुप्त प्रोजेक्ट?"
आलोक कांप उठा। "वहाँ जाना... यह तो और भी खतरनाक होगा। प्रयोगशाला तो अलग थी, लेकिन प्रशासनिक ब्लॉक... वहाँ तो दिन में भी लोग आते-जाते रहते हैं। अगर हम पकड़े गए तो..."
"हम पकड़े नहीं जाएँगे," मयंक ने आँखों में चमक लिए कहा। "मैंने ब्लूप्रिंट देखे हैं। प्रशासनिक भवन के नीचे एक पुराना तहखाना है जिसका अब इस्तेमाल नहीं होता। उसमें एक दरवाज़ा है जो बाहर जंगल की ओर खुलता है। शायद बृजेश उसी रास्ते से गया हो।"
रुद्र ने सबकी ओर देखा। उनके चेहरे पर डर था, लेकिन उससे भी ज़्यादा दृढ़ संकल्प था। "आज रात," उन्होंने कहा। "हम आज रात ही वहाँ जाएँगे। लेकिन इस बार, एक बेहतर योजना के साथ। मयंक, तुम्हें ब्लूप्रिंट और कैमरा लोकेशन चाहिए। कबीर, तुममें हिम्मत है, लेकिन हमें चुपके से काम करना होगा, हिंसा से नहीं। आलोक... तुम्हारी नज़रें बहुत तेज़ हैं। तुम छोटी से छोटी चीज़ों पर भी ध्यान देते हो।"
"और मैं?" दरवाजे से एक आवाज आई।
सब चौंककर मुड़ गए। रिया वहाँ खड़ी थी, उसके हाथों में उसके चाचा की डायरी थी। उसके चेहरे पर दृढ़ संकल्प झलक रहा था।
"रिया! तुमने ये कैसे किया..." आलोक ने हैरानी से कहा।
"मैंने कल आप सबके चेहरे देखे थे," रिया ने अंदर आते हुए और दरवाजा बंद करते हुए कहा। "मुझे पता था कि कुछ बड़ा होने वाला है। और मैं इसका हिस्सा बनना चाहती हूं। मेरे चाचा ने इस राज़ की कीमत अपनी जान देकर चुकाई है। मैं उनकी आवाज़ बनूंगी।"
रुद्र ने रिया की तरफ देखा। "यह खतरनाक है, रिया।"
"पिछले दस सालों से मेरी ज़िंदगी खतरे में जी रही है, रुद्र," रिया ने दर्द भरी गर्माहट भरी आवाज़ में कहा। "हर रात मैं सोचती हूँ कि मेरे चाचा के साथ क्या हुआ होगा। अब मुझे सच जानने का मौका मिला है। मुझे भी इसमें शामिल होने दो।"
मयंक ने सिर हिलाया। "उसकी डायरी हमारे लिए एक मार्गदर्शक की तरह है। इसके बिना हम अंधेरे में भटकते रहेंगे।"
अंततः रुद्र मान गया। "ठीक है। लेकिन हम साथ रहेंगे। कोई अलग नहीं होगा। और अगर कुछ भी गलत लगे, तो हम तुरंत वापस लौट आएंगे।"

एक योजना बनाई गई: रात ग्यारह बजे, जब पूरा कैंपस सो रहा होगा, वे जंगल के रास्ते से प्रशासनिक ब्लॉक के पीछे तहखाने के दरवाजे पर मिलेंगे। मयंक नक्शे और हैकिंग के उपकरण लाएगा। रुद्र और कबीर सुरक्षा और सुरक्षा व्यवस्था संभालेंगे। आलोक और रिया सुरागों की तलाश करेंगे।
जाने से पहले, रिया ने डायरी से एक पन्ना निकाला। "मेरे चाचा ने यहाँ लिखा था: 'विसंगति X केवल DNA को ही नहीं बदलती; यह अंतरिक्ष की ऊर्जा को ही विकृत कर देती है। जहाँ यह मौजूद होती है, वहाँ समय और स्थान के नियम टूटने लगते हैं।' शायद इसीलिए बृजेश का फोन एक जगह से दूसरी जगह कूदता हुआ प्रतीत हो रहा था।"
यह विचार सबसे भयावह था। वे न केवल मनुष्यों से लड़ रहे थे, बल्कि एक ऐसी शक्ति से लड़ रहे थे जो भौतिकी के नियमों को मोड़ सकती थी।
'''
उस दिन समय कछुए की तरह धीरे-धीरे बीत रहा था। वे सब कक्षाओं में थे, लेकिन उनके मन प्रशासनिक भवन के अंधेरे तहखाने में भटक रहे थे। गलियारे में आते ही डीन की नजर रुद्र से मिली, और उनकी निगाहों में कुछ ऐसा था जिसे रुद्र समझ नहीं पाया—शायद चिंता, शायद चेतावनी, या शायद मदद के लिए एक मौन विनती।
रात गहरी होती जा रही थी। ग्यारह बजे, वे पाँचों जंगल के रास्ते पर थे, इस बार बेहतर तैयारी के साथ। मयंक के पास चमक को समायोजित करने वाली एक विशेष टॉर्च थी। रुद्र ने अपनी लाठी वाली टॉर्च ले रखी थी। कबीर ने मोटे दस्ताने पहने थे। आलोक के हाथ में एक छोटी नोटबुक और कलम थी। और रिया ने अपने चाचा की डायरी को सीने से चिपका रखा था।
प्रशासनिक भवन की पिछली दीवार दिखाई दी। दिन में भी इमारत उदास दिखती थी, लेकिन रात में यह किसी विशाल, सोते हुए राक्षस जैसी लगती थी। मयंक ने ब्लूप्रिंट के अनुसार तहखाने का दरवाजा ढूंढ लिया—एक भारी लोहे का दरवाजा, जो जंग लगी जंजीर और ताले से सुरक्षित था।
कबीर ने फुसफुसाते हुए कहा, "यह ताला नया है। इसमें जंग नहीं लगी है।"
मयंक ने अपने बैग से एक छोटा सा टूलकिट निकाला। "मैं इसे उठा सकता हूँ। लेकिन इससे शोर होगा।"
रुद्र ने कहा, "जंगल में आवाज गुम हो जाएगी। जल्दी करो।"

मयंक ने ताले में सुई जैसा एक औजार डाला और कुछ सेकंड की कोशिश के बाद एक तेज़ 'क्लिक' की आवाज़ आई। ताला खुल गया। चेन निकल गई। दरवाज़ा चरमराते हुए खुला और अंदर से ठंडी, बासी हवा का एक झोंका बाहर आ गया। अंदर अंधेरा तारकोल की तरह घना था। टॉर्च की रोशनी में नीचे की ओर जाती हुई एक संकरी, ईंटों की सीढ़ी दिखाई दी।

"यह तहखाना 1950 के दशक में बनाया गया था," मयंक ने बताया। "संभवतः इस इमारत के निर्माण के समय इसे भंडारगृह के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।"

वे एक-एक करके सीढ़ियों से नीचे उतरे। हवा में नमी और फफूंद की गंध थी। सीढ़ियों के नीचे एक लंबा गलियारा था जिसके दोनों ओर पुराने लकड़ी के दरवाजे थे, जिन पर B1, B2 आदि क्रमांक लिखे थे।

"यह बिल्कुल प्रयोगशाला जैसा दिखता है," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा।

रिया ने डायरी खोली। "मेरे चाचा ने लिखा था कि परियोजना के लिए मुख्य प्रयोगशाला से अलग एक 'सुरक्षित सुविधा' है। शायद यही वह जगह है।"

वे गलियारे में आगे बढ़े। कुछ दरवाजे खुले थे, जिनमें खाली, धूल भरे कमरे दिखाई दे रहे थे। लेकिन अंत में स्थित आखिरी दरवाजा—बी7—अलग था। यह धातु का बना था और इसमें एक आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक ताला लगा था।

"यहाँ," रुद्र ने कहा। "यहाँ कुछ है।"

मयंक ने ताले की जांच की। "यह एक उच्च सुरक्षा वाला ताला है। इसे तोड़ने में समय लगेगा।"

“तो फिर हमारे पास समय नहीं है,” कबीर ने कहा। उसने दरवाजे के किनारे की ओर देखा। “यह धातु पुरानी है। शायद यह कमजोर हो गई है।”

"इससे शोर होगा," रुद्र ने चेतावनी दी।

“लेकिन अंदर क्या है, यह जानना ज़्यादा ज़रूरी है,” कबीर ने कहा। उसने अपने दस्ताने कसकर बांधे और अपनी उंगलियाँ उस जोड़ में फंसा दीं जहाँ धातु दीवार से मिलती थी। उसकी मांसपेशियां तन गईं। एक पल के लिए कुछ नहीं हुआ; फिर, एक तेज़, चीखती हुई आवाज़ के साथ, धातु का किनारा मुड़ गया। दरवाज़ा अपने फ्रेम से थोड़ा बाहर आ गया।

जगह काफी थी। रुद्र और कबीर ने मिलकर दरवाजे को खींचा, और वह आधा खुल गया।

अंदर की हवा बर्फीली ठंडी और ताज़ी थी, मानो एयर कंडीशनिंग चल रही हो। टॉर्च की रोशनी में जो दृश्य सामने आया, उसे देखकर सब लोग दंग रह गए।
यह कोई पुराना गोदाम नहीं था। यह एक आधुनिक, छोटा सा प्रयोगशाला था। स्टेनलेस स्टील की मेजें, कंप्यूटर स्क्रीन, तरह-तरह के रसायनों से भरी अलमारियां। लेकिन सबसे डरावनी चीज बीच में रखा एक बड़ा सा कांच का पिंजरा था। और उस पिंजरे के अंदर...
...कुछ तो था।
वह इंसान जैसा दिखता था, पर पूरी तरह नहीं। उसकी त्वचा पर भी वही बैंगनी निशान थे। उसके अंग लंबे थे और वह एक कोने में सिकुड़कर बैठा था। जब टॉर्च की रोशनी उस पर पड़ी, तो उसने अपना सिर उठाया।
उसकी आंखें काली नहीं थीं। वे मानवीय थीं। भयभीत, पीड़ाग्रस्त, लेकिन मानवीय।
और वो चेहरा... उन सभी ने उसे पहचान लिया।
वह रोहित सिंह जैसा दिख रहा था। वही व्यक्ति जिससे वे प्रयोगशाला में मिले थे। लेकिन शीशे पर एक लाल रिकॉर्डिंग लाइट टिमटिमा रही थी - यह एक पुरानी अवलोकन रिकॉर्डिंग थी, लाइव दृश्य नहीं।
रोहित ने अपना हाथ उठाया, उसकी उंगलियां कांप रही थीं। उसके होंठ हिले और दर्द भरी लेकिन स्पष्ट आवाज निकली:
"तुम...आखिरकार आ ही गए। उन्होंने मुझे यहाँ निगरानी के लिए रखा था। और तुम्हारे लिए...एक चेतावनी के तौर पर।"
और फिर, उसने ऐसे शब्द कहे जिनसे उनकी रूह कांप उठी:
"भागो... क्योंकि तुममें से एक को आज रात यहीं रुकना होगा।"

अध्याय 16 – एकतरफा बातचीत

रोहित सिंह की आखिरी चेतावनी—"आज रात तुममें से एक यहीं रुकेगा"—ने उन पाँचों के मन में जैसे बर्फ़ जमा दी हो। उस कमरे की कृत्रिम रूप से ठंडी हवा अब मानो उनके खून को जमा रही थी।
"हमें यहां से निकलना होगा," मयंक ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी निगाहें पिंजरे में फंसे उस दयनीय प्राणी पर टिकी हुई थीं। "अभी।"

लेकिन वे हिल नहीं सके। रोहित की आँखें—भले ही उसका शरीर कुछ और बन गया था—उन्हें अपनी ओर खींच रही थीं। उनमें एक गहरा दर्द, एक चेतावनी और कहीं न कहीं मदद के लिए एक दबी हुई गुहार छिपी थी।

"क्या आपको हमारी मदद की ज़रूरत है?" रुद्र ने धीरे से पूछा।

रोहित ने धीरे से, दर्द भरी मुद्रा में सिर हिलाया। "मेरे लिए... कोई उम्मीद नहीं है। लेकिन तुम... तुम अभी भी बच सकते हो। वे तुम्हें ढूंढ रहे हैं। सेंसर... मोशन सेंसर..."

जैसे ही उनके शब्द समाप्त हुए, कमरे के एक कोने में एक छोटी सी लाल बत्ती जल उठी। एक कैमरा।

"भागो!" कबीर चिल्लाया, और उस आदेश ने उन सभी को उनकी सुस्ती से जगा दिया।

वे मुड़े और उसी संकरे रास्ते से वापस भाग गए। पीछे से एक धातु का दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई—एक और दरवाज़ा जिसे उन्होंने पहले नहीं देखा था। भारी कदमों की आहट। सुरक्षा गार्डों की नहीं... ये कदम बहुत भारी, बहुत सटीक लग रहे थे।

वे सीढ़ियों से ऊपर भागे, टूटे हुए तहखाने के दरवाजे से बाहर निकले और जंगल में चले गए। पत्तियाँ मानो चीख रही थीं, हर डाल उन्हें रोकने के लिए बेताब थी। वे तब तक नहीं रुके जब तक कि कैंपस की रोशनी दिखाई नहीं देने लगी और उनके फेफड़े जलने लगे।

"क्या...क्या सब लोग यहाँ हैं?" आलोक हांफते हुए झुक गया।

"हाँ," रुद्र ने कहा, उसकी निगाहें पीछे के अंधेरे पर टिकी हुई थीं। कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था। या शायद कर रहे थे, लेकिन छुप रहे थे। "लेकिन रोहित... उसने कहा 'तुममें से एक'।"

मयंक ने अपने लैपटॉप बैग को कसकर पकड़ते हुए कहा, "वह हमें डराने की कोशिश कर रहा था। या... या वह सच कह रहा था।"

रिया अब भी अपने चाचा की डायरी को सीने से लगाए बैठी थी। "मेरे चाचा ने लिखा था... एनोमली एक्स न केवल शरीर को, बल्कि मन को भी निशाना बनाती है। यह हमारे डर को जानती है। शायद यह हमारे डर का इस्तेमाल हमें अलग करने के लिए कर रही है।"

रुद्र ने दृढ़ता से कहा, "हम अलग नहीं होंगे। हम साथ रहेंगे।"

लेकिन उसके मन में संदेह की एक किरण ज़रूर उठी। रोहित ने जो कहा था, वह महज़ चेतावनी नहीं थी। वह एक भविष्यवाणी थी। और रुद्र जानता था कि अगर उनमें से किसी एक को कुछ होना था, तो वह उसी का होगा। वह मायरा को खोने का जोखिम नहीं उठा सकता था। उसे और जानकारी चाहिए थी। और वह जानकारी शायद डीन के पास थी।

'''

उस रात रुद्र सो नहीं सका। रोहित के पिंजरे की तस्वीर और उसकी आँखों में दिख रहा खौफ बार-बार उसके दिमाग में घूम रहा था। और फिर मायरा का चेहरा—उसकी मुस्कान, उसकी गर्माहट, जो अब उसके लिए ऑक्सीजन की तरह थी। अगर उसे कुछ हो गया... अगर वह उसे खो बैठा...

सुबह के दो बजे, उसने एक फैसला लिया।

वह चुपचाप उठा, अपनी काली हुडी और गहरे रंग की जींस पहनी। उसने अपनी क्लब टॉर्च और एक छोटा स्विस आर्मी चाकू उठाया जिसका उसने कभी इस्तेमाल नहीं किया था। वह जानता था कि यह पागलपन है। लेकिन अब पागलपन ही उसकी नई दिनचर्या बन गया था।

वह इस बार अकेले ही प्रशासनिक भवन की ओर चल पड़ा। उसने वही पुराना रास्ता नहीं अपनाया। उसने कैंपस के मुख्य रास्तों का इस्तेमाल किया, अंधेरे में छिपते हुए, कैमरों की नज़र से बचते हुए। उसे पता था कि प्रशासनिक भवन का मुख्य द्वार रात में बंद रहता है, लेकिन पीछे की ओर, दूसरी मंज़िल पर, एक खिड़की हमेशा ढीली रहती थी—उसने एक बार मरम्मत कर्मचारियों को उसे ठीक करते देखा था।

ब्लॉक के पिछले हिस्से तक पहुँचकर, उसने एक पाइप का सहारा लेकर खिड़की तक चढ़ाई की। वह ढीली थी। उसने उसे खोला और अंदर घुस गया। वह बाल्टियों और पोछे के बीच एक अंधेरे चौकीदार के कमरे में था।

उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। हर आवाज़ उसे चौंका देती थी। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला और गलियारे में कदम रखा। डीन का कार्यालय तीसरी मंज़िल पर था। वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा, हर कदम पर रुककर ध्यान से सुनता हुआ।

तीसरी मंजिल पर गलियारा मंद रोशनी से जगमगा रहा था। डीन के कार्यालय का दरवाजा बंद था, लेकिन उसके नीचे से रोशनी झाँक रही थी। वह अभी भी अंदर ही थी।

रुद्र सोचने लगा कि क्या करे। दरवाजा तोड़ना तो संभव ही नहीं था। शायद वह किसी दूसरे कमरे में चुपके से घुस जाए, फाइलों या सुरागों की तलाश करे। वह मुड़ गया, लेकिन तभी उसे एक आवाज सुनाई दी।

डीन की आवाज़। वह फोन पर बात कर रही थी। और आवाज़... गलियारे की दीवार में बने एक वेंटिलेशन वेंट से आ रही थी।

रुद्र नीचे झुक गया और अपना कान वेंटिलेशन से सटा दिया। आवाज साफ थी।

"...हाँ, मैं समझता हूँ। लेकिन स्थिति नियंत्रण से बाहर होती जा रही है। वे तहखाने तक पहुँच गए हैं। रोहित ने उन्हें देख लिया।"

कुछ पल का मौन। डीन सुन रहे थे।

"मुझे जोखिम का पता है। लेकिन क्या आपको याद है 2009 में क्या हुआ था? हम वह गलती नहीं दोहरा सकते। ये लड़के... खासकर उनमें से एक... उसका डर दूसरों की तुलना में कहीं अधिक गहरा है। यह एक चुंबक की तरह काम कर सकता है।"

रुद्र की सांस अटक गई। वह आलोक के बारे में बात कर रही थी।

फिर डीन की आवाज़ में नरमी आ गई, ऐसी कोमलता जो रुद्र ने पहले कभी नहीं सुनी थी। वह किसी से प्यार से बात कर रही थी।

"मायरा, प्यारी, घबराओ मत।"

वह नाम सुनते ही रुद्र का खून जम गया। उसके कानों में तेज झनझनाहट होने लगी।

"हाँ, मुझे पता है कि आप कितनी मेहनत कर रहे हैं," डीन कह रहे थे। "लेकिन यह ज़रूरी है। उनका भरोसा बनाए रखें। उन्हें यकीन दिलाएं कि हम उनके साथ हैं... खासकर रुद्र के साथ। वह आप पर भरोसा करता है। वह... आपसे प्यार करता है। और यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।"

रुद्र का पूरा शरीर सुन्न हो गया। हथेलियों पर पसीना आ गया। वह दीवार से टिक गया, उसका कान अभी भी वेंटिलेशन की ओर था।

"नहीं, 'प्यारे', तुम्हें अभी बेनकाब नहीं होना चाहिए। तुम बस उनके करीब रहो। उनकी हर गतिविधि की रिपोर्ट करो। अगर वे फिर से कुछ करने की कोशिश करें... खासकर अगर रुद्र अकेले कुछ करने की सोचे... तो मुझे तुरंत बताना।"

मायरा की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी, लेकिन डीन के जवाबों से सब कुछ स्पष्ट हो गया।

"हाँ, मुझे पता है यह मुश्किल है। तुम उससे एक जुड़ाव महसूस करती हो। लेकिन

याद रखना, मायरा, यह हमारे परिवार की सुरक्षा के लिए है। तुम्हारे पिता की विरासत के लिए है। अगर चांसलर को पता चल गया कि हम उनकी परियोजना में दखल दे रहे हैं... तो 2009 जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी, बल्कि उससे भी बदतर।"
कुलपति। तो डीन से ऊपर कोई था। रिया के चाचा सही थे।
"बेटी, तुम बस अपनी भूमिका निभाओ। स्नेह दिखाओ, लेकिन दूरी बनाए रखो। भावनाओं में बह मत जाना। एक दिन यह सब खत्म हो जाएगा और हम सब सुरक्षित हो जाएंगे। तब तक... तुम हमारी आंखें और कान बनो। ठीक है? मुझ पर भरोसा रखो।"
कुछ पल का सन्नाटा छा गया। फिर डीन ने धीरे से कहा, "शुभ रात्रि, बेटी। अपना ख्याल रखना। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।"
कॉल समाप्त हो गई।
रुद्र वहीं खड़ा था, मानो उसकी दुनिया उसके चारों ओर बिखर रही हो। हर शब्द, हर भाव उसके अंदर एक चाकू की तरह चुभ रहा था।
'मायरा, प्रिय।' डीन की बेटी।
उनका विश्वास बनाए रखें।
'वह आप पर भरोसा करता है। वह आपसे प्यार करता है। और यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।'
'भावुक न हो जाओ।'
रुद्र के मन में उनके पल फिर से घूमने लगे—उनकी पहली मुलाकात, डांडिया खेलते समय मायरा का हाथ थामना, उस रात पार्क में उनका चुंबन... क्या यह सब एक नाटक था? कोई योजना? क्या मायरा की हर मुस्कान, हर चिंतित निगाह, हर "आई लव यू" झूठ था?
उसके सीने में असहनीय दर्द उठा, मानो कोई उसे फाड़कर उसका दिल निकाल रहा हो। उसने अपने मुंह को हाथ से ढक लिया ताकि कोई आवाज़ न निकले। उसकी आँखों से गर्म, तेज़ धार में आंसू बहने लगे, लेकिन वह चिल्लाया नहीं। वह बस कांप रहा था, एक गहरा, आंतरिक कंपन जो उसकी हड्डियों तक को हिला रहा था।
उसे लगता था कि वह डर को जानता है—प्रयोगशाला का अंधेरा, वह आकृति, बृजेश का शरीर। लेकिन यह... यह डर एक अलग ही स्तर का था। यह विश्वासघात था। यह उसकी अपनी भावनाओं का अपहरण था। उसने मायरा के सामने खुद को पूरी तरह

खोल दिया था—अपनी कमजोरियाँ, अपना डर, अपना प्यार... और यह सब एक रिपोर्टिंग उपकरण था। डीन के लिए खुफिया जानकारी।

तभी उसे डीन के कार्यालय के दरवाजे की कुंडी खुलने की आवाज सुनाई दी।

रुद्र चौंककर ऊपर देखने लगा। दरवाजा खुला और डीन बाहर निकलीं। वह थकी हुई लग रही थीं, उनके चेहरे पर चिंता की गहरी लकीरें साफ दिख रही थीं। रुद्र की तरफ पीठ करके वह गलियारे में दूसरी दिशा में चल पड़ीं, शायद शौचालय की ओर।

यह रुद्र का मौका था। वह उसके कमरे में घुसकर फाइलें खोज सकता था। लेकिन उसका शरीर प्रतिक्रिया नहीं दे रहा था। वह सुन्न पड़ गया था। उसकी इच्छाशक्ति, उसका साहस... सब कुछ उस फोन कॉल ने निगल लिया था।

वह धीरे-धीरे पीछे हटते हुए सीढ़ियों की ओर बढ़ा। उसके कदम लड़खड़ा रहे थे। वह नीचे उतरा, उसी खिड़की से बाहर निकला और ज़मीन पर गिर पड़ा। ज़मीन ठंडी थी, लेकिन उसका शरीर शर्म, क्रोध और गहरे दुख की आग में जल रहा था।

वह कैंपस में इधर-उधर भटक रहा था, बिना किसी दिशा के। वह कहीं भी जा सकता था। तभी उसके फोन में वाइब्रेशन हुआ। एक मैसेज आया था।

मायरा की ओर से।

"रुद्र, क्या तुम सो रहे हो? मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है। कल मिलते हैं? मैंने तुम्हारे लिए कुछ बेक किया है। ❤"

उसने स्क्रीन पर देखा, और वह संदेश अब एक ज़हरीले मज़ाक जैसा लग रहा था। वह हँसना चाहता था, एक कड़वी, टूटी हुई हँसी। लेकिन उसके गले से केवल एक दबी हुई आह निकली।

उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह अपने हॉस्टल की ओर चलने लगा, लेकिन वह वहाँ जाना नहीं चाहता था। वह उस कमरे में नहीं जा सकता था जहाँ मायरा की यादें हर चीज़ से जुड़ी हुई थीं—वह हुडी जो उसने पहनी थी, वह किताब जो उन्होंने साथ पढ़ी थी।

वह खुद को पुस्तकालय के पीछे वाले पार्क में पाया, जहाँ उन्होंने पहली बार अपने प्यार का इज़हार किया था। वह उसी बेंच पर बैठा था जहाँ मायरा ने उसे हॉट चॉकलेट दी थी।

आसमान बादलों से ढक गया, चांद और तारे छिप गए। ठीक उसी तरह जैसे उसकी दुनिया की सारी रोशनी अचानक बुझ गई।

वह क्या करेगा? कबीर, मयंक, आलोक को बताएगा? उन्हें बताएगा कि मायरा गद्दार है? कि उनकी हर योजना, उनका हर कदम डीन तक पहुँच रहा था?
लेकिन क्या मायरा सचमुच गद्दार थी? डीन ने कहा था—"यह हमारे परिवार की सुरक्षा के लिए है।" क्या मायरा भी डरी हुई थी? क्या वह यह सब दबाव में कर रही थी?
लेकिन फिर वो शब्द... "भावुक मत हो जाओ।"
इसका मतलब था कि मायरा जानती थी कि वह भावनाओं में बह सकती है। यानी उसकी भावनाओं में कुछ सच्चाई थी। या... या फिर वह अपनी भूमिका में इतनी डूब गई थी कि खुद ही भ्रमित हो गई थी?
रुद्र के सिर में तेज दर्द होने लगा। हर विचार एक नया घाव दे रहा था।
उसने दोबारा अपना फोन देखा। मायरा ने एक तस्वीर भेजी थी—एक मफिन जिस पर दिल बना हुआ था। "तुम्हारे लिए अभ्यास।"
पहले, यह तस्वीर उसे खुशी से भर देती थी। अब, यह एक धोखे की तरह लग रही थी। एक नाटक की तरह। एक ऐसा नाटक जिसमें वह मुख्य अभिनेता था, बिना किसी स्क्रिप्ट के, बिना यह जाने कि उसके खिलाफ लिखी गई हर पंक्ति क्या है।
उसने फोन वापस अपनी जेब में रख लिया। आंसू रुक गए थे। उनकी जगह एक खालीपन ने ले ली थी, एक ऐसा शून्य जिसने उसके अंदर के सारे रंग, सारी आवाज़, सारी भावना को निगल लिया था।
वह उठा और अपने छात्रावास की ओर चलने लगा। उसके कदम भारी थे, मानो उसके पैरों में सीसा भरा हो।
अपने कमरे में प्रवेश करते ही उसकी नज़र मायरा की पहनी हुई हुडी पर पड़ी। उसने उसे उठाया, उसे फाड़ देना चाहता था, फेंक देना चाहता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह बस उसे देखता रहा, मानो वह कोई अजीब, बुरी शक्ति से ग्रसित वस्तु हो।
उसने अपना फोन डेस्क पर रखा और बिस्तर पर लेट गया। वह छत को घूरने लगा। वहाँ कुछ भी नहीं था। बस सफेद प्लास्टर। ठीक उसकी जिंदगी की तरह—अब खाली, रंगहीन और झूठी।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन नींद नहीं आई। उसके कानों में केवल एक ही आवाज़ गूँज रही थी—डीन की आवाज़, वह विषैला स्नेह, वह कपटी कोमलता।

“मायरा, प्यारी, उनका भरोसा बनाए रखो। उन्हें यह महसूस करने दो कि हम उनके

साथ हैं…”
और फिर मायरा का चेहरा, जो अब एक मुखौटे जैसा लग रहा था। एक खूबसूरत, मोहक, जानलेवा मुखौटा।
रुद्र ने अपनी मुट्ठियाँ इतनी ज़ोर से भींचीं कि उसके नाखून उसकी हथेलियों में धंस गए। दर्द से उसे थोड़ी राहत मिली। यह दर्द असली था। झूठ नहीं था।
उसे पता था कि कल सुबह उसे अपने दोस्तों को सब कुछ बताना होगा। उसे मायरा का सामना करना होगा। और उस आमना-सामना के ख्याल मात्र से ही उसका दिल एक बार फिर टूट गया।
वह उसकी आँखों में कैसे देखेगा? वह कैसे कहेगा कि उसके मन में जो प्यार था वह झूठ था?
रात धीरे-धीरे गुज़री, लेकिन रुद्र के लिए समय थम सा गया था। वह उस पल में फंसा हुआ था—हवा के निकास द्वार के पास, डीन की आवाज़ सुन रहा था, और अपनी दुनिया को बिखरते हुए देख रहा था।
और सबसे बुरी बात यह थी कि वह अब भी, कहीं न कहीं, मायरा से प्यार करता था। और वही प्यार अब उसकी सजा बन गया था।

अध्याय 17 – पीड़ाओं का तूफान

सुबह की पहली किरण रुद्र की खिड़की से अंदर आई, लेकिन उसकी आँखों में प्रवेश करने के बजाय, वह बिखर गई, मानो उसकी आत्मा में अब कोई प्रकाश नहीं रह सकता था। वह पूरी रात उसी पलंग पर, उसी मुद्रा में लेटा रहा—आँखें खुली, छत को घूरता हुआ। उसका शरीर एक भारी, निर्जीव वस्तु जैसा महसूस हो रहा था।
उसका फ़ोन कई बार बज चुका था। मायरा के फ़ोन आ रहे थे। एक के बाद एक। हर कंपन बिस्तर पर एक दर्दनाक गूंज छोड़ रही थी। आखिरकार उसने आखिरी कॉल काट दी और बाकी चार लोगों के समूह को एक संदेश टाइप किया:
"पुस्तकालय के तहखाने में तुरंत पहुंचें। बहुत जरूरी है। मायरा को मत बताना।"
'''
एक घंटे बाद, वे चारों उसी अध्ययन कक्ष में थे। पिछली रात की भयावह यादों से वातावरण भरा हुआ था और रुद्र के चेहरे पर एक नई, भयानक शांति छाई हुई थी।

कबीर ने सीधे पूछा, "क्या हुआ? तुम कल रात गए थे ना? एडमिन ब्लॉक में?"
रुद्र ने सिर हिलाया। अपनी आवाज़ निकलने से पहले ही उसने एक लंबी, कांपती हुई सांस ली। और फिर उसने उन्हें सब कुछ बताना शुरू कर दिया—एयर वेंट की घटना, डीन की बातचीत और वह ज़हरीला सच जो उसने सुना था।
हर शब्द के साथ कमरे का तापमान गिरता जा रहा था। मयंक का चेहरा पत्थर जैसा, भावहीन हो गया। आलोक की सांसें तेज़ हो गईं। रिया ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। और कबीर... कबीर के चेहरे पर पहले अविश्वास, फिर क्रोध और फिर गहरी, व्यर्थ करुणा दिखाई दी।
"नहीं..." आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा। "मायरा... वो ऐसी नहीं है।"
"मैंने खुद सुना, आलोक," रुद्र की आवाज़ एकदम सपाट थी, मानो उसमें कोई जान ही न बची हो। "उसने कहा—'उनका भरोसा बनाए रखो। वह तुम पर भरोसा करता है। वह तुमसे प्यार करता है। यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।'"
रिया ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। "लेकिन पिछले कुछ दिनों में... वह हमारे साथ थी। उसने हमारी मदद की। उसने जोखिम उठाए।"
कबीर ने कड़वाहट से कहा, "शायद यह सब एक नाटक था। हम मूर्ख थे। उसकी माँ ने हमें चुना और अपनी बेटी को हमें फंसाने के लिए भेजा।"
"नहीं," रुद्र ने अचानक कहा, उसकी आवाज़ में पहली बार एक तीव्र, कड़वा दर्द झलक रहा था। "उसे भेजा नहीं गया था। वह पहले से ही यहाँ थी। हमारे बीच। उसी ने मुझसे दोस्ती की शुरुआत की थी। मुझे याद है... उस दिन उसने मुझसे पूछा था कि मैं उदास क्यों हूँ। शायद उसी पल से... शायद यह सब पहले से ही तय था।"
तभी अध्ययन कक्ष का दरवाजा खुला।
मायरा वहीं खड़ी थी।
उसके हाथों में एक छोटा सा टिफिन बॉक्स था और चेहरे पर चिंता और स्नेह भरी मुस्कान थी। "तुम सब यहीं हो? मैंने रुद्र को फोन किया था, लेकिन... रुद्र, तुम ठीक हो?" वह एक कदम आगे बढ़ी। "मैं तुम्हारे लिए ये मफिन लाई हूँ। तुम कल रात नहीं लाए थे..."
वह रुक गई। क्योंकि उसने कमरे का माहौल महसूस किया। उसकी ओर देखते हुए सबके चेहरों पर जमी बर्फ जैसी ठंडक। रुद्र की आँखों में खालीपन, जो अब जलते हुए कोयले में तब्दील हो रहा था।

"क्या... क्या हुआ?" मायरा की आवाज में हल्की सी कंपकंपी आ गई।
रुद्र धीरे-धीरे उठा। हर कदम के साथ उसका शरीर मानो टूट रहा था। वह मायरा के सामने रुका और उसकी आँखों में देखा। वही आँखें जिनमें उसने कभी अपना सब कुछ देखा था। अब वे किसी अजनबी की आँखों जैसी लग रही थीं।
"तुम..." रुद्र की आवाज़ कमरे की खामोशी में गूंज उठी। "तुम... डीन की बेटी हो?"
शब्द हवा में ही लटके रह गए। मायरा के चेहरे का रंग उड़ गया। उसका हाथ ढीला पड़ गया और टिफिन बॉक्स ज़मीन पर गिरकर खुल गया। दिल के निशान वाला मफिन धूल में लोटने लगा।
"हां..." मायरा ने लड़खड़ाती आवाज में कहा। "लेकिन सुनो—"
“क्या यह सब पहले से तय था?” रुद्र की आवाज़ अब तेज़ हो गई, उसमें दर्द भरी तीक्ष्णता थी। “तुम्हारा मेरे पास आना? मुझसे मिलना? स्नेह दिखाना? सब झूठ था? तुम्हारा काम हम पर नज़र रखना था? हमने तुम पर भरोसा किया... मैंने तुम पर भरोसा किया... और तुमने मुझे धोखा दिया।”
मायरा की आँखों में आँसू भर आए। "नहीं, रुद्र, ऐसा मत सोचो! मेरी माँ का इरादा सिर्फ तुम्हारी मदद करना था! उन्हें 2009 की सच्चाई पता है! वह चाहती हैं कि तुम लैब का रहस्य उजागर करो, लेकिन सुरक्षित तरीके से! मैंने तुमसे झूठ नहीं बोला, मैंने बस पूरी सच्चाई नहीं बताई..."
"पूरा सच?" रुद्र ने एक कड़वी हंसी हंसी जो उसके गले में ही अटक गई। "क्या यह पूरा सच नहीं है कि तुम उसकी बेटी हो? कि तुम्हें हम पर नज़र रखने के लिए भेजा गया था? कि तुम्हें हमारी हर हरकत, हर योजना की रिपोर्ट देनी थी? क्या यह पूरा सच नहीं है कि तुमने मेरे प्यार का मज़ाक उड़ाया... मेरे प्यार का?"
आखिरी वाक्य चीख की तरह निकला। रुद्र की आंखें अब लाल हो गई थीं, उनमें आंसू भर आए थे लेकिन बह नहीं रहे थे।
"मैंने तुम्हारे प्यार का मज़ाक नहीं उड़ाया!" मायरा रोते हुए बोली, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। "हाँ, मेरी माँ ने मुझे तुम्हारे करीब रहने के लिए कहा था। हाँ, मुझे उन्हें तुम्हारी हरकतों के बारे में बताना पड़ा। लेकिन हमारे बीच जो कुछ हुआ... वो सच था, रुद्र! हर शब्द, हर स्पर्श, हर चुंबन... मेरे लिए वो सच था! मैं तुमसे प्यार करती हूँ!"
"झूठा!" रुद्र की आवाज़ कांप उठी। "तुम्हारी माँ ने कहा था—'भावुक मत हो जाना।'

याद है? मैंने सुना था! तुम्हें बस एक भूमिका निभानी थी। और तुमने उसे इतनी अच्छी तरह निभाया कि शायद तुम खुद ही भ्रमित हो गए। लेकिन मैं नहीं हूँ। अब और नहीं।"
मायरा कांप रही थी; उसने खुद को संभालने के लिए कुर्सी का एक बाजूबंद पकड़ लिया। "तुम गलत समझ रही हो... माँ डरी हुई है। चांसलर और उसके लोग... वे खतरनाक हैं। माँ चाहती है कि तुम सच्चाई उजागर करो, लेकिन वह यह भी चाहती है कि तुम सुरक्षित रहो। मैं तुम्हारी सुरक्षा के लिए वहाँ थी!"
“और जो लाश हमने प्रयोगशाला में देखी थी, वो गायब कैसे हुई?” रुद्र गुस्से से लाल होकर आगे बढ़ा। “वो नदी तक कैसे पहुँची? वो नोट? क्या तुम्हारी माँ ने बृजेश को मारा?”
"नहीं!" मायरा ने अपने हाथों से अपना मुंह ढक लिया, दर्द भरी चीख उसके मुंह से निकली। "माँ ऐसा कभी नहीं कर सकती! कुछ और ही चल रहा है... कोई दूसरी शक्ति हम सबको नियंत्रित कर रही है... एनोमली एक्स... यह सिर्फ एक जीव नहीं है, यह हमारे दिमाग में प्रवेश कर सकता है... शायद जो कुछ हम देख रहे हैं वह..."
"बहाने बनाना बंद करो!" रुद्र ने उसे बीच में ही रोक दिया। उसकी आवाज़ में अब सिर्फ़ घृणा और टूटन थी। "तुमने मेरे प्यार का मज़ाक उड़ाया। तुमने मेरी कमज़ोरियाँ, मेरा डर, मेरा भरोसा... सब जान लिया और उन्हें अपनी माँ को सौंप दिया। क्या तुम्हें याद है मैंने तुमसे क्या कहा था? कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ इसलिए तुम्हें दूर रखना चाहता हूँ? तुमने उस प्यार को हथियार बना लिया। एक औज़ार।"
उसने एक और कदम बढ़ाया। अब उनके बीच सिर्फ़ एक फुट का फासला रह गया था। "तुम्हारे मुंह से निकला हर 'आई लव यू' झूठ था। तुम्हारा हर स्पर्श झूठ था। और सबसे बड़ा झूठ..." उसकी आवाज़ फिर से धीमी होकर फुसफुसाहट में बदल गई, "सबसे बड़ा झूठ यह था कि मैंने इसे सच मान लिया था।"
मायरा ने अपना हाथ उठाया, शायद उसे छूने के लिए, शायद समझाने के लिए। "रुद्र, मैं तुमसे वादा करती हूँ..."
"मुझे मत छुओ!" रुद्र ने उसका हाथ झटक दिया। उसकी आवाज़ में इतना ज़हर था कि मायरा सहम गई। "अब तो तुम्हारा स्पर्श भी मुझे झूठ लगता है। तुम्हारी हर नज़र छल है। तुम खुद छल हो।"
यह आखिरी आघात था। मायरा के चेहरे पर सदमे, दर्द और गहरे, निराशाजनक गुस्से की लहर दौड़ गई। उसकी आँखों से आँसू सूख गए, उनकी जगह एक चमक आ गई

— एक आहत, अपमानित प्राणी की चमक।
"तो तुम्हें लगता है कि यह सब झूठ था?" मायरा की आवाज़ अब साफ़ और कठोर थी। "तुम्हें लगता है कि मेरे आँसू झूठे थे? मेरी चिंता झूठी थी? जब मैं तुम्हारे लिए ये मफिन बनाने के लिए पूरी रात जागती रही, क्या वह झूठ था? जब मैं तुम्हारे डर के बारे में सोचकर रोई, क्या वह झूठ था?"
वह एक कदम आगे बढ़ी। "तुम इतने स्वार्थी हो गए हो कि तुम्हें यह भी दिखाई नहीं दे रहा कि मैं भी इस जाल में फंसी हुई हूँ! मेरी माँ ने मुझे तुम लोगों की मदद करने के लिए कहा था, लेकिन यह नहीं कि मैं कौन हूँ। क्योंकि अगर चांसलर को पता चल गया कि माँ तुम्हारी मदद कर रही है, तो हम सब खतरे में पड़ जाएँगे! और हाँ... हाँ, मुझे तुम पर नज़र रखनी पड़ी। लेकिन इसलिए नहीं कि मैं तुम्हें धोखा देना चाहती थी, बल्कि इसलिए कि मैं तुम्हें बचाना चाहती थी!"
"बचाया?" रुद्र ने उपहास उड़ाते हुए कहा। "तुमने हमारी हर योजना की जानकारी उन्हें दे दी। तुम्हारी वजह से ही शायद बृजेश..."
"बृजेश की मौत मैंने नहीं, तुमने की है!" मायरा चिल्लाई।
मौन।
गहरी, दरार पैदा कर देने वाली खामोशी।
रुद्र का चेहरा पीला पड़ गया। "क...क्या?"
मायरा ने अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया, मानो शब्द अनजाने में निकल गए हों। उसकी आँखों में फिर से आँसू भर आए। "मेरा मतलब... मेरा मतलब यह नहीं है कि तुमने उसे मार डाला। लेकिन उस रात तुमने ही उसे लैब जाने के लिए उकसाया था। तुम ही हो जो हमेशा आगे रहती हो, जो सबको खतरे में डालती हो। अगर तुमने बृजेश को रोक दिया होता... अगर तुमने उसे जाने न दिया होता..."
उसने अपनी बात पूरी नहीं की। कमरे में एक तीखी, गूंजती हुई आवाज सुनाई दी।
रुद्र ने अपने गाल को छुआ, जहां मायरा ने उसे जोर से थप्पड़ मारा था।
वह थप्पड़ महज एक चोट नहीं थी। वह दबे हुए सारे दर्द, सारी गलतफहमियों और टूटे हुए भरोसे का विस्फोट था।
"तुम्हें मुझ पर इस तरह आरोप लगाने का कोई हक नहीं है," मायरा ने कांपती हुई आवाज़ में फुसफुसाते हुए कहा। "तुम्हें मेरे प्यार को झूठ कहने का कोई हक नहीं है। क्या तुम्हें पता है मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ? इतना कि मैंने अपनी माँ से झूठ

बोला, उन्हें तुम्हारी पूरी योजना नहीं बताई। मैं तुम्हारी रक्षा करना चाहती थी। और तुम... मुझे गद्दार कहते हो?"
रुद्र ने अपना गाल रगड़ा। थप्पड़ का दर्द उसके चेहरे पर नहीं, बल्कि उसकी आत्मा में जल रहा था। उसने मायरा की आँखों में देखा—अब वहाँ प्यार नहीं था। बस एक गहरा, पीड़ादायक दर्द, शायद उसके अपने दर्द से कम नहीं।
लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। बातें हो चुकी थीं। घाव लग चुके थे।
"हमारा रिश्ता खत्म हो गया," रुद्र ने कहा, उसकी आवाज़ अब बिल्कुल सपाट और बेजान थी। "तुम और मैं। यह सब... खत्म हो गया है।"
वह मुड़ा और दरवाजे की ओर चल पड़ा। उसके कदम लड़खड़ा रहे थे, लेकिन वह रुका नहीं।
"रुद्र!" मायरा ने आखिरी बार टूटी हुई चीख के साथ पुकारा।
लेकिन रुद्र ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह गलियारे में चला गया और नजरों से ओझल हो गया।
कमरे में सन्नाटा छा गया। मायरा कांपती हुई, आंसुओं में डूबी खड़ी रही। फिर उसके पैर लड़खड़ा गए और वह ज़मीन पर बैठ गई, अपना चेहरा हाथों में छिपाकर सिसकियाँ लेने लगी। उसके कंधे बुरी तरह कांप रहे थे और हर सिसकी के साथ उसका दिल और भी टूटता जा रहा था।
रिया सबसे पहले आगे बढ़ी। वह धीरे से मायरा के पास गई और उसे गले लगा लिया। मायरा ने कोई विरोध नहीं किया। उसने बस अपना सिर रिया के कंधे पर रखा और रोती रही।
कबीर, मयंक और आलोक ने एक-दूसरे को देखा। उनकी आँखों में सदमा, दुख और बेबसी भरा गुस्सा था। वे जानते थे कि उन्हें रुद्र का ख्याल रखना है। लेकिन उससे पहले, उन्हें मायरा को वहाँ से सुरक्षित निकालना था।
'''
रुद्र पुस्तकालय से निकला और सीधे जंगल की ओर चल पड़ा। उसे नहीं पता था कि वह कहाँ जा रहा है। उसे बस चलते रहना था। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे—शांत, लगातार धाराएँ उसके गालों को भिगो रही थीं।
वह जाकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया, अपना सिर घुटनों पर रखा और खुलकर रोने लगा। यह महज़ सिसकियाँ नहीं थीं। यह एक गहरी, गूंजती हुई चीख थी जिससे

उसका पूरा शरीर कांप रहा था। हर आंसू के साथ मायरा की एक याद मिटती जा रही थी—उसकी हंसी, उसकी आंखों की चमक, उसके हाथों की गर्माहट, पार्क में किया गया वह चुंबन, वह मफिन, वह "आई लव यू"...
और हर याद के साथ, डीन की आवाज भी गूंजती थी—'उनका विश्वास बनाए रखें... भावनाओं में बह मत जाएं।'
क्या यह सब सचमुच झूठ था? क्या मायरा के आंसू सच्चे थे? क्या उसका दर्द सच्चा था? लेकिन फिर वो थप्पड़... वो आरोप... ये कहना कि बृजेश की मौत में उसका हाथ था...
रुद्र के रोने की आवाज़ जंगल के सन्नाटे में खो गई। पेड़ों के पत्ते सरसराए, मानो प्रकृति भी उसके दर्द में शामिल हो रही हो।
तभी उसे अपने पीछे कदमों की आहट सुनाई दी। वह मुड़ा। कबीर, मयंक और आलोक वहाँ खड़े थे। उनके चेहरों पर चिंता और गहरी सहानुभूति झलक रही थी।
कबीर चुपचाप उसके बगल में बैठ गया। उसने रुद्र के कंधे पर हाथ रखा। कोई शब्द नहीं। बस उपस्थिति।
मयंक ने एक रुमाल निकाला और रुद्र को दे दिया। आलोक उसके सामने बैठ गया और बस देखता रहा, उसकी आँखों में भी आँसू थे।
रुद्र ने रुमाल लिया और अपना चेहरा पोंछा। उसकी सिसकियाँ धीरे-धीरे शांत होने लगीं।
"उसने..." रुद्र ने रुक-रुक कर कहा, "उसने कहा कि बृजेश की मौत मेरी वजह से हुई।"
कबीर ने धीरे से कहा, "उसने गुस्से में ऐसा कहा था। लोग गुस्से में बहुत कुछ कह देते हैं।"
"लेकिन शायद उसने सच ही कहा हो," रुद्र ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। "मैंने ही उसे प्रयोगशाला जाने के लिए उकसाया था। मैं ही तुम सबको इस खतरे में घसीट रहा हूँ।"
"हम खुद इस खतरे में फंसे हैं, रुद्र," मयंक ने कहा। "कोई किसी को घसीट नहीं रहा है। हम एक टीम हैं।"
"और मायरा?" आलोक ने धीमी आवाज़ में पूछा।
रुद्र ने अपनी आँखें बंद कर लीं। "मैं उसे कभी माफ नहीं कर सकता। और शायद वह

भी मुझे कभी माफ नहीं कर पाएगी।"
कबीर ने बताया, "रिया उसके साथ है। वह उसे सुरक्षित उसके हॉस्टल तक ले गई है।"
रुद्र ने सिर हिलाया। मायरा के अकेले न होने से उसे एक अजीब सी राहत मिली। लेकिन फिर उसने खुद को रोक लिया। उसे अब उसके बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। वह अब उसकी नहीं थी।
"अब क्या?" आलोक ने पूछा।
रुद्र ने गहरी सांस ली और अपनी आंखें खोलीं। अब उसकी आंखों में आंसू नहीं थे। बस एक कठोर, दृढ़ निश्चय था।
"अब हम अकेले हैं," उसने कहा। "न डीन है, न मायरा। बस हम चारों हैं। और अब हमें यह लड़ाई खुद लड़नी होगी। बृजेश के लिए। अपने लिए।"
वह खड़ा हुआ और अपने कपड़ों से धूल झाड़ी। "हमें पता लगाना होगा कि चांसलर कौन है। एनोमली एक्स क्या है। और हम इसे कैसे रोक सकते हैं।"
कबीर भी खड़ा हो गया और उसने उसके कंधे पर हाथ रखा। "तुम अकेले नहीं हो, भाई। हम तुम्हारे साथ हैं। हमेशा।"
रुद्र ने उसकी आँखों में देखा। उस दिन पहली बार उसके चेहरे पर एक कमजोर, टूटी हुई मुस्कान दिखाई दी—यह मुस्कान नहीं थी, यह एक प्रतिज्ञा थी।
धीरे-धीरे वह खड़ा हुआ। अब उसकी आवाज़ कांप नहीं रही थी; बल्कि दृढ़ थी—"बस बहुत हो गया... बहुत नाटक हो गया। अब हम इस अनोखी चीज़ (Anomaly X) का रहस्य उजागर करेंगे। और कबीर, मैं तुमसे वादा करता हूँ... बृजेश को न्याय मिलेगा।"
यह सुनकर कबीर खुद को रोक नहीं पाया। वह आगे बढ़ा और रुद्र को गले लगा लिया। यह पहली बार था जब उनके बीच की नोकझोंक उस पल सच्ची दोस्ती में बदल गई।
आलोक और मयंक भी आगे आए। दोनों ने एक साथ कहा, "बॉस, हम आपके साथ हैं।"
रुद्र ने चारों ओर देखा, उसकी आँखों में अब थकान नहीं थी, बल्कि एक नई चमक थी। "अब हम सब एक टीम हैं... और इस टीम में हर किसी को समान स्वतंत्रता मिलेगी।"
वे चारों जंगल से कैंपस की ओर वापस चल पड़े। पीछे, उस पेड़ के नीचे, रुद्र के

आँसुओं से लथपथ ज़मीन और मफिन के टूटे हुए टुकड़े पड़े थे—एक टूटे हुए प्यार के मूक गवाह।
दूर हॉस्टल की खिड़की से मायरा बाहर देख रही थी, उसकी आँखें सूजी हुई थीं, उसका दिल टूटा हुआ था। उसने उन चारों को जाते हुए देखा और महसूस किया कि उसने न केवल रुद्र को खोया है, बल्कि उस पूरी टीम में अपनी जगह, वह उम्मीद भी खो दी है जो अब उससे दूर जा रही थी।
उसने खिड़की बंद कर ली और अंधेरे में सिमट गई। बाहर बादल छंट रहे थे, लेकिन दो दिलों के भीतर का तूफ़ान अभी शांत नहीं हुआ था।

अध्याय 18: टूटा हुआ, फिर भी अजेय

घने जंगल की छाया में, जहाँ रुद्र का दिल चकनाचूर हो गया था, एक नया संकल्प पनप रहा था। कबीर का हाथ उसके कंधे पर था—सिर्फ़ सहारा नहीं, बल्कि एक वादा। मयंक की चुप्पी अब रणनीति बन रही थी। आलोक की नम आँखें संवेदनशीलता की शक्ति बन गई थीं। और वे चारों एक इकाई थे, टूटे हुए होते हुए भी एक-दूसरे से जुड़े हुए।
“हम यहाँ नहीं रह सकते,” रुद्र ने अपनी आवाज़ में एक नया, दृढ़ निश्चय लाते हुए कहा। “हमें एक सुरक्षित जगह चाहिए। ऐसी जगह जहाँ कोई हमें ढूंढ न सके।”
मयंक ने सोच-समझकर सिर हिलाया। “मेरे चाचा का शहर के बाहरी इलाके में एक पुराना गोदाम है। बिजली नहीं है, लेकिन छिपने के लिए एकदम सही जगह है। वहां कोई नहीं जाता।”
“तो चलिए चलते हैं,” कबीर ने कहा। “लेकिन हमें रिया को भी फोन करना होगा। उसके पास वो डायरी है।”
रुद्र एक पल के लिए झिझका। रिया मायरा के साथ थी। लेकिन मयंक ने समझाया, “रिया ने हमेशा हमारी मदद की है। और उसका नजरिया अलग है। वह मायरा नहीं है।”
रुद्र ने सिर हिलाया। यह भावनात्मक फैसले लेने का समय नहीं था।
'''
दोपहर तक वे पाँचों एक पुराने, धूल भरे गोदाम में इकट्ठा हो गए थे। वह जगह सचमुच

सुनसान थी—टूटी खिड़कियाँ, जंग लगी मशीनें और हवा में लकड़ी और जंग की गंध। रिया ने एक लालटेन जलाई, जिसकी लौ से उनके चेहरों पर अजीब सी परछाइयाँ पड़ रही थीं।

“यह डायरी,” रिया ने इसे अस्थायी मेज के बीच में रखते हुए कहा। “मेरे चाचा अनुराग शर्मा की है। इसमें 2009 से लेकर अब तक के प्रोजेक्ट एनोमली एक्स के बारे में सब कुछ लिखा है।”

रुद्र ने डायरी खोली। पन्ने पीले पड़ गए थे, लिखावट कहीं-कहीं धुंधली हो गई थी। लेकिन शब्द अब भी जीवंत थे। उसने जोर से पढ़ना शुरू किया।

"प्रविष्टि 15: आज डॉ. काव्या शर्मा (अब डीन) ने हमें बताया कि यह परियोजना अब केवल शोध नहीं रह गई है। एक बाहरी कॉर्पोरेट संगठन इसे वित्त पोषित कर रहा है। उनका लक्ष्य: 'एनोमली एक्स' को एक जैविक हथियार के रूप में विकसित करना है। यह जीव न केवल डीएनए को बदल सकता है, बल्कि भावनात्मक आवृत्ति को पढ़ और नियंत्रित भी कर सकता है। भय इसका प्राथमिक ईंधन है।"

“डर…” आलोक ने अपनी बाहों को कसकर पकड़ते हुए फुसफुसाया। “तो इसीलिए हमें चुना गया था। हमारा डर।”

“हमारा डर, हमारा सदमा,” मयंक ने अपनी नोटबुक में लिखते हुए कहा। “यह स्वाभाविक है। रुद्र—बृजेश की मौत के लिए खुद को दोषी मानता है। कबीर—अपने दोस्त को न बचा पाने के अपराधबोध से ग्रस्त है। आलोक—सामान्य जीवन से भी डरा हुआ है। रिया—अपने चाचा के लापता होने के दर्द से जूझ रही है। और मैं… मुझे अपना आपा खोने का डर है।”

यह बात सबके लिए नई थी। मयंक ने इससे पहले कभी अपने डर के बारे में बात नहीं की थी।

“और बृजेश?” कबीर ने भारी आवाज़ में पूछा। “उसे किस बात का डर था?”

रिया ने डायरी का पन्ना पलटा। “मेरे चाचा ने यहाँ लिखा था: ‘विसंगति X सबसे ज़्यादा उन लोगों को प्रभावित करती है जिनका डर छिपा रहता है, जो खुद से भागते हैं। जो लोग निडर होने का दिखावा करते हैं—उनके अंदर का डर सबसे ज़हरीला होता है।’”

कबीर का चेहरा कड़वाहट से भर गया। “बृजेश… वो हमेशा बेफिक्र लगता था। लेकिन उसके पिता… उससे डरते थे। नाकाम होने से डरते थे। शायद इसीलिए…”

“इसीलिए वह उसका आसान शिकार बन गया,” रुद्र ने अपनी बात समाप्त की। उसने डायरी का अगला पृष्ठ पलटा।
"प्रविष्टि 22: आज मैंने गलती से चांसलर की बातचीत सुन ली। वे एक कॉर्पोरेट प्रतिनिधि से बात कर रहे थे। वे एक 'फील्ड टेस्ट' के बारे में बात कर रहे थे। एक छोटे, नियंत्रित समूह पर। मैंने कुछ छात्रों के नाम सुने... उनमें से एक मेरी बहन का बेटा है... मेरा भतीजा। वे उसे भी निशाना बना रहे हैं। मुझे कुछ करना होगा।"
“भतीजा…” रिया ने आँखें चौड़ी करते हुए कहा। “मेरा चचेरा भाई… वह भी इसी विश्वविद्यालय में पढ़ता था। वह भी 2009 में लापता हो गया था।”
पहेली के टुकड़े एक साथ जुड़ रहे थे। चांसलर और एक गुप्त कॉर्पोरेट संगठन। डीन, शायद उनके दबाव में। और एनोमली एक्स—एक ऐसा जीव जो भय पर पलता था और मनुष्यों को राक्षसों में बदल सकता था।
“हमें अपनी भूमिकाएं तय करनी होंगी,” रुद्र ने डायरी बंद करते हुए कहा। “अब हम किसी पर भरोसा नहीं कर सकते। न डीन पर, न मायरा पर, न पुलिस पर। हम अकेले हैं। बागी।”
“बदमाश?” आलोक ने पूछा।
मयंक ने समझाया, “स्वतंत्र। अनियंत्रित। हम अपने नियम खुद बनाएंगे।”
रुद्र ने सबकी ओर देखा। “मैं नेता बनूंगा। इसलिए नहीं कि मैं चाहता हूं, बल्कि इसलिए कि मैं जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार हूं। मुझसे गलतियां होंगी, लेकिन मैं हर गलती की जिम्मेदारी लूंगा।”
मयंक ने कहा, "और मैं रणनीतिकार बनूंगा। डेटा, तकनीक, योजना बनाना—यह सब मेरी जिम्मेदारी होगी।"
कबीर ने मुट्ठी भींच ली। “मैं ताकत बनूंगा। लेकिन सिर्फ शारीरिक ही नहीं… मैं नैतिक मार्गदर्शक भी बनूंगा। हम कभी उनके जैसे नहीं बनेंगे जिनसे हम लड़ रहे हैं। हम निर्दोषों को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।”
सबकी निगाहें आलोक पर टिक गईं। वह पीछे हट गया। "मैं... मैं क्या कर सकता हूँ?"
रिया ने कोमल मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा। “तुम्हारी संवेदनशीलता ही तुम्हारी ताकत है, आलोक। तुम छोटी से छोटी बातों को भी भांप लेते हो। तुम भावनाओं को पढ़ लेते हो। तुम हमारे भावनात्मक सहारा बनो। तुम यह सुनिश्चित करोगे कि हम

इंसान बने रहें।”
आलोक ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। अपने जीवन में पहली बार, उसकी 'कमजोरी' को ताकत कहा जा रहा था।
“और मैं?” रिया ने पूछा।
रुद्र ने कहा, “आप इतिहासकार और संयोजक हैं। आपको अतीत का ज्ञान है। आप उन कड़ियों को जोड़ सकते हैं जिन्हें हम देख नहीं सकते।”
टीम का गठन हो गया। एक टूटी-फूटी, फिर भी अजेय टीम।
“अब हमारा पहला लक्ष्य,” रुद्र ने कहा। “हमें पता लगाना होगा कि चांसलर कौन है और उसकी गुप्त प्रयोगशाला कहाँ है। मयंक?”
मयंक ने अपना लैपटॉप खोला, जो पोर्टेबल पावर बैंक से चल रहा था। “मैंने विश्वविद्यालय के वित्तीय रिकॉर्ड हैक कर लिए हैं। पिछले दस वर्षों में, ‘नेक्सस बायोटेक’ नामक एक कंपनी ने भारी मात्रा में धन जुटाया है। उनका प्रतिनिधि नियमित रूप से कुलपति से मिलता है। और सबसे दिलचस्प बात यह है कि नेक्सस बायोटेक का कोई मुख्यालय नहीं है। यह एक फर्जी कंपनी है, जिसका स्वामित्व एक बड़े कॉर्पोरेट समूह, ‘वालहल्ला इंडस्ट्रीज’ के पास है।”
“वलहल्ला?” कबीर ने पूछा। “यह नाम…”
“नॉर्स पौराणिक कथाओं में, वलहल्ला वह स्थान है जहाँ योद्धा मृत्यु के बाद जाते हैं,” रिया ने कहा। “लेकिन आधुनिक संदर्भ में, यह एक बहुत बड़ा, गुप्त सैन्य-औद्योगिक समूह हो सकता है।”
रुद्र ने कहा, "तो यह सिर्फ विश्वविद्यालय तक ही सीमित नहीं है। यह एक राष्ट्रीय, शायद अंतरराष्ट्रीय स्तर की साजिश है।"
“और पाँच छात्र इसके खिलाफ हैं,” आलोक ने डरी हुई आवाज में कहा।
“पांच छात्र जो सच जानते हैं,” रुद्र ने सुधार करते हुए कहा। “और जिनके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं बचा है।”
उसका लहजा कठोर था। मायरा से संबंध टूटने के बाद उसने अपनी भावनाओं को एक तरह से दबा लिया था। अब वह मशीन की तरह काम करेगा।
“अगला कदम,” मयंक ने कहा। “हमें उस गुप्त प्रयोगशाला का पता लगाना होगा। मेरे आंकड़ों के अनुसार, विश्वविद्यालय के नीचे शीत युद्ध के दौरान बना एक पुराना बंकर है। इसका प्रवेश द्वार प्रशासनिक ब्लॉक के तहखाने से है—संभवतः वही जगह जहाँ

हमने रोहित को देखा था।"
"लेकिन वहां सुरक्षा है," आलोक ने कहा।
"हम रात में जाएंगे," रुद्र ने कहा। "लेकिन इस बार, बेहतर तैयारी के साथ। मयंक, क्या तुम सुरक्षा प्रणाली को हैक कर सकते हो?"
"मैं कोशिश कर सकता हूँ। लेकिन मुझे भौतिक पहुँच की आवश्यकता है। एक यूएसबी पोर्ट की।"
कबीर ने कहा, "मैं तुम्हारे लिए वो ले आऊंगा। चाहे मुझे दरवाजा ही क्यों न तोड़ना पड़े।"
"नहीं," रुद्र ने उसे रोकते हुए कहा। "हम छुपकर काम करेंगे। हिंसा आखिरी विकल्प होगा।"
तभी आलोक ने एक अजीब हरकत की। वह अचानक उठा और गोदाम के उस कोने की ओर चल पड़ा जहाँ पुराने बक्से रखे थे। उसने एक बक्से को छुआ और जैसे चौंक गया हो, वैसे ही पीछे हट गया।
"यहाँ..." उसने फुसफुसाते हुए कहा। "यहाँ कुछ है... बहुत दुख है। बहुत डर है।"
सब लोग उसके पास गए। आलोक ने बक्सा हटाया। उसके पीछे की दीवार पर एक निशान था—एक उभरा हुआ पैटर्न। मानो किसी ने अंदर से प्लास्टर को धक्का दिया हो।
"यह क्या है?" रिया ने पूछा।
आलोक ने दीवार पर हाथ रखा और आँखें बंद कर लीं। "यह... एक औरत की परछाई है। वह डरी हुई है। वह किसी से छिप रही है। वह यहाँ... कई साल पहले आई थी। उसने कुछ देखा था। कुछ ऐसा जिसने उसे पागल कर दिया।"
उनकी आवाज में एक अलौकिक गूंज थी। आलोक की संवेदनशीलता एक रहस्यमय शक्ति में परिवर्तित हो रही थी।
"क्या तुम्हें कुछ और महसूस हो रहा है?" रुद्र ने धीरे से पूछा।
आलोक ने आँखें बंद रखते हुए सिर हिलाया। "वह एक वैज्ञानिक थी... उससे एक गलती हुई... उसने कुछ छोड़ा... एक सुराग... नीचे..."
वह अचानक पीछे की ओर झटक गया, मानो उसे धक्का दिया गया हो। उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं। "माफ़ कीजिए... यह बहुत तीव्र था।"
मयंक ने दीवार का बारीकी से निरीक्षण किया। उसने देखा कि प्लास्टर का एक

हिस्सा ढीला हो गया है। उसने उसे हटा दिया। उसके नीचे एक छोटी सी जंग लगी धातु की नली थी। उसने उसे खोला। अंदर एक पुराना, मुड़ा हुआ कागज था।
रिया ने उसे ध्यान से खोला। यह विश्वविद्यालय परिसर का हाथ से बना नक्शा था। एक जगह पर बड़ा सा 'X' का निशान था—पुराने बंकर पर। और उस पर लिखा था:
""प्रवेश यहाँ से करें। केवल सुबह 2:17 बजे। चंद्रमा के दूसरे चरण के दौरान।""
“2:17?” कबीर ने कहा। “ये क्या है, कोई जादू है क्या?”
"शायद कोई ज्वारीय ताला या कोई सुरक्षा तंत्र हो," मयंक ने कहा। "जो केवल एक निश्चित समय पर ही खुले।"
“और यह महिला कौन थी?” आलोक ने कांपते हुए पूछा।
रिया ने नक्शे के पीछे देखा। वहाँ एक नाम लिखा था—“डॉ. अलीशा मेनन. 2009.”
“अलीशा मेनन…” रिया ने धीरे से दोहराया। “मैंने यह नाम सुना है। वह मेरे चाचा की बड़ी बहन थीं। वह भी लापता हो गईं।”
रुद्र ने कहा, "इसलिए उसने यह नक्शा छिपा दिया। उसे पता था कि एक दिन कोई न कोई जरूर आएगा।"
यह कोई संयोग नहीं था। यह नियति थी। यह गोदाम, यह नक्शा, आलोक की संवेदनशीलता... सब कुछ एक व्यापक योजना का हिस्सा था।
“अब हमारे पास एक रास्ता है,” रुद्र ने नक्शे को ध्यान से मोड़ते हुए कहा। “आज रात 2:17 बजे, हम उस बंकर में प्रवेश करेंगे।”
“लेकिन आज चंद्रमा का दूसरा चरण है,” मयंक ने अपना फोन देखते हुए कहा। “अगला मौका अगले महीने मिलेगा।”
कबीर ने कहा, "तो आज रात ही हमारा एकमात्र मौका है। हम तैयार नहीं हैं।"
रुद्र ने कहा, "हम कभी भी पूरी तरह से तैयार नहीं हो पाएंगे। लेकिन हम इस अवसर को गंवा नहीं सकते।"
उन्होंने योजना बनाई। रात 1 बजे वे कैंपस पहुंचेंगे। मयंक सुरक्षा व्यवस्था को निष्क्रिय कर देगा। कबीर और रुद्र जरूरत पड़ने पर गार्डों का ध्यान भटकाएंगे। आलोक और रिया प्रवेश द्वार का पता लगाएंगे। और ठीक 2:17 बजे वे अंदर घुस जाएंगे।
“अगर हम पकड़े गए तो…” आलोक ने कहा।
“फिर हम पकड़े जाएँगे,” रुद्र ने कहा। “लेकिन हम कोशिश करेंगे। बृजेश के लिए। उन सभी के लिए जो लापता हो गए।”

शाम ढल रही थी। गोदाम के अंदर अंधेरा गहराता जा रहा था। लालटेन की लौ ने उनके चेहरों को रहस्यमय बना दिया था।

रिया ने आलोक की ओर देखा, जो अभी भी कांप रहा था। "क्या तुम ठीक हो?"

आलोक ने मुस्कुराने की कोशिश की। “नहीं। लेकिन शायद मुझे ठीक होने की ज़रूरत नहीं है। शायद डरना सही है। क्योंकि जो डरता नहीं वह मूर्ख है।”

आलोक के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि थी—अपने डर को स्वीकार करना, उसे गले लगाना।

कबीर ने अपने बैग से कुछ निकाला—पांच छोटे वॉकी-टॉकी सेट। “ये मुझे मिले हैं। इनकी रेंज सीमित है, लेकिन ये भूमिगत काम करेंगे। हम संपर्क में रहेंगे।”

मयंक ने हर एक को एक छोटी पेन ड्राइव दी। “इसमें कैंपस का नक्शा और एक संकटकालीन संकेत प्रोग्राम है। अगर कुछ गड़बड़ हो जाए, तो इसे किसी भी कंप्यूटर में लगा दें। यह एक एन्क्रिप्टेड संदेश भेजेगा।”

रुद्र ने सबकी ओर देखा। उसकी आँखों में अभी भी वही खालीपन था, लेकिन उसके भीतर एक नई चिंगारी सुलग रही थी—दृढ़ संकल्प की चिंगारी।

उन्होंने कहा, “हम एक टीम हैं। हम एक-दूसरे पर निर्भर हैं। कोई हीरो नहीं बनेगा, कोई शहीद नहीं बनेगा। हम सब एक साथ जाएंगे, या एक साथ फंस जाएंगे।”

उन्होंने अपने हाथ केंद्र में रखे—रुद्र, मयंक, कबीर, आलोक, रिया। पाँच हाथ, पाँच टूटे हुए दिल, पाँच अधूरी कहानियाँ, अब एक हो रही हैं।

“For Brijesh,” Kabir said.

“अंगूर चाचा के लिए,” रिया ने कहा।

“डॉ. अलीशा मेनन के लिए,” आलोक ने कहा।

“सत्य के लिए,” मयंक ने कहा।

रुद्र ने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। मायरा का चेहरा उसके मन में कौंध गया—उसकी मुस्कान, उसके आँसू, वह थप्पड़। उसने उस छवि को अपने मन से दूर धकेल दिया।

“हमारे लिए,” उसने आंखें खोलते हुए कहा। “क्योंकि अगर हम नहीं लड़ेंगे, तो कोई और नहीं लड़ेगा।”

रात उन पर छा रही थी। गोदाम के बाहर, आकाश में चंद्रमा का दूसरा चरण चमक रहा था—एक पतला, नुकीला अर्धचंद्र, किसी रहस्यमयी मुस्कान की तरह। यह रात उनकी

परीक्षा की रात थी। या शायद, उनकी मुक्ति की रात।
और दूर विश्वविद्यालय परिसर में, डीन काव्या शर्मा खिड़की से बाहर देख रही थीं। उनके हाथ में मायरा की एक तस्वीर थी, जो अब आंसुओं से भीगी हुई थी। उन्होंने अपनी बेटी को धोखा दिया था। उन्होंने इन बच्चों को धोखा दिया था। लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था। कुलाधिपति की निगाहें हर जगह थीं।
उसने एक पुरानी फाइल निकाली—'प्रोजेक्ट एनोमली एक्स: फेज 2'। उस पर पाँच नाम लिखे थे: रुद्र, मयंक, कबीर, आलोक, रिया। और एक नोट: "संभावित मेजबान। परीक्षण विषय। समाप्ति आदेश: सक्रिय।"
डीन ने अपनी आँखें बंद कर लीं। "मुझे क्षमा कर दो, बच्चों," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "मैंने तुम्हें बचाने की कोशिश की। लेकिन अब... अब तुम्हें खुद ही लड़ना होगा।"
उसके चेहरे पर बहते आखिरी आंसू पर चांदनी की एक हल्की सी चमक पड़ी, फिर वह फीकी पड़ गई।

अध्याय 19: कालातीत भूलभुलैया

रात के 2:17 बज रहे थे। डॉ. अलीशा मेनन के नक्शे पर एक रहस्यमय आदेश की तरह अंकित वह क्षण अब सच हो रहा था। प्रशासनिक भवन के पीछे, उसी टूटे हुए तहखाने के दरवाजे के सामने, वे पाँचों खड़े थे— उनकी साँसें हवा में धुंध की तरह उठ रही थीं, और वे घबराहट भरी ऊर्जा से भरे हुए थे।
रुद्र ने अपनी घड़ी देखी। "ठीक 2:17 बजे हैं। अभी।"
मयंक ने अपने लैपटॉप से एक केबल निकाली और उसे दीवार पर लगे एक पुराने, जंग लगे धातु के पैनल से जोड़ दिया। "यहाँ एक यांत्रिक ताला है। हाइड्रोलिक। शायद भूकंप या बाढ़ से बचाव के लिए बनाया गया होगा।"
"क्या तुम इसे खोल सकते हो?" कबीर ने पूछा, उसकी निगाहें किसी भी अप्रत्याशित खतरे को भांपने के लिए चारों ओर दौड़ रही थीं।
"मैं कोशिश करूंगा," मयंक ने कीबोर्ड पर उंगलियां तेजी से चलाते हुए कहा। "लेकिन इसके लिए बिजली चाहिए। शॉर्ट सर्किट करना होगा..."
उसने दो तारों को जोड़ा। एक चिंगारी निकली और दीवार के भीतर से एक गहरी,

घिसने जैसी आवाज़ गूंजी—जैसे कोई विशालकाय जानवर सदियों की नींद से जाग रहा हो। पत्थर जैसी दिखने वाली दीवार का एक हिस्सा अंदर की ओर खिसकने लगा, जिससे एक संकरा, अंधेरा छेद दिखाई दिया।

धूल के साथ एक अजीब सी गंध आई—पुराने कागज, रसायनों और किसी मीठी-सी सड़ी हुई चीज की गंध। यह गंध उनकी नाक में एक पुरानी याद की तरह चुभ गई।

रुद्र ने आगे बढ़ते हुए कहा, "लाइट चालू करो।"

वे एक-एक करके अंदर दाखिल हुए। सीढ़ियाँ लोहे की थीं, जंग लगी हुई थीं और हर कदम पर चरमराहट की आवाज़ करती थीं। नीचे उतरते ही उन्हें एक लंबा, नम गलियारा दिखाई दिया, जिसकी छत से पानी टपक रहा था। दीवारों के किनारे पुरानी पाइपें लगी थीं, जिनमें से कुछ से रिसाव हो रहा था।

"यह 1960 के दशक की इमारत जैसी दिखती है," रिया ने दीवार को छूते हुए कहा। "शीत युद्ध के दौर का बंकर। लेकिन यह..."

वह रुक गई। गलियारे के अंत में एक दरवाजा था, लेकिन यह कोई साधारण धातु का दरवाजा नहीं था। इस पर एक बड़ा निशान बना हुआ था—डीएनए हेलिक्स से घिरा हुआ एक 'X'□ और उसके नीचे लिखा था: "प्रोजेक्ट एनोमली X. प्रवेश वर्जित।"

"हम यहाँ हैं," आलोक ने कांपती हुई आवाज़ में फुसफुसाया।

दरवाजा बंद था, पर ताला नहीं लगा था। कबीर ने धक्का दिया। दरवाजा चरमराते हुए खुल गया।

और अंदर का नजारा देखकर सबकी सांसें थम गईं।

यह कोई अंधेरा, डरावना बंकर नहीं था। यह एक प्रयोगशाला थी—पूरी तरह से संरक्षित, मानो यहाँ समय रुक गया हो।

मेज़ों पर माइक्रोस्कोप पड़े थे, स्लाइड अभी भी उनके नीचे रखी हुई थीं। डेस्क पर एक कॉफी मग था, आधा खाली, अब सूखकर काला हो चुका था। कुर्सियाँ पीछे की ओर धकेली हुई थीं, मानो कोई अचानक उठकर भाग गया हो। व्हाइटबोर्ड पर समीकरण और आरेख बने हुए थे, कुछ शब्द धुंधले पड़ गए थे।

"यह... यह 2009 की प्रयोगशाला है," रिया ने आश्चर्य से कहा। "ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो।"

मयंक ने एक कंप्यूटर की ओर इशारा किया जिसकी स्क्रीन अभी भी चालू थी—केवल एक लाल 'X' चमक रहा था। "बिजली की आपूर्ति निर्बाध है। शायद जनरेटर से

जुड़ा हुआ है।"
रुद्र ने मेज पर रखे कागज़ उठाए। "ये डेटा शीट हैं... विषय संख्या 1 से 12 तक। हृदय गति, मस्तिष्क तरंगें, डीएनए नमूने..." उसने एक पन्ना पलटा। "लेकिन यहाँ लिखा है... 'विषय 5: उत्परिवर्तन शुरू हो गया है। त्वचा पर बैंगनी निशान। दीवारों पर चढ़ने की प्रवृत्ति।'"
कबीर ने कहा, "दीवारों पर चढ़ना? जैसा हमने प्रयोगशाला में देखा था।"
आलोक दूसरी दिशा में देख रहा था। प्रयोगशाला के एक कोने में, दीवार पर, रंगीन चाक से बनी आकृतियाँ थीं—सूरज, फूल, एक छोटा सा घर। बच्चों की बनाई हुई आकृतियाँ।
"क्या यहाँ बच्चे थे...?" आलोक ने कांपती हुई आवाज़ में पूछा।
रिया ने दीवार के पास एक छोटी सी मेज देखी जिस पर खिलौने रखे थे—एक टेडी बियर, कुछ ईंटें। "यह सिर्फ एक प्रयोगशाला नहीं थी। यह शोधकर्ताओं के बच्चों के लिए एक डेकेयर सेंटर भी था।"
आलोक अनायास ही दीवार की ओर बढ़ा और पीली किरणों वाले सूर्य के चित्र को छू लिया।
और फिर, ऐसा हो गया।
एक झटका, बिजली के झटके जैसा, लेकिन बिना दर्द के। छवियों, ध्वनियों और भावनाओं का सैलाब।
'हंसी। खिलखिलाहट। नन्हे कदमों की आहट। "बहन, मेरी ड्राइंग देखो!" लगभग आठ साल की एक लड़की की आवाज। "मैंने एक ऐसा सूरज बनाया है जो हमेशा चमकता रहेगा!'"
एक सौम्य महिला की आवाज: "बहुत सुंदर, प्रीति। चलो, अब नाश्ता करते हैं।"
'फिर... एक तेज़ सीटी। एक लाल बत्ती। डर। "बच्चों, शांत रहो! शांत रहो वापस आओ!" चीखना। रोना।'
और फिर... एक अलग तरह की खामोशी। एक गहरी, भयावह खामोशी। मानो हवा में ही कुछ मर गया हो।
आलोक ने अपना हाथ ऐसे झटक लिया जैसे जल गया हो। वह हांफने लगा, उसकी आंखें चौड़ी हो गईं।
"आलोक? क्या हुआ?" रुद्र पास आते हुए पूछा।

"बच्चे..." आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आँखों में आँसू भर आए थे। "यहाँ बच्चे थे... वे खुश थे... और फिर... फिर कुछ हुआ। उन्होंने कुछ देखा। कुछ ऐसा जिसने उन्हें बदल दिया।"
रिया ने उसका हाथ पकड़ लिया। "तुम्हें कैसे पता?"
आलोक ने सिर हिलाते हुए कहा, "मैंने देखा... महसूस किया। मानो मैं वहीं मौजूद था। उनकी यादें... दीवार में समाई हुई हैं।"
कबीर ने मुट्ठी भींच ली। "उन्होंने बच्चों पर प्रयोग किए? ये लोग तो राक्षस हैं।"
मयंक ने 'डॉ. मीरा शर्मा' लिखा हुआ लॉकर खोला। उसने एक डायरी निकाली। उसने पन्ने पलटे और जोर से पढ़ना शुरू किया:
"प्रविष्टि: 15 जून 2009। आज हमें अंततः विसंगति X की प्रकृति समझ में आ गई। यह बाहरी नहीं है—यह इसी पृथ्वी की है। यह उस उल्कापिंड के साथ आई थी जो हजारों साल पहले इन पहाड़ों में गिरा था। यह संक्रमण नहीं फैलाती... यह विकास को गति देती है। टेराफॉर्मिंग करती है। जीवन को अपने आसपास के वातावरण के अनुकूल ढालती है। लेकिन यह भय को ईंधन के रूप में उपयोग करती है। हमारा भय... इसे और अधिक शक्तिशाली बनाता है।"
"टेराफॉर्मिंग?" रुद्र ने कहा। "मतलब, इंसानों को किसी और चीज़ में बदलना?"
मयंक ने आगे पढ़ा: "आज सब्जेक्ट 7 पूरी तरह बदल गया है। उसकी त्वचा पर काइटिन की परत बन गई है। वह आसानी से दीवारों पर चढ़ सकता है। लेकिन वह अब भी रोता है... अपनी माँ को पुकारता है। यही सबसे दर्दनाक बात है—वह अब भी मानवीय भावनाओं को महसूस करता है, लेकिन उसका शरीर अब मानवीय नहीं रहा। हमने एक राक्षस बना दिया है। और सबसे बुरी बात... मुझे लगता है कि यह संक्रामक है। भावनात्मक रूप से। डर एक वायरस की तरह फैल रहा है।"
प्रयोगशाला में सन्नाटा छा गया। केवल पानी की टपकने की आवाज सुनाई दे रही थी।
"तो 2009 में यही हुआ था," रिया ने भारी आवाज़ में कहा। "उन्होंने कुछ ऐसा छोड़ा जो बेकाबू हो गया। और बच्चे... शायद वे पहले शिकार बने क्योंकि उनका डर सबसे शुद्ध, सबसे तीव्र था।"
आलोक उस चित्र को फिर से देख रहा था। "प्रीति... उस लड़की का नाम प्रीति था। वह... अब कहाँ है?"
तभी मयंक की नज़र डेस्क की दराज में फंसी एक और फाइल पर पड़ी। उसने उसे

बाहर निकाला। वह एक तस्वीर थी—लैब स्टाफ की एक ग्रुप फोटो। सभी मुस्कुरा रहे थे। बीच में एक महिला थीं—डॉ. मीरा शर्मा, जो डीन से मिलती-जुलती थीं, लेकिन उनकी आँखों में एक अलग ही उत्साह झलक रहा था। उनके बगल में एक युवती खड़ी थीं—लगभग अठारह वर्ष की। और उस युवती की गोद में एक छोटी बच्ची थी—प्रीति।

पीछे लिखा था: "मीरा, मायरा (मेरी भतीजी), और प्रीति... (हमारी सबसे छोटी प्रतिभागी)। परियोजना शुरू होने से एक दिन पहले। आशा है कि इससे दुनिया में बदलाव आएगा।"

"मायरा..." रुद्र ने फुसफुसाते हुए कहा। तस्वीर उसके हाथ से फिसलकर ज़मीन पर गिर गई।

तो मायरा सिर्फ डीन की बेटी ही नहीं थी। वह डॉ. मीरा शर्मा की भतीजी भी थी, जो उस दिन प्रयोगशाला में मौजूद थी। और वह उस समय इसी प्रयोगशाला में थी, जब यह सब हुआ। उसने बच्चों में बदलाव देखा। शायद उसने खुद भी कुछ अनुभव किया हो।

कबीर ने गुस्से भरी आवाज में कहा, "उसे सब पता था। उसे यह सब पहले से ही पता था। और उसने हमें नहीं बताया।"

"शायद वह डरी हुई थी," रिया ने कहा। "शायद वह भी पीड़ित है।"

रुद्र ने तस्वीर उठाई और मायरा के युवा चेहरे को देखा—उसकी आँखों में वही चमक थी जो कभी-कभी दिखाई देती थी। लेकिन अब वह चमक एक दर्दनाक रहस्य जैसी लग रही थी।

मयंक ने कंप्यूटर की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसमें और भी फाइलें हो सकती हैं। चलो इसे हैक करके देखता हूँ।"

वह कंप्यूटर पर बैठा और अपने उपकरण चलाने लगा। स्क्रीन पर फाइलों की एक सूची दिखाई दी। एक फाइल का नाम था: ""ऑपरेशन फीनिक्स - विसंगति X के माध्यम से मानव विकास।""

उसने इसे खोला।

और जो उन्होंने देखा उससे उनके खून जम गए।

तस्वीरें थीं—साठ वर्षीय चांसलर देवराज ठाकुर, गंभीर चेहरे वाले व्यक्ति, कॉर्पोरेट प्रतिनिधियों से हाथ मिलाते हुए। वीडियो लॉग: चांसलर की आवाज, ठंडी और सधी

हुई— "प्रजा तेजी से ठीक हो रहे हैं, ताकत बढ़ रही है, मानसिक संवेदनशीलता बढ़ रही है... लेकिन अस्थिरता है। हमें शुद्ध मेजबानों की आवश्यकता है। भावनात्मक रूप से मजबूत, फिर भी आघातग्रस्त। उनका डर ही उनकी शक्ति का स्रोत बनेगा।"
और फिर, एक सूची। उनकी सूची।
संभावित मेजबान:
1. रुद्र सिंह चौहान: उच्च दर्द सहनशीलता, नेतृत्व क्षमता। मानसिक रूप से मजबूत। 2. मयंक सिंह: विश्लेषणात्मक सटीकता। नियंत्रण खोने का भय। 3. कबीर रावत: आक्रामकता पर नियंत्रण। अपराधबोध (भाई की मृत्यु)। 4. आलोक पांडे: सहानुभूतिपूर्ण संवेदनशीलता। सामाजिक चिंता, उपेक्षा का आघात। 5. रिया मेनन: ऐतिहासिक स्मृति। परिवार के किसी सदस्य को खोने का दर्द। 6. मायरा शर्मा: (जानकारी छिपाई गई)
“संपादित?” कबीर ने कहा। “क्यों?”
"शायद इसलिए कि वह उनकी है," रुद्र ने सुन्न आवाज़ में कहा। "या शायद इसलिए कि उस पर पहले ही प्रयोग किए जा चुके हैं।"
आलोक ने अचानक ऊपर देखा। "कोई हमें देख रहा है।"
"क्या?" रुद्र ने कहा।
"मुझे महसूस हुआ... एक निगाह। ऊपर से।" आलोक ने छत की ओर इशारा किया। छत में वेंटिलेशन ग्रिल लगी हुई थीं। उनमें से एक में... कुछ हिला। एक परछाई।
"वहाँ कोई है!" रिया चिल्लाई।
छत की जाली अचानक खुली और एक आकृति नीचे कूदी—वही आकृति जिससे वे प्रयोगशाला में मिले थे। रोहित सिंह। लेकिन अब वह पहले से कहीं ज़्यादा बदला हुआ था। उसके शरीर पर क्रिस्टल जैसी उभरी हुई संरचनाएं थीं और उसकी आँखों में एक अजीब सी शांत चमक थी।
"तुम वापस आ गए," रोहित ने कहा, उसकी आवाज़ अब पहले से कम कर्कश और ज़्यादा साफ़ थी। "मुझे लगा था कि तुम आओगे। उसने भी यही कहा था।"
"कौन?" रुद्र ने अपना गदा तैयार करते हुए पूछा।
"मीरा," रोहित ने कहा। उसने डॉ. मीरा शर्मा की तस्वीर देखी और उसकी आँखों में एक असहनीय पीड़ा झलक रही थी। "वह अभी भी यहीं है। उसने मुझे भेजा है। तुम्हें चेतावनी देने के लिए।"

"किस तरह की चेतावनी?" मयंक ने पूछा।
रोहित ने उन सभी को देखा और उसकी निगाह आलोक पर टिक गई। "तुममें से एक... तुममें से एक आज रात बदल जाएगा। एनोमली एक्स को तुम्हारे डर की भनक लग गई है। और तुम्हारा डर... यहाँ हवा में है। तुम इसे साँस के साथ ले रहे हो।"
उसने छत की ओर इशारा किया, जहाँ से एक हल्की, चमकती हुई धुंध नीचे उतर रही थी— एक ऐसी धुंध जो पहले दिखाई नहीं दे रही थी।
"गैस..." रुद्र ने कहा। "फिर से लीक हो गई!"
"नहीं," रोहित ने कहा। "इसे जानबूझकर जारी किया गया है। तुम्हारे लिए। तुम्हारी परीक्षा के लिए।"
और फिर, दूर से एक तीखी सीटी की आवाज़ आई—वही आवाज़ जो आलोक ने अपने सपने में सुनी थी। एक आपातकालीन अलार्म।
दरवाजे बंद होने की आवाज। मोटे, धातु के शटर नीचे गिर रहे थे।
कबीर चिल्लाया, "निकल जाओ!"
वे दरवाजे की ओर दौड़े। रुद्र ने आलोक को आगे धकेल दिया। लेकिन शटर तेजी से नीचे गिर रहा था। कबीर ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत भारी था। मयंक और रिया बाहर निकल गए। रुद्र ने आलोक को धक्का देकर बाहर निकाल दिया।
लेकिन इससे पहले कि वह खुद बाहर निकल पाता, शटर नीचे गिर गया। रुद्र अंदर फंस गया।
"रुद्र!" आलोक ने दूसरी तरफ से चिल्लाकर कहा।
रुद्र ने पीछे मुड़कर देखा। रोहित वहाँ खड़ा था, और धुंध ने पूरी प्रयोगशाला को घेर लिया था। यह हवा में तैर रही थी—चमकती हुई, सूक्ष्म कणों से भरी हुई।
"इसे बंद करो!" रुद्र ने रोहित से कहा।
"मैं इसे रोक नहीं सकता," रोहित ने कहा। "यह उनकी इच्छा है। चांसलर की। वह देखना चाहते हैं कि आप में से सबसे मजबूत कौन है। कौन... विकसित होता है।"
रुद्र ने अपने मुँह को अपनी कमीज़ से ढक लिया, लेकिन धुंध से उसकी त्वचा जल रही थी। उसने दरवाजे पर लात मारी, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ।
और फिर, उसे एक आवाज सुनाई दी—एक बच्चे के रोने की आवाज। प्रीति की।
वह मुड़ा। धुंध में एक छोटी सी आकृति खड़ी थी—उसके शरीर पर बैंगनी निशान थे,

लेकिन उसकी आँखें अभी भी इंसानी थीं। वह हाथ बढ़ा रही थी।
"मुझे बचाओ," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
फिर छत से पत्थर गिरने लगे। एक बड़ा सा पत्थर रुद्र की ओर तेजी से गिरा।
आखिरी क्षण में, उसने आलोक को, जो अभी भी दरवाजे के पास था, धक्का देकर उसे बचा लिया। चट्टान रुद्र पर गिर पड़ी। अंधेरा छा गया। अध्याय 20: नकाब उतरा
अंधेरा। दर्द। सांस लेने में कठिनाई।
रुद्र की आँखें खुलीं। उसके सिर में तेज़ दर्द हो रहा था और मुँह में धातु जैसा स्वाद था। वह धुंध में था—वही चमकते हुए सूक्ष्म कण हवा में तैर रहे थे। उसने खुद को देखा: वह ज़मीन पर लेटा हुआ था, और बड़ा पत्थर... सीधे उस पर नहीं गिरा था, बल्कि उसके बगल में गिरा था। शायद आखिरी क्षण में उसने खुद को एक तरफ खींच लिया था।
“आलोक?” उसने कर्कश और दर्द भरी आवाज में पुकारा।
कोई जवाब नहीं।
वह चक्कर आने से उठ बैठा। धुंध छंट रही थी, शायद वेंटिलेशन सिस्टम काम कर रहा था। उसने चारों ओर देखा। रोहित गायब था। प्रयोगशाला अभी भी वैसी ही थी, बस धुंध की एक परत से ढकी हुई थी।
तभी उसे दरवाजे से एक आवाज सुनाई दी। कोई धक्का दे रहा था। एक आवाज आई: “रुद्र! क्या तुम अंदर हो?”
यह कबीर की आवाज थी।
“हां... मैं ठीक हूं,” रुद्र ने खड़े होते हुए जवाब दिया।
धातु के शटर के नीचे से एक जैक हैंडल निकला। किसी ने इसे बाहर से रख दिया था। शटर थोड़ा सा उठा और कबीर का चेहरा दिखाई दिया। "जल्दी बाहर आओ!"
रुद्र रेंगते हुए बाहर निकला। बाहर मयंक, रिया और आलोक खड़े थे। आलोक सहमा हुआ था लेकिन सुरक्षित था।
“तुमने मुझे बचा लिया,” रुद्र ने आलोक से कहा।
“तुमने मुझे पहले बचाया था,” आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा।
मयंक ने अपना लैपटॉप खोला। “मैंने शटर मैकेनिज्म को हैक कर लिया है। लेकिन हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। यह पूरा इलाका सेंसरों से घिरा हुआ है। उन्हें पता चल ही गया होगा कि हम यहां हैं।”

“तो फिर हमें जल्दी करनी होगी,” रिया ने कहा। “उस कंप्यूटर में और भी फाइलें हो सकती हैं।”
वे इस बार सावधानी से प्रयोगशाला में वापस गए। अब धुंध छंट रही थी। मयंक सीधे टर्मिनल की ओर बढ़ा, जिसकी स्क्रीन पर अभी भी लाल रंग का 'X' चमक रहा था।
“यह एक स्वतंत्र प्रणाली है,” उन्होंने अपने उपकरण चलाते हुए कहा। “नेटवर्क से अलग। शायद इसीलिए इसे छुआ नहीं गया था।”
स्क्रीन पर पासवर्ड डालने का अनुरोध दिखाई दिया। मयंक ने ब्रूट-फोर्स प्रोग्राम चलाया। कुछ ही सेकंड में पासवर्ड क्रैक हो गया। फाइलों की एक सूची सामने आ गई।
मयंक ने पढ़ा, “ऑपरेशन फीनिक्स। विसंगति X के माध्यम से मानव विकास।”
उसने फाइल खोली।
पहली तस्वीर देखकर वे सब दंग रह गए।
एक बैठक कक्ष। मेज के शीर्ष पर एक व्यक्ति बैठा था—लगभग साठ वर्ष का, सफेद बालों वाला, चेहरे पर एक अभिमानी, ठंडी मुस्कान लिए हुए। उसने सेना की वर्दी पहनी हुई थी, लेकिन उस पर कोई पदचिह्न नहीं था। कुलाधिपति देवराज ठाकुर।
“यही है वो,” कबीर ने गुस्से से भरी आँखों से कहा। “जिसने बृजेश को मारा।”
अगली तस्वीर में, चांसलर कॉर्पोरेट पोशाक पहने लोगों से हाथ मिला रहे थे। उनमें से एक चेहरा जाना-पहचाना था—नेक्सस बायोटेक के सीईओ का।
“वलहल्ला इंडस्ट्रीज,” रिया ने फुसफुसाते हुए कहा। “यह वाकई एक वैश्विक साजिश है।”
मयंक ने एक वीडियो फाइल चलाई। चांसलर की आवाज गूंजी, ठंडी और सधी हुई, जैसे कोई मशीन हो:
"दिनांक: 15 अगस्त 2023। प्रतिभागियों में तेजी से ठीक होने, ताकत में वृद्धि और मानसिक संवेदनशीलता में सुधार देखा गया। लेकिन अस्थिरता अभी भी एक समस्या बनी हुई है। भावनात्मक उत्तेजनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है। हमें शुद्ध मेजबानों की आवश्यकता है। भावनात्मक रूप से मजबूत, फिर भी आघातग्रस्त। उनका भय ही उनकी शक्ति का स्रोत बनेगा। यही सही समीकरण है।"
आलोक ने कांपती आवाज में कहा, "वह हमारे बारे में बात कर रहा है।"
मयंक ने अगली फाइल खोली। एक एक्सेल शीट। और उस पर उनके नाम लिखे हुए

थे।
"संभावित मेजबान - चयनित:"
1. रुद्र सिंह चौहान: उच्च दर्द सहनशीलता, नेतृत्व क्षमता। मानसिक रूप से मजबूत। संभावित क्षमता: शारीरिक शक्ति/सहनशक्ति। 2. मयंक सिंह: विश्लेषणात्मक सटीकता। नियंत्रण खोने का भय (बचपन में हुई दुर्घटना जिसमें छोटी बहन घायल हो गई थी)। संभावित क्षमता: उन्नत बौद्धिक क्षमता/गणना कौशल।
3. कबीर रावत: आक्रामकता पर नियंत्रण। अपराधबोध (छोटे भाई की डूबने से मृत्यु, उसे बचा नहीं सका)। संभावित क्षमता: अत्यधिक दर्द सहन करने की क्षमता/एड्रेनालाईन पर नियंत्रण।
4. आलोक पांडे: सहानुभूतिपूर्ण संवेदनशीलता। सामाजिक चिंता, उपेक्षा का आघात (माता-पिता का तलाक, दोनों की ओर से उपेक्षा)। संभावित क्षमता: भावनात्मक बोध/दृष्टिकोण।
5. रिया मेनन: ऐतिहासिक स्मृति। परिवार के लापता सदस्य का दर्द (चाचा का लापता होना)। संभावित क्षमता: स्मृति प्रतिधारण/संबंध स्थापित करना। 6. मायरा शर्मा: (नाम छिपाया गया)
“संपादित क्यों?” कबीर ने मुट्ठी भींचते हुए पूछा। “क्या उस पर पहले ही प्रयोग हो चुके हैं?”
“शायद,” रुद्र ने सुन्न आवाज में कहा। “या हो सकता है कि वह उनके लिए काम कर रही हो।”
“नहीं,” रिया ने एक और फाइल खोलते हुए कहा। “देखो, यहाँ एक नोट है। ‘विषय S-1: मायरा शर्मा। वर्ष 2009 में उपस्थित। न्यूनतम जोखिम। कोई उत्परिवर्तन नहीं, लेकिन संवेदनशीलता बढ़ी हुई है। उपयोग: अवलोकन। माता (डॉ. काव्या शर्मा) की सहायता के लिए।’”
कबीर ने कहा, "तो उसका इस्तेमाल हम पर नजर रखने के लिए किया जा रहा था। वह भी एक पीड़ित है।"
रुद्र ने कुछ नहीं कहा। मायरा का चेहरा उसके दिमाग में घूम रहा था—उसकी मुस्कान, उसके आंसू। क्या यह सब सचमुच एक नाटक था? या वह भी इस जाल में फंसी हुई थी?
मयंक ने स्क्रॉल करते हुए कहा, "यहां और भी बहुत कुछ है। क्रायो-पॉड्स। इनमें

2009 के पीड़ितों को अध्ययन के लिए संरक्षित किया गया है।"
“कहाँ?” रुद्र ने तीखे स्वर में पूछा।
मयंक ने नक्शा खोला। प्रयोगशाला के पीछे एक दरवाजा था जो एक लंबे गलियारे की ओर जाता था। "इधर आइए।"
वे सावधानी से आगे बढ़े। गलियारा ठंडा था और हवा में एक अजीब सी रासायनिक गंध फैली हुई थी। अंत में एक भारी दरवाजा था जिस पर 'क्रायोजेनिक प्रिजर्वेशन' लिखा हुआ था।
दरवाजा खुला हुआ था।
कबीर ने इसे खोला।
अंदर का दृश्य किसी नरक से कम नहीं था।
कमरा बड़ा था, और उसमें एक के बाद एक कांच के बक्से—क्रायो-पॉड—रख दिए गए थे। हर एक के अंदर एक आकृति थी। कुछ आधी इंसान, आधी सरीसृप। कुछ की त्वचा छाल जैसी थी। कुछ के हाथ पंजों में बदल गए थे। वे सब स्थिर, जमे हुए थे, लेकिन उनकी आँखें... कुछ की आँखें खुली थीं, और उनमें एक भयानक, जमी हुई पीड़ा थी।
“हे भगवान...” रिया ने अपना मुंह ढँक लिया।
आलोक एक पॉड के पास गया। उसके अंदर एक युवक था, जिसकी उम्र बीस वर्ष से अधिक नहीं थी। उसके हाथों में अतिरिक्त उंगलियां थीं और उसकी पीठ पर कांटे उग आए थे। आलोक ने अनजाने में कांच को छू लिया।
और फिर, उसे इसका एहसास हुआ।
'ठंड। बहुत गहरी ठंड। अंधेरा। कोई दर्द नहीं... सुन्नपन। सोच सकता हूँ... लेकिन हिल नहीं सकता। साल... कितने साल? माँ... माँ याद आ रही है। गर्म चाय। सर्दियों की धूप। कब... कब मैं बाहर निकलूँगा? क्या... क्या मैं मर गया हूँ?'
आलोक चीखा और पीछे की ओर लड़खड़ा गया। “वह... वह... वह ज़िंदा है! वह सोच रहा है! वह अपनी माँ को याद कर रहा है! मुझे नहीं पता कैसे, लेकिन मैं उसके विचार सुन सकता था!” उनमें से किसी को भी समझ नहीं आया कि आलोक ने लड़के के विचार कैसे सुने — लेकिन अंदर ही अंदर, वे सभी जानते थे कि एनोमली एक्स का उन पर असर पड़ना शुरू हो चुका था।
“नाम,” रिया ने फुसफुसाते हुए कहा। पॉड के नीचे एक प्लेट थी। "विषय 3: राहुल

मेहता। आयु 19 वर्ष। दिनांक: 15 सितंबर 2009। स्थिति: स्थिर। उत्परिवर्तन: अस्थि वृद्धि, त्वचा का काइटिनीकरण।"
कबीर ने खतरनाक शांति भरे स्वर में कहा, "उन्होंने उन्हें जिंदा ही जमा दिया। सालों तक। प्रयोगों के लिए।"
रुद्र ने कमरे में चारों ओर देखा। वहाँ पचास से अधिक पॉड थे। पचास से अधिक जिंदगियाँ, इस नरक में फंसी हुई थीं।
फिर मयंक ने एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा, "वहाँ देखो।"
दो कमरे बाकियों से अलग थे—नए, ज़्यादा आधुनिक। एक कमरा खाली था। दूसरे में...
सबकी सांसें थम गईं।
Brijesh.
वह वहीं था। उसकी आँखें बंद थीं, चेहरा शांत था, मानो गहरी नींद में हो। लेकिन उसकी त्वचा पर वही बैंगनी निशान थे, और उसकी उंगलियाँ थोड़ी लंबी और थोड़ी मुड़ी हुई लग रही थीं।
“नहीं...” कबीर ने फुसफुसाते हुए कहा। वह पॉड के पास गया और अपना हाथ कांच पर रखा। “भाई... मैंने तुम्हें ढूंढ लिया।”
रुद्र ने फली के नीचे लगी प्लेट पर नज़र डाली। "विषय बी-1: बृजेश वर्मा। आयु: 20 वर्ष। दिनांक: 28 अक्टूबर 2023। स्थिति: सक्रिय संरक्षण। टिप्पणी: उत्परिवर्तन रुका हुआ। शुद्ध वाहक। विसंगति एक्स की उच्च सांद्रता।"
“वह ज़िंदा है,” मयंक ने धीरे से कहा। “कॉलेज ने कहा कि उसका शव मिला है और इसे आत्महत्या करार दिया... लेकिन यह झूठ था। उन्होंने उसे कभी नहीं मारा – उन्होंने उसे प्रयोगों के लिए यहाँ रखा था।”
“हमें उसे बाहर निकालना होगा,” कबीर ने कहा, उसकी आँखों में आंसू भर आए थे।
“रुको,” रुद्र ने कहा। “अगर हम उसे अभी बाहर निकाल लें तो क्या होगा? क्या वह... सामान्य हो जाएगा?”
“खाली पॉड,” रिया ने दूसरे पॉड की ओर इशारा करते हुए कहा। “यह किसका था?”
मयंक ने प्लेट पर नज़र डाली। "विषय R-1: रोहित सिंह। आयु 45 वर्ष। दिनांक: 15 सितंबर 2009। स्थिति: फरार। टिप्पणी: आंशिक उत्परिवर्तन। बुद्धि स्थिर। फरार होने की तिथि: 30 अक्टूबर 2023। तो वह 2009 में नहीं मरा था। रिकॉर्ड झूठ बोल रहे

थे। अभिलेखों में दर्ज वह प्रविष्टि ही सत्य थी: वह 30 अक्टूबर 2023 को संस्थान से फरार हो गया था। कॉलेज के सार्वजनिक अभिलेखों में अभी भी उसे मृत बताया गया था - सच्चाई को छिपाने के लिए जानबूझकर की गई हेराफेरी। इसलिए वह 2009 में नहीं मरा था। वह बच गया था... दुनिया से छिपा हुआ।"

रुद्र ने कहा, “रोहित यहां से भाग निकला। और वह हमारी मदद कर रहा है।”

तभी अचानक बत्तियाँ तेज़ी से टिमटिमाने लगीं और एक तेज़ सीटी बजी—इस बार पहले से भी तेज़। लाल रंग की अलार्म बत्तियाँ घूमने लगीं।

“उन्हें पता चल गया है!” मयंक चिल्लाया। “हमें यहाँ से निकलना होगा!”

लेकिन दरवाजे बंद होने लगे। यहां तक कि क्रायो रूम का दरवाजा भी। कबीर ने इसे रोकने की कोशिश की, लेकिन यह स्वचालित था।

“इधर!” रिया को एक और दरवाजा दिखाई दिया, जो शायद बाहर की ओर जाता था।

वे भागने लगे। पीछे से फुफकारने की आवाजें आईं। छत से गैस के कनस्तर गिरे और फट गए—जिससे हरा धुआं निकला।

“विसंगति X!” आलोक चिल्लाया। “भागो!”

वे गलियारे में भागे। धुआँ तेज़ी से फैल रहा था और उसे छूने से त्वचा जल रही थी।

रुद्र ने अपनी कमीज़ फाड़ी और उसके टुकड़े सबके मुँह पर बाँध दिए।

आगे ऊपर की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ थीं। “यहाँ!” रुद्र ने कहा।

वे ऊपर चढ़ने लगे। सीढ़ियाँ संकरी और जर्जर थीं। नीचे से धुआँ उनका पीछा कर रहा था।

और फिर, भूकंप जैसे एक झटके ने उन्हें हिला दिया।

दीवारों में दरारें पड़ने लगीं। पत्थर गिरने लगे। "सुरंग ढह रही है!" मयंक चिल्लाया।

वे शिखर पर पहुँच गए। वहाँ एक दरवाजा था जो बाहर की ओर खुलता था। कबीर ने उसे धक्का दिया—लेकिन वह बंद था।

“साथ में!” रुद्र ने कहा।

रुद्र, कबीर और मयंक तीनों दरवाजे से टकरा गए। लकड़ी चरमरा गई लेकिन टूटी नहीं।

नीचे से धुआं ऊपर उठता जा रहा था। आलोक को खांसी आने लगी। रिया ने उसे सहारा दिया।

“एक बार फिर!” रुद्र दहाड़ा।

उन्होंने फिर से दरवाजा पटका। इस बार दरवाजा टूटकर खुल गया। बाहर की ठंडी हवा उनके चेहरों को छू गई।
वे लड़खड़ाते हुए बाहर निकले। वे शहर से दूर जंगल में थे। उनके पीछे, भूमिगत बंकर से धुआँ उठ रहा था।
“भागो!” रुद्र ने कहा।
वे जंगल में भाग गए। पीछे से सुरंग के पूरी तरह ढह जाने की गर्जना सुनाई दी।
फिर रुद्र ने देखा कि आलोक पीछे छूट गया है। उसे खांसी आ रही थी और उसके चेहरे पर हरे धुएं के निशान थे। वह धुएं के संपर्क में ज़्यादा आ गया था।
“आलोक!” रुद्र चिल्लाया और उसकी ओर दौड़ पड़ा।
लेकिन तभी, भूकंप के झटकों से हिलता हुआ एक विशाल पेड़ उनकी ओर गिरने लगा।
रुद्र के पास फैसला करने के लिए एक पल का समय था: भागना है या आलोक को बचाना है।
उन्होंने चुनाव न लड़ने का फैसला किया।
वह आलोक के ऊपर से कूद गया और अपने शरीर से उसे ढक लिया।
पेड़ का तना रुद्र के कंधे से टकराया। एक तीखी आवाज आई। दर्द की एक लहर उसे जकड़ लिया।
उसने आलोक की ओर देखा, जो अब बेहोश हो चुका था। चारों ओर धुआँ ही धुआँ था।
और फिर रुद्र ने भी अपनी आंखें बंद कर लीं।
आखिरी चीज जो उसने सुनी, वह दूर से आती सायरन की आवाज थी। और एक जानी-पहचानी आवाज, जो चिल्ला रही थी: “रुद्र! आलोक!”
मायरा की आवाज।
फिर सब कुछ शांत हो गया।

अध्याय 21: विकास के जाल में फंसा हुआ

आवाजें। दूर से आती हुई आवाजें। मानो कोई पानी के अंदर से चिल्ला रहा हो।
"रुद्र! आलोक! मुझे अपने हाथ दो!"

यह मायरा की आवाज थी। तीखी, घबराहट भरी।
रुद्र ने अपनी आँखें खोलीं। उसका सिर बुरी तरह फट रहा था और उसके बाएँ कंधे में तेज़ दर्द हो रहा था। वह जंगल की ज़मीन पर लेटा हुआ था और ऊपर घने पेड़ों के बीच से रात का आसमान दिखाई दे रहा था। उसने अपने ऊपर झुकी हुई एक आकृति देखी—मायरा। उसके चेहरे पर आँसू थे और उसकी आँखें डर से चौड़ी हो गई थीं।
"चलो उठो! हमें यहाँ से निकलना होगा!" मायरा ने उसका हाथ पकड़कर उसे ऊपर खींच लिया।
रुद्र ने चारों ओर देखा। आलोक पास ही बेहोश पड़ा था, उसके चेहरे और हाथों पर हरे धब्बे थे—एनोमली एक्स गैस के निशान। थोड़ी दूर कबीर, मयंक और रिया खांसते हुए खड़े थे, उनके कपड़े फटे हुए थे।
"वो... वो गैस..." रुद्र ने खांसते हुए कहा।
"मैंने एम्बुलेंस को फोन किया है," मायरा ने कांपती हुई आवाज में कहा। "लेकिन हमें मुख्य सड़क तक पहुंचना होगा। वे आ सकते हैं।"
"कौन?" कबीर ने अपनी आँखें पोंछते हुए पूछा।
"कुलपति के आदमी। मैंने रास्ते में दो जीपें देखीं। वे इस तरफ आ रहे थे।"
रुद्र ने बड़ी मुश्किल से उठने की कोशिश की। उसके कंधे में तेज़ दर्द हो रहा था, लेकिन वह खड़ा हो गया। उसने देखा कि उसकी बांह असामान्य रूप से सूजी हुई थी, लेकिन दर्द उतना नहीं था जितना होना चाहिए था। उसने मायरा को आलोक को उठाने में मदद की। आलोक का शरीर बिल्कुल बेजान और शिथिल था।
कबीर ने कहा, "इसे उठाओ," और आलोक को अपने कंधे पर उठा लिया।
वे जंगल के रास्ते से दौड़ पड़े, मायरा आगे-आगे चल रही थी। उनके पीछे, भूमिगत बंकर से अभी भी धुआँ उठ रहा था, और दूर से जीप के इंजनों की आवाज़ आ रही थी।
"इधर!" मायरा ने एक संकरे रास्ते की ओर इशारा किया।
वे एक ऐसे इलाके में पहुँचे जहाँ पेड़ कम और चट्टानें ज़्यादा थीं। रिया ने पीछे मुड़कर देखा। "वे आ गए!"
दो जीपें रुकीं और उनमें से आठ से दस आदमी उतरे—सभी ने काले कपड़े पहने थे और चेहरों पर मास्क लगाए हुए थे। उनके हाथों में राइफलें नहीं थीं, बल्कि खाई में रखी तोपों जैसे कुछ अजीब उपकरण थे।

मयंक ने कहा, "वे हमें जिंदा पकड़ना चाहते हैं।"
"इधर!" मायरा चिल्लाई।
वे चट्टानों में छिपी एक संकरी गुफा के मुहाने की ओर दौड़े। अंदर अंधेरा छा गया। मायरा ने अपना फोन निकाला और टॉर्च जला दी।
गुफा नम और ठंडी थी, और हवा में एक अजीब सी गंध थी - प्रयोगशाला जैसी ही गंध, लेकिन अधिक तीखी।
"इसका अंजाम क्या होगा?" कबीर ने आलोक को अपने कंधे पर उठाए हुए पूछा।
"मुझे नहीं पता," मायरा ने कहा। "लेकिन यह उनसे बेहतर है।"
वे आगे बढ़े। गुफा की दीवारें चिकनी थीं, मानो किसी ने उन्हें तराशा हो। जगह-जगह उन पर नीले-हरे रंग की काई उगी हुई थी, जो फोन की रोशनी में चमक रही थी।
तभी आलोक ने धीमी सी कराह निकाली।
"वह होश में आ रहा है," रिया ने कहा।
कबीर ने उसे धीरे से ज़मीन पर बिठा दिया। आलोक की आँखें खुलीं, लेकिन उनमें एक अजीब सी धुंधली चमक थी। उसने चारों ओर देखा, मानो कुछ पहचानने की कोशिश कर रहा हो।
"यहाँ... मैं यहाँ आ चुका हूँ," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा।
"क्या?" रुद्र ने कहा।
"सपने में... मैंने यह जगह देखी।" आलोक ने हाथ उठाकर दीवार को छुआ। फिर वह जैसे सदमे से पीछे हट गया। "वे... वे इसे यहाँ लाए हैं।"
"क्या लाए हो?" मायरा ने अजीब से डर भरे स्वर में पूछा।
"एनोमली एक्स," आलोक ने चौड़ी आँखों से कहा। "यह गुफा... यहीं पर उल्कापिंड गिरा था। यही उसका... घर है।"
तभी गुफा के भीतर से एक गहरी, गूंजती हुई आवाज़ आई। मानो कोई विशाल हृदय धड़क रहा हो।
"यह क्या था?" कबीर ने मुट्ठी भींचते हुए कहा।
गुफा एक चौड़े गलियारे में खुलती थी। मायरा ने अपना फोन उठाया। रोशनी में जो दृश्य दिखा, उसे देखकर सबकी सांसें थम गईं।
हॉल बहुत विशाल था, और उसकी छत से नीले-हरे रंग के क्रिस्टल लटक रहे थे, जो अपनी हल्की रोशनी से जगमगा रहे थे। हॉल के ठीक बीच में लगभग दस फीट ऊँचा

एक विशाल काला पत्थर था। उसकी सतह असमान थी, और उससे एक नरम, सुनहरी रोशनी निकल रही थी।
"उल्कापिंड," रिया ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा। "यही है।"
लेकिन उससे भी ज़्यादा भयावह थे पत्थर के चारों ओर रखे बड़े-बड़े कांच के बक्से—क्रायो-पॉड्स। और उनमें वही आकृतियाँ थीं जो उन्होंने बंकर में देखी थीं—2009 के पीड़ित। लेकिन यहाँ, वे और भी विकृत थीं। कुछ के शरीर पर क्रिस्टल उग रहे थे। कुछ की आँखें पूरी तरह से काली थीं।
मयंक ने कहा, "यही असली प्रयोगशाला है। बंकर तो सिर्फ एक चौकी थी। असली काम तो यहीं हो रहा है।"
"और देखो," मायरा ने दर्द भरी पहचान के साथ अपनी आवाज में कहा।
हॉल के एक कोने में एक आदमी कंसोल पर बैठा था। उसकी पीठ उनकी तरफ थी, लेकिन उसके सफेद बाल और फौजी शैली की कुर्सी से उसकी पहचान हो गई थी। Chancellor Devraj Thakur.
वह धीरे से मुड़ा। उसके चेहरे पर एक शांत, खतरनाक मुस्कान थी। "स्वागत है," उसने गहरी और संयमित आवाज़ में कहा। "मुझे पता था कि तुम आखिरकार यहाँ आओगे। तुम्हारी जिज्ञासा... तुम्हारा साहस... ये सब मेरे लिए बहुत मूल्यवान है।"
कबीर गरजते हुए आगे बढ़ा, "तुमने बृजेश को मार डाला।"
लेकिन चांसलर ने हाथ उठाया। एक अदृश्य लहर ने कबीर को पीछे धकेल दिया, मानो कोई अदृश्य दीवार हो।
"क्या उसने उसे मार डाला? नहीं। मैंने... उसे पदोन्नत किया है," चांसलर ने कहा। "वह अब एक उच्चतर अवस्था में है। और आप सभी भी वहाँ पहुँचेंगे।"
उसने कंसोल पर एक बटन दबाया।
ऊपर से, छत में बने वेंट से एक चमकदार हरा धुआं निकलने लगा - वही एनोमली एक्स गैस, लेकिन इस बार अधिक सांद्रित।
"नहीं!" रुद्र चिल्लाया।
वे भागने लगे, लेकिन गैस तेजी से फैल रही थी। आलोक, जो अभी भी कमजोर था, सबसे आखिर में था। गैस ने सबसे पहले उसे अपनी चपेट में लिया। वह चीखा और गिर पड़ा।
"आलोक!" रिया चिल्लाई और उसकी ओर दौड़ी।

लेकिन तभी छत से पत्थर गिरने लगे। गैस के प्रभाव से, या शायद चांसलर के किसी नियंत्रण के कारण, गुफा ढहने लगी।
"बाहर निकलो!" मायरा चिल्लाई और सबको एक संकरे रास्ते की ओर धकेलने लगी। रुद्र ने आलोक को उठाने की कोशिश की, लेकिन गैस ने उसे भी अपनी चपेट में ले लिया था। उसकी साँसें तेज़ हो गईं और आँखों के सामने अजीब-अजीब रंग तैरने लगे। उसे अपनी मांसपेशियों में अजीब सी झनझनाहट महसूस हुई, मानो उनमें बिजली दौड़ रही हो।
"रुद्र, चलो!" कबीर ने उसका हाथ पकड़ा और उसे खींच लिया। कबीर अचानक रुक गया, उसकी निगाहें हॉल के उस छोर पर टिकी थीं जहाँ क्रायो-पॉड्स रखे थे। "रुको! बृजेश! वह अभी भी पॉड में है!"
"क्रायो-सेक्शन की छत गिर रही है!" रुद्र चिल्लाया, जब उसने देखा कि एक विशाल चट्टान ठीक उसी जगह गिर रही है जहाँ पॉड्स थे। "हम उस तक नहीं पहुँच सकते! वह चला गया, कबीर! जल्दी करो!"
कबीर दर्द से कराह उठा, लेकिन गिरते मलबे से रास्ता अवरुद्ध हो गया था। उसके पास कोई चारा नहीं था।
वे ऊपर की ओर जाने वाले संकरे रास्ते में दाखिल हुए। उनके पीछे गैस का बादल उनका पीछा कर रहा था। रिया और मायरा आगे थीं। मयंक ने पीछे मुड़कर देखा—कुलपति अभी भी अपने कंसोल पर खड़े मुस्कुरा रहे थे, मानो यह सब एक प्रयोग हो। रास्ता संकरा होता चला गया। अब उन्हें रेंगना पड़ा। उनके पीछे से पत्थर गिरने की आवाज़ आ रही थी।
और फिर, वह मार्ग दो भागों में बंट गया।
"किस तरफ?" रिया ने हांफते हुए पूछा।
मायरा ने बाईं ओर के रास्ते की ओर इशारा करते हुए कहा, "हवा इस तरफ से आ रही है। यह बाहर की ओर ही जाती होगी।"
लेकिन तभी एक जोरदार धमाका हुआ और दाहिने रास्ते से एक बड़ा पत्थर गिरकर उसे बंद कर दिया। अब केवल बायां रास्ता ही खुला रह गया।
वे उस रास्ते पर चल पड़े। रास्ता ऊपर की ओर जा रहा था और हवा ताज़ी होती जा रही थी। लेकिन गैस अभी भी उनके पीछे थी।
और फिर आलोक दोबारा चीख उठा।

वह अपना सिर पकड़े हुए था, और उसकी आँखें पूरी तरह सफेद पड़ गई थीं। "बहुत सारी... बहुत सारी आवाज़ें... सब दर्द... सब डर..."

"उसे पकड़ो!" रुद्र ने कहा और आलोक की एक बांह अपने कंधे पर रख दी।

वे शिखर पर पहुँच गए। वहाँ एक दरवाज़ा था—लोहे का, जंग लगा हुआ। कबीर ने उसे धक्का दिया, लेकिन वह नहीं खुला।

"साथ में!" रुद्र ने कहा।

सबने एक साथ दरवाजे पर धक्का मारा। एक, दो, तीन बार। लोहे से चरमराहट की आवाज आई और दरवाजा टूटकर खुल गया।

बाहर की ठंडी, ताज़ी हवा उनके चेहरों से टकराई। वे एक पहाड़ी की चोटी पर थे, और नीचे, शहर की रोशनी दूर-दूर तक फैली हुई थी।

"हम कामयाब हो गए," रिया ने राहत की सांस ली।

लेकिन तभी, उनके पीछे के दरवाजे से गैस का बादल निकलने लगा। और इसके साथ ही, गुफा के अंदर से एक दहाड़ सुनाई दी—जैसे कोई विशालकाय जानवर जाग उठा हो।

"भागो!" मायरा चिल्लाई।

वे पहाड़ी से नीचे भागे। घास और झाड़ियाँ उनके रास्ते में आ गईं। आलोक पूरी तरह बेहोश था और रुद्र उसे उठाकर भाग रहा था। उसके शरीर में भी अजीब बदलाव हो रहे थे—उसकी साँसें लंबी और गहरी हो रही थीं, और उसकी धड़कन, तेज़ होने के बजाय, स्थिर और मजबूत हो रही थी।

पीछे की ओर, गुफा से निकलने वाली गैस ने आसपास के पेड़ों को ढक लिया। जहां-जहां गैस का स्पर्श हुआ, वहां पत्तियां मुरझा गईं और पेड़ों की छाल पर बैंगनी निशान दिखाई देने लगे।

वे उस सड़क पर पहुँचे जहाँ मायरा ने एम्बुलेंस को बुलाया था। एम्बुलेंस वहाँ मौजूद थी और दो पैरामेडिक्स बाहर खड़े थे।

"यहाँ आओ! जल्दी करो!" मायरा ने उन्हें इशारा किया।

पैरामेडिक्स ने आलोक और रुद्र को स्ट्रेचर पर लिटाया। रुद्र होश में था, लेकिन उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका शरीर अब उसका अपना नहीं है। उसने अपने हाथ को देखा—नसें नीली और उभरी हुई थीं, और उसकी त्वचा के नीचे कुछ हिल रहा था।

मायरा उसके पास आई और उसका हाथ पकड़ लिया। "क्या तुम ठीक हो?"

रुद्र ने उसकी आँखों में देखा। उनमें चिंता, भय और कुछ और भी था... पछतावा? शायद प्यार? लेकिन वह अभी कुछ कह नहीं सका। उसने बस सिर हिलाया।
एम्बुलेंस चलने लगी। पीछे पहाड़ी पर, गुफा से निकल रही गैस अब एक बादल का रूप ले चुकी थी, जो चांदनी में हल्की हरी चमक रही थी।
गुफा के अंदर, चांसलर अपने कंसोल के सामने खड़े होकर स्क्रीन पर डेटा देख रहे थे। स्क्रीन पर छह नाम थे—रुद्र, आलोक, कबीर, मयंक, रिया, मायरा। और प्रत्येक नाम के आगे महत्वपूर्ण संकेत बदल रहे थे—हृदय गति, मस्तिष्क तरंगें, डीएनए अनुक्रम।
वह मुस्कुराया और एक बटन दबाया। स्क्रीन पर एक संदेश दिखाई दिया: ""पहला चरण पूरा हुआ। मेजबान संक्रमित हो गए हैं। उत्परिवर्तन प्रक्रिया शुरू हो गई है।""
चांसलर ने अपना हाथ उठाया और उसे देखा। उनकी अपनी त्वचा पर, कलाई के पास, एक छोटा सा बैंगनी निशान उभर आया था। उन्होंने उसे छुआ और मुस्कुराए।
"डर ही शक्ति है," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "और मृत्यु... मृत्यु तो बस एक शुरुआत है।"
एम्बुलेंस तेज़ी से शहर की ओर बढ़ रही थी। अंदर, रुद्र ने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसके कानों में एक आवाज़ गूँज उठी—वही गहरी, धड़कन जैसी आवाज़ जो गुफा से आ रही थी। और उसे ऐसा लगा जैसे अब वह आवाज़ उसके भीतर से आ रही हो।
आलोक अचानक उठ बैठा, उसकी आँखें अब सामान्य थीं, लेकिन उनमें एक नई, गहरी चमक थी। उसने रिया की ओर देखा, और बिना कुछ कहे, रिया को लगा कि वह सब कुछ जानता है—जानता है कि वह क्या सोच रही है, किस बात से डर रही है।
"क्या हुआ?" रिया ने पूछा।
"मैं..." आलोक ने कहा और फिर रुक गया। "मैं अब पहले जैसा नहीं रहा।"
एम्बुलेंस के सायरन की आवाज़ रात के सन्नाटे में गुम हो गई। लेकिन उन छह लोगों के भीतर एक नई आवाज़ शुरू हो गई थी—कोशिकाओं के बदलने की, डीएनए के पुनर्लेखन की, और एक ऐसी शक्ति के जागृत होने की जिसे वे समझ नहीं पा रहे थे।
वे बच गए थे। लेकिन क्या वे सचमुच बच पाए थे?

अध्याय 22: अजनबियों को जगाना

अस्पताल की तेज़ रोशनी आँखों को चुभ रही थी—बहुत तेज़, बहुत सफ़ेद। रुद्र ने

आँखें खोलीं और सबसे पहले उसे सफ़ेद छत दिखाई दी, फिर एक IV स्टैंड और उसके हाथ की नसों में तरल पदार्थ की बूँदें बहती हुई। उसका सिर भारी लग रहा था और पूरे शरीर में एक अजीब सी सुन्नता छाई हुई थी, मानो किसी ने उसे अंदर से बदल दिया हो।

वह धीरे-धीरे बिस्तर पर बैठ गया। उसके बाएं कंधे पर पट्टी बंधी थी, लेकिन उसे कोई दर्द नहीं था। बिलकुल भी नहीं। इसके विपरीत, उसे एक अजीब सी ताकत महसूस हो रही थी, मानो उसकी मांसपेशियां अपने आप कस गई हों।

उसने अपना दाहिना हाथ उठाया और बिस्तर के किनारे लगी स्टील की रेलिंग को पकड़ लिया। एक सामान्य पकड़। लेकिन जैसे ही उसने थोड़ा दबाव डाला, धातु चरमरा उठी। वह आश्चर्य से देखने लगा—उसकी उंगलियों ने स्टील पर निशान बना दिए थे।

"ये क्या..." उसने फुसफुसाते हुए कहा।

तभी दरवाजा खुला और एक नर्स अंदर आई। वह जवान थी, शायद पच्चीस साल की, और उसके चेहरे पर पेशेवर मुस्कान थी। "आप जाग गए? अच्छा। आप तीन घंटे से अधिक समय से बेहोश थे।"

"तीन घंटे?" रुद्र ने कहा, उसकी आवाज़ उसकी अपनी आवाज़ से अलग लग रही थी —गहरी, थोड़ी भारी।

"जी हां। आपके दोस्त भी यहीं हैं। वे बाहर हैं।" नर्स ने उनके वाइटल्स चेक करना शुरू किया। ब्लड प्रेशर कफ लगाते ही उनकी भौंहें तन गईं। "अजीब... आपका ब्लड प्रेशर... यह..."

"क्या हुआ?"

"सामान्य से कम। बहुत कम। लेकिन आप होश में हैं..." उसने उसकी नब्ज़ जाँची। "दिल की धड़कन भी धीमी है। लगभग चालीस। यह मुमकिन नहीं है..."

रुद्र ने अपना हाथ अपनी छाती पर रखा। उसका दिल धीरे-धीरे धड़क रहा था, लेकिन हर धड़कन गहरी और मजबूत महसूस हो रही थी, मानो किसी बड़े ढोल की थाप हो रही हो।

"मैं डॉक्टर को बुलाती हूँ," नर्स ने कहा और जल्दी से कमरे से बाहर निकल गई।

रुद्र ने एक बार फिर अपने हाथ को देखा। उसने मुट्ठी भींच ली। नसें उभर आईं, मांसपेशियां कस गईं। कोई दर्द नहीं। उसने बिस्तर की स्टील की रेलिंग को फिर से

पकड़ा, इस बार और ज़ोर से। धातु आसानी से मुड़ गई, मानो मोम हो।
दरवाजा फिर खुला। इस बार मायरा थी।
उसके चेहरे पर राहत, चिंता और डर का मिलाजुला भाव था। उसकी आँखें लाल थीं, मानो वह रोई हो। वह रुद्र के पास दौड़ी। "क्या तुम ठीक हो? मैं बहुत डर गई थी..." उसने रुद्र का हाथ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन रुद्र ने अपना हाथ पीछे खींच लिया। एक तीव्र, अनैच्छिक प्रतिक्रिया।
मायरा का हाथ हवा में जम गया। उसकी आँखों में दुख का भाव था। "रुद्र..."
"तुम यहाँ क्यों हो?" रुद्र ने अपनी आवाज़ में ऐसी ठंडक के साथ कहा कि वह खुद भी हैरान रह गया।
"मैं... मैं आपके साथ आया था। एम्बुलेंस में। मैंने ही फोन किया था।"
"तो तुमने हमें बचा लिया? अपना कर्तव्य पूरा कर लिया? या फिर तुम अपनी माँ को बताने के लिए नई जानकारी जुटा रहे थे?"
वो शब्द जहर की तरह निकले और उनका असर मायरा के चेहरे पर साफ दिख रहा था। वो एक कदम पीछे हट गई, मानो उसे किसी ने थप्पड़ मारा हो। "रुद्र, ऐसा मत कहो। मैं..."
"क्या? तुमने झूठ नहीं बोला? तुम डीन की बेटी नहीं हो? तुमने मुझसे प्यार करने का नाटक तो नहीं किया ताकि मैं तुम पर भरोसा करूँ?"
"मैंने तुमसे प्यार करने का नाटक नहीं किया!" मायरा की आवाज़ भर्रा गई, उसकी आँखों में आँसू भर आए। "हाँ, मैंने अपने बारे में झूठ बोला। हाँ, मेरी माँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा था। लेकिन तुम्हारे और मेरे बीच जो हुआ... वह नाटक नहीं था। वह कभी नाटक नहीं था!"
रुद्र ने उसकी आँखों में देखने की कोशिश की—सच जानने के लिए। लेकिन उसका दिल पत्थर का हो गया था। डीन के शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे—'उनका भरोसा बनाए रखो... वह तुमसे प्यार करता है, यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।'
"तुम्हें जाना चाहिए," रुद्र ने नज़रें फेरते हुए कहा।
"लेकिन..."
"जाओ, मायरा। अभी नहीं।"
मायरा कुछ कहना चाहती थी, लेकिन शब्द उसके मुंह से नहीं निकले। वह एक पल खड़ी रही, फिर धीरे से मुड़ी और कमरे से बाहर चली गई। दरवाज़ा बंद होने की

आवाज़ से रुद्र को खालीपन का एहसास हुआ।
उसने अपना सिर हाथों में छिपा लिया। उसकी उंगलियाँ उसके अपने बालों में गड़ गईं, और उसे ऐसा लगा जैसे वह उन्हें आसानी से खींचकर निकाल सकता है। उसने दबाव डाला—दर्द तो हुआ, लेकिन उतना नहीं जितना होना चाहिए था।
तभी बाहर से एक चीख सुनाई दी।
एक महिला की चीख—भयानक, दर्द भरी।
रुद्र बिस्तर से कूद गया। उसके पैर ज़मीन पर पड़े और उसे लगा जैसे वह हवा में उछल सकता है। उसकी ताकत... यह सामान्य नहीं थी।
वह कमरे से बाहर भागा। नर्सें गलियारे में एक कमरे की ओर दौड़ रही थीं। वही कमरा जहाँ आलोक को ले जाया गया था।
रुद्र दौड़ा। उसके कदम इतने हल्के थे मानो उसका वजन कम हो गया हो। वह कमरे में दाखिल हुआ।
दृश्य भयावह था।
आलोक बिस्तर पर बैठा था, उसकी आँखें चौड़ी थीं और वह ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था। वही नर्स जो रुद्र के कमरे में आई थी, उसके सामने खड़ी थी, लेकिन अब वह काँप रही थी, उसके चेहरे पर भयानक भय था।
"उसे मत छुओ!" आलोक चिल्ला रहा था। "मत छुओ! वो दर्द... वो डर... असहनीय है!"
एक डॉक्टर ने आलोक को शांत करने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही उसने उसके कंधे को छुआ, आलोक और भी ज़ोर से चिल्ला उठा। "नहीं! आपकी बेटी... वह आपकी गोद में मर गई, है ना? कैंसर से? आप उसे बचा नहीं सके... और अब आप हर बच्चे को बचाना चाहते हैं... लेकिन आप नहीं बचा सकते!"
डॉक्टर पीछे हट गया, उसका चेहरा पीला पड़ गया। "तुम्हें... यह कैसे पता चला?"
आलोक ने अपना सिर पकड़ लिया। "मैं सब कुछ देख रहा हूँ... सब कुछ। तुम्हारा दर्द... उस नर्स का डर... उसका पति उसे पीटता है... और तुम..." उसकी नज़र दरवाज़े के पास खड़ी एक और नर्स पर पड़ी। "तुम्हारे पिता ने तुम्हें बचपन में ही छोड़ दिया था... और तुम्हें हमेशा यह डर सताता रहा है कि तुम्हारा बेटा भी तुम्हें छोड़ देगा..."
कमरे में सन्नाटा छा गया। हर कोई स्तब्ध और भयभीत था।

रुद्र आगे बढ़ा। "आलोक। आलोक, मैं रुद्र हूँ।"
आलोक ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी—दर्द, भय और गहरी समझ। "रुद्र... तुम... तुम्हारे अंदर कुछ बदल रहा है। ताकत... बहुत ताकत... लेकिन भय भी। तुम्हें डर है कि तुम उसे... उसे... मायरा को चोट पहुँचाओगे।"
"चुप रहो, आलोक," रुद्र ने धीरे से कहा और बिस्तर पर बैठ गया। उसने आलोक का हाथ पकड़ा। छूते ही रुद्र को एक झटका लगा—एक अजीब सी झनझनाहट, जैसे हल्का सा बिजली का करंट।
लेकिन आलोक शांत हो गया। उसकी सांसें धीमी हो गईं। "तुम्हारा हाथ... गर्म है। और... सुकून देने वाला है।"
डॉक्टर आगे बढ़ा। "यह क्या हो रहा है? यह लड़का... यह असंभव है।"
"हमें अकेला छोड़ दो," रुद्र ने डॉक्टर की ओर देखे बिना कहा।
"लेकिन..."
"अब।"
डॉक्टर और नर्सें हिचकिचाए, फिर धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गए। दरवाजा बंद हो गया।
आलोक ने रुद्र की ओर देखा। "मुझे क्या हो गया है, रुद्र? मैं लोगों को छूता हूँ और मुझे उनकी यादें दिखने लगती हैं... उनका दर्द, उनका डर... सब कुछ।"
"वो गैस," रुद्र ने कहा। "विसंगति एक्स। इसने हमें बदल दिया है।"
उसने अपना हाथ उठाया और आलोक को दिखाया कि उसने स्टील की रेलिंग को कैसे मोड़ा था।
आलोक की आंखें और भी चौड़ी हो गईं। "तुम... तुम और भी ताकतवर हो गए हो।" और आप... आप लोगों के दिलों की बात पढ़ सकते हैं।
"यह एक अभिशाप है," आलोक ने सिसकते हुए कहा, उसकी आँखों में आँसू भर आए थे। "मैं यह नहीं चाहता... कि मुझे पता चले कि लोग कितना दर्द सह रहे हैं।"
रुद्र ने आलोक के कंधे पर हाथ रखा। "यह तुम्हारा अभिशाप नहीं है, आलोक। यह... एक वरदान है। तुम दूसरों का दर्द समझ सकते हो। तुम उनकी मदद कर सकते हो।"
"लेकिन मेरे अपने दर्द का क्या?" आलोक ने कहा और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। "मैंने उस नर्स की बेटी की मौत को महसूस किया... मानो मैं वहीं मौजूद था।

मानो मैंने उसे खुद खो दिया हो।"
दरवाजा खुला और कबीर, मयंक और रिया अंदर आए। तीनों के चेहरे पर चिंता थी, लेकिन वे शारीरिक रूप से ठीक लग रहे थे।
"क्या आप लोग ठीक हैं?" रुद्र ने पूछा।
“हां,” कबीर ने कहा। “कुछ खरोंचें, कुछ चोटें। लेकिन कुछ अजीब सा... मेरा दर्द... गायब हो गया है।”
मयंक ने अपना फोन निकाला। "मेरी सोचने की गति... अविश्वसनीय रूप से तेज हो गई है। जो बातें पहले मिनटों में समझ आती थीं, अब मैं उन्हें एक सेकंड में समझ लेता हूँ।"
"और मैं..." रिया ने अजीब सी शांति भरी आवाज़ में कहा। "मुझे ऐसी यादें आ रही हैं जो मेरी नहीं हैं। मेरे चाचा की... और दूसरों की भी। जब मैंने अस्पताल के फर्श को छुआ, तो मैंने देखा... पिछले साल इसी कमरे में एक बूढ़े आदमी की मौत हो गई थी। उसके बच्चे उससे मिलने नहीं आए थे।"
वे सब एक-दूसरे की ओर देखने लगे। यह सच था। एनोमली एक्स ने उन्हें बदल दिया था। हर किसी को अलग-अलग तरीके से।
आलोक ने कहा, "हम अब सामान्य नहीं रहे।"
कबीर ने जवाब दिया, "शायद हम कभी थे ही नहीं। इसीलिए उन्होंने हमें चुना।"
दरवाजा फिर खुला। इस बार डीन काव्या शर्मा थीं।
वह अकेली थी, और उसके चेहरे पर गहरी थकान और चिंता झलक रही थी। उसकी नज़र सबसे पहले रुद्र पर पड़ी, फिर बाकी सब पर।
"मुझे खेद है," उसने भारी आवाज़ में कहा। "मुझे खेद है कि आप इस हालत में हैं।"
रुद्र खड़े होते हुए बोला, "हमें माफी नहीं चाहिए, हमें जवाब चाहिए। आखिर हो क्या रहा है? हमारे साथ क्या हुआ है?"
डीन ने दरवाजा बंद किया और कमरे के बीच में खड़े हो गए। "आप सभी एनोमली एक्स के संपर्क में आए हैं। उच्च सांद्रता में। आपका डीएनए बदल गया है।"
"क्या हम उत्परिवर्ती बन गए हैं?" मयंक ने पूछा।
डीन ने कहा, "उत्परिवर्तन एक डरावना शब्द है। इसे विकास कहिए। अनियंत्रित, तीव्र विकास। एनोमली एक्स एक उत्प्रेरक है। यह आपके अंदर मौजूद हर चीज को बढ़ा देता है—आपके गुण, आपकी क्षमताएं... और आपके डर भी।"

"तो मेरी ताकत..." रुद्र ने कहा।
"आपका दृढ़ संकल्प, आपकी शारीरिक क्षमता—ये सब और भी बढ़ गए हैं।"
"और मेरी... भावनाओं को समझने की क्षमता?" आलोक ने पूछा।
"आपकी संवेदनशीलता। आप हमेशा दूसरों की भावनाओं को समझते थे। अब यह एक ताकत बन गई है।"
"लेकिन यह एक अभिशाप है," आलोक ने दोहराया।
"यह आप पर निर्भर करता है," डीन ने कहा। "आप इसे अभिशाप बना सकते हैं, या वरदान।"
कबीर ने सीधे पूछा, "बृजेश को क्या हुआ? क्या उसके साथ भी वही हुआ?"
डीन का चेहरा गंभीर हो गया। "बृजेश... वह बदकिस्मत था। वह उस गुफा में घुस गया, जहाँ एनोमली एक्स का स्रोत है। उसे शुद्ध, सघन विकिरण का सामना करना पड़ा। उसका शरीर... उसका शरीर इस परिवर्तन को सहन नहीं कर सका। वह एक पात्र बन गया—एनोमली एक्स का पात्र। आलोक, वह मरा नहीं। वह... समाहित हो गया।"
"Rohit Singh?" Riya asked.
"वह एक अपूर्ण रूपांतरण था। उसे बचा लिया गया, लेकिन अध्ययन के लिए नियंत्रण में रखा गया। चांसलर यह देखना चाहते थे कि विसंगति एक्स लंबे समय में कैसे काम करती है।"
"तुम्हें यह सब पता था," रुद्र ने आरोप भरे स्वर में कहा। "तुम्हें उस गुफा के बारे में, वहाँ जो कुछ भी हो रहा था, सब पता था। और तुमने कुछ नहीं किया।"
"मैंने कोशिश की!" डीन की आवाज़ में पहली बार भावुकता झलक रही थी। "मैंने विरोध किया, मैंने रोका। लेकिन चांसलर के पास शक्ति, संसाधन और एक सेना जैसी संस्था है। और मेरी बहन..."
वह रुक गई, उसकी आवाज भर्रा गई।
"तुम्हारी बहन?" रिया ने धीरे से पूछा।
"डॉ. मीरा शर्मा। 2009 में परियोजना की प्रमुख। वह... वह गुफा में हैं। एनोमली एक्स ने उन्हें आत्मसात कर लिया है, लेकिन पूरी तरह से नहीं। वह जीवित हैं... एक तरह से। और वही एकमात्र ऐसी हैं जो चांसलर को रोक सकती हैं।"
कमरे में सन्नाटा छा गया। डीन की आँखों में आँसू थे, लेकिन उन्होंने उन्हें बहने नहीं

दिया।
मैंने मायरा को तुम्हारे पास इसलिए भेजा क्योंकि मुझे पता था कि चांसलर तुम्हें निशाना बनाएगा। तुममें वो सभी गुण हैं जो वो चाहता है—शक्ति, संवेदनशीलता, बुद्धिमत्ता, सहनशक्ति। वो तुम्हें अपने प्रयोगों के लिए इस्तेमाल करना चाहता था। मैं चाहता था कि मायरा तुम्हारी रक्षा करे, तुम्हें सतर्क रखे।
"लेकिन उसने झूठ बोला," रुद्र ने कहा।
"झूठ बोलना ज़रूरी था। अगर आपको पता होता कि वह मेरी बेटी है, तो आप उस पर कभी भरोसा नहीं करते। और आपको उस पर भरोसा करना ही था।"
"उसने मुझसे प्यार करने का नाटक किया," रुद्र ने दर्द भरे शब्दों में कहा।
"यह दिखावा नहीं था," डीन ने रुद्र की आँखों में सीधे देखते हुए कहा। "मायरा ने मुझे बताया। उसने कहा कि वह तुमसे प्यार करती है। और यही बात मुझे सबसे ज़्यादा डराती है। क्योंकि प्यार... प्यार आपको कमज़ोर बना देता है। और इस खेल में, कमज़ोर होना मौत को दावत देना है।"
वह मुड़ी और दरवाजे की ओर चल पड़ी। "आराम करो। तुम्हें जल्द ही अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी। और फिर... फिर तुम्हें चुनाव करना होगा। भागो, या लड़ो।"
वह चली गई।
कबीर ने आह भरी। "तो यही सच है। हम प्रयोग हैं। हमेशा से रहे हैं।"
"लेकिन अब हम सिर्फ प्रयोग मात्र नहीं हैं," मयंक ने कहा। "अब हम उसके लिए खतरा हैं।"
"क्या हम लड़ सकते हैं?" रिया ने पूछा। "उसके पास सैनिक हैं, हथियार हैं।"
"अब हमारे पास कुछ और भी है," रुद्र ने कहा। उसने अपनी मुट्ठी भींच ली। "हमारे पास एक-दूसरे का साथ है। और हमारे पास ये... ये क्षमताएं हैं।"
"लेकिन हमें उन्हें नियंत्रित करना होगा," आलोक ने कहा। "अगर मैं लोगों को छूकर उनकी पीड़ा महसूस करने लगूं, तो मैं पागल हो जाऊंगा।"
रुद्र ने कहा, "हम सीख लेंगे। एक-दूसरे की मदद से।"
दरवाजा एक बार फिर खुला। मायरा वापस आ गई थी, उसके हाथ में एक छोटा सा कागज़ का थैला था। उसकी आँखें सूजी हुई थीं, लेकिन उसने अपने आँसू रोक लिए थे।
"मैं तुम सबके लिए कपड़े लाई हूँ," उसने सपाट स्वर में कहा। "तुम्हारे अपने कपड़े

फटे हुए थे।"
उसने बैग कबीर को सौंप दिया और रुद्र की ओर देखे बिना जाने के लिए मुड़ गई।
"मायरा," रुद्र ने कहा।
वह रुक गई लेकिन मुड़ी नहीं।
"इंतज़ार।"
मायरा धीरे से मुड़कर देखने लगी। उसकी आँखों में एक सवाल और गहरा दर्द झलक रहा था।
रुद्र उठा और उसके पास गया। उसने इस बार नरमी से उसका हाथ पकड़ा। मायरा ने अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन रुद्र ने उसे नहीं छोड़ा।
"मुझे माफ कर दो," रुद्र ने कहा, उसकी आवाज़ से अब कोई ठंडापन नहीं था। "मैं... मैं तुमसे नाराज़ था। डरा हुआ था। लेकिन तुम्हारी माँ ने कहा... तुमने मुझसे प्यार करने का नाटक नहीं किया।"
मायरा की आँखों में फिर से आँसू भर आए। "मैंने ऐसा नहीं किया। कभी नहीं।"
"तो फिर... फिर हम आगे कैसे बढ़ें? इतने सारे झूठों, इतने सारे रहस्यों के बाद?"
मायरा ने अपना दूसरा हाथ रुद्र के हाथ पर रखा और उसे अपने हाथों के बीच थाम लिया। "एक ही सच्चाई के साथ। मैं तुमसे प्यार करती हूँ, रुद्र। और मैं हर हाल में तुम्हारे साथ हूँ।"
रुद्र ने उसकी आँखों में देखा और उसके दिल के चारों ओर जमी बर्फ पिघल गई। उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया और मायरा ने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया।
कबीर, मयंक, रिया और आलोक मुस्कुराते हुए देख रहे थे। किसी ने कुछ नहीं कहा। कहने की ज़रूरत भी नहीं थी।
आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा। रिया ने जवाब में मुस्कुरा दिया।
मयंक ने अपने फोन की स्क्रीन पर देखा और कोड लिखना शुरू कर दिया, जिसमें वह एनोमली एक्स के बारे में अपनी सारी जानकारी दर्ज कर रहा था।
और कबीर ने खिड़की से बाहर देखा—शहर की रोशनी, वह सामान्य जीवन जो शायद उनके लिए फिर कभी सामान्य न हो पाए।
वे बदल चुके थे। टूटे हुए, फिर भी जुड़े हुए। डरे हुए, फिर भी दृढ़ निश्चयी। और अब, एक नई शुरुआत की कगार पर—न केवल अपने लिए, बल्कि उस सच्चाई के लिए

जो दबी हुई थी, उन सभी के लिए जो खो गए थे।
रुद्र ने धीरे से मायरा को अलग किया और उसके चेहरे पर हाथ फेरा। "साथ में," उसने कहा।
"हमेशा," मायरा ने उत्तर दिया।
और उस क्षण, उस निर्जीव अस्पताल के कमरे में, छह दिल एक साथ धड़क रहे थे - भय और आशा के साथ, प्रेम और पीड़ा के साथ, और हीरे से भी अधिक मजबूत संकल्प के साथ।

अध्याय 23: डीन का इकबालिया बयान

डीन के जाने के बाद अस्पताल का कमरा गहरी खामोशी में डूब गया। जो सच उन्होंने अभी-अभी सुना था, वह हवा में लटका हुआ था—एक जहरीली, अनचाही सच्चाई जिसे न तो नकारा जा सकता था और न ही पचाया जा सकता था।
रुद्र अभी भी मायरा को पकड़े हुए था, लेकिन उसकी निगाहें खिड़की पर टिकी हुई थीं, जहाँ सुबह की पहली किरणें आकाश को सुनहरा रंग दे रही थीं। मायरा का शरीर उसकी बाहों में थोड़ा कांप रहा था, और रुद्र जानता था कि यह कंपकंपी केवल थकान या ठंड के कारण नहीं थी।
मयंक ने फोन नीचे रखते हुए कहा, "वह वापस आएगी। उसने कहा था कि हमें चुनना होगा। यह इतना आसान नहीं होगा।"
कबीर ने अपनी आवाज़ में एक नई, कठोर ठंडक के साथ कहा, "क्या हमारे पास कोई विकल्प भी है? हम उत्परिवर्ती बन चुके हैं। हमारे पास ऐसी शक्तियां हैं जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। और एक पागल चांसलर हमें अपने प्रयोगों के लिए चाहता है। भागने से कोई फायदा नहीं होगा।"
"हम भागेंगे नहीं," रुद्र ने मायरा से धीरे से अलग होते हुए कहा। उसने मायरा की आँखों में देखा—लाल, थकी हुई, लेकिन दृढ़। "हम लड़ेंगे।"
"कैसे?" आलोक ने फुसफुसाते हुए पूछा। "मैं लोगों को छू भी नहीं सकता, उनकी यादें दिखने लगती हैं। तुमने... तुमने बिस्तर की रेलिंग मोड़ दी। हम खतरनाक हैं, रुद्र। खुद के लिए भी, दूसरों के लिए भी।"
"तो फिर हम सीखेंगे," रिया ने आलोक का हाथ पकड़ते हुए कहा। "हम एक-दूसरे की

मदद से सीखेंगे।"
दरवाजा खुला। डीन वापस आ गई थीं, और इस बार उनके पास एक फाइल थी—पुरानी, भूरी, जिसके कवर पर "2009: प्रोजेक्ट एनोमली एक्स" लिखा हुआ था।
"क्या आप सब तैयार हैं?" डीन ने पूछा, उनकी आवाज अब गंभीर और औपचारिक थी।
"सच के लिए?" रुद्र ने कहा। "हाँ।"
डीन ने दरवाजा बंद किया और कमरे के बीचोंबीच खड़ी हो गईं। उन्होंने फाइल को मेज पर रखा और गहरी सांस ली, मानो कोई बहुत भारी बोझ उतारने वाली हों।
"सब कुछ बताने से पहले, मुझे आप लोगों से एक वादा चाहिए," उसने बारी-बारी से उन सभी पर नज़र डालते हुए कहा। "आप जो कुछ भी सुनें, जो कुछ भी जानें, उसे अपने तक ही सीमित रखें। क्योंकि अगर यह सच बाहर आ गया, तो न केवल आप मरेंगे, बल्कि सैकड़ों अन्य लोग भी मर जाएंगे।"
"हम वादा करते हैं," रुद्र ने कहा, और बाकी सबने सिर हिलाकर सहमति जताई।
डीन ने फाइल खोली। पहले पन्ने पर एक तस्वीर थी—जमीन में धंसा हुआ एक उल्कापिंड, जिसके चारों ओर वैज्ञानिक खड़े थे।
"प्रोजेक्ट एनोमली एक्स," उसने शुरू किया। "यह कोई एलियन संक्रमण नहीं है, जैसा कि आप सोच रहे होंगे। यह एक उल्कापिंड में पाया जाने वाला सूक्ष्मजीव है, जो पृथ्वी पर जीवन को एक नई दिशा दे सकता है—इसे रूपांतरित कर सकता है। यह संक्रमण नहीं फैलाता; यह विकास करता है।"
"विकास?" मयंक ने पूछा। "किस तरह का?"
"डीएनए को फिर से लिखने जैसा। लेकिन यह आकस्मिक नहीं है। यह आघात पर आधारित है—डर, दर्द, भावनात्मक आघात। यह इन चीजों को ताकत में बदल देता है। आपका अपना डर ही आपकी सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है।"
रुद्र ने अपनी मुट्ठी की ओर देखा। उसका डर... मायरा को खोने का डर। क्या यही उसकी ताकत का स्रोत था?
"2009," डीन ने बोलते हुए कहा, और उनकी आवाज़ भर्रा गई। "उस परियोजना की प्रमुख मेरी बहन डॉ. मीरा शर्मा थीं। आधिकारिक तौर पर उन्हें एक दुर्घटना में मृत घोषित कर दिया गया था, लेकिन सच्चाई कहीं अधिक भयावह थी: एनोमली एक्स ने उन्हें आंशिक रूप से आत्मसात कर लिया था और वह गुफा के भीतर छिपी एक

क्रिस्टलीय, परिवर्तित अवस्था में जीवित थीं। उन्होंने कभी सोचा था कि यह नमूना मानवता को बचाएगा; लेकिन इसके बजाय इसने उन्हें कैद कर लिया था।"
उसने फाइल से एक और तस्वीर निकाली - एक युवती, जो डीन से मिलती-जुलती थी, लैब कोट पहने हुए, माइक्रोस्कोप के पास मुस्कुरा रही थी।
"उसने स्वयंसेवकों के एक समूह पर प्रयोग शुरू किए—ये वे छात्र थे जो सोचते थे कि वे विज्ञान की सेवा कर रहे हैं। पहले कुछ हफ्तों तक सब ठीक रहा। प्रयोग में शामिल लोगों में तेजी से सुधार, मानसिक स्पष्टता और बढ़ी हुई ताकत देखी गई। लेकिन फिर... फिर कुछ गड़बड़ हो गई।"
डीन की आंखों में आंसू भर आए, लेकिन उन्होंने उन्हें रोक लिया।
"एनोमली एक्स ने उनके आघातों को पढ़ना शुरू किया—एक लड़की का बचपन में यौन शोषण, एक लड़के का दुर्घटना में अपने भाई को खोना, दूसरे की माँ की आत्महत्या... और इसने उन आघातों को भौतिक रूप देना शुरू कर दिया। वे... वे बदलने लगे। उनकी त्वचा पर निशान, अंगों का लंबा होना, उनकी आँखें... उनकी आँखें काली हो गईं।"
कमरे में सन्नाटा छा गया। आलोक ने अपने हाथों की ओर देखा—क्या एक दिन उसकी आँखें भी वैसी ही हो जाएँगी?
"मीरा इस परियोजना को रोकना चाहती थी, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उस समय परियोजना के वित्तपोषण के प्रभारी चांसलर देवराज ठाकुर ने इसे जारी रखने का आदेश दिया। उनका मानना था कि यह 'अस्थिरता' केवल एक दौर है, और अंततः ऐसे 'शुद्ध मेजबान' मिल जाएंगे जो इस परिवर्तन को संभाल सकेंगे।"
"और फिर सब कुछ गलत हो गया?" रिया ने पूछा।
"फिर चांसलर ने इसे दबा दिया। सभी विषयों को मृत घोषित कर दिया गया, प्रयोगशाला को सील कर दिया गया, और मीरा... मीरा को गायब कर दिया गया। आधिकारिक तौर पर, उसकी एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। लेकिन असल में..." डीन की आवाज़ भर्रा गई। "उसे एनोमली एक्स के स्रोत—उस उल्कापिंड—के पास छोड़ दिया गया था। वह अभी भी वहीं है, जीवित... एक तरह से। क्रिस्टल में परिवर्तित हो गई है, लेकिन उसकी चेतना जीवित है।"
मायरा ने रुंधे हुए स्वर में कहा, "मौसी... वो ज़िंदा हैं?"
"जी हां, प्रिय। लेकिन वह अब वह इंसान नहीं है जिसे तुम जानती थी। वह अब

एनोमली एक्स का हिस्सा है, और एनोमली एक्स उसका हिस्सा है।"
कबीर ने कर्कश स्वर में कहा, "बृजेश। उसे क्या हुआ?"
डीन ने एक और दस्तावेज निकाला—एक मेडिकल रिपोर्ट जिस पर बृजेश का नाम लिखा था।
"बृजेश बदकिस्मत था। वह गलती से उस गुफा में घुस गया जहाँ चांसलर का मौजूदा प्रयोग चल रहा था। उसे शुद्ध रूप में, बिना किसी मिलावट के, एनोमली एक्स का तीव्र प्रभाव झेलना पड़ा। उसका शरीर... उसका शरीर इस परिवर्तन को सहन नहीं कर सका। वह उसमें समाहित हो गया।"
"मग्न?" कबीर आगे बढ़ा। "मतलब?"
"उसका शरीर एनोमली एक्स का पात्र बन गया। कबीर, वह मरा नहीं। उसका भौतिक स्वरूप तो नष्ट हो गया, लेकिन उसकी चेतना... उसकी यादें... एनोमली एक्स का हिस्सा बन गईं। अब वह उस प्राणी का हिस्सा है जो गुफा में रहता है।"
कबीर ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। उसके कंधे कांप रहे थे। रुद्र उसके पास जाने के बारे में सोचने लगा, लेकिन रुक गया। कभी-कभी दर्द अकेले ही सहना पड़ता है।
"रोहित सिंह," मयंक ने कहा। "वह कैसे बच गया?"
"रोहित एक अपूर्ण रूपांतरण था। उसे बचा लिया गया था लेकिन अध्ययन के लिए नियंत्रण में रखा गया था। चांसलर यह देखना चाहते थे कि विसंगति X का दीर्घकालिक प्रभाव क्या होता है। वह एक प्रयोग था, ठीक वैसे ही जैसे आप सभी पकड़े जाने पर होते।"
"और मायरा?" रुद्र ने डीन पर निगाहें गड़ाए हुए पूछा। "उसकी क्या भूमिका थी? सच बताओ।"
डीन ने मायरा की ओर देखा, और उसकी आँखों में एक माँ का प्यार और पछतावा झलक रहा था।
मैंने मायरा को तुम्हारे पास इसलिए भेजा क्योंकि मुझे पता था कि चांसलर तुम्हें निशाना बनाएगा। तुम सब में वो गुण हैं जो वो चाहता है—रुद्र का नेतृत्व, आलोक की संवेदनशीलता, कबीर का धैर्य, मयंक का विश्लेषण, रिया की ऐतिहासिक स्मृति। वो तुम्हें 'शुद्ध मेजबान' मानता है। और मैं चाहता था कि मायरा तुम्हारी रक्षा करे, तुम्हें सतर्क रखे।

"लेकिन उसने हमसे झूठ बोला," आलोक ने कहा। "हमें नहीं पता था कि वह आपकी बेटी है।"
"अगर तुम्हें पता होता, तो क्या तुम उस पर भरोसा करते?" डीन ने सीधे पूछा। "क्या रुद्र उसके करीब आता? क्या तुम सब उसे अपने समूह में शामिल करते? नहीं। झूठ बोलना ज़रूरी था। लेकिन प्यार... प्यार नकली नहीं था।"
डीन मायरा की ओर बढ़ा और उसका हाथ पकड़ लिया। "मेरी बेटी ने मुझे बताया कि वह रुद्र से प्यार करती है। और यही बात मुझे सबसे ज्यादा डराती है। क्योंकि इस खेल में, प्यार आपको कमजोर बना देता है। यह आपकी सबसे बड़ी ताकत भी हो सकती है, और आपकी सबसे बड़ी कमजोरी भी।"
रुद्र ने मायरा की ओर देखा। उसकी आँखें सच बयां कर रही थीं—डर, पछतावा, प्यार, सब कुछ।
"मैंने आपको सब कुछ नहीं बताया, माँ," मायरा ने अचानक स्पष्ट आवाज़ में कहा। "जब आपने मुझे उनकी गतिविधियों की रिपोर्ट करने के लिए कहा था, तो मैंने नहीं किया। मैंने बहुत सी बातें छुपाईं। क्योंकि मुझे पता था कि अगर आपको पता चल गया, तो आप उन्हें रोक देंगी। और उन्हें जानना ज़रूरी था। उन्हें सच्चाई जानना ज़रूरी था।"
उसने अपना फोन निकाला और डीन को दिखाया। "देखिए। आपके संदेश। मैंने जवाब नहीं दिया। मैंने आपको यह नहीं बताया कि वे गुफा में जा रहे हैं, या उन्हें बंकर मिल गया है। क्योंकि मैं... मैं चाहती थी कि वे आज़ाद रहें। चाहे कुछ भी हो जाए।"
डीन ने फोन की तरफ देखा और उनके चेहरे पर आश्चर्य और गर्व का मिलाजुला भाव दिखाई दिया। "आपने जोखिम उठाया।"
"प्यार में जोखिम तो उठाने ही पड़ते हैं," मायरा ने रुद्र की ओर देखते हुए कहा।
रुद्र का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह मायरा के पास गया और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।
"मुझे माफ कर दो," उसने कहा। "मुझे तुम पर भरोसा करना चाहिए था।"
"और मुझे तुम्हें सच बता देना चाहिए था," मायरा ने रोते हुए कहा। "मेरा प्यार... मेरा प्यार ही इन सभी झूठों के बीच एकमात्र सच्ची चीज थी।"
वे गले मिले, और उसी क्षण कमरे का सारा तनाव हल्का हो गया। आलोक ने रिया का हाथ थाम लिया। कबीर ने अपनी आँखें पोंछीं और सीधा खड़ा हो गया। मयंक ने

गहरी साँस ली।
डीन मुस्कुराते हुए देख रही थी, लेकिन उसकी मुस्कान में दर्द भी था। "अब आप सब जान गए हैं। और अब आपको चुनना होगा। भागो, या लड़ो।"
"हम लड़ेंगे," रुद्र ने मायरा से थोड़ा अलग होते हुए कहा। "लेकिन अकेले नहीं। तुम हमारी मदद करोगी।"
"मैं करूँगा," डीन ने कहा। "लेकिन खतरा बहुत बड़ा है। चांसलर के पास संसाधन, शक्ति और एक निजी सेना है। और उसे मरने से डर लगता है—उसे कैंसर है। वह अमरता प्राप्त करने के लिए एनोमली एक्स का उपयोग करना चाहता है। वह 'पूरी तरह से विकसित मानव' बनना चाहता है।"
“तो हमें उसे रोकना होगा,” कबीर ने कहा, उसकी आवाज़ में अब क्रोध नहीं बल्कि दृढ़ निश्चय था। “बृजेश के लिए। रोहित के लिए। 2009 में जान गंवाने वाले सभी लोगों के लिए।”
"लेकिन पहले हमें अपनी शक्तियों को नियंत्रित करना सीखना होगा," मयंक ने कहा। "नहीं तो हम खुद ही खतरा बन जाएंगे।"
डीन ने कहा, "मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। मेरे पास मीरा के नोट्स और उसका शोध है। हम समझ सकते हैं कि एनोमली एक्स कैसे काम करता है और तुम अपनी क्षमताओं को कैसे नियंत्रित कर सकते हो।"
"लेकिन समय कम है," रिया ने कहा। "कुलपति को पता है कि हमारा भेद खुल गया है। वह हमें ढूंढेंगे।"
"तो हम छिप जाएंगे," रुद्र ने कहा। "और तैयारी करेंगे।"
डीन ने सिर हिलाया। "ठीक है। मैं तुम्हें एक सुरक्षित जगह दिखाऊंगा। एक ऐसी जगह जहाँ चांसलर की नज़र नहीं पड़ेगी। लेकिन तुम्हें अभी यहाँ से जाना होगा। अस्पताल सुरक्षित नहीं है।"
आलोक ने कहा, "हमें अस्पताल से छुट्टी मिलने में समय लगेगा।"
“नहीं,” डीन ने कहा, और उनकी आवाज़ में एक तीखापन आ गया। “आप सबने जो दिखाया है—रुद्र का साहस, आलोक की संवेदनशीलता—डॉक्टर हैरान हैं। वे इसकी रिपोर्ट करेंगे। और चांसलर के लोग हर अस्पताल में मौजूद हैं। आपको अभी जाना होगा।”
उसने अपने कोट की जेब से एक चाबी निकाली। "यह लो। मेरे घर की चाबी। तुम्हें

पता है पता। वहाँ जाओ और इंतज़ार करो। मैं जल्दी आ जाऊंगी।"
रुद्र ने चाबी ले ली। "और तुम?"
"मुझे यहां और भी काम है। आपके डिस्चार्ज पेपर, निगरानी फुटेज मिटाना... ये सब। अब जाओ।"
वे हिचकिचाए, लेकिन डीन की आंखों में एक ऐसी तत्परता थी जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था।
रुद्र ने मायरा का हाथ पकड़ा। "चलो चलते हैं।"
ध्यान आकर्षित न करने के लिए वे एक-एक करके कमरे से बाहर निकले। गलियारा खाली था; सुबह की शिफ्ट अभी शुरू नहीं हुई थी। वे सीढ़ियों से नीचे उतरे, गाड़ी से उतरे और एक टैक्सी में बैठ गए।
टैक्सी चलने लगी और रुद्र ने अस्पताल की ओर पीछे मुड़कर देखा। डीन अभी भी वहीं थीं, खिड़की से उन्हें जाते हुए देख रही थीं। उनके चेहरे पर एक अजीब सी भविष्यवाणी झलक रही थी, मानो उन्हें पता हो कि यह आखिरी बार है जब वह उन्हें इस तरह देख रही हैं।
"क्या सब ठीक हो जाएगा?" मायरा ने रुद्र का हाथ कसकर पकड़ते हुए पूछा।
"हम सब ठीक कर लेंगे," रुद्र ने कहा। "साथ मिलकर।"
आलोक ने रिया की तरफ देखा। "तुम्हारे चाचा... अब तुम्हें पता चल गया होगा कि उनके साथ क्या हुआ।"
रिया ने आंखें बंद करते हुए सिर हिलाया। "हां। और अब हम उनकी कहानी का अंत करेंगे। सही तरीके से।"
कबीर खिड़की से शहर के सुबह के नज़ारों को देख रहा था। "बृजेश... शायद वह हमें देख रहा है। शायद उसे पता है कि हम उसके लिए लड़ेंगे।"
मयंक ने कहा, "वह जानता है। और वह हमारे साथ है।"
टैक्सी डीन के घर के सामने रुकी। यह एक शांत इलाका था, जो पेड़ों से घिरा हुआ था। उन्होंने चाबी से दरवाजा खोला और अंदर प्रवेश किया।
घर सादा था लेकिन साफ-सुथरा था। अलमारियां किताबों से भरी थीं, कुछ पुरानी तस्वीरें थीं - जिनमें युवा डीन और एक अन्य महिला, शायद मीरा, हंस रहे थे।
मायरा ने एक तस्वीर उठाई। "ये मेरी चाची हैं। माँ की जुड़वाँ बहन। वे बहुत करीबी दोस्त थीं।"

रुद्र ने तस्वीर देखी। दोनों एक जैसे दिखते थे, लेकिन मीरा की आँखों में एक अजीब सी चमक थी, जबकि डीन की आँखों में गंभीरता थी।

मयंक ने कहा, "हमें आराम करना चाहिए। फिर योजना बनाएंगे।"

वे सब बैठक कक्ष में बैठे थे। रुद्र ने मायरा को अपने बगल में बैठाया। आलोक और रिया साथ बैठे थे। कबीर एक कुर्सी पर अकेला बैठा था, और मयंक ने अपना लैपटॉप निकाला।

मयंक ने कहा, "हमें अपनी क्षमताओं की सूची बनानी चाहिए। जितना हम जानते हैं उसके आधार पर।"

"रुद्र—अति शक्ति और बढ़ी हुई टिकाऊपन," मायरा ने कहा।

"आलोक—सहानुभूति और भावनात्मक/स्मृति संबंधी पठन क्षमता," रिया ने आगे कहा।

"मयंक—विश्लेषणात्मक क्षमता और प्रसंस्करण गति में वृद्धि हुई है," मयंक ने स्वयं कहा।

कबीर ने कहा, "कबीर—दर्द सहने की क्षमता और एड्रेनालाईन नियंत्रण।"

आलोक ने कहा, "रिया—ऐतिहासिक स्मृति तक पहुंच।"

"और मायरा?" रुद्र ने पूछा। "उसकी क्षमता क्या है?"

सभी ने मायरा की ओर देखा। वह हिचकिचाई, फिर बोली, "मुझे नहीं पता। शायद मुझमें कोई क्षमता प्रकट ही नहीं हुई।"

"कुलपति की फाइल में आपका नाम 'हटा दिया गया' था," मयंक ने याद दिलाया। "इसका मतलब है कि आपमें कुछ खास बात है जिसे छुपाया गया था।"

"शायद उसे पता है कि तुम मेरी बेटी हो," एक आवाज ने कहा।

सब चौंककर मुड़ गए। डीन दरवाजे पर खड़े थे, थके हुए लेकिन सतर्क।

"माँ!" मायरा उनके पास गई। "क्या सब ठीक है?"

"अभी के लिए," डीन ने अंदर आते हुए और दरवाजा बंद करते हुए कहा। "लेकिन हमारे पास समय बहुत कम है। मैंने जो किया उससे शायद हमें एक दिन की मोहलत मिल गई हो। उसके बाद वे हमें ढूंढ लेंगे।"

"तो फिर हमें जल्दी करनी होगी," रुद्र ने कहा।

"जी हां," डीन ने बैग से कुछ फाइलें निकालते हुए कहा। "ये मीरा के नोट्स हैं। और ये... ये वो उपकरण है जो उसने बनाया था।"

उसने एक छोटा सा, हाथ में पकड़ने वाला उपकरण निकाला जो पुराने वॉकमैन जैसा दिखता था।
"यह क्या है?" रिया ने पूछा।
"एक आवृत्ति जनरेटर। मीरा को लगा कि एनोमली एक्स कुछ खास आवृत्तियों से प्रभावित होती है—शुद्ध आनंद, बिना शर्त प्यार। यही इसकी कमजोरी हो सकती है।"
"प्रेम," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा। "तो यही वह चीज है जो हमें शक्तिशाली बनाती है।"
रुद्र ने कहा, "और कुलाधिपति को कौन हरा सकता है? क्योंकि वह प्रेम से नहीं, बल्कि भय से प्रेरित है।"
डीन ने सबकी ओर देखा। "तो तैयार हो जाओ। आज रात हम गुफा में वापस जाएंगे। और इस खेल को हमेशा के लिए खत्म कर देंगे।"
शाम होते-होते उन्होंने योजना बना ली, अपनी क्षमताओं का परीक्षण कर लिया और एक-दूसरे से वादा कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे साथ रहेंगे।
और जब आखिरकार रात हुई और वे फिर से उसी जंगल के रास्ते पर चल रहे थे, तो उनके दिलों में डर था, लेकिन उससे भी बढ़कर, उनमें विश्वास था - एक-दूसरे पर और उस प्यार पर जिसने उन्हें बांध रखा था।
डीन ने आखिरी बार उन सभी की ओर देखा। "याद रखना, एनोमली एक्स एक दर्पण है। यह तुम्हारे भीतर जो कुछ भी है उसे बढ़ा देता है। चांसलर का डर एक राक्षस को जन्म देगा। लेकिन तुम्हारा प्यार... तुम्हारा प्यार कुछ अद्भुत बना सकता है।"
रुद्र ने मायरा का हाथ पकड़ा हुआ था। आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा हुआ था। कबीर और मयंक उनके पीछे खड़े थे।
और वे अंधेरे में गायब हो गए, उस गुफा की ओर जहाँ उनका भाग्य और उनके भय दोनों उनका इंतजार कर रहे थे।

अध्याय 24: चकनाचूर विश्वास, एकजुट हृदय

डीन के घर में अब एक अजीब सी शांति छाई हुई थी। कुछ घंटे पहले जिस सच्चाई ने उनकी दुनिया को चकनाचूर कर दिया था, वही अब उनकी नई नींव बन गई थी। लेकिन यह नींव अभी भी कांप रही थी, मानो किसी भी क्षण उनके पैरों तले से

खिसक जाने को तैयार हो।

रुद्र खिड़की के पास खड़ा बाहर हल्की बारिश देख रहा था। शाम ढल रही थी और आसमान स्लेटी रंग का हो गया था, मानो धुएँ से भरा हो। उसकी हथेलियाँ अभी भी गर्म थीं—एक अजीब सी आंतरिक गर्मी उसकी नसों में दौड़ रही थी। उसने ध्यान से देखा। न तो धुआँ उठ रहा था, न ही कोई चमक दिखाई दे रही थी, लेकिन वह इसे 'महसूस' कर सकता था। एक शक्ति जो उसकी हड्डियों में गहराई से सोई हुई थी, अब जाग उठी थी।

"तुम ठीक हो?"

मायरा की आवाज़ ने उसे वर्तमान में वापस ला दिया। वह उसके पीछे खड़ी थी, उसके हाथों में चाय के दो प्याले थे। उसकी आँखें सूजी हुई थीं, लेकिन उनमें अब आँसू नहीं थे, बल्कि एक स्पष्ट दृष्टि का भाव था।

"हां," रुद्र ने चाय का प्याला उठाते हुए कहा। उनकी उंगलियां आपस में छू गईं। बिजली के झटके जैसा एक झनझनाहट हुई—दर्दनाक नहीं, लेकिन तीव्र। मायरा थोड़ी झिझकी, लेकिन उसने अपना हाथ नहीं हटाया।

"मुझे खेद है," रुद्र ने कहा।

"किस लिए?"

"इन सब बातों के बावजूद... जो मैंने कहा। जो मैंने सोचा। मुझे तुम पर शक था... मुझे तुम्हारे प्यार पर शक था।"

मायरा ने अपना प्याला मेज पर रखा और रुद्र का हाथ अपने हाथ में ले लिया। "तुम्हें शक करना ही था, रुद्र। मैंने झूठ बोला। मैंने बातें छुपाईं। लेकिन सुनो... सुनो और देखो।"

उसने अपना फोन निकाला और डीन को भेजे गए पुराने संदेश खोले। फिर उसने अपनी संग्रहित चैट दिखाईं।

"देखो यहाँ। 15 अक्टूबर। माँ ने संदेश भेजा: 'कबीर कहाँ है? उसकी लोकेशन भेजो।' मेरा जवाब था: 'वह पुस्तकालय में है।' यह झूठ था। वह उस दिन अपनी माँ से मिलने बृजेश के घर गया था।"

उसने स्क्रॉल किया। "22 अक्टूबर। 'आलोक और रिया क्या कर रहे हैं?' मैंने लिखा: 'वे एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं।' जबकि उसी समय वे बंकर के नक्शों को डिकोड कर रहे थे।"

उसने एक-एक करके वे सभी संदेश दिखाए जिनमें उसने जानबूझकर गलत जानकारी दी थी या जिनका उसने कोई जवाब नहीं दिया था। कुछ जगहों पर डीन के कई संदेशों का कोई जवाब नहीं मिला था।

"मैं तुम्हारी रक्षा कर रही थी," मायरा ने रुंधे हुए स्वर में कहा। "हाँ, शुरुआत में माँ ने मुझे भेजा था। लेकिन जब मैंने तुमसे बात की... जब मैं तुम सबको जान गई... तो मैं ऐसा नहीं कर सकी। मैं तुम्हें उनके हवाले नहीं कर सकती थी। तुम सिर्फ़ एक प्रोजेक्ट नहीं थे। तुम सब... मेरे दोस्त बन गए। और तुम..."

उसने रुद्र की आँखों में देखा। "तुम मेरे प्यार बन गए। और प्यार... प्यार को धोखा नहीं दिया जा सकता।"

रुद्र ने फोन पर नजर डाली। सबूत उसके सामने था। सफेद पृष्ठभूमि पर काले अक्षर। मायरा ने उनके लिए जोखिम उठाया था। अपनी मां के खिलाफ गई थी।

उसका सारा क्रोध, सारा दर्द, सारी उलझन—पल भर में बर्फ की तरह पिघल गई। उसकी आँखों से चुपचाप, बिना सिसके, आँसू बहने लगे। वह तब तक रोता रहा जब तक उसका पूरा शरीर काँपने नहीं लगा। यह न तो डर का रोना था, न ही थकावट का, बल्कि एक गहरी, शुद्ध करने वाली राहत का रोना था।

मायरा ने उसे अपनी बाहों में भर लिया। "सब ठीक हो जाएगा। मैं यहाँ हूँ। मैं हमेशा तुम्हारे साथ थी।"

"मैं डरा हुआ था," रुद्र ने मायरा के कंधे से दबी हुई आवाज़ में कहा। "मुझे डर था कि तुम्हारा प्यार... भी इस साजिश का हिस्सा था। कि पहली बार जब मैंने किसी से इतना प्यार किया... वह भी झूठ था। मैं उस सच्चाई को बर्दाश्त नहीं कर सकता था।"

"यही सच है," मायरा ने उसके बालों में उंगलियां फेरते हुए कहा। "मेरे प्यार। बस इतना ही।"

कमरे के दूसरे कोने में आलोक और रिया सोफे पर बैठे थे। डीन द्वारा उजागर की गई सच्चाई ने रिया को एक अजीब सी शांति प्रदान की थी। उसका चेहरा उदास था, लेकिन टूटा हुआ नहीं था।

"तुम्हारे चाचा," आलोक ने धीरे से कहा। "वो... वो शांति से चले गए। डीन ने सही कहा था ना? एनोमली एक्स ने उनकी चेतना को संरक्षित रखा। वो गुफा की ऊर्जा का हिस्सा हैं।"

"मुझे पता है," रिया ने कहा। "लेकिन मैं... मैं उसके आखिरी पलों के बारे में जानना

चाहती हूँ। क्या वह डरा हुआ था? क्या उसे दर्द महसूस हुआ?"
आलोक हिचकिचाया। उसकी नई क्षमता उसे अभिशाप जैसी लग रही थी। हर स्पर्श उसे किसी की यादों, किसी के दर्द में डुबो देता था। लेकिन शायद... शायद इस बार यह एक आशीर्वाद साबित हो।
"क्या आप... क्या आप चाहेंगे कि मैं देखूं?" उसने पूछा।
रिया ने उसकी ओर देखा। "क्या तुम ऐसा कर सकते हो?"
मुझे नहीं पता। लेकिन अगर आपके चाचा की कोई भी चीज यहाँ है... कुछ भी हो...
रिया ने अपने बैग से एक पुराना चमड़े का बटुआ निकाला। "यह उसका है। माँ ने मुझे दिया था। इसमें उसका कॉलेज आईडी कार्ड और एक छोटी सी तस्वीर है।"
उसने बटुआ खोला। अंदर एक फटी हुई काली-सफेद तस्वीर थी—जिसमें युवा रोहित सिंह एक महिला के साथ हंस रहे थे, संभवतः वह उनकी पत्नी थीं।
आलोक ने गहरी सांस ली। उसने तस्वीर को छूने से पहले रिया का हाथ पकड़ा। "मैं यह तुम्हारे लिए कर रहा हूँ।"
उसकी उंगलियां तस्वीर को छू गईं।
और दुनिया बदल गई।
'''
"आलोक की आंखों के सामने एक धुंधली रोशनी घूमने लगी। फिर आवाजें सुनाई देने लगीं—पहले दूर से, फिर पास से।"
"वह एक संकरी, नम गुफा में था। हवा में मिट्टी और कुछ धातु की गंध थी। उसके सामने रोहित सिंह खड़ा था, लेकिन बूढ़ा नहीं, बल्कि जवान, शायद चालीस के आसपास। उसके हाथ में एक डायरी थी और वह कुछ लिख रहा था।"
"“आज सब्जेक्ट 7 फिर से शांत था,” रोहित ने वैज्ञानिक की जिज्ञासा भरी आवाज़ में बुदबुदाते हुए कहा। “लेकिन नमूने लेते समय, उसकी आँखें... वे अब इंसान जैसी नहीं थीं। क्या हम कुछ गलत कर रहे हैं?”
अचानक गुफा के दूसरे छोर से कदमों की आहट सुनाई दी। रोहित ने डायरी छुपा दी। कुछ लोग सैन्य वर्दी में अंदर आए। उनका नेतृत्व एक मजबूत कद-काठी वाला, सफेद बालों वाला आदमी कर रहा था। चांसलर देवराज ठाकुर।
"डॉ. सिंह," चांसलर ने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन उनकी आँखों में कोई स्नेह नहीं था। "प्रगति?"

"बहुत धीमी गति से, महोदय। विसंगति X... यह अनुमान से कहीं अधिक जटिल है। यह केवल शारीरिक परिवर्तन ही नहीं लाती, बल्कि भावनात्मक और मानसिक स्तर पर भी प्रभाव डालती है।"

"हमें तेज़ी चाहिए," चांसलर ने कहा, उनकी आवाज़ में एक खतरनाक तीखापन आ गया। "मेरे पास समय नहीं है। कैंसर... यह तेज़ी से फैल रहा है। हमें शुद्ध मेजबान चाहिए। क्या उन छात्रों की सूची तैयार है?"

रोहित ने हिचकिचाते हुए सिर हिलाया। "जी हाँ, लेकिन महोदय... वे बच्चे हैं। हम उन पर प्रयोग नहीं कर सकते।"

"कुलपति ने तेजी से आगे बढ़ते हुए रोहित के बिल्कुल करीब आकर कहा, "डॉक्टर साहब, ये बच्चे नहीं हैं। ये मानवता का भविष्य हैं। और मैं उस भविष्य को सुरक्षित करूंगा, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े।""

"उसने अपने आदमियों की ओर मुड़कर देखा। "इन्हें ले आओ। कल रात।""

"रोहित की आंखों में भय था। उसने चांसलर के हाथों को कांपते देखा—बीमारी का संकेत। भय... चांसलर मृत्यु के भय से पागल हो रहे थे।"

जब सब चले गए, तो रोहित ने अपनी डायरी फिर से निकाली। वह तेजी से लिखने लगा। "कुलपति का डर उसे अंधा कर रहा है। वह नैतिक सीमाओं को पार करने को तैयार है। मुझे कुछ करना होगा। मुझे इन बच्चों को चेतावनी देनी होगी।"

"उसने अपनी जेब से एक छोटी पेन ड्राइव निकाली, जिसमें सभी डेटा का बैकअप था। फिर उसने एक पुराने, हाथ से बने नक्शे पर एक जगह को घेरा - वही बंकर जहां से यह सब शुरू हुआ था।"

"तभी एक और आवाज आई। रोहित ने झटपट पेन ड्राइव और नक्शा एक दरार में छिपा दिया। दो आदमी वापस आ गए थे।"

""डॉक्टर साहब, चांसलर को लगता है कि आप अब भरोसेमंद नहीं रहे," एक ने कहा।"

"रोहित पीछे हटने की कोशिश कर रहा था, लेकिन दूसरे आदमी ने उसका हाथ पकड़ लिया। "तुम्हें थोड़ा आराम करना चाहिए।""

"वे उसे गुफा के अंधेरे हिस्से की ओर ले जाने लगे। रोहित ने कोई विरोध नहीं किया। उसके चेहरे पर डर नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प था। उसने उस दरार की ओर देखा जहाँ उसने सबूत छिपाए थे। फिर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।"

"आखिरी ख्याल उसके मन में आया—उसकी पत्नी की हंसी, उसकी बेटी की शादी का दिन जिसे वह कभी नहीं देख पाएगा... और यह उम्मीद कि कोई उसके छोड़े गए सुरागों को ढूंढ लेगा।"

"मुझे माफ कर दो, प्रिया," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "मैं तुम्हारे पास आने की कोशिश करूंगा।"

'''

आलोक अचानक वर्तमान में लौट आया। उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं और उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे।

"आलोक?" रिया ने चिंता से उसका हाथ पकड़ते हुए पूछा।

"वो... वो डरा हुआ नहीं था," आलोक ने रिया की आँखों में देखते हुए कहा। "आखिरी पलों में भी नहीं। वो दृढ़ था। उसने हमारे लिए सबूत छुपाए... उसने हमें बचाने की कोशिश की। और उसका आखिरी विचार... तुम्हारी चाची के लिए प्यार और तुम्हारे लिए उम्मीद था।"

रिया ने कांपती हुई गहरी सांस ली। फिर उसने आलोक को गले लगाया और इस बार उसकी आंखों से आंसू बहने लगे—दबा हुआ गहरा दुख अब बाहर निकल आया। लेकिन दुख के साथ-साथ एक अजीब सी शांति भी थी। अब उसे पता चल गया था। उसके चाचा एक हीरो थे।

"धन्यवाद," उसने आलोक के कान में फुसफुसाते हुए कहा। "आपने मुझे वह दिया जिसकी मुझे वर्षों से तलाश थी - शांति।"

आलोक ने उसे और कसकर गले लगा लिया। उसकी यह क्षमता अभिशाप नहीं, बल्कि वरदान थी। उसने किसी का दर्द कम किया था। किसी के दिल को हल्का किया था।

कमरे के दूसरे छोर पर, कबीर और मयंक डीन के साथ मेज पर बैठे मीरा शर्मा के नोट्स पढ़ रहे थे।

"यहाँ देखो," मयंक ने एक पृष्ठ की ओर इशारा करते हुए कहा। "'एनोमली एक्स आघात-आधारित विकास पर काम करता है। लेकिन यह केवल नकारात्मक आघात से ही नहीं, बल्कि सकारात्मक भावनाओं से भी प्रभावित होता है। जिस प्रकार भय शक्ति बन सकता है, उसी प्रकार प्रेम एक ढाल बन सकता है।'"

"यही तो फ़्रीक्वेंसी जनरेटर का आधार है," डीन ने छोटा सा उपकरण उठाते हुए कहा।

"मीरा ने पाया कि निःशर्त प्रेम, आनंद की शुद्ध भावनाएँ—ये एक ऐसी फ़्रीक्वेंसी उत्पन्न करती हैं जो एनोमली X के साथ असंगत है। जैसे कोई शारीरिक एलर्जी हो।"
कबीर ने उस उपकरण को देखा। "तो हमें बस इसे चालू करना है और चांसलर को हराना है?"
"यह इतना आसान नहीं है," डीन ने कहा। "इस उपकरण को एक भावनात्मक स्रोत की आवश्यकता है - एक सच्चा, गहरा प्यार। दिखावटी नहीं, बल्कि शुद्ध। जैसे एक माँ पहली बार अपने बच्चे को गले लगाती है। जैसे दो दिल सच्चे मिलन का अनुभव करते हैं।"
उसने रुद्र और मायरा की ओर देखा, फिर आलोक और रिया की ओर। "आप सब में वह क्षमता है। आप सबके बीच का बंधन... वह हमारा हथियार बन सकता है।"
"लेकिन मेरी भूमिका क्या है?" कबीर ने सपाट स्वर में पूछा। "मेरी क्षमता तो बस दर्द सहने की है। मैं कैसे लड़ूंगा?"
डीन ने उसे गौर से देखा। "कबीर, तुम्हारी क्षमता तुम्हारे चरित्र से आती है। तुम हमेशा से दूसरों के लिए खड़े रहने वाले इंसान रहे हो, चाहे तुम्हें कितना भी दुख क्यों न हो। यही ताकत है। और तुम्हारा गुस्सा... अब यह ईंधन नहीं, बल्कि एक हथियार है। तुम्हें बस इसे नियंत्रित करना सीखना होगा।"
कबीर ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। वह बृजेश की माँ का रोता हुआ चेहरा नहीं भूल पा रहा था। उसने वादा किया था, "मैं इसे संभाल लूँगा। चाहे कुछ भी हो जाए।"
मयंक ने अपना लैपटॉप खोला। "मैंने चांसलर की कंपनी संरचना पर नज़र रखना शुरू कर दिया है। उनकी एक निजी सुरक्षा कंपनी है - 'अश्वत्थामा सिक्योरिटी सॉल्यूशंस'। उनके अधिकांश कर्मचारी पूर्व-सेना कमांडो हैं। वे अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं, और संभवतः उन्हें एनोमली एक्स का हल्का-फुल्का अनुभव है।"
"इसका मतलब है कि वे सामान्य सैनिकों से अधिक मजबूत होंगे," रुद्र ने कहा, जो अब मायरा के साथ मेज पर आ गया था।
"हां, लेकिन शायद हम उतने मजबूत नहीं हैं जितना हम हो सकते हैं," मायरा ने कहा। "हमें डर नहीं है। हम एक-दूसरे के लिए लड़ रहे हैं।"
डीन मुस्कुराते हुए देख रही थी। यही वो आग थी जिसकी उसे उम्मीद थी। "ठीक है। तो योजना ये है: हम गुफा में वापस चलते हैं। मुझे लगता है कि चांसलर हमें वहाँ बुलाएँगे। वो मीरा के पास जाना चाहेंगे—एनोमली एक्स के स्रोत तक।"

"और हम क्या करेंगे?" रिया ने पूछा।
"सबसे पहले, हम मीरा से संपर्क करने की कोशिश करते हैं। वह एनोमली एक्स से जुड़ी हुई है। वह हमें बता सकती है कि चांसलर क्या करना चाहता है। दूसरा, हम इस फ्रीक्वेंसी जनरेटर को सक्रिय करते हैं। लेकिन इसके लिए हमें एक भावनात्मक चरम सीमा की आवश्यकता है—एक ऐसा क्षण जब हमारा प्यार सबसे शुद्ध, सबसे तीव्र हो।"
"यह जोखिम भरा है," मयंक ने कहा। "अगर हम भावनात्मक रूप से असंतुलित हो जाते हैं, डर या गुस्से से भर जाते हैं, तो यह उपकरण उल्टा पड़ सकता है। इससे एनोमली एक्स और भी शक्तिशाली हो सकता है।"
"इसलिए हमें एक-दूसरे को संतुलित करना होगा," आलोक ने कहा। "जब रुद्र को गुस्सा आता है, तो मायरा उसे शांत करती है। जब मैं भावनाओं में डूबने लगता हूँ, तो रिया मुझे संभाल लेती है। जब कबीर का दर्द असहनीय हो जाता है, तो हम सब उसका सहारा बनते हैं।"
यह एक सरल योजना थी, लेकिन वे सभी जानते थे कि यह कितनी कठिन होगी। युद्ध के मैदान में भावनाएं बेकाबू हो जाती हैं।
"एक और बात," डीन ने कहा, और उसकी आवाज़ गंभीर हो गई। "मैं आपके साथ नहीं आ पाऊंगी।"
"क्यों नहीं?" मायरा ने तुरंत पूछा।
"क्योंकि चांसलर मुझे ढूंढ रहे होंगे। अगर मैं आपके साथ गया, तो उन्हें तुरंत पता चल जाएगा। मैं यहीं रुकूंगा और ध्यान भटकाऊंगा। मैं मीडिया को कुछ सुराग दूंगा, ताकि उनका ध्यान यहीं लगा रहे।"
"लेकिन यह तो खतरनाक है!" मायरा ने विरोध किया।
"हर चीज़ खतरनाक है, बच्ची," डीन ने मायरा के गाल पर हाथ फेरते हुए कहा। "लेकिन कभी-कभी, सबसे बड़ा बलिदान वही करता है जो युद्ध में नहीं जाता।"
उसने सबकी ओर देखा। "आप सबको आज रात यहीं रुकना होगा। आराम करो। बातें करो। अपने संबंधों को मजबूत करो। कल रात, सब कुछ खत्म हो जाएगा - चाहे जैसे भी हो।"
रात गहरी होती जा रही थी। डीन ने उनके लिए खाना बनाया—साधारण दाल और चावल, लेकिन सबको लगा कि यह शायद उनके जीवन का सबसे स्वादिष्ट भोजन था।

खाने के बाद, वे सब बैठक कक्ष में इकट्ठा हुए। न टीवी, न फोन—बस वे और उनके विचार।

कबीर अचानक बोलने लगा। "मैं बृजेश से पहली बार कॉलेज में मिला था। मैं बहुत गुस्सैल रहता था। मैं सबसे लड़ता था। एक दिन मेरी तीन लड़कों से लड़ाई हो गई। वे मुझे पीट रहे थे, और बृजेश वहाँ से गुज़र रहा था। उसने मेरी मदद नहीं की।"

"उसने नहीं किया?" मयंक ने पूछा।

नहीं। वह बस खड़ा देखता रहा। जब वे चले गए, तो वह आया और बोला, 'अगर तुम्हारा गुस्सा तुम पर हावी न होता तो तुम जीत सकते थे।' मैंने उसे मारने की कोशिश की। लेकिन उसने आसानी से मेरी मुट्ठी पकड़ ली। और बोला, 'मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ कि इस गुस्से का इस्तेमाल कैसे करना है।'

कबीर मुस्कुराया, एक दुर्लभ, कोमल मुस्कान। "उन्होंने मुझे मार्शल आर्ट सिखाया। सिर्फ़ लड़ना ही नहीं, बल्कि साँस लेना, ध्यान करना भी। उन्होंने मुझे इंसान बनाया। और मैं... मैं उनकी रक्षा नहीं कर सका।"

"तुमने किया," रुद्र ने कहा। "तुमने उसकी याद को ज़िंदा रखा। तुम उसकी माँ के साथ खड़ी रहीं। और अब तुम उसके नाम पर लड़ोगी। यही सच्ची रक्षा है।"

एक-एक करके सभी ने अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाईं। मयंक ने बताया कि कैसे उसने अपने माता-पिता से दूरी बना ली थी, क्योंकि उसे डर था कि उसकी हैकिंग की वजह से उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ेगा। रिया को अपने चाचा के साथ बिताए गर्मी के दिन याद आए, जब वे उसे पुरातात्विक स्थलों पर ले जाया करते थे। आलोक ने अपने अकेलेपन के बारे में बताया, कि कैसे वह हमेशा दूसरों की भावनाओं को महसूस करता था लेकिन अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाता था।

और रुद्र और मायरा ने अपनी प्रेम कहानी सुनाई—छोटी-छोटी बातें, जैसे पहली बार जब उनके हाथ एक-दूसरे को छूए, पहली बार जब वे बारिश में एक साथ दौड़े, पहली बार जब वे लड़े और फिर सुलह कर ली।

यह बातचीत उनके लिए एक तरह की थेरेपी थी। साझा की गई हर याद, स्वीकार किया गया हर डर, उनके बीच के बंधन को मजबूत कर रहा था।

आधी रात के करीब, डीन ने उन्हें सोने को कहा। घर में दो शयनकक्ष थे। लड़कों ने एक कमरा लिया, लड़कियों ने दूसरा। लेकिन किसी को नींद नहीं आई। रुद्र की आँखें खुली थीं, वह छत को देख रहा था। वह अपने भीतर अपनी शक्ति को एक बहती नदी

की तरह महसूस कर रहा था। उसने अपनी हथेली को देखा। उस शक्ति को नियंत्रित करने की कल्पना की।

"सो जाओ, रुद्र," कबीर की आवाज अंधेरे से आई। "कल हमें अपनी ताकत की जरूरत होगी।"

"तुम्हें भी नींद नहीं आ रही?" रुद्र ने पूछा।

"नहीं। लेकिन मैं आराम कर रहा हूँ। इतना ही काफी है।"

दूसरे कमरे में मायरा और रिया एक ही बिस्तर पर थीं।

"क्या तुम्हें लगता है कि हम जीत सकते हैं?" रिया ने फुसफुसाते हुए कहा।

"हमें करना ही होगा," मायरा ने कहा। "मैं रुद्र को दोबारा नहीं खो सकती। और तुम आलोक को नहीं खो सकते। हम सब एक परिवार बन गए हैं। और परिवार की रक्षा की जाती है।"

रिया ने मायरा का हाथ पकड़ा। "तुम्हारी माँ... वो बहुत बहादुर हैं।"

"हां," मायरा की आवाज भर्रा गई। "और मैं उसे गर्व महसूस कराऊंगी।"

सुबह हो गई। एक सामान्य सुबह, बाकी दिनों की तरह। लेकिन हवा में एक तनाव था, एक प्रतीक्षा थी।

डीन ने नाश्ता बनाया। सबने चुपचाप खाया। किसी ने कुछ नहीं कहा क्योंकि सब कुछ कहा जा चुका था।

अंततः, तैयारी का समय आ गया था। उन्होंने सादे, गहरे रंग के कपड़े पहने जो गुफा की मिट्टी में आसानी से घुलमिल जाएं। डीन ने उन्हें छोटे-छोटे बैग दिए जिनमें पानी की बोतलें, प्राथमिक चिकित्सा किट और फ्रीक्वेंसी जनरेटर थे।

"यह लो," डीन ने मायरा को क्रिस्टल पेंडेंट वाली एक छोटी चांदी की चेन दी। "यह मीरा की है। जब तुम उससे मिलोगी, तो यह तुम्हें पहचान लेगी। उसके साथ जो कुछ भी हुआ हो, वह दिल से मेरी बहन है। इसे उसे दे देना।"

मायरा ने गले में चेन पहन रखी थी। क्रिस्टल गर्म था।

डीन ने उन सभी को गले लगाया। जब वह रुद्र के पास आई, तो उसने उसके कंधों पर हाथ रखा। "उसकी रक्षा करना। और अपनी भी रक्षा करना।"

"मैं करूँगा," रुद्र ने वादा किया।

अंततः, वह मायरा के सामने खड़ी हुई। उनकी आँखों ने बहुत कुछ कह दिया—माफी, प्यार, गर्व, भय। शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं थी। डीन ने उसके माथे पर चुंबन

किया और फिर दरवाजा खोल दिया।
बाहर सुबह की ठंडी हवा चल रही थी। आसमान बादलों से ढका हुआ था, मानो बारिश होने वाली हो।
"हम जा रहे हैं," रुद्र ने कहा।
और वे बाहर निकल पड़े—छह दोस्त, छह योद्धा, छह दिल जो अब एक साथ धड़क रहे थे। पीछे मुड़कर देखा तो डीन अभी भी दरवाजे पर एक मूर्ति की तरह खड़ा था, उन्हें जाते हुए देख रहा था।
जंगल का रास्ता अब जाना-पहचाना सा लग रहा था। लेकिन इस बार डर कम था और दृढ़ संकल्प ज्यादा था।
आधे रास्ते में आलोक अचानक रुक गया और एक पेड़ को छुआ। उसकी आँखों में चमक आ गई। "वह... वह यहाँ था। बृजेश। वह इस रास्ते से आया था। उसने इस पेड़ को छुआ, यह सोचकर कि शायद यह आखिरी बार हो जब वह किसी जीवित चीज़ को छू रहा हो।"
"उसे कैसा महसूस हुआ?" कबीर ने कर्कश आवाज में पूछा।
"डर नहीं," आलोक ने मुस्कुराते हुए कहा। "जिज्ञासा। वह जानना चाहता था कि यह अनोखी चीज़ X क्या है। वह एक खोजी था, एक साहसी था।"
कबीर ने सिर हिलाया और आगे बढ़ गया। अब उसके कदम पहले से ज़्यादा मज़बूत थे।
गुफा का मुँह अब उनके सामने था—एक अँधेरा, खुला मुँह जो उन्हें निगलने के लिए तैयार लग रहा था। रुद्र ने सबके चेहरों की ओर देखा। कोई भी पीछे नहीं हट रहा था। उन्होंने कहा, "याद रखना, हम एक-दूसरे के लिए हैं। हमारा प्यार ही हमारी ताकत है और हमारा बंधन ही हमारी ढाल है।"
मायरा ने आलोक का हाथ पकड़ रखा था। रिया ने आलोक का हाथ थाम रखा था। कबीर और मयंक उनके पीछे खड़े थे, उनके कंधे एक-दूसरे से छू रहे थे।
"चलो चलते हैं," रुद्र ने कहा।
और वे अपने भय, अपनी आशा और अपने प्रेम को साथ लेकर अंधेरे में विलीन हो गए। उनके पीछे दुनिया हमेशा की तरह चलती रही। लेकिन उनकी दुनिया अब यह गुफा थी। और उनका युद्ध अब शुरू हो चुका था।
फाइल नंबर 2009 बंद होने ही वाली थी। लेकिन उनकी अपनी फाइल—उनकी

कहानी—अपने सबसे महत्वपूर्ण अध्याय में प्रवेश कर रही थी।

अध्याय 25: दृढ़ संकल्प का उदय

गुफा के अंधेरे ने उन्हें पूरी तरह निगल लिया था। उनकी टॉर्च की रोशनी हवा में तैरते धूल के कणों को चीर रही थी, लेकिन अंधकार इतना गहरा था कि मानो वह प्रकाश को भी निगल रहा हो। हवा नम थी, जिसमें एक अजीब सी गंध थी—पुरानी मिट्टी, धातु और किसी मीठी-सी सड़ी हुई चीज़ की।

रुद्र मुट्ठी भींचे आगे बढ़ा। हर कदम के साथ, उसे अपने अंदर एक ऐसी शक्ति का एहसास हो रहा था, जैसे कोई जंगली जानवर अपने पिंजरे में छटपटा रहा हो। उसने पीछे मुड़कर देखा—मायरा ठीक उसके पीछे थी, उसे उसकी सांसें सुनाई दे रही थीं। आलोक और रिया हाथ में हाथ डाले चल रहे थे। मयंक अपने डिवाइस की स्क्रीन की नीली रोशनी में मग्न था। और कबीर...

कबीर सबसे पीछे चल रहा था। उसकी चाल भारी थी, मानो हर कदम के लिए उसे बहुत मेहनत करनी पड़ रही हो। लेकिन यह भारीपन शारीरिक नहीं, मानसिक था। उसकी आँखें आगे देख रही थीं, पर उसकी निगाह कहीं और थी—बृजेश के घर की दहलीज पर, जहाँ उसकी माँ ने रोते हुए कहा था, "मेरा बेटा वापस नहीं आया।"

"यहीं रुको," मयंक अचानक रुकते हुए बोला। उसने अपना उपकरण उठाया। "थर्मल सिग्नेचर। तीन... नहीं, चार शव। सौ मीटर आगे।"

"कुलपति के आदमी?" मायरा ने फुसफुसाते हुए कहा।

"शायद। लेकिन वे हिल नहीं रहे हैं। वे स्थिर हैं।"

रुद्र ने हाथ से इशारा किया—ध्यान से आगे बढ़ो। वे एक मोड़ पर पहुँचे और वहाँ का नज़ारा देखकर स्तब्ध रह गए।

गुफा का यह हिस्सा चौड़ा था, और दीवारों पर नीले-हरे रंग के क्रिस्टल उगे हुए थे, जिनसे हल्की-हल्की रोशनी निकल रही थी। उनकी रोशनी में चार आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं—मानव जैसी, लेकिन विकृत। वे सिर झुकाए खड़ी थीं, मानो सो रही हों। उनकी त्वचा पपड़ीदार थी, और कुछ के... हाथ नहीं, बल्कि मांसल, नुकीले अंग थे।

"2009 के पीड़ित," आलोक ने सांस रोकते हुए कहा। "एनोमली एक्स ने उन्हें बदल दिया।"

"क्या वे... जीवित हैं?" रिया ने पूछा।
तभी, एक आकृति ने अपना सिर थोड़ा सा हिलाया। हवा में एक धीमी, कराहने जैसी आवाज़ गूंजी। "हमें बचाओ..."
कबीर का शरीर तनावग्रस्त हो गया। वह आवाज़... जानी-पहचानी सी लग रही थी। बिना सोचे समझे उसने एक कदम आगे बढ़ाया।
"कबीर, नहीं!" रुद्र ने चेतावनी दी, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।
जैसे ही कबीर उनके दस फीट के करीब आया, चारों आकृतियों ने एक साथ अपने सिर उठाए। उनकी आँखें खुलीं—काली, चमकदार, बिना पुतलियों वाली। वे जीवित थे, लेकिन अब मनुष्य नहीं थे।
एक ने तेज़ी से हमला किया। उसकी विकृत भुजा कबीर की ओर बढ़ी, नुकीले पंजे चमक रहे थे। कबीर ने बचने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत तेज़ था। पंजों ने उसके कंधे पर खरोंचें मारीं।
"आह!" कबीर दर्द से कराहते हुए बोला।
लेकिन तभी कुछ अजीब हुआ। दर्द तो था—तेज, चुभने वाला—लेकिन साथ ही एक ठंडक भी थी। मानो उसका मन पीड़ा से अलग हो गया हो। उसे अपनी नसों में कुछ दौड़ता हुआ महसूस हुआ—गर्म, तेज। एड्रेनालाईन, लेकिन नियंत्रित। एक शांत क्रोध।
उसने अपने घाव को देखा। खून बह रहा था, लेकिन वह महसूस कर सकता था कि उसकी मांसपेशियां सिकुड़ रही थीं, मानो खून को रोकने की कोशिश कर रही हों।
उसने अपना सिर उठाया। वह प्राणी उसके सामने खड़ा था, फिर से हमला करने के लिए तैयार।
फिर रुद्र आगे बढ़ा। उसने पास ही पड़ी एक बड़ी चट्टान उठाई—एक ऐसी चट्टान जिसे दो आदमी मिलकर भी नहीं हिला सकते थे—और उसे उस प्राणी पर फेंक दिया।
चट्टान सीधे उस पर लगी और प्राणी पीछे गिर पड़ा।
"पीछे हटो!" रुद्र चिल्लाया।
लेकिन कबीर पीछे नहीं हटे। वे आगे बढ़े, उस प्राणी की ओर जो अब ज़मीन पर तड़प रहा था। उन्होंने उसके चेहरे को देखा—विकृत, फिर भी कुछ हद तक मानवीय। उन काली आँखों में... भय था।
"तुम... तुम कौन हो?" कबीर ने पूछा।
उस प्राणी के होंठ हिले। "मैं... अमित हूँ। मैं अमित हूँ।"

अमित। कबीर को याद आया—2009 में लापता हुए छात्रों की सूची में से एक नाम। अमित वर्मा। मैकेनिकल इंजीनियरिंग का छात्र।
"वे आपको यहां कैसे लाए?" आलोक ने हिचकिचाते हुए आगे बढ़ते हुए पूछा।
"प्रयोग... वादा किया गया था... कि यह हमें बेहतर बनाएगा..." अमित की आवाज़ भर्रा रही थी। "लेकिन यह... यह दर्द... हमेशा के लिए..."
उसका शरीर कांप उठा। बाकी तीनों जीव भी कराह उठे, लेकिन वे आगे नहीं बढ़े। शायद एनोमली एक्स ने अपने भीतर कुछ स्मृति, कुछ चेतना बचा रखी थी।
कबीर घुटनों के बल बैठा और अमित का हाथ पकड़ लिया। उसका हाथ ठंडा और खुरदुरा था। "मुझे खेद है। हम तुम्हें बचा नहीं सके।"
अमित ने कबीर की आँखों में देखा। "बाकी लोगों को बचाओ... इसे रोको..."
उसकी आँखें बंद हो गईं। उसका शरीर स्थिर हो गया, हालाँकि वह अभी भी साँस ले रहा था। वह जीवित था, लेकिन उस अमानवीय अवस्था में फँसा हुआ था।
कबीर खड़ा हो गया। उसके कंधे पर लगा घाव सूजने लगा था, लेकिन दर्द अब कम और दबा हुआ सा लग रहा था। उसने अपनी कमीज़ से एक पट्टी फाड़ी और घाव पर बांध दी।
"हमें आगे बढ़ते रहना होगा," मायरा ने दया और चिंता से भरी आवाज़ में कहा। "ये... ये लोग अभी हमारी मदद नहीं कर सकते।"
कबीर ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा, "लेकिन हम उनकी मदद कर सकते हैं। इस सब को खत्म करके।"
वे विकृत आकृतियों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़े। गुफा गहरी होती गई और हवा भारी होती गई। अब वहाँ और भी क्रिस्टल थे, जिनकी चमक एक रहस्यमय प्रकाश बिखेर रही थी।
एक घंटे चलने के बाद, मयंक ने रुकने का इशारा किया। "यहाँ से गुफा दो भागों में बँट जाती है। बायाँ रास्ता नीचे की ओर जाता है—शायद उल्कापिंड की गहराई तक। दाएँ रास्ते पर... बिजली के तारों के निशान हैं। शायद यह कोई बेस कैंप रहा होगा।"
"कुलपति कहाँ होंगे?" रुद्र ने पूछा।
आलोक ने कहा, "मरने वाला व्यक्ति सीधे स्रोत की ओर जाएगा। वह नीचे चला जाएगा।"
"लेकिन उसकी सेना हमसे ऊपर होगी," मायरा ने कहा। "हमें दोनों से निपटना होगा।"

कबीर ने बाईं ओर के रास्ते की ओर देखा, जो घोर अंधकार में उतर रहा था। फिर उसने दाईं ओर के रास्ते की ओर देखा, जहाँ कृत्रिम रोशनी टिमटिमा रही थी। "हमें अलग होना पड़ेगा।"

"नहीं," रुद्र ने तुरंत कहा। "हम साथ रहेंगे। डीन ने कहा था - हमारी ताकत साथ रहने में है।"

कबीर ने तर्क दिया, "लेकिन अगर हम सब एक तरफ जाएं और दूसरी तरफ से हमला हो जाए तो? हम चारों तरफ से घिर जाएंगे।"

उसका तर्क सही था। रुद्र ने मायरा की ओर देखा, जो अपनी माँ के नोट्स के पन्ने पलट रही थी।

"माँ ने इस जगह का नक्शा बनाया था," मायरा ने कहा। "दोनों रास्ते आखिरकार एक ही जगह पर मिलते हैं—एक बड़े हॉल में जहाँ उल्कापिंड है। लेकिन बीच में... दाहिने रास्ते पर प्रयोगशालाएँ और बैरकें हैं।"

"तो चांसलर की सेना वहाँ होगी," मयंक ने कहा। "अगर हम सीधे नीचे जाते हैं, तो हमें उनसे बचना होगा। अगर हम दाईं ओर जाते हैं, तो हमें उनका सामना करना होगा।"

सब लोग चुप हो गए। यह एक असंभव विकल्प था।

तब कबीर बोला, "मैं दाईं ओर जाऊंगा।"

सबने उसकी तरफ देखा। "अकेले?" रिया ने हैरानी से पूछा।

"जी हां। मैं उन्हें व्यस्त रखूंगा। आप सब नीचे जाइए, चांसलर से बात कीजिए।"

"यह तो आत्महत्या है, कबीर," रुद्र ने चिंता भरे स्वर में कहा। "तुम अकेले पूरी सेना का सामना नहीं कर सकते।"

कबीर ने अपना घाव दिखाया, जहाँ से खून बहना बंद हो चुका था। "मेरी क्षमता दर्द सहने की है। मैं चाहे कितना भी घायल हो जाऊं, लड़ सकता हूँ। और..." वह रुका, "मैंने बृजेश की माँ से वादा किया था कि मैं इसे खत्म कर दूंगा। यही तरीका है।"

आलोक ने कबीर की ओर देखा। उसकी आँखों में एक अजीब सा दृश्य कौंधा—कबीर चारों ओर से घिरा हुआ, लड़ रहा था, लेकिन हार नहीं मान रहा था। यह भविष्य नहीं, बल्कि एक संभावना थी। फिर भी इसमें एक ऐसा दृढ़ संकल्प था जो अटूट प्रतीत होता था।

"हम आपको अकेला नहीं छोड़ सकते," मायरा ने कहा।

कबीर ने कहा, "तुम्हें ऐसा करना ही होगा। क्योंकि अगर हम सब मिलकर लड़ेंगे और चांसलर एनोमली एक्स का इस्तेमाल कर लेगा, तो सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा। हमें उसे रोकना ही होगा। और इसके लिए किसी को बलिदान देना होगा।"
वह शब्द हवा में गूंज रहा था। 'बलिदान'।
रुद्र कबीर के पास गया और उसके कंधों पर हाथ रखकर बोला, "तुम्हारे बिना... हम अधूरे हैं।"
कबीर भावुक होते हुए बोले, "तुम सबके बिना मैं अधूरा हूँ। लेकिन कभी-कभी अधूरा रहना ज़रूरी होता है ताकि बाकी सब कुछ पूरा हो सके।"
उन्होंने अपना बैग खोला और बृजेश की एक तस्वीर निकाली—कॉलेज के पहले दिन की, जिसमें दोनों मुस्कुरा रहे थे। "यह तस्वीर हमेशा मेरे साथ रहेगी। और आप सब... आप हमेशा मेरे साथ हैं।"
अब कोई तर्क बाकी नहीं था। सच्चाई यह थी कि कबीर सही थे। उनके पास समय नहीं था, और चांसलर की सेना को रोकने के लिए किसी को पीछे रुकना ही था।
"ठीक है," रुद्र ने भारी आवाज़ में कहा। "लेकिन एक शर्त पर। तुम मरने की कोशिश नहीं करोगे। तुम बस उन्हें रोके रखोगे और फिर वापस आ जाओगे। हम तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।"
कबीर ने मुस्कुराने की कोशिश की। "वादा करता हूँ।"
उन्होंने उनके बैग तलाशे। उन्होंने कबीर को कुछ अतिरिक्त राशन, एक पानी की बोतल दी और मयंक ने उसे एक छोटा संचार यंत्र दिया। "इसकी रेंज सीमित है, लेकिन अगर कुछ भी होता है, तो सिग्नल भेजना।"
कबीर ने उसे ले लिया। फिर, एक-एक करके सबने उसे गले लगाया। जब आलोक ने उसे छुआ, तो उसे एक झलक दिखाई दी—कबीर बृजेश के घर के दरवाजे पर खड़ा था, उसकी माँ उसे चाय दे रही थी, और कबीर की आँखों में हीरे से भी अधिक दृढ़ संकल्प था।
"तुम्हारी माँ... उसे तुम पर गर्व होगा," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा।
कबीर ने नम आंखों से सिर हिलाया। "उसे बता देना... मैंने कोशिश की।"
वे अलग हो गए। कबीर दाहिनी ओर के रास्ते पर चल पड़ा, उसकी मशाल की रोशनी धीरे-धीरे अंधेरे में गायब हो गई। रुद्र, मायरा, आलोक, रिया और मयंक बाईं ओर के गहरे रास्ते की ओर मुड़ गए। हर कदम के साथ उनके दिल भारी होते जा रहे थे,

लेकिन उन्हें आगे बढ़ना ही था।

'''

कबीर अकेले चल रहा था। रास्ता ऊपर की ओर ढलान वाला लग रहा था, और जल्द ही उसने दीवारों के सहारे बिजली के तार बिछे देखे। फिर कुछ आवाज़ें सुनाई देने लगीं —लोगों के बात करने की, मशीनों के चलने की।

उसने अपनी टॉर्च बुझाई और क्रिस्टलों की हल्की रोशनी में आगे बढ़ा। रास्ता एक दरवाजे पर जाकर खुला—एक धातु का दरवाजा, जो थोड़ा सा खुला हुआ था। अंदर झाँककर उसने देखा।

यह एक बड़ा कमरा था, जो किसी अस्थायी प्रयोगशाला जैसा लग रहा था। मेजों पर माइक्रोस्कोप, रसायन और कंप्यूटर स्क्रीन रखे थे। लगभग दस आदमी वहाँ थे—सैन्य वर्दी में, हथियारों से लैस। वे बातें कर रहे थे और कॉफी पी रहे थे। उनमें से एक ने कहा, "बॉस ने कहा है कि वह जा रहा है। हमें यहीं रुकना है, अगर कोई आए तो सूचना देनी है।"

"लेकिन यहाँ कौन आएगा?" दूसरे ने कहा। "वो छात्र? वे तो अब तक मर चुके होंगे।"

कबीर ने अपने मन को दृढ़ किया। वह चुपचाप दरवाजे के अंदर चला गया।

पहले आदमी ने उसे देखा। "कौन...?"

कबीर ने जरा भी समय बर्बाद नहीं किया। वह तेजी से आगे बढ़ा और उसने मुक्का मारकर उस आदमी के जबड़े पर प्रहार किया। आवाज हड्डी टूटने जैसी थी और वह आदमी पीछे गिर पड़ा।

बाकी लोग हरकत में आ गए। हथियार उठा लिए गए। "घुसपैठिया!"

गोलियां चलने लगीं। कबीर ने मेज के पीछे छिपने की कोशिश की, लेकिन एक गोली उसके पैर में लगी। दर्द असहनीय और जलन भरा था। लेकिन फिर से उसे ठंडक का एहसास हुआ। उसका दिमाग शांत हो गया। अब दर्द बस एक संकेत, एक डेटा बनकर रह गया था।

उसने मेज को पलट दिया और उसे ढाल बनाकर आगे बढ़ा। एक आदमी ने उस पर चाकू से हमला किया। कबीर ने चाकू का वार सहा—वह उसकी बांह में धंस गया। खून बहने लगा। लेकिन कबीर चिल्लाया नहीं। उसने अपनी दूसरी बांह से उस आदमी के सिर पर ज़ोरदार प्रहार किया और वह बेहोश हो गया।

तीन आदमी वहीं रह गए। उन्होंने कबीर को दो गंभीर घावों के बावजूद लड़ते देखा।

उनकी आँखों में भय था।
"यह... यह इंसान नहीं है!" एक ने चिल्लाकर कहा।
कबीर ने आगे बढ़कर उसे दीवार से जा टकराया। फिर उसने दूसरे को उठाकर एक तरफ फेंक दिया। तीसरा गोली चलाने ही वाला था कि कबीर ने उसका हाथ पकड़कर मरोड़ दिया। हड्डी टूटने की आवाज के साथ हथियार नीचे गिर गया।
कमरा एकदम शांत हो गया। सभी लोग बेहोश या घायल पड़े थे। कबीर हांफते हुए खड़ा था, उसका शरीर खून से लथपथ था। उसके पैर और हाथ में गोली और चाकू के घाव थे। लेकिन उसने खुद को सीधा खड़ा रखा।
वह मेज पर झुककर अपने घावों का मुआयना करने लगा। मांस फट गया था, लेकिन खून बहना धीमा हो रहा था। उसकी क्षमता काम कर रही थी—दर्द को नियंत्रित कर रही थी, अपने शरीर को थामे हुए थी।
तभी उसे पास के एक कमरे से एक और आवाज़ सुनाई दी। क्या यह रोने की आवाज़ थी? वह लड़खड़ाते हुए उस ओर बढ़ा।
दरवाजा खोलते ही उसने एक छोटा सा कमरा देखा जिसमें एक पलंग, एक मेज और एक महिला बैठी थी। वह जवान थी, लेकिन उसकी आँखों में डर और थकान साफ झलक रही थी। और उसके बगल में... एक दो-तीन साल का बच्चा सो रहा था।
"तुम कौन हो?" महिला ने डरते हुए पूछा।
कबीर ने खुद को संभालते हुए कहा, "मैं... मैं इसे खत्म करने के लिए लड़ रहा हूँ। तुम यहाँ कैसे हो?"
"मेरे पति... चांसलर के लिए काम करते थे। जब उन्होंने इनकार किया... तो उनकी हत्या कर दी गई। और मुझे और मेरे बेटे को यहाँ बंदी बना लिया गया है। वे कहते हैं कि हम 'बीमा' हैं।"
कबीर का गुस्सा फिर से भड़क उठा, लेकिन उसने उसे काबू में रखा। एक और निर्दोष जीवन खतरे में था।
"तुम्हें यहाँ से निकलना होगा," उसने कहा। "मैंने रास्ता साफ कर दिया है। निकलो और भागो।"
"लेकिन वे... वे भी बाहर हैं।"
"मैं इसे संभाल लूंगा।"
महिला ने अपने बेटे को गोद में उठा लिया, जो अब जाग चुका था और रोने लगा था।

"चुप हो जाओ बेटा। यह चाचा हमें बचाने आए हैं।"
कबीर उन्हें बाहर ले गया, उस मुख्य कमरे से जहाँ घायल लोग अभी भी पड़े थे। खून देखकर बच्चा चीख उठा।
कबीर ने अपनी आवाज़ को नरम करने की कोशिश करते हुए कहा, "अपनी आँखें बंद कर लो। सब ठीक हो जाएगा।"
वे गुफा के प्रवेश द्वार की ओर बढ़े। रास्ते में उनकी मुलाकात दो और लोगों से हुई, लेकिन कबीर ने उनसे तुरंत निपट लिया। उसकी चोटें देखने में भयानक लग रही थीं, लेकिन वह टूटा नहीं था।
अंततः वे गुफा के मुख्य द्वार पर पहुँच गए। बाहर रात का समय था और ताजी हवा कबीर के चेहरे को छू रही थी।
"जाओ," उसने महिला से कहा। "सीधे पुलिस के पास जाओ। उन्हें सब कुछ बताओ।"
"लेकिन तुम... तुम घायल हो।"
मुझे अभी और काम करना है।
महिला ने आँसुओं से भरी आँखों से उसकी ओर देखा। "आपका नाम?"
"कबीर। और अगर तुम किसी से मिलो... तो बृजेश की मां से मिलो... उन्हें बताना कि कबीर ने अपना वादा निभाया।"
महिला ने सिर हिलाया और अपने बेटे के साथ अंधेरे में भाग गई।
कबीर पीछे मुड़ा। उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ था। उसे वापस जाकर यह सुनिश्चित करना था कि चांसलर के और आदमी आगे न बढ़ सकें। और फिर... फिर उसे अपने दोस्तों तक पहुंचना था।
वह लड़खड़ाते हुए वापस अंदर चला गया। हर कदम पर दर्द था, लेकिन हर कदम के साथ दृढ़ संकल्प भी था। उसने बृजेश की तस्वीर निकाली और उसे देखने लगा।
"भाई, तुम्हारी बारी नहीं थी," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "लेकिन अब मेरी बारी है। और मैं इसे पूरा करके रहूंगा।"
गुफा का अंधेरा उसे एक बार फिर निगलने लगा, लेकिन इस बार वह अकेला नहीं था। उसके साथ उसके दोस्तों की यादें, बृजेश की आत्मा और मृत्यु से भी अधिक दृढ़ संकल्प था।
कबीर अब महज एक लड़का नहीं रह गया था। वह एक मजबूत स्तंभ बन चुका था—अडिग, अटल, नैतिकता का एक मजबूत स्तंभ। और वह जानता था कि जब तक वह

जीवित रहेगा, वह संघर्ष करता रहेगा।

अध्याय 26: स्पर्श और स्मृति

अथाह गहराई उन्हें पूरी तरह निगल रही थी। कबीर को पीछे छोड़े पंद्रह मिनट बीत चुके थे, और हर पल एक पीड़ादायक अनुभव था। पुरानी, लोहे की, जंग लगी सीढ़ियाँ अंधेरे में नीचे की ओर घूमती हुई, आँखों से ओझल हो रही थीं। हवा भारी हो गई थी, और अब उसमें एक अजीब सी गूंज सुनाई दे रही थी, मानो दूर कहीं कोई विशाल मशीन चल रही हो।

रुद्र सबसे आगे था, उसकी टॉर्च की रोशनी कांप रही थी। उसने पीछे मुड़कर देखा। मायरा ठीक उसके पीछे थी, उसकी सांसें तेज-तेज चल रही थीं। आलोक और रिया हाथ में हाथ डाले चल रहे थे—आलोक का चेहरा पीला पड़ गया था, मानो किसी अदृश्य बोझ से दबा हुआ हो। मयंक सबसे पीछे था, उसकी निगाहें अपने उपकरण पर टिकी हुई थीं।

"यहीं रुको," आलोक ने अचानक कहा और एक सीढ़ी पर बैठ गया। उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया।

"क्या हुआ?" रिया तुरंत उसके बगल में बैठ गई।

"आवाज़ें... इतनी सारी आवाज़ें," आलोक ने कांपती आवाज़ में कहा। "यह जगह... सिर्फ पत्थर नहीं है। यह यादों से भरी है। हर दरार, हर क्रिस्टल... इसके अंदर कुछ न कुछ कैद है।"

उसने दीवार को छुआ, फिर जैसे जल गया हो, वैसे ही अपना हाथ झटक कर पीछे खींच लिया। "2009... वे सब यहीं थे। बच्चे... वे खेल रहे थे। फिर दर्द... एक अंतहीन दर्द..."

मायरा ने डीन द्वारा दिए गए नोट्स खोले। "माँ ने लिखा था—एनोमली एक्स केवल भौतिक नहीं है, यह भावनात्मक और मानसिक छाप भी छोड़ती है। यहाँ जो कुछ भी हुआ है, वह इन चट्टानों पर अंकित हो गया है।"

"तो आलोक उन्हें महसूस कर रहा है," रुद्र ने कहा। "उसकी क्षमता..."

"यह महज़ एक क्षमता नहीं है," आलोक ने आँखें बंद करते हुए कहा। "यह एक अभिशाप है। मैं उन सभी का दर्द महसूस कर रहा हूँ—हर बच्चे का, हर वैज्ञानिक का,

हर उस व्यक्ति का जिसने यहाँ अपनी अंतिम साँस ली।"
रिया ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। "तुम अकेले नहीं हो। मैं यहाँ हूँ।"
आलोक ने उसकी आँखों में देखा। रिया के स्पर्श में एक शांति थी, एक शीतलता जिसने उसकी तीव्र संवेदनशीलता को शांत कर दिया। उसने गहरी साँस ली। "तुम्हारे साथ... इसे सहना आसान है।"
वे आगे बढ़े। सीढ़ियाँ अंततः एक विशाल गुफा में जाकर खुलती थीं। चारों ओर क्रिस्टल ही क्रिस्टल थे—दीवारों पर, छत से लटकते हुए, फर्श से निकलते हुए। उनकी नीली-हरी चमक से पूरा हॉल जगमगा रहा था। और हॉल के ठीक बीच में... एक अजीब सी चीज़ थी।
यह एक उल्कापिंड था, या उसके अवशेष। काले रंग का एक बड़ा, छिद्रयुक्त पत्थर, जिसके चारों ओर क्रिस्टलों का जाल बना हुआ था। और उन क्रिस्टलों के भीतर... एक आकृति दिखाई दे रही थी।
"मेरी चाची," मायरा ने फुसफुसाते हुए कहा।
डॉ. मीरा शर्मा। या यूँ कहें कि उनका शरीर। वे क्रिस्टलों के भीतर इस प्रकार समाई हुई थीं, मानो कोई प्राचीन कीड़ा एम्बर में फंसा हो। उनकी बाहें फैली हुई थीं, सिर झुका हुआ था और आँखें बंद थीं। फिर भी उनके चेहरे पर एक शांति थी—ऐसी शांति जो मृत्यु जैसी नहीं, बल्कि गहरी नींद जैसी प्रतीत होती थी।
आलोक ने बिना छुए कहा, "वह जीवित है। मैं उसकी उपस्थिति महसूस कर सकता हूँ। वह... वह सपना देख रही है।"
"किस बात का?" मयंक ने पूछा।
"हमारा। सबका।"
फिर एक आवाज़ गूंजी—सीधे उनके दिमाग में। कोमल, स्त्री जैसी, थकी हुई। "तुम आ गए। मुझे पता था तुम आओगे।"
वे सब चौंक गए और इधर-उधर देखने लगे। आवाज कहीं से नहीं आ रही थी, फिर भी वह हवा में, उनके दिमाग में गूंज रही थी।
"मौसी?" मायरा आगे बढ़ी।
मायरा। मेरी प्यारी भतीजी। तुम बड़ी हो गई हो। मैंने तुम्हें आखिरी बार दो साल की उम्र में देखा था।
मायरा की आंखों में आंसू भर आए। "हम तुम्हें बचाने आए हैं।"

"बचाने के लिए कुछ नहीं बचा है। मैं अब इसका हिस्सा हूँ—एनोमली एक्स का। और यह मेरा हिस्सा है। लेकिन तुम्हें बचाना होगा... तुम्हें आने वाले व्यक्ति को रोकना होगा।"

"कुलपति," रुद्र ने कहा।

"हाँ। उसे मृत्यु से डर लगता है। और यह सत्ता भय को ही अपना भोजन मानती है। उसका भय... एक राक्षस को जन्म देगा।"

रिया ने अपना बैग खोला और अपने चाचा के नोट्स निकाले। "मेरे चाचा ने लिखा है कि एनोमली एक्स की एक कमजोरी है। क्या तुम इसे जानती हो?"

कुछ पल का सन्नाटा। फिर मीरा की आवाज़ दोबारा सुनाई दी, अब थोड़ी और स्पष्ट। "यह महज़ एक प्राणी नहीं है। यह एक दर्पण है। यह तुम्हारे भीतर की भावनाओं को बढ़ाता है। भय को शक्ति में बदल देता है। प्रेम... प्रेम को एक कवच में बदल देता है।"

"प्यार?" आलोक ने पूछा।

"शुद्ध आनंद। निःशर्त प्रेम। वह भावनात्मक आवृत्ति जिसमें स्वार्थ नहीं, भय नहीं। विसंगति X उस आवृत्ति को सहन नहीं कर सकती। यह उसके लिए विष के समान है।"

रिया ने नोट्स से एक पन्ना निकाला। "यहाँ... मेरे चाचा ने एक समीकरण लिखा है। '$\psi = \kappa(1 - \alpha/\beta)$'... यह भावनात्मक आवृत्ति का समीकरण है! और यहाँ एक नोट है—'α भय का गुणांक है, β प्रेम का। जैसे-जैसे β अनंत की ओर बढ़ता है, ψ असंगत हो जाता है।'"

मयंक झुककर देखने लगा। "असीम प्रेम... निःशर्त प्रेम की भावना विसंगति X के लिए एक असंगत आवृत्ति उत्पन्न करती है। यही आवृत्ति जनरेटर का सिद्धांत है!"

"क्या आपके पास वह उपकरण है?" मीरा की आवाज में अत्यावश्यकता का भाव था।

मायरा ने वॉकमैन जैसी दिखने वाली पुरानी डिवाइस निकाली। "हाँ। लेकिन माँ ने कहा था कि इसे सक्रिय करने के लिए एक वास्तविक, गहन भावनात्मक स्रोत की आवश्यकता होती है।"

"वह स्रोत तुम्हारे भीतर है। तुम्हारे संपूर्ण अस्तित्व में। तुम्हारे बंधनों में।"

फिर दूर से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं—पैरों की आहट, आदेश दिए जाने की आवाज़। चांसलर के आदमी। वे नीचे आ रहे थे।

रुद्र ने सतर्क होकर कहा, "हमारे पास समय कम है। हमें छिपना होगा, योजना बनानी होगी।"
वे क्रिस्टलों के एक समूह के पीछे छिप गए। आलोक और रिया साथ थे, और आलोक का हाथ कांप रहा था।
"क्या तुम ठीक हो?" रिया ने पूछा।
"नहीं," आलोक ने कहा। "मैं उन्हें महसूस कर सकता हूँ... चांसलर के आदमियों को। कुछ डरे हुए हैं, कुछ क्रूर हैं। और एक... एक का दिल मरा हुआ है। वो है चांसलर।"
उन्होंने अपनी आँखें बंद कीं, और एक दृश्य उनके सामने आया—एक अस्पताल का कमरा, चांसलर देवराज ठाकुर, अपने युवावस्था में, एक डॉक्टर से बात कर रहे थे।
"कैंसर... छह महीने। कोई इलाज नहीं।" चांसलर के चेहरे से विश्वास गायब हो गया।
फिर एक और दृश्य—वह उल्कापिंड के सामने खड़े थे, उनकी आँखों में पागलपन था।
"मैं नहीं मरूँगा। मैं मानवता का अगला चरण बनूँगा।"
आलोक ने अपनी आँखें खोलीं। "वह सचमुच मौत से डरता है। इतना कि उसने अपनी इंसानियत खो दी है।"
रिया ने उसके चेहरे को अपने हाथों में थाम लिया। "तुम्हें अब और कुछ नहीं देखना चाहिए। यह तुम्हें अंदर से खा जाएगा।"
"लेकिन मुझे देखना होगा," आलोक ने कहा। "हमें यह जानना होगा कि हम किससे लड़ रहे हैं।"
दूर से चांसलर और उनके साथी हॉल में दाखिल हुए। वे लगभग बीस लोग थे, सभी हथियारबंद थे। और उनमें चांसलर भी थे—साठ वर्ष की आयु के, सफेद बालों वाले, लेकिन सीधे, सैनिक मुद्रा में खड़े थे। उनकी निगाहें लालच भरी निगाहों से उल्कापिंड पर टिकी हुई थीं।
"डॉ. शर्मा," चांसलर ने कर्कश और खुरदरी आवाज में कहा। "काफी समय हो गया है।"
"देवराज, तुमने वो सब किया जिसे रोकने की मैंने कोशिश की थी।"
चांसलर उल्कापिंड के करीब आते हुए बोले, "तुमने दूरदृष्टि की कमी के कारण प्रयास किया। तुम महज एक आदर्शवादी वैज्ञानिक थे। मैं एक योद्धा हूँ। और युद्ध में, जीतने के लिए कुछ भी जायज़ है।"
उसने अपना कोट उतारा। उसके कपड़ों के नीचे, उसकी बांह में एक IV लगा हुआ था

—एक तरल पदार्थ जो हल्की नीली रोशनी से चमक रहा था। शुद्ध एनोमली एक्स का अर्क।

"आज मैं अपने भय को त्याग दूंगा। आज मैं देवता बन जाऊंगा।"

चांसलर ने IV का नॉब घुमाया। नीला तरल पदार्थ उनकी नसों में बहने लगा। उन्होंने दर्द भरी, फिर भी आनंद से भरी एक कराह निकाली।

रुद्र ने मायरा की ओर देखा। "हमें अभी कार्रवाई करनी होगी।"

"नहीं," मायरा ने मीरा की क्रिस्टल से घिरी आकृति पर निगाहें गड़ाए हुए कहा। "हमें इंतजार करना होगा। सही समय का।"

चांसलर का शरीर कांपने लगा। उनकी आंखें चौड़ी हो गईं और उनमें एक अप्राकृतिक चमक आ गई। उनकी त्वचा के नीचे कुछ सरसराहट हुई, जैसे कीड़े रेंग रहे हों।

"सर!" एक सिपाही आगे बढ़ा। "क्या आप ठीक हैं?"

चांसलर मुड़ा, और उसकी आँखों में अब कोई मानवीय भावना नहीं थी। केवल एक पशुवत हिंसा थी। उसने हाथ बढ़ाया—और वह हाथ लंबा होकर एक मांसल अंग में बदल गया जिसके सिरे नुकीले पंजे थे। उसने सैनिक की गर्दन पकड़ी और एक ही झटके में उसे दूर फेंक दिया।

अन्य सैनिक अपने हथियार उठाते हुए पीछे हट गए। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। चांसलर का शरीर बदल रहा था—बढ़ रहा था, मोटा हो रहा था, उसकी त्वचा फटकर नीचे की काली, चमकदार सतह को दिखा रही थी। वह एक राक्षस में परिवर्तित हो रहा था।

"अभी!" रुद्र चिल्लाया।

वे अपने छिपने के स्थान से बाहर निकले। रुद्र ने सबसे पहले हमला किया—उसने ज़मीन से एक बड़ा क्रिस्टल उखाड़ा और उसे चांसलर रूपी राक्षस पर फेंक दिया। क्रिस्टल उसकी छाती से टकराकर चकनाचूर हो गया। लेकिन चांसलर को कोई चोट नहीं आई। उसने दहाड़ा—एक ऐसी आवाज़ जो मानवीय नहीं, बल्कि पशुवत थी।

सैनिकों ने गोलीबारी शुरू कर दी। गोलियां चांसलर के शरीर से टकराकर वापस उछल गईं। अब उन पर हमला करना असंभव था।

मयंक ने अपना लैपटॉप खोला। "मैं उनके संचार को बाधित कर रहा हूँ!"

लेकिन अब चांसलर की निगाहें उन पर टिकी थीं। उन्होंने अपनी लंबी, मांसल भुजाएँ उनकी ओर बढ़ाईं।

"बिखर जाओ!" मायरा चिल्लाई।
वे अलग-अलग दिशाओं में भागे। आलोक और रिया एक बड़े क्रिस्टल के पीछे छिप गए। आलोक हांफ रहा था और कांप रहा था।
"मैं उसका डर महसूस कर सकता हूँ," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "वह अब भी डरा हुआ है। अंदर ही अंदर। उसे लगता है कि यह शक्ति उसके डर को दूर कर देगी, लेकिन यह उसे और बढ़ा रही है।"
रिया ने अपने चाचा के नोट्स दोबारा खोले। "शुद्ध प्रेम... हमें उस आवृत्ति को उत्पन्न करने की आवश्यकता है।"
"लेकिन कैसे?" आलोक ने पूछा। "इस सब भय और हिंसा के बीच?"
रिया ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में कोमलता और समझदारी झलक रही थी।
"जब तुम दूसरों का दर्द महसूस करते हो, तो मेरे साथ कैसा व्यवहार करते हो?"
"तुम्हारे साथ... तुम्हारे साथ मुझे शांति मिलती है," आलोक ने कहा। "तुम्हारी उपस्थिति मुझे स्थिरता प्रदान करती है।"
"यही तो प्यार है," रिया ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। "एक ऐसी जगह जहाँ आपको डर नहीं लगता। जहाँ आपको छिपने की ज़रूरत नहीं होती।"
उसने आलोक का हाथ अपने हाथ में लिया। "मैं तुमसे प्यार करती हूँ, आलोक। तुम्हारी संवेदनशीलता के लिए, तुम्हारे डर के लिए, तुम्हारी ताकत के लिए। और यह प्यार... यह निःशर्त है।"
आलोक ने उसकी आँखों में देखा। कोई झिझक नहीं, कोई संदेह नहीं। केवल सच्चाई। और उस सच्चाई ने उसके भीतर के तूफान को शांत कर दिया।
उसे अपनी उस क्षमता का एहसास हुआ—जो हमेशा उसके लिए बोझ जैसी थी—अब एक वरदान बन गई थी। क्योंकि इसके ज़रिए वह न सिर्फ़ दर्द, बल्कि प्यार भी महसूस कर सकता था। और रिया का प्यार... वह एक पवित्र, निर्मल धारा जैसा था।
"मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ," उसने कहा, और ये शब्द अनायास ही उसके होठों से निकल गए, मानो वे हमेशा से वहीं मौजूद थे। "तुम्हारे साहस, तुम्हारे दृढ़ संकल्प और तुम्हारी कोमलता के लिए।"
उनके बीच की दूरी मिट गई। आलोक ने रिया का चेहरा अपने हाथों में थाम लिया और उसकी झुकी हुई पलकों को निहारने लगा। फिर धीरे से उसने अपने होंठ उसके होंठों से मिला दिए।

यह कोई तीव्र चुंबन नहीं था, न ही कोई जोशीला जुनून। यह एक कोमल, शांत स्पर्श था— जैसे धरती पर गिरती पहली बारिश की बूँदें। इसमें एक पहचान थी, एक आश्वासन था कि वे अकेले नहीं थे, कभी अकेले नहीं रहे थे।

जब वे अलग हुए, आलोक की आँखों में आँसू थे। लेकिन ये दर्द के आँसू नहीं थे; ये राहत के आँसू थे। इस बात की राहत कि उसने आखिरकार किसी को अपने पूरे दिल से स्वीकार कर लिया था, और बदले में उसे भी स्वीकार कर लिया गया था।

और फिर कुछ घटित हुआ।

उनके चारों ओर के क्रिस्टल धीरे-धीरे चमकने लगे। एक कोमल, सुनहरी रोशनी, जो नीली-हरी चमक से अलग थी। यह रोशनी उन दोनों से—उनके हृदयों से, उनकी आत्माओं से—निकल रही थी।

दूर से, चांसलर-राक्षस रुका और उनकी ओर देखा। उसकी आँखों में बेचैनी थी, मानो वह किसी तेज रोशनी को घूर रहा हो।

"बस यही!" मीरा की आवाज़ उनके दिमाग में गूंज उठी, जो अब उत्साह से भरे हुए थे। "शुद्ध प्रेम की आवृत्ति! उपकरण... इसे अभी सक्रिय करो!"

मायरा ने फ़्रीक्वेंसी जनरेटर उठाया। डिवाइस की स्क्रीन अब झिलमिला रही थी, जिस पर एक स्थिर, शुद्ध तरंग दिखाई दे रही थी। उसने उसे चालू कर दिया।

एक ध्वनि गूंजी—बहुत धीमी, लेकिन इतनी गहरी कि उनकी हड्डियों तक कंपन पैदा कर गई। यह संगीत नहीं, बल्कि एक धड़कन थी, एक हृदय की धड़कन। एक इंसान के दिल की धड़कन।

चांसलर-राक्षस चीख उठा। उसने अपने कान ढँक लिए, पर आवाज़ बाहर से नहीं, बल्कि भीतर से आ रही थी। एनोमली एक्स, जो अब उसके शरीर का हिस्सा बन चुका था, इस आवृत्ति पर प्रतिक्रिया कर रहा था।

"यह काम कर रहा है!" रुद्र चिल्लाया।

लेकिन चांसलर ने हार नहीं मानी। क्रोधित होकर उसने मुट्ठियाँ ज़मीन पर पटकीं, जिससे बड़े-बड़े क्रिस्टल टूटकर हवा में उड़ने लगे। उनमें से एक क्रिस्टल आलोक और रिया की ओर तेज़ी से बढ़ा।

आलोक ने रिया को धक्का देकर एक तरफ कर दिया, लेकिन खुद को नहीं बचा सका। क्रिस्टल उसके कंधे पर लगा और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। दर्द बहुत तेज़ था, लेकिन उसकी निगाहें रिया पर टिकी थीं, जो सुरक्षित थी।

"आलोक!" रिया चिल्लाते हुए उसकी ओर दौड़ी।
हांफते हुए उसने कहा, "मैं ठीक हूँ।" लेकिन उसके शरीर से खून बह रहा था।
चांसलर-राक्षस अब उनकी ओर बढ़ रहा था, फ्रीक्वेंसी जनरेटर की ध्वनि से छटपटा रहा था, लेकिन फिर भी खतरनाक था। रुद्र ने अपनी पूरी ताकत से उस पर हमला किया, लेकिन उसे पीछे धकेल दिया गया।
फिर, मीरा के क्रिस्टल से ढके शरीर से एक तेज रोशनी फूट पड़ी। "बस करो!"
हॉल में ऊर्जा की एक लहर फैल गई। चांसलर-राक्षस जम गया। उसका शरीर कांप उठा, मानो दो शक्तियां आपस में लड़ रही हों—एक भय की, दूसरी प्रेम की।
रिया ने आलोक को उठने में मदद की, और उनके स्पर्श से एक बार फिर वह सुनहरी रोशनी उत्पन्न होने लगी। रोशनी अब और भी तेज थी, जो फ्रीक्वेंसी जनरेटर से निकलने वाली ध्वनि के साथ मिलकर एक शक्तिशाली तरंग उत्पन्न कर रही थी।
चांसलर-राक्षस गिर पड़ा। उसका शरीर सिकुड़ने लगा, विकृत होने लगा। वह चीखता रहा—"नहीं! मैं अमर हूँ! मैं नहीं मरूँगा!"
लेकिन अब एनोमली एक्स इसे त्याग रहा था। भय पर पलने वाली यह सत्ता शुद्ध प्रेम की इस आवृत्ति को सहन नहीं कर सकी। यह चांसलर के शरीर से एक काले, चिपचिपे पदार्थ के रूप में रिसने लगी और हवा में विलीन हो गई।
चांसलर अपने मानवीय रूप में लौट आए—कमजोर, बूढ़े, मरणासन्न। उनकी आँखों में अब भय भरा हुआ था। "नहीं... ऐसा नहीं हो सकता..."
वह जमीन पर गिर पड़ा और बेजान हो गया।
हॉल में सन्नाटा छा गया। फ्रीक्वेंसी जनरेटर बंद हो गया। सुनहरी रोशनी धीरे-धीरे फीकी पड़ गई।
आलोक और रिया एक-दूसरे को पकड़े हुए थे, दोनों के चेहरे पर आंसू थे। रुद्र और मायरा उनके पास आए। मयंक ने राहत की सांस ली और अपना लैपटॉप बंद कर दिया।
"तुमने कर दिखाया," मीरा की आवाज़ आई, जो अब बहुत धीमी थी। "प्रेम ने भय को हरा दिया है। यही सच्ची प्रगति है।"
मायरा क्रिस्टल के पास गई और उसकी चमकती सतह को छुआ। "मौसी... अब क्या होगा?"
मैं यहीं रहूंगा। इस जगह का रक्षक। विसंगति X अभी शांत है, लेकिन इसे संतुलन की

आवश्यकता है। मैं वह संतुलन बनूंगा। तुम जाओ... और जियो। प्रेम करो। यही सबसे बड़ी शक्ति है।
उसकी आवाज़ धीरे-धीरे कम होती गई, फिर खामोशी में विलीन हो गई। क्रिस्टल अपनी सामान्य चमक में लौट आए।
आलोक ने रिया की तरफ देखा। "क्या तुम ठीक हो?"
रिया ने सिर हिलाया। "हाँ। और आप?"
"अब मैं ठीक हूँ," उसने कहा और उसे फिर से चूमा। यह चुंबन पहले वाले से कहीं अधिक गहरा था—एक वादा, एक नई शुरुआत।
उन्होंने चारों ओर देखा। चांसलर के सैनिक या तो भाग गए थे या बेहोश पड़े थे। युद्ध समाप्त हो चुका था।
लेकिन एक लड़ाई बाकी थी। कबीर की।
"हमें उसके पास पहुंचना होगा," रुद्र ने चिंतित स्वर में कहा। "वह अकेला है।"
वे ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की ओर वापस भागे। आलोक के कंधे में दर्द हो रहा था, लेकिन वह रिया के सहारे चल रहा था। उनका प्यार अब महज़ एक भावना नहीं, बल्कि एक जीवंत, साँस लेती हुई चीज़ थी—एक ऐसी शक्ति जिसने एक राक्षस को हरा दिया था।
और जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते गए, आलोक को एहसास हुआ कि अब उसकी क्षमता उसे नियंत्रित नहीं कर रही थी। वह अब उसे नियंत्रित कर सकता था। क्योंकि अब उसके पास एक सहारा था—एक ऐसा प्रेम जो उसे ज़मीन से जोड़े रखता था।
वे जानते थे कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। लेकिन वे यह भी जानते थे कि अब वे किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं।
क्योंकि डर आपको ताकत दे सकता है, लेकिन प्यार... प्यार आपको अजेय बना देता है।

अध्याय 27: अंतिम दांव

सीढ़ियाँ उनके लिए एक अंतहीन यातना बन चुकी थीं। हर कदम उन्हें कबीर से और दूर ले जा रहा था, जबकि वे जानते थे कि कबीर शायद उनका इंतज़ार कर रहा होगा।
आलोक का कंधा जल रहा था, लेकिन दर्द से ज़्यादा उसे कबीर की चिंता सता रही

थी। रिया उसका सहारा बनी रही, उसकी कोमल पकड़ आलोक के लिए एक सहारे का काम कर रही थी।

"वह ठीक हो जाएगा," रुद्र ने खुद को समझाने की कोशिश करते हुए कहा। "कबीर मजबूत है।"

"लेकिन वह अकेला था," मायरा ने भय से भरी आवाज में कहा। "उसने स्वयं को बलिदान करने का विकल्प चुना।"

मयंक ने अपना कम्युनिकेटर चेक किया। "कोई सिग्नल नहीं। या तो उसका डिवाइस खराब हो गया है, या..."

उसने वाक्य पूरा नहीं किया। वे सभी जानते थे कि दूसरा विकल्प क्या था।

अचानक आलोक रुक गया। उसने एक हाथ से दीवार का सहारा लिया और दूसरे हाथ से अपना माथा पकड़ लिया। "आह!"

"क्या हुआ?" रिया ने घबराकर पूछा।

"एक ख्याल... एक भयानक ख्याल। कोई गुस्से में है... बहुत गुस्से में।" आलोक की सांसें तेज़ हो गईं। "कुलपति... वो मरा नहीं है। वो ज़िंदा है, और अब वो पहले से भी ज़्यादा खतरनाक है।"

"लेकिन हमने उसे हरा दिया," मायरा ने कहा। "फ्रीक्वेंसी जनरेटर—"

"उसे घायल किया, मारा नहीं," मयंक ने कहा। "और घायल जानवर सबसे खतरनाक होता है।"

वे शिखर पर पहुँच गए, उस जगह पर जहाँ कबीर ने उन्हें छोड़ा था। कमरा अब खाली था, लेकिन युद्ध के निशान स्पष्ट थे—उलटी हुई मेजें, टूटे हुए उपकरण और फर्श पर खून के धब्बे।

"कबीर!" रुद्र चिल्लाया। कोई जवाब नहीं मिला।

उन्होंने पूरे कमरे की तलाशी ली। कबीर कहीं नहीं मिला। लेकिन खून के धब्बे एक दरवाजे की ओर इशारा कर रहे थे, जो अब खुला हुआ था।

"वह बाहर गया था," रिया ने कहा।

"या फिर उसे हटा दिया गया था," आलोक ने सुधार किया।

तभी मायरा का फोन बज उठा। एक अनजान नंबर से। उसने हैरानी से रुद्र की तरफ देखा।

"इसका जवाब दो," रुद्र ने कहा।

मायरा ने फोन उठाया। "हेलो?"
एक जानी-पहचानी, कर्कश आवाज सुनाई दी—कुलपति देवराज ठाकुर की, लेकिन अब उसमें एक नया, धातु जैसा स्वर था, मानो कोई मशीन बोल रही हो। "आप सभी ने अच्छा प्रदर्शन किया। लेकिन खेल अभी खत्म नहीं हुआ है।"
"तुम... तुम ज़िंदा हो?" मायरा ने पूछा।
"मरना मेरी योजना नहीं थी। बिल्कुल तुम्हारी माँ की तरह।"
मायरा का दिल थम गया। "मेरी माँ? तुम्हारा क्या मतलब है?"
स्क्रीन पर एक वीडियो कॉल दिखाई दी। मायरा ने उसे स्पीकर पर डाल दिया। वीडियो में डीन दिखाई दे रही थी—उसके हाथ बंधे हुए थे और वह कुर्सी पर बैठी थी। उसके चेहरे पर चोट के निशान थे, लेकिन उसकी आँखों में डर नहीं, बल्कि गुस्सा था।
"माँ!" मायरा चिल्लाई।
"अगर आप चाहते हैं कि वह जीवित रहे, तो उल्कापिंड की गुफा में आइए। अकेले नहीं। आप सभी को आना होगा। एक घंटे के भीतर। अन्यथा..."
वीडियो में एक आदमी डीन के पीछे आया और उसके सिर पर बंदूक तान दी।
"नहीं!" रुद्र चिल्लाया।
एक घंटा। और न कोई पुलिस, न कोई चालबाज़ी। मैं हर जगह नज़र रख रहा हूँ।
कॉल कट गई। मायरा के हाथ से फोन फिसलकर ज़मीन पर गिर गया। वह कांपने लगी और रुद्र ने उसे संभाले रखा।
"शांत हो जाओ," उसने कहा, लेकिन उसकी अपनी आवाज कांप रही थी।
"वह मेरी माँ को ले गया... उसने उसे बंदी बना लिया," मायरा ने रोते हुए कहा। "मेरी वजह से। मैंने उसे अकेला छोड़ दिया था।"
"तुम्हारी वजह से नहीं," रिया ने पास आते हुए कहा। "कुलपति की वजह से। वो हार गए, और अब हमें नीचा दिखाना चाहते हैं।"
मयंक ने अपना लैपटॉप खोला। "मैं लोकेशन ट्रैक करने की कोशिश करूंगा।"
आलोक ने कहा, "वह हमें गुफा में बुला रहा है। वहाँ उसे फायदा होगा। वह जानता है कि एनोमली एक्स का स्रोत वहीं है। शायद वह कुछ और करने की कोशिश कर रहा है।"
रुद्र ने कहा, "वह मरना नहीं चाहता। डीन ने कहा था कि उसे कैंसर है। वह अमर होना चाहता है। और हमने उसकी योजना को नाकाम कर दिया। अब वह हमसे बदला लेना

चाहता है, और शायद... शायद एक आखिरी कोशिश करे।"
मायरा ने अपने आंसू पोंछे। उसके चेहरे पर अब दृढ़ निश्चय का भाव था। "हमें जाना ही होगा।"
"यह एक जाल है," मयंक ने कहा। "वह हमें वहां ले जाएगा और मार डालेगा। और डीन को भी।"
"लेकिन अगर हम नहीं गए तो वो डीन को मार डालेगा," रिया ने कहा। "हमारे पास कोई चारा नहीं है।"
आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा। "हम साथ चलते हैं। और साथ मिलकर लड़ते हैं।"
"कबीर का क्या होगा?" रुद्र ने पूछा। "हम उसे नहीं छोड़ सकते।"
तभी दरवाजे से एक आवाज आई। कराहने की आवाज। सब लोग मुड़कर देखने लगे। कबीर दरवाजे पर लड़खड़ाता खड़ा था। उसका शरीर खून से लथपथ था—कंधे पर गहरा घाव, पैर पर गोली का निशान, बांह पर चाकू के घाव। लेकिन वह खड़ा था। उसकी आंखें बेजान थीं, पर खुली हुई थीं।
"कबीर!" रुद्र दौड़कर उसके पास गया और उसे सहारा दिया।
कबीर हांफते हुए बोला, "मैं... मैं ठीक हूँ। उन्होंने... उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश की। लेकिन मैंने... मैंने उन्हें रोक दिया।"
उसने चारों ओर देखा। "कुलपति?"
"जिंदा है," मायरा ने कहा। "और वह मेरी माँ को ले गया है।"
कबीर की आँखों में फिर से क्रोध झलक रहा था। उसने खुद को संभाला और सीधा खड़ा हो गया। "तो फिर हमें जाना होगा।"
"लेकिन आपकी हालत..." रिया ने चिंता से कहा।
कबीर ने कहा, "मैं ठीक हूँ," और उसकी आवाज़ में एक नया, दृढ़ संकल्प झलक रहा था। "दर्द... दर्द अब मेरे नियंत्रण में है।"
उसने अपने घावों को देखा। खून बहना बंद हो गया था, और घाव सूजे हुए थे लेकिन भर रहे थे। एनोमली एक्स ने उसे दर्द सहने और चोटों से उबरने की ताकत दी थी।
रुद्र ने उसे गौर से देखा। "क्या तुम सच में ठीक हो?"
कबीर ने ईमानदारी से कहा, "नहीं। लेकिन मैं लड़ सकता हूँ। और मैं लड़ूँगा। बृजेश के लिए। डीन के लिए। हम सबके लिए।"
उनके पास फैसला करने के लिए सिर्फ पंद्रह मिनट बचे थे। मयंक ने जल्दी से अपना

सामान इकट्ठा किया। मायरा ने फ्रीक्वेंसी जनरेटर की जाँच की—वह अभी भी काम कर रहा था, लेकिन उसकी बैटरी कम थी। रिया ने अपने चाचा के नोट्स को फिर से पलटा, इस उम्मीद में कि शायद उसे कोई और कमजोरी मिल जाए।

आलोक कबीर के पास गया और उसका हाथ पकड़ लिया। "तुमने वहाँ क्या देखा?"

कबीर ने अपनी आँखें बंद कर लीं। "कई लोग... वे डरे नहीं थे। उन्हें प्रशिक्षण दिया गया था। और चांसलर... वह अब और भी खतरनाक हो गया है। उसने कुछ और ही ले लिया है। कुछ ऐसा जिसने... उसे बदल दिया है।"

"उसने एनोमली एक्स की अधिक मात्रा ली होगी," मयंक ने कहा। "शायद सीधे स्रोत से।"

"तो इस बार फ्रीक्वेंसी जनरेटर काम नहीं करेगा?" मायरा ने पूछा।

"ऐसा होगा," रिया ने कहा। "लेकिन हमें एक अधिक शक्तिशाली भावनात्मक स्रोत की आवश्यकता है। पहली बार तो यह इसलिए सफल हुआ क्योंकि आलोक और मेरा प्यार सच्चा था। लेकिन अब... अब हम सब डरे हुए हैं, गुस्से में हैं।"

रुद्र ने मायरा की ओर देखा। "हमारा प्यार भी पवित्र है।"

"हां," मायरा ने कहा। "लेकिन क्या यह चांसलर के डर को हराने के लिए काफी शक्तिशाली है?"

"ऐसा करना ही होगा," रुद्र ने कहा। "नहीं तो हम सब मर जाएंगे।"

उन्होंने अपना सामान इकट्ठा किया। कबीर ने ज़मीन से एक छोटा चाकू उठाया और उसे अपने बाजूबंद में छिपा लिया। रुद्र ने देखा कि कबीर के हाथ कांप रहे थे—दर्द से नहीं, बल्कि एड्रेनालाईन के कारण।

रुद्र ने कहा, "तुम्हें बीच में रहना होगा। हम तुम्हारी रक्षा करेंगे।"

कबीर ने कहा, "मुझे सुरक्षा की जरूरत नहीं है। मुझे बस लड़ने का मौका चाहिए।"

वे गुफा से बाहर निकले। बाहर रात गहरी हो चुकी थी और आसमान बादलों से ढका हुआ था, मानो कोई तूफान आने वाला हो। हवा में एक अजीब सी बिजली जैसी गंध फैली हुई थी।

"उसे कैसे पता चलेगा कि हम आएंगे?" रिया ने पूछा।

आलोक ने कहा, "क्योंकि वह जानता है कि हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। और क्योंकि वह हमें जानता है। उसके पास हमारी फाइलें हैं। वह जानता है कि हम एक-दूसरे के लिए कुछ भी कर सकते हैं।"

जंगल से होकर गुजरने वाला रास्ता अब और भी भयावह लग रहा था। हर पेड़ के पीछे छिपे दुश्मन का डर सता रहा था। हर सरसराहट के साथ उनकी धड़कनें तेज होती जा रही थीं।

आधे रास्ते में, मयंक ने उन्हें रुकने का इशारा किया। "रुको। मेरे उपकरण में कुछ गतिविधि दिखाई दे रही है। आगे...लगभग सौ मीटर। ऊष्मा के संकेत। बहुत सारे।"

"कितने?" रुद्र ने पूछा।

"कम से कम तीस। शायद इससे भी ज्यादा।"

कबीर ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। "वह पूरी सेना लेकर आया है।"

"हम छह हैं," मायरा ने कहा। "और हमारे पास शक्तियां हैं।"

"लेकिन उनके पास गोलियां हैं," मयंक ने यथार्थवादी लहजे में कहा। "और संख्या भी।"

रुद्र ने सबकी ओर देखा। "हमें एक योजना की ज़रूरत है। सीधा हमला नहीं। हमें चतुराई से काम लेना होगा।"

मयंक ने कहा, "मैं उनके संचार को बाधित कर सकता हूं। लेकिन इसके लिए मुझे उनके बहुत करीब जाना होगा।"

"मैं तुम्हें ले जाऊंगा," रुद्र ने कहा। "मैं तुम्हारी ढाल बनूंगा।"

"और मैं?" कबीर ने पूछा।

"तुम डीन को ढूंढो। तुम्हारी क्षमता तुम्हें चोटों से बचाएगी। तुम उसे सुरक्षित बाहर निकालो।"

"और हम?" रिया ने पूछा।

"तुम और आलोक फ्रीक्वेंसी जनरेटर तैयार रखना। मौका मिलते ही इसे चालू कर देना। और मायरा..."

मायरा ने रुद्र की ओर देखा। "मैं तुम्हारे साथ रहूंगी। मैं तुम्हारी आंखें बनूंगी। मां के नोट्स में कुछ और भी है... गुफा के बारे में, गुप्त रास्तों के बारे में।"

रुद्र हिचकिचाया। वह मायरा को खतरे में नहीं डालना चाहता था। लेकिन उसकी आँखों में एक ऐसा दृढ़ संकल्प था जिसे नकारा नहीं जा सकता था।

"ठीक है," उसने कहा। "लेकिन तुम मेरे पीछे ही रहना। हमेशा।"

उन्होंने अपनी योजना को अंतिम रूप दे दिया। मयंक और रुद्र बाईं ओर से जाकर संचार व्यवस्था को बाधित करेंगे। कबीर दाईं ओर से जाकर डीन को ढूंढेंगे। आलोक,

रिया और मायरा मुख्य द्वार से अंदर जाएंगे, ताकि सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकें।
"याद रखना," रुद्र ने कहा। "हमारा लक्ष्य चांसलर को हराना नहीं है, बल्कि डीन को बचाना है। उसे सुरक्षित बाहर निकालो, फिर भाग जाओ।"
"लेकिन चांसलर..." मायरा ने कहा।
"हम चांसलर से बाद में निपटेंगे। पहले हमें जीवित रहना है।"
वे अलग हो गए। आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा और मायरा उनके पीछे चलने लगी। कबीर दाईं ओर एक झाड़ी के पीछे गायब हो गया। रुद्र और मयंक बाईं ओर घने अंधेरे में ओझल हो गए।
'''
आलोक, रिया और मायरा गुफा के मुख्य द्वार की ओर बढ़े। द्वार के सामने दस आदमी पहरा दे रहे थे, सभी हथियारबंद थे। उनमें से एक आगे बढ़ा।
"रुको! अपने हथियार नीचे रखो!"
"हमारे पास हथियार नहीं हैं," मायरा ने कहा।
"तो फिर हाथ ऊपर करो!"
उन्होंने आज्ञा का पालन किया। उस व्यक्ति ने उनकी तलाशी ली और फ्रीक्वेंसी जनरेटर जब्त कर लिया।
"यह क्या है?"
"एक म्यूजिक प्लेयर," रिया ने तुरंत कहा। "तनाव कम करने के लिए।"
उस आदमी ने शक भरी नजरों से उसे देखा, लेकिन फिर उस उपकरण को अपनी जेब में रख लिया। "अंदर जाओ। बॉस इंतजार कर रहा है।"
उन्हें अंदर धकेल दिया गया। गुफा का मुख्य हॉल अब और भी भयानक लग रहा था। दीवारों पर बड़ी-बड़ी बत्तियाँ लगी थीं, जिनसे पूरा हॉल जगमगा रहा था। और बीचोंबीच... चांसलर खड़े थे।
वह बदल चुका था। उसकी त्वचा अब पीली, लगभग पारदर्शी दिख रही थी, उस पर काली नसें साफ दिखाई दे रही थीं, मानो उसके शरीर में कोई जहरीला तरल पदार्थ बह रहा हो। उसकी आँखें लाल थीं, और उसके होठों के कोने से काला तरल टपक रहा था। उसने एनोमली एक्स की अधिक मात्रा ले ली थी, और उसका शरीर अब कमजोर होता जा रहा था।

"स्वागत है," चांसलर ने कहा, उनकी आवाज़ अब दोहरी थी—उनकी अपनी आवाज़ और एक कर्कश, गहरी आवाज़। "मेरे मेहमानों।"
"मेरी माँ कहाँ है?" मायरा ने सीधे पूछा।
कुलपति ने हाथ से इशारा किया। एक कोने में, डीन कुर्सी से बंधी हुई थी। उसकी आँखें खुली थीं और वह मायरा को देख रही थी। उसके चेहरे पर चोट के निशान थे, लेकिन उसकी आँखों में एक संदेश था—'भाग जाओ'।
"उसे जाने दो," आलोक ने कहा। "तुम्हें हमारी ज़रूरत है।"
"हाँ, मुझे तुम चाहिए," चांसलर ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए कहा। उनकी चाल अजीब थी, मानो वे अपने ही शरीर से लड़ रहे हों। "तुम लोग... तुम मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि हो। शुद्ध मेजबान। तुम्हारे शरीर एनोमली एक्स को सहन कर सकते हैं। और मैं... मैं अब इसे सहन नहीं कर सकता।"
उसने अपने कांपते हुए हाथ को देखा। "मेरा शरीर टूट रहा है। कैंसर ने मुझे अंदर से खोखला कर दिया है, और अब यह जीव... मुझे अंदर से खा रहा है। लेकिन मैंने एक रास्ता खोज लिया है।"
"किस रास्ते से?" रिया ने पूछा।
"एक नया शरीर," चांसलर ने कहा, और उनकी लाल आँखें रुद्र पर टिकी हुई थीं। "या यूँ कहें... एक से अधिक शरीर। तुम सब के शरीर। मैं अपने आप को तुम सब में बाँट लूँगा। तुम सब मेरे पात्र बन जाओगे। और इस तरह मैं अमर हो जाऊँगा।"
यह विचार इतना भयावह था कि आलोक की सांसें थम गईं। उसे महसूस हुआ कि चांसलर का डर अब पागलपन में बदल गया है। वह मरने से इतना भयभीत था कि वह दूसरों के शरीर पर कब्ज़ा करना चाहता था।
"यह संभव नहीं है," मायरा ने कहा।
“हाँ,” चांसलर ने कहा। “एनोमली एक्स न केवल शरीर, बल्कि चेतना को भी स्थानांतरित कर सकती है। मीरा शर्मा ने इसे साबित कर दिया है। वह अब उन क्रिस्टलों में जीवित है। और मैं... मैं आप सभी में जीवित रहूँगा।”
उसने एक बटन दबाया। हॉल के चारों कोनों से धातु की दीवारें नीचे गिरने लगीं और सभी निकास द्वार बंद हो गए। वे फंस गए थे।
"अब," चांसलर ने कहा। "चलिए शुरू करते हैं।"
उसने अपने आदमियों को इशारा किया। वे आगे बढ़े, उनके हाथों में काले तरल पदार्थ

से भरी सीरिंजें थीं—शुद्ध एनोमली एक्स।
मायरा ने रुद्र की ओर देखा, जो अभी तक नहीं आया था। कबीर भी कहीं नज़र नहीं आ रहा था। उनकी योजना विफल हो रही थी।
लेकिन तभी, बत्तियाँ टिमटिमाईं और बुझ गईं। क्रिस्टलों की हल्की सी चमक के अलावा पूरा हॉल अंधेरे में डूब गया।
मयंक ने अपना काम कर दिया था।
अंधेरे में अफरा-तफरी मच गई। चांसलर के आदमी असमंजस में इधर-उधर देखने लगे।
"अभी!" मायरा चिल्लाई।
आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा और वे एक तरफ भाग गए। मायरा जमीन पर गिर पड़ी और अपने जूते से एक छोटा चाकू निकाला, जिसे उसने छिपा रखा था।
दूर से एक आवाज गूंजी—कबीर की। "डीन! इधर आओ!"
कबीर डीन के नोट्स में उल्लिखित दीवार में बने एक गुप्त दरवाजे से अंदर दाखिल हुआ। वह डीन के पास पहुंचा और उसकी रस्सियां काटने लगा।
"कबीर, नहीं!" डीन ने कहा। "तुम घायल हो।"
"चलो!" कबीर ने उसे उठाने की कोशिश करते हुए कहा।
लेकिन तभी बत्तियाँ वापस आ गईं। चांसलर ने बैकअप जनरेटर चालू कर दिया था। और अब वह कबीर और डीन के ठीक सामने खड़े थे।
"बहादुर," चांसलर ने कहा। "लेकिन मूर्ख।"
उसने कबीर पर हमला किया। उसका हाथ, जो अब मजबूत और नुकीला था, कबीर की ओर बढ़ा। कबीर ने बचाव किया, लेकिन वह बहुत तेज था। चांसलर का हाथ कबीर की छाती में घुस गया।
"नहीं!" डीन चिल्लाया।
कबीर चिल्लाया, लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने अपना छिपा हुआ चाकू निकाला और चांसलर की बांह में घोंप दिया। काला तरल पदार्थ तेजी से निकला और चांसलर चीखते हुए पीछे की ओर लड़खड़ा गया।
मायरा दौड़कर उनके पास गई। उसने चांसलर के आदमी की जेब से फ्रीक्वेंसी जनरेटर छीन लिया, जो अभी भी उसी के पास था।
"Alok! Riya!" she shouted.

आलोक और रिया ने हाथ मिलाए। उनका प्यार फिर से जागृत हुआ और एक सुनहरी रोशनी फैलने लगी। मायरा ने फ्रीक्वेंसी जनरेटर चालू किया।
लेकिन इस बार चांसलर पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह हँसे—एक भयानक, विकृत हँसी। "यह काम नहीं करेगा! मैंने अपना डर त्याग दिया है! मुझे अब और डर नहीं लगता!"
और सचमुच, अब उसकी आँखों में डर का नामोनिशान नहीं था। केवल पागलपन था। उसने अपने डर को इतनी गहराई से दबा दिया था कि अब उसका उस पर कोई असर नहीं होता था।
"तो अब तुम क्या करोगे?" चांसलर ने आगे बढ़ते हुए कहा। "तुम्हारा प्यार मेरे पागलपन के आगे कमजोर पड़ जाएगा।"
वह मायरा के सामने खड़ा हुआ। "तुम्हारी माँ की आँखें तुम्हारी ही तरह हैं। शायद मैं उसके शरीर से शुरुआत करूँ।"
"उसे मत छुओ!" रुद्र की आवाज गूंजी।
वह दौड़ता हुआ आया और पूरी ताकत से चांसलर से टकरा गया। चांसलर गिर पड़ा लेकिन तुरंत उठ गया।
"रुद्र!" मायरा चिल्लाई।
"तुम्हारी माँ सुरक्षित है," रुद्र ने कहा। "मयंक ने उसे बचा लिया। अब बस यह राक्षस ही बचा है।"
चांसलर खड़े हो गए। उनका शरीर और भी विकृत हो रहा था। "तो अब आप सब मेरे सामने हैं। बहुत बढ़िया। मैं आप सबको एक साथ ले चलता हूँ।"
वह दहाड़ा, और उसके शरीर से काले, मांसल रेशे निकलने लगे, जो हर दिशा में फैलने लगे। वह एक राक्षस में बदल रहा था—एक ऐसा राक्षस जो डर से नहीं, बल्कि पागलपन से पैदा हुआ था।
रुद्र ने मायरा का हाथ पकड़ा। आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा। खून से लथपथ कबीर आकर उनके बगल में खड़ा हो गया।
कबीर ने कहा, "हम मिलकर लड़ेंगे।"
"हां," रुद्र ने कहा। "साथ में।"
और चांसलर-राक्षस उन पर टूट पड़ा, उसकी लताएँ चारों ओर से हमला करने के लिए तैयार थीं। अंतिम युद्ध शुरू हो चुका था।

अध्याय 28: दर्पण का रहस्य

चांसलर-राक्षस का हर हमला प्रलय जैसा था। उसकी काली, मांसल लताएँ दीवारों से टकरातीं, विशाल क्रिस्टलों को चकनाचूर कर देतीं और टीम की ओर हवा में चीरती हुई बढ़तीं। रुद्र ने एक लता को पकड़कर फाड़ने की कोशिश की, लेकिन वह जीवित रबर की तरह फिसलन भरी और मजबूत थी।

"यह काम नहीं कर रहा है!" पसीने और खून से लथपथ रुद्र चिल्लाया।

कबीर, जिसकी छाती से अभी भी खून बह रहा था, ने अपने शरीर से एक लता के वार को रोकने की कोशिश की। लता उसके कंधे में घुस गई, और कबीर का चेहरा दर्द से सिकुड़ गया, लेकिन वह चीखा नहीं। उसकी आँखों में एक खोखली, शांत हिंसा थी —एड्रेनालाईन का वह नियंत्रित रूप जो उसकी नई क्षमता बन गया था।

मयंक ने अपने लैपटॉप को बचाते हुए कहा, "वह हमारी हर चाल का जवाब दे रहा है। मेरे जैमिंग सिग्नल भी काम नहीं कर रहे हैं। उसके शरीर में अब कुछ और है... बाहरी ऊर्जा नहीं, बल्कि आंतरिक ऊर्जा।"

जैसे ही एक लता उनकी ओर बढ़ी, आलोक ने रिया को एक तरफ धकेल दिया। उसने उस लता को देखा—सिर्फ अपनी आँखों से ही नहीं, बल्कि अपनी संवेदनशीलता से भी। और उसे... खालीपन का एहसास हुआ। एक ऐसा शून्य जो भावनाओं को निगल गया।

"इसमें... इसमें कुछ भी नहीं है," आलोक हांफते हुए बोला। "न डर, न गुस्सा, न दर्द। बस... एक भूख। एक लालसा।"

"अमरता की लालसा," एक नई आवाज गूंजी।

यह आवाज़ पहले की तरह उनके दिमाग में नहीं थी, बल्कि हवा में गूंज रही थी। कोमल, स्त्रीत्व से भरी, फिर भी दर्द से लथपथ। वे सब मुड़ गए।

क्रिस्टलों के भीतर फंसी डॉ. मीरा शर्मा की आंखें खुली थीं। वे एक कोमल, सफेद चमक से जगमगा रही थीं, जो क्रिस्टलों के नीले प्रकाश से बिल्कुल अलग थी। उनके होंठ हिल नहीं रहे थे, लेकिन आवाज आई, मानो क्रिस्टल खुद बोल रहे हों।

"मौसी?" मायरा आगे बढ़ी, उसकी आँखों में फिर से आंसू आ गए।

"मायरा। मेरी प्यारी। तुम कितनी बड़ी हो गई हो।" मीरा की आवाज़ में मातृत्व की गर्माहट थी, एक ऐसा प्यार जो समय और रूप से परे था।

"हम तुम्हें बचाने आए हैं," मायरा ने क्रिस्टल के करीब जाते हुए कहा।
मुझे बचाने की कोई जरूरत नहीं है। मैं सुरक्षित हूँ। इसी रूप में। लेकिन तुम... तुम खतरे में हो।
चांसलर-राक्षस ने फिर हमला किया। इस बार उसकी लताएँ सीधे मीरा की ओर बढ़ीं, मानो उसकी उपस्थिति से चिढ़ गई हों। लेकिन क्रिस्टल के पास पहुँचते ही लताएँ जलने लगीं और काले धुएँ में बदल गईं।
"तुम जीत नहीं सकते, देवराज," मीरा ने दृढ़ स्वर में कहा। "तुमने जो खोजा है, उसे तुम कभी पूरी तरह समझ ही नहीं पाए।"
"मैं समझ गया!" चांसलर-राक्षस की आवाज पूरी तरह से अमानवीय होकर गूंज उठी। "यह शक्ति है! अमरता है!"
"नहीं," मीरा ने कहा। "यह एक दर्पण है।"
एक अजीब सी शांति छा गई। चांसलर-राक्षस थम गया, मानो उस शब्द ने उसे छू लिया हो।
"एक दर्पण?" आलोक ने पूछा।
मीरा की आँखों से एक कोमल प्रकाश निकला, और हवा में एक दृश्य उभरने लगा—जैसे कोई होलोग्राम हो। उन सभी ने देखा: एक युवा मीरा शर्मा, लैब कोट पहने, उल्कापिंड के एक नमूने के सामने बैठी हुई थी।
"2009," मीरा की आवाज़ ने बताया। "जब मैंने पहली बार एनोमली एक्स का अध्ययन शुरू किया था। मुझे लगा था कि यह मानवता को आगे बढ़ाएगा। बीमारियों का इलाज करेगा। लेकिन मैं गलत थी।"
दृश्य बदल गया: लगभग आठ साल का एक बच्चा खिलौने से खेल रहा था। तभी वैज्ञानिक उसे एक कमरे में ले गए। बच्चा डरा हुआ था। उसे एनोमली एक्स का एक नमूना दिया गया। और फिर... बच्चे के शरीर में बदलाव आने लगे। उसकी आँखें काली हो गईं, उसकी उंगलियाँ लंबी हो गईं। लेकिन सबसे भयानक बात यह थी कि बच्चा हंसने लगा। उसकी हंसी बचकानी नहीं, बल्कि डरावनी थी।
"उसका नाम अर्जुन था," मीरा ने दुख से भरी आवाज में कहा। "उसे कुत्तों से डर लगता था। बचपन में एक कुत्ते ने उसे काट लिया था। और एनोमली एक्स ने उस डर को पढ़ लिया... और उसे शक्ति में बदल दिया।"
उस दृश्य में, बच्चे के हाथ नुकीले पंजों में बदल गए। "उसे अब कुत्तों से डर नहीं

लगता था। वह खुद एक कुत्ता बन गया था।"
"हे भगवान," रिया ने फुसफुसाते हुए कहा।
"यह हर प्रतिभागी के साथ हुआ," मीरा ने आगे कहा। "एनोमली एक्स उनके आंतरिक आघात को पढ़ लेती थी और उसे भौतिक रूप दे देती थी। पानी से डरने वाली एक लड़की की त्वचा पर गलफड़े उग आए। अंधेरे से डरने वाले एक लड़के की आंखें बिल्ली की तरह चमकने लगीं।"
वह दृश्य गायब हो गया। मीरा की आँखों से सफेद रोशनी की आँसू जैसी बूँदें गिरीं, जो क्रिस्टलों में समा गईं।
"मैंने प्रयोगों को रोकने की कोशिश की। लेकिन देवराज... वह सुनने को तैयार नहीं था। उसने कहा कि यह 'अस्थिरता का दौर' है। हमें 'शुद्ध मेजबान' चाहिए - ऐसे लोग जिनका आघात बहुत गहरा न हो, या जो अपने डर को नियंत्रित कर सकें।"
चांसलर-राक्षस दहाड़ा। "मैंने सही काम किया! तुम्हारी कमजोरी ने तुम्हें अंधा कर दिया!"
"नहीं," मीरा ने कहा, और अब उसकी आवाज़ में एक दिव्य शक्ति थी। "तुम्हारा डर तुम्हें अंधा कर रहा है। तुम मृत्यु से डरते हो। और यह सत्ता तुम्हारे उस डर को पढ़ रही है। तुम जो कुछ भी बन रहे हो, वह तुम्हारे डर का ही प्रतिबिंब है।"
आलोक को मीरा की बातें सच लगीं। जब उसने चांसलर-राक्षस को महसूस किया था, तब उसे खालीपन का अहसास हुआ था। लेकिन अब, मीरा की बातों के बाद, उसे कुछ और ही महसूस हुआ—एक गहरा, काला भय। मृत्यु का भय। यह भय इतना प्रबल था कि इसने चांसलर की बाकी सभी भावनाओं को निगल लिया था।
"तो हम कैसे लड़ें?" रुद्र ने पूछा। "अगर वह सिर्फ डर का प्रतिबिंब है, तो हम डर से कैसे लड़ें?"
"डर से नहीं," मीरा ने कहा। "प्यार से। खुशी से। शुद्ध, निस्वार्थ भावनाओं से। एनोमली एक्स उन भावनाओं को सहन नहीं कर सकता। क्योंकि यह एक दर्पण है - और दर्पण केवल वही दर्शाता है जो उसके सामने रखा जाता है। यदि आप भयभीत हैं, तो यह भय को बढ़ाएगा। यदि आप प्रेममय हैं... तो यह प्रेम को बढ़ाएगा।"
"लेकिन हमने कोशिश की," मायरा ने फ्रीक्वेंसी जनरेटर को ऊपर उठाते हुए कहा। "हमने इसे चालू किया। आलोक और रिया के प्यार ने इसे शक्ति दी। लेकिन इस बार यह काम नहीं किया।"

"क्योंकि तुम्हारा प्रेम अब पवित्र नहीं रहा था," मीरा ने कहा। "तुम भयभीत थे। क्रोधित थे। और भय प्रेम को भ्रष्ट कर देता है।"
कबीर, जो अब तक चुप था, आगे बढ़ा। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं, लेकिन उसकी आवाज़ साफ़ थी। "तो हमें क्या करना चाहिए? हम इंसान हैं। हम डरेंगे ही।"
"हां," मीरा ने कहा। "लेकिन तुम अकेले नहीं हो। तुम दोनों एक-दूसरे के साथ हो। और कभी-कभी, किसी दूसरे के लिए प्यार... खुद के लिए डर से कहीं ज्यादा शक्तिशाली होता है।"
उसने मायरा की तरफ देखा। "तुम्हारी माँ... वह तुम्हारे लिए क्या करती?"
"वह मेरे लिए अपनी जान दे देगी," मायरा ने बिना किसी झिझक के कहा।
और तुम उसके लिए?
मायरा ने रुद्र, फिर कबीर, आलोक, रिया और मयंक की तरफ देखा। "मैं उन सबके लिए अपनी जान दे सकती हूँ। सिर्फ माँ के लिए नहीं।"
"यही सच्चा प्रेम है," मीरा ने कहा। "निस्वार्थ। बिना शर्त। और यही वह चीज है जो एनोमली एक्स को हरा सकती है।"
चांसलर-राक्षस ने फिर हमला किया, लेकिन इस बार उसके हमले में हताशा झलक रही थी। उसे आभास हो गया था कि उसका रहस्य उजागर हो रहा है। उसकी लताएँ चारों दिशाओं से निकल आईं।
रुद्र ने मायरा को अपने पीछे खींच लिया। कबीर आलोक और रिया के सामने ढाल बनकर खड़ा हो गया। मयंक ने अपना लैपटॉप एक तरफ रख दिया और टूटे हुए क्रिस्टल का एक टुकड़ा हथियार के तौर पर उठा लिया।
"हम साथ रहते हैं," रुद्र ने कहा। "और हम उसे प्यार का मतलब समझाते हैं।"
"लेकिन कैसे?" रिया ने पूछा। "फ्रीक्वेंसी जनरेटर काम नहीं कर रहा है।"
आलोक ने कहा, "हमें इसकी ज़रूरत नहीं है," और उसकी आवाज़ में एक नया आत्मविश्वास झलक रहा था। "हमें बस एक-दूसरे की ज़रूरत है।"
उसने पहले रिया का हाथ पकड़ा, फिर कबीर का। कबीर ने रुद्र का हाथ पकड़ा। रुद्र ने मायरा का हाथ पकड़ा। मायरा ने मयंक का हाथ पकड़ा। और मयंक ने आलोक का हाथ पकड़ा।
वे एक घेरे में खड़े थे, हाथ एक दूसरे से जुड़े हुए थे। और जैसे ही उनके स्पर्श का मिलन हुआ, कुछ घटित हुआ।

क्रिस्टलों से निकलने वाली रोशनी तेज होने लगी। नीली चमक के बीच सुनहरी किरणें उभरने लगीं। हवा में एक गूंज उठी—वही ध्वनि जो फ्रीक्वेंसी जनरेटर से आ रही थी, लेकिन अब वह उनके शरीरों से आ रही थी।

"यह क्या है?" मयंक ने हैरानी से पूछा।

"तुम्हारा बंधन," मीरा ने गर्व भरी आवाज़ में कहा। "तुम एक हो रहे हो। न सिर्फ शारीरिक रूप से, बल्कि भावनात्मक रूप से भी। एनोमली एक्स तुम्हें अलग-अलग देखता था। लेकिन अब... अब तुम एक हो।"

चांसलर-राक्षस चीख उठा। जहाँ-जहाँ सुनहरी रोशनी उस पर पड़ी, उसकी लताएँ जलने लगीं। उसने पीछे हटने की कोशिश की, लेकिन रोशनी उसका पीछा करती रही।

"नहीं!" चांसलर की आवाज़ फिर से मानवीय हो गई, भय से भरी हुई। "मैं मरना नहीं चाहता! मैं नहीं मरूंगा!"

"देवराज, तुम तो पहले ही मर चुके हो," मीरा ने दया भरी आवाज़ में कहा। "जिस दिन तुमने डर को अपना भगवान बना लिया, उसी दिन तुम्हारी मानवता मर गई।"

सुनहरी रोशनी अब एक गोले के आकार में टीम के चारों ओर घूमने लगी। आलोक को लगा कि वह न केवल अपनी भावनाओं को, बल्कि दूसरों की भावनाओं को भी महसूस कर रहा है। उसने मायरा के लिए रुद्र की चिंता, कबीर का दृढ़ संकल्प, रिया की आशा, मयंक की बुद्धिमत्ता और मायरा के प्रेम को महसूस किया।

और साथ मिलकर वे एक शक्तिशाली, सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण कर रहे थे।

चांसलर-राक्षस का शरीर अब टूट रहा था। एनोमली एक्स उसके शरीर से एक काले पदार्थ के रूप में रिसकर हवा में विलीन हो गया। चांसलर अपने मानवीय रूप में लौट आया—एक बूढ़ा, कमजोर, मरणासन्न व्यक्ति। उसकी आँखों में अब भय भरा हुआ था, लेकिन इस बार यह उसका अपना भय था, एनोमली एक्स द्वारा बढ़ाया गया भय नहीं।

"मुझे मत मारो," उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "मैं... मैं जीना चाहता हूँ।"

रुद्र आगे बढ़ा। "हम तुम्हें नहीं मारेंगे।"

"लेकिन तुम्हें रुकना होगा," मीरा ने कहा। "उसे जाने दो। उसका डर ही उसकी सजा है।"

चांसलर जमीन पर गिर पड़े। उनका शरीर कांप रहा था। "मैं... मैं क्या करूँ?"

"जाओ," मायरा ने कहा, और उसकी आवाज़ में उसकी माँ की दृढ़ता झलक रही थी।

"और कभी वापस मत आना।"
चांसलर के आदमी, जो दूर से देख रहे थे, आगे आए और उसे उठा लिया। वे बिना कुछ कहे, हार मानकर चले गए।
हॉल में सन्नाटा छा गया। सुनहरी रोशनी धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी। टीम के सदस्यों ने एक-दूसरे का हाथ छोड़ दिया, लेकिन उनके बीच का बंधन और भी मजबूत हो गया था।
मायरा मीरा के पास गई। "मौसी... अब क्या होगा?"
मीरा की आँखों से फिर से सफेद रोशनी की आँसू जैसी बूँदें गिरीं। "मैं यहीं रहूँगी। इस जगह की रक्षक बनकर। एनोमली एक्स अभी शांत है, लेकिन इसे संतुलन की ज़रूरत है। मैं ही वह संतुलन बनूँगी।"
"लेकिन हम आपको यहां अकेला नहीं छोड़ सकते," मायरा ने कहा, उसकी आंखों में फिर से आंसू आ गए।
"मैं अकेली नहीं हूँ," मीरा ने कहा। "मैं उन सभी के साथ हूँ जो यहाँ खो गए। अर्जुन। प्रिया। रोहित। बृजेश। वे सभी अब एनोमली एक्स का हिस्सा हैं, और मैं उनकी आवाज़ हूँ।"
आलोक को लगा कि मीरा सच कह रही है। गुफा अब भावनाओं से भर गई थी, लेकिन वे भयभीत नहीं थीं। वे शांत थीं। उन्होंने स्वीकार कर लिया था।
"तुम्हें जाना ही होगा," मीरा ने कहा। "दुनिया को बताओ कि यहाँ क्या हुआ। सच बताओ। और... एक-दूसरे से प्यार करते रहो। यही सबसे बड़ी शक्ति है।"
उसकी आँखें बंद होने लगीं। "मायरा... अपनी माँ से कहो... मैं उसे माफ कर देती हूँ। और मैं उससे प्यार करती हूँ। मैं हमेशा उससे प्यार करती रहूँगी।"
"मौसी..." मायरा की आवाज भर्रा गई।
"अब जाओ।"
क्रिस्टलों की चमक फीकी पड़ गई। मीरा उसी शांत, क्रिस्टल से घिरी हुई अवस्था में लौट आई। लेकिन अब उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी—एक शांत, संतुष्ट मुस्कान।
टीम ने एक-दूसरे की ओर देखा। लड़ाई खत्म हो चुकी थी। चांसलर हार गया था। मीरा को शांति मिल गई थी। लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि यह अंत नहीं था। यह तो बस एक नई शुरुआत थी।
कबीर लड़खड़ा गया। रुद्र ने उसे पकड़ा। "तुम्हें अस्पताल जाना होगा।"

“हां,” कबीर ने कमजोर आवाज में कहा। “लेकिन पहले... पहले मैं बृजेश की मां से मिलना चाहता हूं। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि सब कुछ खत्म हो गया है।”
"हम सब साथ चलेंगे," रिया ने कहा।
वे गुफा से बाहर निकले। बाहर भोर हो रही थी। सूरज की पहली किरणें आसमान को गुलाबी रंग से रंग रही थीं। हवा इतनी ताज़ा थी मानो दुनिया धुल कर साफ हो गई हो। दूर से उन्हें दीन और मायरा दिखाई दीं। दीन सुरक्षित थी, थोड़ी घायल थी, लेकिन जीवित थी। वह मायरा की ओर दौड़ी और दोनों गले मिल गईं।
"माँ," मायरा रोने लगी। "मौसी... वो..."
"मुझे पता है," दीन ने रुंधे हुए स्वर में कहा। "मैंने इसे महसूस किया। अब उसे शांति मिल गई है।"
उसने मायरा की तरफ देखा। "और तुम? तुम सब?"
"हम ठीक हैं," रुद्र ने कहा। "हम साथ हैं।"
दीन ने रुद्र, मायरा, आलोक, रिया, कबीर और मयंक समेत सभी की ओर देखा। उसकी आँखों में गर्व झलक रहा था। "तुमने कर दिखाया। तुमने न सिर्फ चांसलर को हराया, बल्कि हम सबके अंदर छिपे उस डर को भी परास्त कर दिया।"
"हमने मिलकर इसे हराया," आलोक ने कहा और उसने रिया का हाथ पकड़ लिया।
"अब क्या होगा?" मयंक ने पूछा।
"अब हम सच बताएंगे," दीन ने कहा। "सबको। लेकिन पहले हमें इलाज की ज़रूरत है। आराम की। और फिर... फिर देखेंगे।"
दूर से एम्बुलेंस की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। पुलिस और मीडियाकर्मी भी पहुँचने लगे थे। उनकी कहानी अब सबके सामने आने वाली थी।
लेकिन उस पल, वे बस एक-दूसरे के साथ खड़े थे—छह दोस्त, अब एक परिवार। उन्होंने गुफा की ओर देखा। क्रिस्टलों की हल्की चमक अभी भी दिखाई दे रही थी, एक कोमल, शांतिपूर्ण प्रकाश।
"वह सही थी," आलोक ने कहा। "एनोमली एक्स एक दर्पण थी। और हमने उसमें अपना सबसे अच्छा प्रतिबिंब दिखाया।"
"हां," रुद्र ने कहा और मायरा का हाथ थाम लिया। "हमने यह साबित कर दिया कि प्रेम भय से कहीं अधिक शक्तिशाली है।"
और जैसे ही सूर्य की पहली किरणें गुफा के प्रवेश द्वार पर पड़ीं, क्रिस्टल सुनहरी

रोशनी से जगमगा उठे—एक विदाई, एक आशीर्वाद।
फाइल नंबर 2009 अब बंद हो रही थी। लेकिन उनकी अपनी कहानी—उनकी दोस्ती, उनका प्यार, उनका साहस—वह तो अभी शुरू ही हो रही थी।
और वे जानते थे कि वह कहानी कभी खत्म नहीं होगी।

अध्याय 29: हृदय का संघर्ष

सुबह की रोशनी से गुफा का प्रवेश द्वार सुनहरा हो गया था, लेकिन अंदर अब भी अंधेरा छाया हुआ था। कुछ देर पहले तक जो शांति थी, वह अब भंग हो गई थी। दूर से आती गाड़ियों के इंजनों की गड़गड़ाहट और पुलिस रेडियो की कर्कश आवाजें हवा में गूंज रही थीं।
मयंक ने अपने लैपटॉप पर आ रहे संकेतों को देखते हुए कहा, "वे आ गए हैं। पुलिस, एम्बुलेंस, मीडिया... और कुछ अन्य वाहन जो सरकारी नहीं लगते।"
"कुलपति के आदमी," रुद्र ने मुट्ठी भींचते हुए कहा। "वह हार नहीं मानेगा।"
डीन, जो अब तक मायरा से चिपकी हुई थीं, पीछे हट गईं। उनके चेहरे पर दृढ़ निश्चय था, मानो उन्होंने कोई फैसला कर लिया हो। "सुनो, सब लोग। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। पुलिस हमें यहाँ ढूंढ लेगी, और फिर पूछताछ शुरू हो जाएगी। लेकिन चांसलर... वह अब भी खतरनाक हैं।"
"लेकिन वह हार गया," रिया ने कहा। "उसका शरीर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है।"
"शरीर टूट सकता है, लेकिन जुनून नहीं," डीन ने कहा, और उनकी आवाज़ में एक अजीब सी दूरदर्शिता थी। "मैं अपनी बहन को जानती थी। वह कहा करती थी कि डर सबसे खतरनाक संक्रामक बीमारी है। और चांसलर के अंदर का डर... वह अभी भी जीवित है।"
आलोक ने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसने अपनी संवेदनशीलता को दबाकर महसूस किया—गुफा के बाहर, दूर कहीं, एक गहरा, काला भय। एक ऐसा भय जो हार के बाद भी शांत नहीं हुआ था, बल्कि और भी तीव्र हो गया था।
आलोक ने कांपती हुई आवाज में कहा, "वह वापस आ रहा है। उसके साथ लोग हैं... उनमें से कई हैं। और वे गुस्से में हैं।"
कबीर, जिसका शरीर अभी भी खून से लथपथ था, सीधा खड़ा हो गया। "तो हमें

तैयारी करनी चाहिए।"
"नहीं," डीन ने कहा। "आप सबको यह जगह छोड़नी होगी। मैं उन्हें रोके रखूंगा।"
"माँ!" मायरा चिल्लाई। "आप अकेले नहीं लड़ सकतीं!"
"मुझे लड़ने की ज़रूरत नहीं है," डीन ने कहा, और उसकी आँखों में शांत समर्पण भाव था। "मुझे बस समय चाहिए। ताकि आप सब भाग सकें।"
लेकिन तभी गुफा के प्रवेश द्वार से गोलियों की आवाज सुनाई दी। चीखें। फिर एक धमाका—कान फाड़ देने वाला, बेहद भयानक।
"वे हमला कर रहे हैं!" मयंक चिल्लाया।
गुफा का प्रवेश द्वार धुएँ और धूल से भर गया। आवाज़ें नज़दीक आती जा रही थीं—भारी जूतों की धमक, हथियारों की खड़खड़ाहट। और फिर, एक जानी-पहचानी आवाज़, जो अब पूरी तरह पागलपन में डूब चुकी थी।
"बाहर आओ! मुझे पता है तुम अंदर हो!"
कुलाधिपति।
वह जीवित तो था, लेकिन उसका रूप अब और भी विकृत हो चुका था। वह एक व्हीलचेयर पर बैठा था, जिसे उसके दो आदमी धकेल रहे थे। उसका शरीर पूरी तरह सूख चुका था, मानो कोई ममी हो। लेकिन उसकी आँखें... उसकी आँखें अब पूरी तरह काली थीं, पुतलियाँ गायब थीं, और उनमें एक अजीब सी चमक थी।
"देखो," उसने कर्कश स्वर में कहा। "मैं लौट आया हूँ। और इस बार... इस बार मैं तैयार हूँ।"
उसने अपना हाथ उठाया, और उसके पीछे खड़े तीस सैनिक आगे बढ़े—सभी हथियारबंद थे। लेकिन ये साधारण सैनिक नहीं थे। उनकी आँखों में भी वही खालीपन था जो चांसलर की आँखों में था। एनोमली एक्स के थोड़े से प्रभाव के कारण। उन्हें कोई डर नहीं था। उन्हें कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था।
"उन्होंने खुद को इंजेक्शन लगा लिया है," मयंक ने फुसफुसाते हुए कहा। "वे भावनाहीन हो गए हैं।"
"नहीं," आलोक ने आँखें चौड़ी करते हुए कहा। "वे डर से भरे हुए हैं। बस... अब वह डर गुस्से में बदल गया है।"
"तुमने मुझसे सब कुछ छीन लिया," चांसलर चिल्लाया। "मेरा स्वास्थ्य। मेरी ताकत। मेरा भविष्य। लेकिन आज... आज मैं यह सब वापस ले लूंगा।"

उसने इशारा किया और उसके आदमियों ने हमला शुरू कर दिया।
"बिखर जाओ!" रुद्र चिल्लाया।
टीम के सभी सदस्य अलग-अलग दिशाओं में भागे। रुद्र और मायरा एक बड़े क्रिस्टल के पीछे छिप गए। आलोक और रिया दूसरी तरफ चले गए। कबीर और मयंक एक दरार में छिप गए। और डीन... डीन वहीं खड़े रहे।
"देवराज," उसने स्पष्ट और स्थिर आवाज़ में कहा। "इसे खत्म करो। तुम जानते हो कि यह गलत है।"
"गलत?" चांसलर एक भयानक, खाँसी भरी हँसी हँसे। "जो जीतेगा वही सही होगा। और आज, मैं जीतूँगा।"
उसने अपने आदमियों को इशारा किया और वे डीन की ओर बढ़ गए।
"नहीं!" मायरा चीखी और बाहर कूद गई, लेकिन रुद्र ने उसे रोक लिया।
"रुको," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "हमें एक योजना की जरूरत है।"
लेकिन डीन के लिए योजना बनाने का समय नहीं था। दो आदमियों ने उसे पकड़ लिया। डीन ने विरोध नहीं किया। उसकी निगाहें मायरा पर टिकी थीं, और उसकी आँखों में एक संदेश था—'भागो'।
"अब," चांसलर ने कहा। "तुम सब बाहर आ जाओ, वरना मैं उसे मार डालूंगा।"
रुद्र ने मायरा की ओर देखा। उसकी आँखों में आँसू भरे थे, लेकिन उसने सिर हिलाकर कहा, "हम बाहर नहीं आएंगे।"
"तो फिर उसे मरने दो," चांसलर ने कहा और उसने पिस्तौल तान दी।
तभी कबीर ने हमला कर दिया।
वह जंगली जानवर की तरह दरार से बाहर निकला। उसका शरीर घायल था, लेकिन उसकी गति अविश्वसनीय थी। उसने डीन को पकड़े हुए दोनों आदमियों पर हमला किया—एक पर कोहनी से, दूसरे पर सिर से। वे पीछे हट गए, और डीन मुक्त हो गया।
"कबीर, नहीं!" डीन चिल्लाया।
लेकिन कबीर रुका नहीं। वह मिसाइल की तरह सीधे चांसलर की ओर बढ़ा। चांसलर के आदमियों ने गोलियां चलाईं। एक गोली कबीर के पैर में लगी। दूसरी उसके कंधे पर। तीसरी गोली उसकी छाती को छूकर निकल गई। लेकिन कबीर रुका नहीं।
उसकी आँखों में एक शांत, नियंत्रित आक्रामकता थी। एड्रेनालाईन उसकी नसों में दौड़

रहा था, दर्द को दूर धकेल रहा था।
वह चांसलर के पास पहुंचा और उनकी व्हीलचेयर को धक्का देकर गिरा दिया।
चांसलर जमीन पर गिर पड़े।
"तुम... तुम जानवर!" चांसलर चिल्लाया।
"हाँ," कबीर ने कहा, और उसकी आवाज़ में एक अजीब सी शांति थी। "एक ऐसा जानवर जो अपने दोस्तों की रक्षा करता है।"
लेकिन चांसलर हार मानने वालों में से नहीं थे। उन्होंने अपना हाथ उठाया और उनकी हथेली से एक काला तरल पदार्थ—शुद्ध एनोमली एक्स—निकल निकला। वह तरल पदार्थ हवा में फैल गया और जिन लोगों को वह छूता, वे विकृत होने लगे।
"उसने खुद को बम में बदल लिया है!" मयंक चिल्लाया।
"हमें उसे रोकना होगा!" रुद्र ने कहा और वह बाहर निकल गया।
अब छिपने का कोई फायदा नहीं था। रुद्र ने ज़मीन से एक बड़ा पत्थर उठाया—जो एक छोटी कार जितना भारी था—और उसे चांसलर के आदमियों पर फेंक दिया। पत्थर तीन आदमियों को कुचलते हुए दीवार से टकराकर चकनाचूर हो गया।
मायरा ने अपनी माँ के नोट्स खोले। "गुफा की संरचना... यहाँ एक कमजोर बिंदु है। अगर हम इसे गिरा देंगे, तो यह सब कुछ ढक लेगा।"
"नहीं!" आलोक चिल्लाया। "हम सब फंस जाएंगे!"
"हमें बाहर निकलने का रास्ता पता है," मायरा ने कहा। "वह गुप्त मार्ग जिसका इस्तेमाल कबीर ने किया था।"
दूसरी तरफ, रिया ने फ्रीक्वेंसी जनरेटर उठाया, लेकिन उसकी स्क्रीन खाली थी।
"बैटरी खत्म हो गई है। हमें इसे चार्ज करना होगा।"
"कैसे?" आलोक ने पूछा।
"भावनात्मक ऊर्जा के साथ," रिया ने कहा। "मेरे चाचा ने इसके बारे में लिखा था। लेकिन इसके लिए हमें एक साथ होना होगा, एकमत होना होगा।"
तभी चांसलर ने फिर से हमला कर दिया। उसके शरीर से निकलने वाला काला तरल अब हवा में घुल रहा था, और जो भी उसे सांस के साथ अंदर लेता, उसमें बदलाव आने लगता। एक सैनिक की भुजा लंबी हो गई, दूसरे की आंखें फट गईं। वे इंसान नहीं, बल्कि जानवर बन रहे थे।
"हमें इसे रोकना होगा!" डीन चिल्लाई और आगे बढ़ी। "देवराज! मुझे ले जाओ! मेरा

शरीर ले जाओ! लेकिन इन बच्चों को जाने दो!"
चांसलर ने उसकी ओर देखा। "तुम्हारा शरीर? तुम बूढ़ी हो गई हो। टूटी-फूटी। नहीं... मुझे नए शरीर चाहिए। उनके।"
उसकी नजर रुद्र पर पड़ी। "वह। मजबूत। स्वस्थ।"
रुद्र ने मायरा का हाथ पकड़ लिया। "मेरे पीछे रहो।"
"नहीं," मायरा ने कहा। "हम साथ मिलकर लड़ेंगे।"
उसने अपनी जेब से एक छोटा सा उपकरण निकाला—मीरा का वह क्रिस्टल जो उसे मिला था। क्रिस्टल हल्की रोशनी बिखेर रहा था।
"मौसी... हमें आपकी मदद की ज़रूरत है," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
और जैसे ही उसने यह कहा, गुफा के भीतरी हिस्से से एक सफेद रोशनी फूट पड़ी। मीरा का क्रिस्टल-शरीर फिर से चमकने लगा।
"एकजुट हो जाओ," उसकी आवाज गूंजी। "हाथ मिलाओ। अपने दिलों को एकजुट करो।"
रुद्र ने मायरा का हाथ पकड़ा। आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा। कबीर, जो अब लड़ाई में घायल हो चुका था, उनके पास आया। मयंक भी आया। और डीन भी।
वे एक घेरे में खड़े थे, एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए। और फिर, धीरे-धीरे कुछ घटने लगा।
आलोक को ऐसा महसूस हुआ कि वह केवल अपनी ही नहीं, बल्कि दूसरों की भी भावनाओं को महसूस कर रहा है। रुद्र की मायरा के लिए चिंता प्रेम में बदल रही थी। मायरा का अपनी माँ के लिए डर साहस में बदल रहा था। कबीर का दर्द दृढ़ संकल्प में बदल रहा था। रिया का दुख आशा में बदल रहा था। मयंक की बेचैनी बुद्धिमत्ता में बदल रही थी। और डीन का पछतावा शांति में बदल रहा था।
यह सब एक ऊर्जा में विलीन हो रहा था—एक शुद्ध, दीप्तिमान ऊर्जा में।
चांसलर ने यह देखा और उसकी काली आँखों में फिर से भय झलक उठा। "नहीं... फिर से यही सब!"
"अब!" मीरा की आवाज गूंजी।
और टीम ने मिलकर काम किया।
रुद्र ने अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल किया। उसने दीवार पर जोर से मुक्का मारा, और पत्थर गिरने लगे, जिससे गुफा का प्रवेश द्वार बंद हो गया।

आलोक ने अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल किया। उसने चांसलर के आदमियों के मन की बात जान ली और उन्हें बता दिया कि हमला कहाँ से होने वाला है। उन्होंने गोलियों से बचते हुए जवाबी हमला किया।

कबीर ने दर्द सहने की अपनी क्षमता का इस्तेमाल किया। वह गोलियों की बौछार के बीच सीधे दौड़ पड़ा और एक-एक करके दुश्मनों को मार गिराया।

मयंक ने अपनी बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया। उसने चांसलर के आदमियों के हथियारों को हैक कर लिया, जिससे वे काम करना बंद कर दिए।

रिया ने अपने चाचा के फ्रीक्वेंसी जनरेटर का इस्तेमाल किया। उसने उसे खोला और टीम की भावनात्मक ऊर्जा से उसकी बैटरी चार्ज की। डिवाइस फिर से चमकने लगा।

और मायरा... मायरा ने अपनी रणनीति अपनाई। उसने अपनी माँ के नोट्स पढ़े और गुफा की कमजोरियों को चिह्नित किया। "वहाँ!" उसने एक जगह की ओर इशारा करते हुए चिल्लाया। "छत गिरा दो!"

रुद्र ने देखा। छत से एक बड़ा पत्थर लटक रहा था, जो क्रिस्टलों से जुड़ा हुआ था। उसने एक और पत्थर उठाया और उसे छत के उस हिस्से पर फेंक दिया। पत्थर सीधे छत पर लगा और छत टूटने लगी।

"भागो!" डीन चिल्लाया।

सब लोग भागे। कबीर ने डीन का हाथ पकड़ा और उन्हें खींचकर ले गया। रुद्र ने मायरा को उठाया। आलोक और रिया हाथ में हाथ डालकर भागे। मयंक सबसे पीछे था।

गुफा का प्रवेश द्वार अब बंद था, लेकिन वे मीरा द्वारा बताए गए गुप्त मार्ग की ओर दौड़े। यह एक संकरी दरार थी जो नीचे की ओर जाती थी।

उनके पीछे से चांसलर चिल्लाया, "मत जाओ! मैं तुम्हें रोकूंगा!"

उसने अपने आखिरी आदमियों को आगे भेजा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। छत गिर चुकी थी और चट्टानों ने गुफा के मुख्य हॉल को बंद कर दिया था। चांसलर और उसके आदमी अंदर फंस गए थे।

गुप्त मार्ग से बाहर निकलते ही टीम जंगल में पहुँच गई। वे सुरक्षित थे। लेकिन वे जानते थे कि यह अंत नहीं था।

गुफा के बहुत अंदर से एक आखिरी चीख सुनाई दी—कुलपति की। और फिर... सन्नाटा छा गया।

"वह चला गया," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा।
"नहीं," डीन ने कहा, और उनकी आवाज़ में एक अजीब सी दृढ़ता थी। "वह हमेशा के लिए चला गया है।"
मायरा ने अपनी मां की तरफ देखा। "क्या आप ठीक हैं?"
डीन ने मुस्कुराने की कोशिश की। "जी हां, प्रिय। अब सब ठीक हो जाएगा।"
लेकिन तभी उसका शरीर जवाब दे गया। डीन लड़खड़ा गई और रुद्र ने उसे पकड़ लिया। उसकी कमीज़ के नीचे खून दिखाई दे रहा था।
"माँ!" मायरा चिल्लाई।
"चिंता मत करो," डीन ने कहा, उनकी आवाज कमजोर पड़ रही थी। "यह बस... एक छोटी सी चोट है।"
लेकिन यह मामूली चोट नहीं थी। उसे गोली लगी थी। शायद कबीर ने उसे बचाते समय। शायद जब वह चांसलर के सामने खड़ी थी।
रुद्र ने उसे ज़मीन पर लिटा दिया। "एम्बुलेंस! हमें एम्बुलेंस चाहिए!"
मयंक ने अपना फोन निकाला, लेकिन उसमें सिग्नल नहीं था।
"नहीं," डीन ने कहा और मायरा का हाथ थाम लिया। "समय नहीं है।"
"नहीं, माँ, नहीं!" मायरा रोने लगी।
"सुनो, मायरा," डीन ने हर शब्द के साथ कमजोर होते हुए कहा। "मैं... मैं अपनी बहन के पास जा रहा हूँ। वह मेरा इंतजार कर रही होगी।"
"नहीं, तुम नहीं जा सकते," मायरा ने आँसुओं में डूबते हुए कहा।
डीन ने रुद्र की ओर देखा। "उसका ख्याल रखना। हमेशा।"
"मैं करूँगा," रुद्र ने रुंधे हुए स्वर में कहा।
फिर डीन ने आलोक, रिया, कबीर और मयंक समेत सभी की ओर देखा। "तुम सब... तुम सब मेरे बच्चे हो। और मुझे... तुम पर गर्व है।"
उसकी सांसें धीरे-धीरे चलने लगीं। "उसे रोको... एक दूसरे से प्यार करो..."
और फिर, उनकी अंतिम सांस। डीन की आंखें बंद हो गईं। उनके चेहरे पर शांति का भाव था, मानो उन्हें अंततः शांति मिल गई हो।
मायरा चीखी—दर्दनाक, दिल दहला देने वाली चीख। वह अपनी माँ के शरीर पर गिर पड़ी और रोने लगी। रुद्र ने उसे गले लगाया, लेकिन वह भी रो रहा था।
आलोक ने रिया का हाथ पकड़ा और दोनों की आंखों से आंसू बहने लगे। कबीर ने

अपना सिर झुकाया और मयंक ने अपनी आंखें बंद कर लीं।
सुबह की रोशनी ने उन पर दया दिखाई। पक्षी चहचहा रहे थे, मानो कुछ हुआ ही न हो। लेकिन उनकी दुनिया अब चकनाचूर हो चुकी थी।
लड़ाई जीत ली गई। लेकिन इसकी कीमत... बहुत भारी थी।

अध्याय 30: बलिदान

दीन के शरीर के धीरे-धीरे ठंडा होने की प्रक्रिया इतनी धीमी थी कि वह यातना के समान लग रही थी। मायरा उसके ऊपर झुकी हुई थी, उसके हाथ उसकी माँ के चेहरे को ऐसे छू रहे थे मानो वह कोई गर्म चीज़ हो जो ठंडी हो रही हो। उसकी आँखों से आँसू नहीं, बल्कि एक खालीपन बह रहा था—एक ऐसा दुःख जो रोने से परे था।
रुद्र ने मायरा के कंधे पर हाथ रखा, लेकिन मायरा ने उसे झटक दिया। "छोड़ दो।"
"मायरा..."
"मैंने कहा, छोड़ दो!" उसकी आवाज चीख जैसी थी, मानो कोई जानवर घायल होने के बाद छिपने की कोशिश कर रहा हो।
वह खड़ी हुई और दीन के शरीर से इस तरह दूर चली गई मानो वह अब कोई अजनबी हो। उसकी आँखें चौड़ी हो गई थीं, जिनमें शब्दों से परे सदमा झलक रहा था।
“वह चली गई,” मायरा ने खुद को समझाते हुए कहा। “मेरी माँ... वह चली गई।”
आलोक ने रिया का हाथ और कसकर पकड़ लिया। वह मायरा के दर्द की लहरों को हवा में महसूस कर सकता था। एक ऐसा तीव्र दर्द जो उसकी अपनी संवेदनशीलता को भी भेद रहा था।
मयंक कांपती हुई आवाज में बोला, "हमें यहां से चले जाना चाहिए। पुलिस आ जाएगी। हमें उन्हें बताना होगा..."
कबीर ने खोखली आवाज़ में कहा, "उन्हें क्या बताऊं? कि दीन की मौत हमारी वजह से हुई? कि हमने चांसलर को मार डाला?"
"हमने उसे नहीं मारा," रिया ने कहा। "गुफा ढह गई। यह एक दुर्घटना थी।"
"एक हादसा," मायरा ने अपने होठों पर कड़वी मुस्कान लिए दोहराया। "हाँ। बस एक हादसा। मेरी माँ की मौत की तरह।"
फिर जमीन हिल उठी।

एक हल्की सी कंपन, मानो दूर कहीं कोई विस्फोट हुआ हो। फिर एक और। और तीसरी। गुफा के अंदर से आवाज़ें आ रही थीं—पत्थरों के खिसकने और चट्टानों के टूटने की।

"क्या..." आलोक ने कहना शुरू किया, लेकिन उसका वाक्य अधूरा रह गया।

चट्टानों से बंद गुफा का मुँह अचानक खुल गया। एक काला, मांसल हाथ पत्थरों को चीरता हुआ बाहर निकला। फिर दूसरा हाथ। और फिर एक सिर—या कहें कि जो कभी सिर हुआ करता था।

कुलाधिपति।

लेकिन अब वह चांसलर नहीं रहे थे। एनोमली एक्स ने उन्हें पूरी तरह से अपने वश में कर लिया था। उनका शरीर अब तीन गुना बड़ा हो गया था, उनकी त्वचा काली, चमकदार और बिना आंखों वाली थी। उनके शरीर से मांसल रेशे निकले हुए थे, जो किसी समुद्री जीव के तंतुओं की तरह हवा में लहरा रहे थे। जहां उनका मुंह होना चाहिए था, वहां एक बड़ा छेद था, जिससे काला तरल टपक रहा था।

"नहीं..." मयंक ने फुसफुसाते हुए कहा। "यह संभव नहीं है..."

आलोक ने भयभीत स्वर में कहा, "हाँ, यही सच है। उसका डर... उसका डर अब पूरी तरह से उस पर हावी हो गया है। वह जो कुछ भी बन गया है, वह उसके डर का ही प्रतिबिंब है।"

चांसलर-राक्षस दहाड़ा—ऐसी आवाज़ जो न तो इंसान की थी और न ही जानवर की, बल्कि किसी दूसरी दुनिया की थी। उसने अपनी लताएँ फैलाईं और सीधे दीन के शरीर की ओर बढ़ने लगा।

"नहीं!" मायरा चीखी और आगे बढ़कर उस जीव और अपनी माँ के शरीर के बीच खड़ी हो गई। "तुम उसे छू नहीं सकते!"

"मायरा, पीछे हटो!" रुद्र चिल्लाते हुए उसकी ओर दौड़ा।

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। चांसलर-राक्षस की एक लता बिजली की गति से मायरा की ओर बढ़ी। रुद्र ने उसे एक तरफ धकेल दिया, लेकिन लता दीन के शरीर में घुस गई।

और फिर कुछ असंभव सा घटित हुआ।

दीन का शरीर हिला। उसकी आँखें खुलीं—काली, चमकती हुई। वह उठ बैठी, लेकिन यह दीन नहीं थी। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी, और जब उसने बात

की, तो वह चांसलर की आवाज़ थी।
"धन्यवाद," उसने कहा, और डीन के मुँह से चांसलर की आवाज़ इतनी भयावह थी कि सब लोग स्तब्ध रह गए। "इस शरीर में... अभी भी जीवन है। थोड़ा सा। लेकिन इतना काफी है।"
"माँ..." मायरा ने फुसफुसाते हुए कहा, उसका चेहरा डर से पीला पड़ गया था।
“तुम्हारी माँ नहीं, बच्ची,” दीन-राक्षस ने खड़े होते हुए कहा। काली लता अभी भी उससे जुड़ी हुई थी, जो उसे चांसलर-राक्षस से जोड़ रही थी। “वह बस... एक पात्र है। जैसे तुम सब भी बनोगे।”
रुद्र ने मायरा को अपने पीछे खींच लिया। "तुम उसके पास नहीं जाओगी।"
"और मुझे कौन रोकेगा? तुम?" दीन-राक्षस हंसते हुए बोली, अपना हाथ उठाते हुए। उसकी उंगलियां लंबी और नुकीली हो गईं। "तुम सबने मुझसे सब कुछ छीन लिया। मेरा प्रोजेक्ट। मेरा भविष्य। लेकिन अब... अब मैं तुम सबका भविष्य छीन लूंगी।" उसने हमला किया।
रुद्र ने मायरा को एक तरफ धकेल दिया और हमले को रोकने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन दीन-राक्षस अब साधारण नहीं थी। उसकी ताकत अविश्वसनीय थी। उसने एक ही वार में रुद्र को दूर फेंक दिया।
"रुद्र!" मायरा चिल्लाई।
आलोक और रिया आगे बढ़े। आलोक ने दीन-राक्षस की आँखों में देखने की कोशिश की, उसके मन की बात जानने की कोशिश की। लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था। केवल एक खालीपन। एक ऐसा खालीपन जो सब कुछ निगल जाता था।
"वहाँ कुछ भी नहीं है," उसने हांफते हुए कहा। "न यादें, न भावनाएं। बस... भूख।"
“तो फिर हम इसे भूखा मरने देंगे,” कबीर ने आगे बढ़ते हुए कहा। उसके घाव अभी भी ताज़े थे, लेकिन वह लड़ने के लिए तैयार था।
दीन-राक्षस ने कबीर की ओर देखा। "तुम... तुम तो पहले से ही मर रहे थे। मुझे तुम्हारी मदद करने दो।"
उसने हमला किया, लेकिन कबीर ने बचाव किया। उसने उसके हाथ पकड़कर उसे रोकने की कोशिश की। लेकिन उसकी ताकत जवाब दे रही थी। घाव, थकान, दर्द—सब उसे कमजोर कर रहे थे।
"मयंक!" रुद्र उठते हुए चिल्लाया। "वो यंत्र! वो फ़्रीक्वेंसी जनरेटर!"

मयंक ने अपना बैग खोला। फ्रीक्वेंसी जनरेटर अभी भी वहीं था, लेकिन उसकी स्क्रीन खाली थी। "इसमें बिजली नहीं है!"
"हमें इसे शक्ति देनी होगी," रिया ने कहा। "अपनी भावनाओं से।"
"लेकिन कैसे?" आलोक ने पूछा। "हम सब डरे हुए हैं। गुस्से में हैं।"
"नहीं," मायरा ने अचानक कहा। उसकी आवाज़ अब शांत थी, अजीब तरह से शांत। "मुझे डर नहीं है।"
सबने उसकी ओर देखा। मायरा खड़ी थी, उसकी आँखों में आँसू नहीं थे। उसके चेहरे पर दुःख से भी गहरा दृढ़ संकल्प झलक रहा था।
"मेरी माँ ने मुझे बचाने के लिए अपनी जान दे दी," उसने कहा। "और अब... अब वह उसी चीज़ का हिस्सा बन गई है जिससे वह हमेशा डरती थी। मैं उसे इस हालत में नहीं छोड़ सकती।"
उसने रुद्र की ओर देखा। "तुम्हें मुझे रोकना होगा।"
"किस बात से?" रुद्र ने डरते हुए पूछा।
"क्या करना होगा?" मायरा ने कहा और वह दीन-राक्षस की ओर चल पड़ी।
"मायरा, नहीं!" रुद्र चिल्लाया और उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन मायरा ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया।
"मुझे जाने दो, रुद्र," उसने कहा, उसकी आँखों में प्यार भरा हुआ था जो सब कुछ बयां कर रहा था। "तुम्हें जीना है। तुम सबको।"
और फिर वह दौड़ पड़ी—सीधे दीन-राक्षस की ओर।
दीन-राक्षस ने हमला किया। उसके नुकीले हाथ मायरा की ओर बढ़े। लेकिन मायरा ने बचाव नहीं किया। उसने अपनी बाहें इस तरह फैला दीं मानो उसे गले लगाना चाहती हो।
"माँ," उसने कहा, उसकी आवाज़ इतनी कोमल थी कि हवा में गूंज उठी। "मैं यहाँ हूँ।"
एक पल के लिए, दीन-राक्षस झिझका। उसकी काली आँखों में कुछ हलचल हुई—पहचान? कोई स्मृति? शायद दीन की चेतना, जो कहीं भीतर गहराई में अभी भी जीवित थी।
"इश... मायरा?" दीन की अपनी आवाज़, कमज़ोर, दूर से आती हुई।
"हां, मां," मायरा ने कहा, उसकी आंखों में फिर से आंसू आ गए, लेकिन इस बार ये दुख के नहीं, प्यार के आंसू थे। "मैं यहां हूं। और मैं आपको जाने दे रही हूं।"

वह आगे बढ़ी और अपनी मां को गले लगा लिया।
यह दृश्य इतना विरोधाभासी था कि सब लोग स्तब्ध रह गए। मायरा अपनी माँ को गले लगा रही थी, जबकि डीन का शरीर एक राक्षस में बदल गया था, और वह काली लता अभी भी उसे चांसलर-राक्षस से जोड़े हुए थी।
"तुम... तुम क्या कर रहे हो?" दीन की आवाज फिर से आई, इस बार कमजोर।
"मैं अलविदा कह रही हूँ, माँ," मायरा ने फुसफुसाते हुए माँ के कान में कहा। "जाओ। चाची के पास जाओ। वह तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं।"
और फिर उसने वो कर दिखाया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।
उसने अपना हाथ उठाया और दीन से जुड़ी काली लता को पकड़ लिया। लता जल रही थी, छूते ही उसकी हथेली झुलस गई, लेकिन मायरा चीखी नहीं। उसने लता को ज़ोर से खींचा और वह टूट गई।
चांसलर-राक्षस चीख उठा। दीन-राक्षस का शरीर कांप उठा। और फिर, धीरे-धीरे, दीन का शरीर सामान्य होने लगा। उसकी काली त्वचा अपने प्राकृतिक रंग में लौट आई। उसकी आँखें सामान्य हो गईं। और दीन फिर से पहले जैसी हो गई— एक मृत, लेकिन शांत स्त्री।
लेकिन काली लता अभी भी मायरा के हाथ में थी, और वह जल रही थी, उसकी त्वचा को झुलसा रही थी।
"मायरा!" रुद्र चिल्लाते हुए उसकी ओर दौड़ा।
लेकिन तभी चांसलर-राक्षस ने हमला कर दिया। उसने अपनी सारी भुजाएँ एक साथ मायरा की ओर बढ़ा दीं। रुद्र ने उन्हें रोकने और मायरा की रक्षा करने की कोशिश की, लेकिन भुजाएँ उसके शरीर को चीरती हुई मायरा तक पहुँच गईं।
एक लता ने उसकी छाती को भेद दिया।
मायरा का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। उसने नीचे उस काली लता को देखा जो अब उसके शरीर का हिस्सा बन चुकी थी। फिर उसने रुद्र की ओर देखा।
"रुद्र..."
"नहीं!" रुद्र चीखा और उसने उस लता को पकड़कर बाहर खींचने की कोशिश की, लेकिन वह टूट गई। उसका एक हिस्सा मायरा के अंदर रह गया।
मायरा जमीन पर गिर पड़ी। रुद्र उसके बगल में गिर पड़ा और उसे अपनी बाहों में उठा लिया।

"नहीं, नहीं, नहीं... मायरा, मेरी तरफ देखो। मेरी तरफ देखो!"
मायरा की आंखें खुली थीं, लेकिन उनमें धुंधलापन था। "रुद्र... मैं... मैं ठीक हूँ।"
"तुम ठीक नहीं हो," उसने कहा, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। "तुम्हें जीना होगा। हम तुम्हें बचा लेंगे।"
लेकिन मायरा ने सिर हिलाया। "नहीं... यह... यह मेरी भूमिका थी।"
"आपका क्या मतलब है?"
"कुलपति की फाइल में... मेरा नाम हटा दिया गया था। क्योंकि... क्योंकि मैं ही कुंजी थी। मेरी माँ की बेटी। मीरा की भतीजी। मेरे खून में... मेरे खून में वह प्रतिरोधक क्षमता थी जो एनोमली एक्स को रोक सकती थी।"
हांफते हुए उसने आगे कहा, "लेकिन इसके लिए... इसके लिए मुझे इसे अपने अंदर लेना पड़ा। और फिर..."
"और फिर क्या?" रुद्र ने लड़खड़ाती आवाज में पूछा।
"और फिर मुझे मरना पड़ा," मायरा ने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा। "ताकि यह मेरे साथ ही मर जाए।"
"नहीं!" रुद्र चिल्लाया और उसे और कसकर पकड़ लिया। "मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा। समझी? मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा।"
लेकिन मायरा का शरीर ठंडा होता जा रहा था। काले रंग का वह लतानुमा टुकड़ा उसके अंदर फैल रहा था, पर वह उसे भस्म नहीं कर पा रहा था। बल्कि, मायरा का खून उसे बेअसर कर रहा था। वह काला पदार्थ धीरे-धीरे भूरा, फिर सफेद और फिर... गायब हो गया।
लेकिन इस प्रक्रिया में मायरा का जीवन भी धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था।
"रुद्र," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "मैं तुमसे प्यार करती हूँ। हमेशा करती रहूँगी।"
"ऐसा मत कहो," उसने अपना सिर उसकी छाती में छिपाते हुए कहा। "तुम ठीक हो जाओगी। हम सब साथ रहेंगे। तुमने वादा किया था।"
"माफ़ करना..." मायरा की आवाज़ बहुत धीमी हो गई। "मेरा प्यार... मेरा प्यार सच्चा था... इन सभी झूठों के बीच..."
उसकी आंखें बंद हो गईं।
"मायरा? मायरा!" रुद्र ने उसे हिलाया, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। "जाग जाओ! कृपया, जाग जाओ!"

मायरा जाग नहीं पाई। उसकी सांसें बहुत धीमी और लगभग न के बराबर चल रही थीं। उसकी नब्ज़ बहुत धीमी गति से धड़क रही थी, मानो किसी धागे से बंधी हो।
रुद्र ने अपना सिर उठाया और चीख मारी—दर्द, क्रोध और निराशा से भरी एक चीख। वह चीख जंगल में गूंज उठी, जिससे पक्षी चौंककर उड़ गए।
दूर से चांसलर-राक्षस भी चीख रहा था। एनोमली एक्स का वह हिस्सा जो मायरा के शरीर में प्रवेश कर चुका था, नष्ट हो चुका था और अब उसका प्रभाव चांसलर-राक्षस पर पड़ रहा था। उसका शरीर सिकुड़ने लगा। एनोमली एक्स उससे एक काले पदार्थ के रूप में अलग होकर हवा में विलीन हो रहा था।
लेकिन रुद्र को अब कोई परवाह नहीं थी। वह मायरा के शरीर को अपनी बाहों में पकड़े बैठा, उसे हिलाता रहा, उसे जगाने की कोशिश करता रहा।
आलोक, रिया, कबीर और मयंक थोड़ी दूरी पर खड़े रो रहे थे। कोई कुछ कह नहीं पा रहा था। कोई भी शब्द इस दर्द को व्यक्त नहीं कर पा रहा था।
कबीर आगे बढ़ा और रुद्र के कंधे पर हाथ रखा। "रुद्र..."
"छोड़ दो!" रुद्र ने कबीर का हाथ झटकते हुए चिल्लाया। "उसे अकेला छोड़ दो! वह सो रही है। बस सो रही है।"
"रुद्र," रिया ने रोते हुए कहा। "वह चली गई।"
"नहीं!" रुद्र ने मायरा को और कसकर पकड़ते हुए कहा। "वह जा नहीं सकती। हमने वादा किया था। हम हमेशा साथ रहेंगे।"
और फिर, मानो अचानक ही, रुद्र का दर्द क्रोध में बदल गया। उसने मायरा को धीरे से ज़मीन पर लिटाया और खड़ा हो गया। उसकी आँखें लाल थीं, पागलपन से भरी हुई थीं।
"वह उसे ले गया," उसने खतरनाक रूप से शांत स्वर में कहा। "कुलपति उसे ले गया।"
"रुद्र, नहीं," आलोक ने आगे बढ़ते हुए कहा। "ऐसा मत करो।"
"और मैं क्या करूँ?" रुद्र चिल्लाया। "बैठकर रोऊँ? उसके वापस आने का इंतज़ार करूँ? नहीं। मैं उसे वापस लाऊँगा।"
कबीर ने दर्द भरी आवाज में कहा, "ऐसा नहीं हो सकता। मृत्यु को पलटा नहीं जा सकता।"
"तो मैं भी मर जाऊँगा," रुद्र ने चांसलर-राक्षस की ओर मुड़ते हुए कहा, जो अब एक

छोटी, विकृत आकृति में सिमट गया था। "लेकिन पहले, मैं इसे खत्म करूँगा।"
वह भागा। आलोक और कबीर ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन रुद्र की ताकत अब बेकाबू हो चुकी थी। उसने उन्हें धक्का देकर एक तरफ कर दिया और चांसलर-राक्षस पर टूट पड़ा।
उसने उसे हाथों से पकड़ा और ज़मीन पर पटकने लगा। एक बार। दो बार। तीन बार। हड्डियों के टूटने की आवाज़ गूंजी, लेकिन रुद्र रुका नहीं।
"तुम उसे ले गए!" वह हर बार दरवाजा पटकते हुए चीखता था। "तुम मेरी मायरा को ले गए!"
चांसलर-राक्षस अब चीख भी नहीं पा रहा था। उसका शरीर चकनाचूर हो चुका था। और फिर, एक आखिरी जोरदार प्रहार के साथ, वह फट गया। एनोमली एक्स एक काले पदार्थ के रूप में चारों ओर फैल गया, फिर हवा में विलीन हो गया।
चांसलर की मृत्यु हो गई थी। सचमुच, इस बार।
रुद्र हांफते हुए वहीं खड़ा रहा। उसके हाथ खून से लथपथ थे—कुलपति का खून, या शायद उसका अपना खून। फिर वह मायरा के पास लौटा और उसके बगल में गिर पड़ा।
"अब," उसने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा। "अब तुम वापस आ सकती हो। लड़ाई खत्म हो गई है।"
लेकिन मायरा नहीं उठी।
रुद्र ने उसे गले लगाया और रोने लगा। एक बच्चे की तरह। एक टूटे हुए इंसान की तरह।
आलोक, रिया, कबीर और मयंक उसके पास आए। वे सब उसे घेरकर रोने लगे—दीन के लिए, मायरा के लिए, बृजेश के लिए, रोहित के लिए, उन सभी के लिए जो खो गए थे।
सूरज पूरी तरह उग चुका था, उसकी रोशनी से जंगल सुनहरा हो गया था। लेकिन उस रोशनी में कोई गर्माहट नहीं थी। सिर्फ ठंडक थी।
लड़ाई जीत ली गई थी। लेकिन जीत की कीमत इतनी भारी थी कि वह हार जैसी महसूस हुई।
और रुद्र जानता था कि अब मायरा के बिना उसकी जीत का कोई मतलब नहीं है।

अध्याय 31: साझा जीवन

रुद्र की चीख जंगल में गूंजी और धीरे-धीरे खामोशी में घुल गई, लेकिन उसके दिल का दर्द कम नहीं हुआ। वह मायरा के शरीर को अपनी बाहों में कसकर पकड़े बैठा था, मानो उसे छोड़ देने से वह हवा में गायब हो जाएगी। उसकी आँखें सूजी हुई और लाल थीं, लेकिन अब आँसू नहीं निकल रहे थे। एक ठंडा, सुन्न कर देने वाला दर्द उसके अंदर फैल गया था।

आलोक, रिया, कबीर और मयंक कुछ दूरी पर खड़े थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। डीन और मायरा दोनों के शव उनके सामने पड़े थे। हवा में मौत की गंध फैली हुई थी, और दूर से आती पुलिस सायरन की आवाज़ उन्हें याद दिला रही थी कि असली दुनिया अभी भी मौजूद है।

"हमें... हमें कुछ करना होगा," मयंक ने थकी हुई आवाज़ में कहा। "पुलिस आ रही है। हमें उन्हें बताना होगा..."

कबीर ने अपने घावों को दबाते हुए कहा, जो फिर से खुलने लगे थे, "उन्हें क्या बताऊं? कि हमारी वजह से दो लोग मर गए? कि हममें से कुछ लोगों के पास अलौकिक शक्तियां हैं?"

"हमें सच बोलना होगा," रिया ने कहा, लेकिन उसकी आवाज में दृढ़ विश्वास की कमी थी।

आलोक ने रुद्र की ओर देखा। वह उसके दर्द को महसूस कर सकता था—एक गहरा, काला सागर जो सब कुछ निगलने को तैयार था। और उस सागर के नीचे, एक और भावना थी—क्रोध। एक विस्फोटक, अनियंत्रित क्रोध।

आलोक ने धीरे से कहा, "रुद्र," और वह उसके बगल में बैठ गया। "हमें मायरा को यहाँ से ले जाना होगा।"

रुद्र ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसकी निगाहें मायरा के चेहरे पर टिकी हुई थीं।

"रुद्र, मेरी बात सुनो," आलोक ने उसके कंधे को छुआ।

और फिर जमीन दोबारा हिल गई।

यह पहले से कहीं अधिक तीव्र था। एक गहरी, गड़गड़ाहट भरी कंपन जो मानो उनके पैरों तले की धरती को हिला रही थी। ऊपर, गुफा की छत से चट्टानें गिरने लगीं।

"गुफा ढह रही है!" मयंक चिल्लाया।

"भागो!" कबीर चिल्लाया और रिया को धक्का देकर एक तरफ हटाने के लिए आगे

बढ़ा।
आलोक ने रुद्र का हाथ पकड़ लिया। "उठो! हमें यहाँ से निकलना होगा!"
लेकिन रुद्र टस से मस नहीं हुआ। उसने मायरा को उठाने की कोशिश की, लेकिन उसका शरीर प्रतिक्रिया नहीं दे रहा था। दुःख और थकावट ने उसे पंगु बना दिया था।
छत से एक बड़ा पत्थर गिरा और सीधे आलोक की ओर बढ़ा। आलोक ने उसे देखा, लेकिन हिल नहीं सका—वह रुद्र को छोड़कर जाना नहीं चाहता था।
तभी कबीर आगे बढ़ा।
उसने आलोक को ज़ोर से धक्का दिया और आलोक ज़मीन पर गिर पड़ा। चट्टान सीधे कबीर पर गिरी।
आवाज ऐसी थी मानो हड्डियाँ टूट रही हों। कबीर जमीन पर गिर पड़ा और चट्टान उस पर आ गिरी, जिससे उसका पैर और कमर कुचल गई।
"Kabir!" Riya screamed.
रुद्र ने अपना सिर उठाया। उसकी आँखों में जो भी भाव थे, वे अचानक क्रोध में बदल गए। उसने मायरा को धीरे से नीचे लिटाया और खड़ा हो गया।
"तुमने... तुमने उसे मार डाला," उसने कहा, मानो वह पत्थर से बात कर रहा हो। "पहले मायरा को। अब कबीर को।"
"रुद्र, नहीं!" आलोक चिल्लाया, लेकिन रुद्र सुन नहीं रहा था।
रुद्र चट्टान की ओर बढ़ा। वह एक विशाल शिलाखंड था, जिसका वजन कम से कम एक छोटी कार जितना था। लेकिन रुद्र की आँखों में डर नहीं था। बस एक दृढ़ निश्चय झलक रहा था।
उसने अपने हाथ चट्टान के नीचे डाले और धक्का देने लगा। उसकी मांसपेशियां तन गईं, नसें फूल गईं। उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी आंखों की रक्त वाहिकाएं फटने लगीं।
"उठाओ!" वह चिल्लाया। "उठाओ, मैं तुमसे कह रहा हूँ!"
चट्टान हिलने लगी। धीरे-धीरे, इंच-दर-इंच, वह ऊपर उठने लगी। रुद्र के पैर कांप रहे थे, लेकिन वह रुका नहीं। उसने पूरी ताकत से धक्का दिया, और चट्टान इतनी ऊपर उठी कि कबीर का फंसा हुआ शरीर दिखाई देने लगा।
"उसे बाहर निकालो!" रुद्र हांफते हुए बोला।
मयंक और आलोक दौड़कर आगे बढ़े। उन्होंने कबीर के शरीर को पकड़ा और उसे

खींचकर छुड़ाया। कबीर बेहोश था, उसका शरीर खून से लथपथ था। उसकी टांग और पसलियां टूटी हुई लग रही थीं।

कबीर के बाहर आते ही रुद्र ने पत्थर छोड़ दिया। वह वापस जमीन पर गिर गया और धरती एक बार फिर कांप उठी।

रुद्र लड़खड़ा गया। उसने अपना हाथ अपनी छाती पर रखा। उसकी छाती में तेज, चुभने वाला दर्द हुआ, मानो किसी ने चाकू घोंप दिया हो।

"आह!" वह कराहते हुए घुटनों के बल गिर पड़ा।

"रुद्र!" रिया ने पास आते हुए कहा।

रुद्र का चेहरा पीला पड़ गया था। उसकी सांसें तेज और उथली हो गईं। उसने अपनी कमीज खोली और उसकी छाती पर, ठीक उसके दिल के ऊपर, एक अजीब सी सूजन दिखाई दी।

"मेरा... मेरा दिल..." वह हांफते हुए बोला।

मयंक ने कहा, "दिल का दौरा पड़ा। उसने अपनी शक्ति का दुरुपयोग उसकी सीमा से अधिक किया।"

रुद्र जमीन पर गिर पड़ा। उसकी आंखें बंद होने लगीं। रिया ने उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

"नहीं, रुद्र, नहीं!" वह रोने लगी। "हमने मायरा को खो दिया। हम तुम्हें भी नहीं खो सकते।"

आलोक उन दोनों के बीच खड़ा था—एक तरफ कबीर, बेहोश और घायल; दूसरी तरफ रुद्र, जिसका दिल कमजोर पड़ रहा था। और दूर, मायरा का शव पड़ा था।

उसे यह महसूस हुआ—कबीर की जीवन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो रही थी, जैसे कोई दीपक बुझ जाता है। और रुद्र की ऊर्जा तेजी से कम हो रही थी, जैसे कोई बांध टूट जाता है।

फिर उन्हें एक दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई।

वह एक हरे-भरे, धूप से जगमगाते खेत में था। उसके सामने बृजेश खड़ा था, जैसा वह पहले हुआ करता था - मुस्कुराता हुआ, स्वस्थ। और उसके पीछे... मायरा? नहीं, डीन। और रोहित सिंह। और वे सभी बच्चे जो 2009 में मारे गए थे। वे सभी वहाँ शांति से, मुस्कुराते हुए खड़े थे।

बृजेश ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, "कबीर, आओ भाई। तुमने बहुत लड़ाई लड़ी। अब

आराम करो।"
कबीर की आत्मा, एक धुंधली आकृति की तरह, बृजेश की ओर बढ़ने लगी।
"नहीं," आलोक ने धीरे से कहा, ज़ोर से नहीं, बल्कि मन ही मन। "अभी नहीं।"
उसने देखा कि रुद्र की जीवन ऊर्जा अब मात्र एक धुंधली, टिमटिमाती रेखा रह गई थी। और कबीर की ऊर्जा भी बिखर रही थी।
और फिर उसे अपनी क्षमता का एहसास हुआ। वह न केवल भावनाओं को पढ़ सकता था, बल्कि उन्हें महसूस भी कर सकता था। और अगर वह उन्हें महसूस कर सकता था, तो शायद... शायद वह उन्हें दूसरों के साथ साझा भी कर सकता था।
उसने रिया की तरफ देखा। "मुझे उनके पास ले चलो।"
"क्या?" रिया ने रोते हुए पूछा।
"मेरी क्षमता... शायद मैं कुछ कर सकता हूँ।"
रिया ने सिर हिलाया। उसने आलोक का हाथ पकड़ा और उसे रुद्र और कबीर के बीच ले गई।
आलोक घुटनों के बल बैठ गया। उसने एक हाथ रुद्र की छाती पर और दूसरा कबीर की छाती पर रखा, और अपनी इंद्रियों को पास ही पड़े मायरा के बेजान शरीर की ओर बढ़ाया। उसे उन सभी को आपस में जोड़ना था।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। और फिर, उसने अपनी संवेदनशीलता को नियंत्रित करने की कोशिश की—सिर्फ महसूस करने की नहीं, बल्कि जुड़ने की। वह कबीर और रुद्र के बीच ऊर्जा का एक पुल बनाने का प्रयास कर रहा था।
पहले तो कुछ नहीं हुआ। बस दो मरते हुए शरीरों का दर्द। लेकिन आलोक ने हार नहीं मानी। अपने मन में, उसने दोनों की यादें खोजनी शुरू कीं—रुद्र की मायरा से पहली मुलाकात, कबीर और बृजेश की दोस्ती, उन सबका हंसना, लड़ना, साथ रहना।
और फिर, उसने इसे महसूस किया—एक धड़कन। कबीर के दिल की एक हल्की धड़कन। और रुद्र के दिल की भी एक धड़कन, बहुत धीमी।
उसने उन दो धड़कनों को सुनना शुरू किया। और फिर, उसने उन्हें एक साथ लाने की कोशिश की। एक लय में। एक ही धड़कन में।
यह असंभव लग रहा था। लेकिन आलोक ने अपनी पूरी ताकत लगा दी। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी अपनी ऊर्जा कम हो रही है, मानो वह उन दोनों में स्थानांतरित हो रही हो।

"आलोक!" रिया ने घबराकर कहा, क्योंकि आलोक का चेहरा भी पीला पड़ रहा था।
"चिंता मत करो," आलोक ने फुसफुसाते हुए कहा। "यह काम कर रहा है।"
और सचमुच, कबीर के दिल की धड़कन थोड़ी तेज़ होने लगी। और रुद्र की भी। रुद्र की साँसें गहरी होने लगीं।
लेकिन आलोक की हालत बिगड़ती जा रही थी। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। वह गिरने लगा, लेकिन रिया ने उसे पकड़ लिया।
"रुको, आलोक!" रिया ने कहा। "तुम खुद को मार डालोगे!"
"नहीं..." आलोक ने कहा। "यह...यही मेरी क्षमता का असली उद्देश्य है। दूसरों को जोड़ना। उनकी जान बचाना।"
उसने आखिरी कोशिश की। उसने अपनी सारी ऊर्जा, अपनी सारी भावनाएं, अपना सारा प्यार—रिया के लिए, अपने दोस्तों के लिए—उस पुल पर उंडेल दिया।
और फिर एक चमत्कार हुआ। रुद्र ने गहरी साँस ली। कबीर कराह उठा। और कुछ ही दूरी पर, मायरा की छाती अचानक एक गहरी साँस के साथ फूल गई। वह कराह उठा, लेकिन यह किसी जीवित व्यक्ति की कराह थी। उसके टूटे अंगों से खून बहना बंद हो गया।
आलोक मुस्कुराया। और फिर, वह रिया की बाहों में बेहोश होकर गिर पड़ा।
"Alok!" Riya cried.
मयंक पास आया और आलोक की नब्ज़ जाँची। "वह ज़िंदा है। बस बेहोश है।"
रुद्र उठ बैठा। उसने अपनी छाती को छुआ। दर्द तो था, लेकिन अब सहने लायक था। उसने मायरा को देखा, फिर कबीर को, और फिर बेहोश आलोक को।
"उसने... उसने हमें बचाया," रुद्र ने रुंधे हुए स्वर में कहा। "मैं मर रहा था। कबीर मर रहा था। और उसने..."
कबीर हांफते हुए बोला, "उसने अपनी ऊर्जा हमारे साथ साझा की।" उसने अपने टूटे हुए पैर को देखा, जो अब धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से सीधा हो रहा था। एनोमली एक्स अभी भी उनके अंदर काम कर रही थी, उन्हें ठीक कर रही थी।
रिया ने आलोक का सिर अपनी गोद में थाम लिया। उसका चेहरा पसीने से भीगा हुआ था, लेकिन उसकी सांसें नियमित थीं। "वह ठीक हो जाएगा," उसने खुद को दिलासा देने की कोशिश करते हुए कहा।
दूर से सायरन की आवाज़ें नज़दीक आती जा रही थीं। पुलिस, एम्बुलेंस, दमकलकर्मी

—सभी पहुँच चुके थे।
मयंक ने कहा, "हमें अभी जाना होगा। हमें उन्हें सब कुछ बताना होगा।"
रुद्र ने मायरा की ओर देखा। फिर उसने कबीर की ओर देखा, जो टूटे हुए पैर के बावजूद अब बैठ गया था।
"हम साथ रहेंगे," रुद्र ने कहा, और उसकी आवाज़ में एक नया दृढ़ संकल्प झलक रहा था। "जो भी हुआ हो, हम सच बोलेंगे। और हम... हम मायरा और डीन को सम्मानपूर्वक विदाई देंगे।"
कबीर ने सिर हिलाया। "हाँ। और बृजेश को भी। और रोहित सिंह को भी।"
रिया ने आलोक के बालों पर हाथ फेरा। "आलोक ने हमें दिखाया कि हमारी शक्तियां सिर्फ लड़ने के लिए नहीं हैं। वे बचाने के लिए भी हैं।"
मयंक ने अपना फोन निकाला। "मैंने सब कुछ रिकॉर्ड कर लिया है। गुफा के अंदर की लड़ाई, चांसलर का रूपान्तरण, सब कुछ। यह सबूत है।"
रुद्र खड़ा हो गया। वह अभी भी कमजोर था, लेकिन खड़ा हो सकता था। वह मायरा के पास गया और उसके शरीर को देखा। उसने उसके चेहरे पर हाथ फेरा।
"मुझे माफ कर दो, मायरा," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकता। लेकिन मैं कोशिश करूंगा। क्योंकि तुम चाहती थी कि मैं जीऊं।"
उसने उसे आखिरी बार गले लगाया। फिर उसने अपनी जैकेट उतारकर उसके शरीर को उससे ढक दिया।
अब जंगल में पुलिस की गाड़ियां दिखाई दे रही थीं। वे चिल्ला रहे थे, "हाथ ऊपर करो! हाथ ऊपर करो!"
रुद्र ने अपने हाथ ऊपर उठाए। कबीर ने भी, हालांकि उसका एक हाथ टूटा हुआ था। मयंक ने भी ऐसा ही किया। रिया ने भी आलोक का सिर अपनी गोद में लिए हुए हाथ ऊपर उठाए।
एक पुलिस अधिकारी आगे बढ़ा। "यहां क्या हुआ? हमें विस्फोट की सूचना मिली है।"
रुद्र ने उसकी ओर देखा। "मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा। लेकिन पहले... पहले हमारे दोस्तों को चिकित्सा सहायता की ज़रूरत है। और इन दोनों को... इन दोनों को सम्मानपूर्वक ले जाना चाहिए।"
उन्होंने मायरा और डीन की ओर इशारा किया।
पुलिस अधिकारी ने देखा और उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। "हे भगवान... कितने लोग

मरे?"
"बहुत ज़्यादा हो गया था," रुद्र ने कहा। "लेकिन अब सब खत्म हो गया है। बिल्कुल खत्म।"
एम्बुलेंस से पैरामेडिक्स आगे आए। उन्होंने आलोक को स्ट्रेचर पर लिटाया, फिर कबीर को। रुद्र ने स्ट्रेचर लेने से इनकार कर दिया और खुद चलकर एम्बुलेंस तक गया।
जाते समय उसने पीछे मुड़कर देखा। गुफा का प्रवेश द्वार अब पूरी तरह से बंद था। चट्टानों के ढेर ने उसे ढक दिया था। और उन चट्टानों के नीचे चांसलर का शव भी पड़ा था।
और गुफा के अंदर, क्रिस्टलों के बीच, मीरा शर्मा शांति से सो रही थी।
एम्बुलेंस चलने लगी। रुद्र ने खिड़की से बाहर देखा। जंगल तेज़ी से पीछे छूटता जा रहा था। और उसके साथ ही, उनके जीवन का सबसे भयानक, सबसे दर्दनाक अध्याय भी समाप्त होता जा रहा था।
लेकिन वह जानता था कि यह अंत नहीं है। क्योंकि वे अभी भी जीवित थे। आलोक, कबीर, रिया, मयंक और वह स्वयं।
और मायरा... मायरा हमेशा उनके साथ रहेगी। उनकी यादों में। उनके दिलों में।
रुद्र ने अपनी आँखें बंद कर लीं। और इस बार, आँसू बह निकले—शुद्ध करने वाले, शांत करने वाले आँसू।
युद्ध समाप्त हो चुका था। अब उन्हें जीने का रास्ता खोजना था। साथ मिलकर।
और वे इसे ढूंढ लेंगे। क्योंकि अब वे सिर्फ दोस्त नहीं थे, बल्कि परिवार थे।
और परिवार कभी हार नहीं मानता।

अध्याय 32: चमत्कार

रुद्र को अस्पताल की सफेद दीवारें किसी ठंडे गोदाम जैसी लग रही थीं। हर सतह चमकीली, निर्जीव और बेरहम थी। वह एक बिस्तर पर लेटा था, उसकी छाती से दर्जनों तार जुड़े हुए थे, जो बीप करती मशीनों से कनेक्ट थे। डॉक्टर उसके चारों ओर भाग-दौड़ कर रहे थे, उसकी हृदय गति, रक्तचाप और अन्य महत्वपूर्ण संकेतों की निगरानी कर रहे थे।
एक डॉक्टर ने एक्स-रे फिल्म को लाइटबॉक्स पर रखते हुए कहा, "मायोकार्डियल

इन्फार्क्शन। लेकिन यह... यह असंभव है।"
"क्या हुआ?" दूसरे ने पूछा।
"देखो," पहले वाले ने इशारा करते हुए कहा। "दिल की मांसपेशी क्षतिग्रस्त है, लेकिन यह... यह ठीक हो रही है। अपने आप। जैसे कोई टूटी हुई हड्डी। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा।"
रुद्र उनकी बातें सुन सकता था, लेकिन उसका ध्यान कहीं और था। उसकी निगाहें छत पर टिकी थीं और मायरा के आखिरी शब्द उसके मन में गूंज रहे थे। 'मेरा प्यार... मेरा प्यार सच्चा था... इन सभी झूठों के बीच...'
उसकी आंख से एक आंसू निकलकर उसके गाल से बहता हुआ तकिए पर गिर गया।
दूसरे कमरे में कबीर की सर्जरी चल रही थी। उसकी टूटी पसलियों, टूटे पैर और अंदरूनी चोटों का इलाज किया जा रहा था। सर्जन हैरान थे।
वरिष्ठ सर्जन ने हाथ धोते हुए कहा, "तीन घंटे पहले तो इस मरीज का बचना नामुमकिन था। उसके शरीर में इतनी प्रतिरोधक क्षमता है... मानो उसकी कोशिकाएं सामान्य से दस गुना तेजी से ठीक हो रही हों।"
"विसंगति X," एक कनिष्ठ डॉक्टर ने फुसफुसाते हुए कहा। "क्या यह संभव है?"
"चुप रहो," वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, लेकिन उनकी आंखों में वही सवाल था।
तीसरे कमरे में आलोक बेहोश पड़ा था। रिया उसके बिस्तर के पास बैठी उसका हाथ पकड़े हुए थी। आलोक का चेहरा शांत था लेकिन पीला पड़ गया था। उसकी सांसें धीमी और स्थिर थीं।
दरवाजे पर खड़े होकर मयंक ने कहा, "वह ठीक हो जाएगा।" उसके हाथ पर पट्टी बंधी हुई थी—एक गहरा घाव जिसे अब टांकों से बंद कर दिया गया था।
"क्या आप निश्चित हैं?" रिया ने कांपती हुई आवाज में पूछा।
"हां," मयंक ने अंदर आकर उसके बगल में बैठते हुए कहा। "आलोक ने हमें बचाया। उसकी क्षमता... केवल भावनाओं को पढ़ने तक सीमित नहीं है। वह उन्हें जोड़ सकता है। और आज, उसने जीवन ऊर्जा को जोड़ा।"
रिया ने आलोक का हाथ और कसकर पकड़ लिया। "लेकिन उसने खुद को खतरे में डाल दिया।"
मयंक ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "यही तो उसका स्वभाव है। वह हमेशा दूसरों के लिए खुद को भुला देता है।"

फिर आलोक की आंखें खुल गईं।
वह तुरंत उठकर नहीं बैठा। उसने छत की ओर देखा, फिर धीरे से अपना सिर घुमाया। उसकी निगाहें रिया पर पड़ीं।
"रिया," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
"आलोक!" रिया की आँखों में आँसू भर आए। "क्या तुम ठीक हो?"
"हां," उसने उठने की कोशिश करते हुए कहा। रिया ने उसे सहारा दिया। "रुद्र? कबीर?"
"वे जीवित हैं," मयंक ने कहा। "आपने उन्हें बचा लिया।"
आलोक ने अपनी आँखें बंद कर लीं। "मैंने देखा... मैंने बृजेश को देखा। वह कबीर को ले जा रहा था। लेकिन मैंने उसे रोक दिया।"
"हाँ, तुमने किया," रिया ने उसके माथे पर चुंबन करते हुए कहा। "तुमने हम सबको बचा लिया।"
लेकिन तभी आलोक के चेहरे का भाव बदल गया। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और उसने अपना हाथ अपनी छाती पर रख लिया।
"क्या हुआ?" मयंक ने चिंता से पूछा।
"एक... एक धड़कन," आलोक ने कहा, उसकी सांसें तेज़ हो रही थीं। "दूर से आ रही है। गुफा से।"
"गुफा?" रिया ने पूछा। "लेकिन गुफा तो बंद है।"
“नहीं,” आलोक ने कहा, उसकी आवाज़ में एक अजीब सी उदासी थी। “वह अभी भी जीवित है। मीरा शर्मा। और वह... वह हमें कुछ बता रही है।”
'''
गुफा के अंदर, पत्थरों के ढेर के नीचे, क्रिस्टल अभी भी चमक रहे थे। लेकिन उनकी चमक धीरे-धीरे कम हो रही थी, जैसे कोई बैटरी खत्म हो रही हो। क्रिस्टलों के बीच, मीरा शर्मा का शरीर पारदर्शी होता जा रहा था, मानो धीरे-धीरे गायब हो रहा हो। लेकिन उसकी आंखें खुली थीं, जिनमें अंतिम दृढ़ संकल्प झलक रहा था।
"मेरे पास बहुत कम समय बचा है," उसकी आवाज़ न केवल गुफा में, बल्कि उन सभी के मन में गूंज उठी जो अनोमली एक्स के संपर्क में आए थे—रुद्र, आलोक, कबीर, रिया, मयंक। "लेकिन मैं तुम्हें एक आखिरी उपहार दे सकती हूँ।"
रुद्र के कमरे में मशीनों की बीप की आवाज तेज हो गई। उसकी हृदय गति बढ़ने

लगी।
"क्या हो रहा है?" एक नर्स ने हैरानी से पूछा।
“मरीज का रक्तचाप सामान्य हो रहा है!” दूसरे ने कहा। “दिल को जो नुकसान हुआ था... वो ठीक हो रहा है!”
रुद्र ने अपना हाथ अपनी छाती पर रखा। उसे एक गर्माहट महसूस हुई, मानो उसकी नसों में गर्म पानी बह रहा हो। और उस गर्माहट के साथ ही एक याद ताज़ा हो गई—मायरा की हंसी। उसकी आंखों की चमक। उसका प्यार।
""प्रेम कभी नहीं मरता,"" मीरा की आवाज़ आई। ""यह केवल अपना रूप बदलता है।""
ऑपरेशन थिएटर में कबीर के शरीर पर काम कर रहे सर्जन रुक गए। उन्होंने देखा कि उसकी टूटी हड्डियाँ सीधी हो रही हैं, घाव भर रहे हैं और सूजन कम हो रही है। यह कोई चिकित्सीय चमत्कार नहीं था—यह कुछ और ही था।
कबीर की आंखें खुल गईं। उसने ऊपर विशाल सर्जिकल लाइट की ओर देखा, फिर सर्जनों की ओर। "क्या... क्या सब ठीक है?"
एक सर्जन ने आँखें चौड़ी करते हुए सिर हिलाया। "हाँ... हाँ, सब ठीक है। लेकिन कैसे..."
"“एनोमली एक्स एक दर्पण है," मीरा ने आगे कहा। "और आज तुमने इसमें अपना सबसे शुद्ध प्रतिबिंब दिखाया—प्रेम का। निस्वार्थ। त्यागपूर्ण। और अब, वह प्रेम तुम्हारे पास लौट रहा है।"
आलोक अपने कमरे में अपनी कमजोरी को दूर होते हुए महसूस कर रहा था। वह बिस्तर से उठा और खिड़की के पास गया। बाहर रात हो चुकी थी और आसमान से चांद की रोशनी अंदर आ रही थी।
उन्होंने कहा, "मीरा शर्मा हमें ठीक कर रही हैं। अपनी अंतिम शक्ति से।"
"लेकिन क्यों?" रिया ने पूछा।
"क्योंकि हमने यह साबित कर दिया कि एनोमली एक्स का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता," मयंक ने कहा। "हमने यह दिखाया कि प्रेम भय से अधिक शक्तिशाली है।"
फिर आलोक को एक और धड़कन महसूस हुई—गहरी, कंपन करती हुई। गुफा से।
उन्होंने कहा, "कुछ और हो रहा है। चांसलर..."
'''

गुफा के अंदर, पत्थरों के ढेर के नीचे, चांसलर का शरीर अभी भी पड़ा हुआ था। एनोमली एक्स ने उसे पूरी तरह से निगल लिया था, लेकिन अब, मीरा की ऊर्जा के कारण, वह इकाई प्रतिक्रिया कर रही थी।

चांसलर का शरीर कांपने लगा। उनके भीतर मौजूद भय से पोषित होने वाली एनोमली एक्स अब एक नई ऊर्जा के संपर्क में आ रही थी—रुद्र और मायरा के प्रेम की ऊर्जा। और आलोक और रिया के पवित्र बंधन की ऊर्जा।

"घृणा से आपका विकास नहीं हो सकता," मीरा की आवाज़ सीधे चांसलर के दिमाग में गूंजी, जो कहीं न कहीं अभी भी जीवित था। "न ही भय से। न ही लोभ से। आपकी आत्मा अब इस शरीर को त्याग रही है।"

चांसलर का मुंह खुला, लेकिन कोई आवाज नहीं निकली। उनके शरीर से काला पदार्थ रिसने लगा, लेकिन इस बार वह हवा में घुल नहीं गया। इसके बजाय, वह चमकने लगा—एक सुनहरी, कोमल चमक।

और फिर, चांसलर का शरीर चूर-चूर होने लगा। हड्डियाँ, मांस, त्वचा—सब कुछ धूल में मिल गया। यह एक भयावह दृश्य था, फिर भी शांतिपूर्ण भी। मानो कोई पुरानी, टूटी हुई मूर्ति हवा में धूल में मिल रही हो।

कुछ ही मिनटों में चांसलर का शरीर पूरी तरह से धूल में बदल गया। और वह धूल हवा में घुलमिलकर गायब हो गई।

एनोमली एक्स का वह हिस्सा जो चांसलर से जुड़ा हुआ था, अब मुक्त हो गया था। और वह गुफा में मौजूद क्रिस्टलों में विलीन हो गया, और मीरा से जुड़ गया।

"अब मुझे शांति मिल गई है," मीरा की आवाज बहुत कमजोर होकर निकली। "संतुलन बहाल हो गया है।"

उसकी आंखें बंद हो गईं। क्रिस्टलों की चमक एक स्थिर, सौम्य प्रकाश में बदल गई, जिससे गुफा एक मंदिर जैसी लगने लगी।

'''

अस्पताल में रुद्र ने अपनी छाती से तारें निकाल दीं। एक नर्स ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन जब उसने देखा कि उसके घाव गायब हो गए हैं तो वह चुप हो गई।

"कैसे..." उसने फुसफुसाते हुए कहा।

रुद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। वह दरवाजे की ओर चल पड़ा। उसके कदम मजबूत थे।

उसका शरीर पूरी तरह से ठीक हो चुका था।
वह आलोक के कमरे में गया। आलोक, रिया और मयंक वहां मौजूद थे।
"रुद्र!" रिया ने कहा। "तुम ठीक हो?"
"हां," उसने कहा, और उसकी आवाज़ में एक नई शांति थी। "मैं ठीक हूँ।"
आलोक ने कहा, "मीरा शर्मा ने हमें बचाया। और उन्होंने चांसलर का काम तमाम कर दिया।"
रुद्र ने सिर हिलाया। "मुझे लगता है... मुझे लगता है कि मायरा ने भी हमें बचाया। अपने प्यार से।"
फिर कबीर दरवाजे पर प्रकट हुआ। अब उसके शरीर पर पट्टियाँ नहीं थीं। वह थोड़ा लड़खड़ा रहा था, लेकिन चल सकता था।
"तुम्हें बिस्तर पर होना चाहिए," मयंक ने कहा।
कबीर ने कहा, "बिस्तर पर पड़े रहने से ज़्यादा ज़रूरी काम है।" उसकी आँखों में एक नया दृढ़ संकल्प था। "हमें बृजेश की माँ के पास जाना होगा। उन्हें बताना होगा कि सब कुछ खत्म हो गया है।"
"और रोहित सिंह के परिवार को," रिया ने कहा।
"और हमें सच बोलना होगा," रुद्र ने कहा। "सभी को।"
"लेकिन क्या वे हम पर विश्वास करेंगे?" मयंक ने पूछा। "हमारी कहानी... अविश्वसनीय है।"
आलोक ने कहा, "हमारे पास सबूत हैं। मयंक की रिकॉर्डिंग। गुफा के अवशेष। और हमारे शरीर... हमारे शरीर ही प्रमाण हैं।"
"और हमारे पास एक-दूसरे का साथ है," रिया ने आलोक का हाथ पकड़ते हुए कहा।
उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। पाँच लोग, जो एक महीने पहले साधारण छात्र थे, अब एक ऐसे अनुभव से गुज़र चुके थे जिसने उन्हें हमेशा के लिए बदल दिया था। लेकिन उनका बंधन अब पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गया था।
दरवाजा खुला और एक पुलिस अधिकारी अंदर आया। "मैं इंस्पेक्टर वर्मा हूं। क्या मैं आप सभी से बात कर सकता हूं?"
"जी हां," रुद्र ने कहा। "हम आपको सब कुछ बता देंगे।"
"लेकिन पहले," इंस्पेक्टर ने कहा, "मुझे आपको यह देना होगा।"
उसने एक छोटा पैकेट निकाला। रुद्र ने उसे खोला। उसके अंदर पांच क्रिस्टल के टुकड़े

थे, जो हल्की रोशनी बिखेर रहे थे।
"यह क्या है?" रिया ने पूछा।
निरीक्षक ने कहा, "हमें ये गुफा के मलबे में मिले। ये... अजीब हैं। जब हम इन्हें एक साथ लाते हैं, तो ये चमकने लगते हैं। हमें लगा कि शायद आपको पता हो।"
आलोक ने एक क्रिस्टल उठाया। जैसे ही उसने उसे छुआ, उसे गर्माहट का एहसास हुआ। और एक छवि उभरी—मीरा शर्मा, मुस्कुराती हुई।
"ये उसकी याद है," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "मीरा शर्मा की। और... मायरा की भी।"
रुद्र ने एक क्रिस्टल उठाया। उसे छूते ही उसे मायरा की याद आ गई—कैफे में उनकी पहली मुलाकात, जब उसने उससे पूछा था कि क्या वह उसके साथ बैठ सकती है।
"हां," उसने आंखें बंद करते हुए कहा। "यह उसकी याद है।"
कबीर ने कहा, "हमें इन्हें सुरक्षित रखना चाहिए। स्मृति स्वरूप। उन सभी की याद में जिन्हें हमने खो दिया।"
"और उन सभी की याद में जो हमें मिले," रिया ने कहा।
इंस्पेक्टर वर्मा ने देखा और उनके चेहरे पर एक अजीब सी समझदारी झलक उठी।
"लगता है आप सबने बहुत कुछ झेला है। मेरे साथ आइए। हमें आपके बयान दर्ज करने हैं।"
वे उसके साथ चले गए। अस्पताल के गलियारे से गुजरते हुए रुद्र ने खिड़की से बाहर देखा। रात ढल रही थी और पूर्वी आकाश में भोर की पहली किरणें दिखाई दे रही थीं।
उन्होंने कहा, "सुबह होने वाली है।"
"हां," आलोक ने कहा। "एक नई शुरुआत।"
वे एक ऐसे कमरे में दाखिल हुए जहाँ एक मेज और कुछ कुर्सियाँ थीं। निरीक्षक ने वहाँ एक रिकॉर्डर रखा।
उन्होंने कहा, "अपनी कहानी शुरू करो। बिल्कुल शुरुआत से।"
रुद्र ने आलोक की ओर देखा, फिर कबीर, रिया और मयंक की ओर। सभी ने सिर हिलाया।
"यह सब बृजेश की मौत से शुरू हुआ," रुद्र ने कहना शुरू किया। "और एक गुफा जिसमें एक रहस्य छिपा था..."
और उसने सब कुछ बताना शुरू कर दिया। 2009 की घटना। एनोमली एक्स। डॉ.

मीरा शर्मा। चांसलर देवराज ठाकुर। दीन। मायरा। उनकी शक्तियां। अंतिम युद्ध।
निरीक्षक बिना किसी रुकावट के सुनता रहा। कभी-कभी वह रुककर स्पष्टीकरण मांगता था, लेकिन ज्यादातर वह बस सुनता ही रहता था।
रुद्र के बोलने के बाद कमरा एकदम शांत हो गया। इंस्पेक्टर ने रिकॉर्डर बंद कर दिया।
"यह... यह अविश्वसनीय है," उन्होंने कहा।
"हमें पता है," मयंक ने कहा। "लेकिन यह सच है।"
आलोक ने कहा, "और हमारे पास सबूत हैं।"
निरीक्षक ने सिर हिलाया। "मुझे विश्वास है कि आप सच कह रहे हैं। लेकिन यह कहानी... इसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता।"
"क्यों?" रिया ने पूछा।
निरीक्षक ने कहा, "क्योंकि दुनिया इसके लिए तैयार नहीं है। लोग डरेंगे। और डर... डर खतरनाक चीजों को जन्म देता है।"
कबीर ने कहा, "जैसे चांसलर ने किया था।"
"हाँ। तो हमें समझौता करना होगा। आप सभी आधिकारिक तौर पर नायक घोषित किए जाएँगे— जिन्होंने एक आतंकवादी समूह को रोका। चांसलर और उसके आदमी आतंकवादी थे। वह गुफा एक गुप्त प्रयोगशाला थी। बाकी सब... बाकी सब गोपनीय रहेगा।"
रुद्र ने सोचा। यह सही था। पूरा सच बताने से केवल भय और अराजकता ही फैलेगी।
"ठीक है," उसने कहा। "लेकिन हमारी एक शर्त है।"
"क्या?"
"हमें उन लोगों को श्रद्धांजलि देनी चाहिए जो मारे गए। बृजेश। रोहित सिंह। दीन। मायरा। और 2009 के पीड़ित। हमें एक स्मारक बनाना चाहिए।"
निरीक्षक ने सिर हिलाया। "यह हो जाएगा।"
"और गुफा," आलोक ने कहा। "गुफा को सीलबंद ही रखना होगा। इसे एक पवित्र स्थल के रूप में माना जाना चाहिए।"
"यह हो जाएगा," इंस्पेक्टर ने दोहराया।
वे कमरे से बाहर निकल गए। अस्पताल की लॉबी में एक टीवी पर समाचार चल रहा था। एंकर कह रहा था, "आतंकवादी समूह का भंडाफोड़ हुआ। छात्रों की बहादुरी..."
"उन्होंने कहानी पहले ही गढ़ ली है," मयंक ने कहा।

"हां," रुद्र ने कहा। "लेकिन हम सच्चाई जानते हैं।"
उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। और उसी क्षण उन्हें एहसास हुआ कि उनकी लड़ाई खत्म नहीं हुई थी। बस उसने एक नया रूप ले लिया था।
अब उन्हें जीना था। उन शक्तियों के साथ जो उन्होंने प्राप्त की थीं। उन यादों के साथ जो उन्होंने बनाई थीं। और उन हानियों के साथ जिन्हें वे कभी नहीं भूल पाएंगे।
लेकिन वे अकेले नहीं थे। वे साथ थे। और कभी-कभी, साथ होना ही सबसे बड़ा चमत्कार होता है।

अध्याय 33: एक नई सुबह, वही धड़कन

अस्पताल की लॉबी में लगे टीवी की आवाज़ कम कर दी गई थी, लेकिन स्क्रीन पर चल रही हेडलाइन अभी भी चमक रही थी— "छात्रों ने आतंकवादी साजिश को नाकाम किया।"
रुद्र ने कुछ सेकंड तक स्क्रीन को देखा, फिर नज़रें हटा लीं। "कहानी लिखी जा चुकी है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।
आलोक ने जवाब दिया, “हाँ... लेकिन सच्चाई हमारे भीतर ही है।” वे पाँचों एक पल के लिए वहीं खड़े रहे। वही लोग—जो एक महीने पहले असाइनमेंट, आंतरिक परीक्षाओं और कैंटीन की बहसों में उलझे हुए थे—अब एक अदृश्य बोझ ढो रहे थे। यह बोझ दर्द का नहीं... बल्कि ज़िम्मेदारी का था।
इंस्पेक्टर वर्मा आए और बोले, “आराम करो। सम्मान समारोह कल है। आप सभी को वहां उपस्थित रहना होगा।”
'सम्मान।'
यह शब्द अजीब लगा। क्योंकि उन्होंने जो हासिल किया था, वह किसी भी सम्मान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।
"एक माह बाद"
कॉलेज का सभागार खचाखच भरा हुआ था। कैमरे, फ्लैश, तालियाँ। मंच पर पाँच कुर्सियाँ रखी थीं। उनके पीछे एक बड़ा बैनर लगा था जिस पर लिखा था—“बहादुर छात्रों को सम्मानित करते हुए।”
मयंक ने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, "यह सब कुछ फिल्मी सा लग रहा है।" कबीर मुस्कुराया, "फिल्मों में लोग बच जाते हैं। यहाँ... लोग पीछे छूट गए।" रुद्र की निगाहें

भीड़ में किसी को ढूंढ रही थीं। और फिर उसने उसे देखा।
मायरा।
हल्के पीले रंग का सूट, खुले बाल, चेहरे पर वही शांति... लेकिन आंखों के नीचे थकान की हल्की लकीरें। मानो वह अभी भी अपनी मां की यादों से जूझ रही हो।
उनकी निगाहें मिलीं।
कोई शब्द नहीं है।
बस एक हल्की सी मुस्कान।
समारोह औपचारिक था। भाषण दिए गए। पदक वितरित किए गए। तस्वीरें खींची गईं।
लेकिन जैसे-जैसे भीड़ कम होने लगी, वे पांचों एक-दूसरे के करीब आ गए—मानो यह शोर उनका नहीं, बल्कि किसी और का हो।
रिया ने धीमी आवाज़ में कहा, "चलो यहाँ से चलते हैं। किसी शांत जगह पर चलते हैं।"
"वही पुराना कैफे"
वही मेज। वही कोना। वही दीवार जहां उन्होंने कभी हंसते हुए एक साथ तस्वीर खींची थी।
आज सन्नाटा छाया हुआ था।
वेटर ने उन्हें पहचान लिया। "आप लोग बहुत समय बाद यहां आए हैं।"
“हां,” आलोक ने कहा, “काफी समय से।”
कॉफ़ी आ गई। भाप उठी। और उसके साथ यादें भी। कबीर ने अपनी जेब से एक छोटा सा डिब्बा निकाला। उसमें वही क्रिस्टल के टुकड़े थे।
उन्होंने कहा, "मैं इन्हें हर दिन अपने साथ रखता हूं।"
रिया ने एक टुकड़ा उठाया। वह हल्का-हल्का चमकने लगा। "जब हम साथ होते हैं, तब ये ऐसे ही चमकते हैं," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "मीरा शर्मा," आलोक ने धीरे से कहा, "अभी भी हमारे साथ हैं।" कुछ देर तक वे बस बैठे रहे। कोई जल्दी नहीं, कोई मिशन नहीं। बस साँसें... और शांति।
“रुद्र और मायरा”
कैफे से निकलते हुए रुद्र ने मायरा का हाथ मजबूती से पकड़ रखा था।
शाम की हवा ठंडी थी, लेकिन उसकी हथेली उसके हाथ में गर्म थी—यह इस बात का

निरंतर स्मरण दिला रही थी कि वह यहाँ है, जीवित है, उसके बगल में है।
“क्या आप थेरेपी ले रहे हैं?” उसने धीरे से पूछा।
मायरा ने सिर हिलाया और उसकी उंगलियों को दबाया।
“हां। मां की यादें... और जो कुछ भी हुआ... मुझे उन सबके लिए अपने भीतर जगह बनानी होगी। लेकिन अब हालात बेहतर हो रहे हैं।”
रुद्र ने हल्की सी मुस्कान दी।
“मैं भी ट्रेनिंग कर रहा हूँ,” उसने उसकी ओर देखते हुए कहा। “आज जिम में एक डम्बल टूट गया। अभी भी इस ताकत को नियंत्रित करना सीख रहा हूँ।”
मायरा हंस पड़ी। वही पुरानी हंसी, लेकिन अब उसमें राहत का भाव था।
वे कॉलेज के पीछे स्थित छोटे से बगीचे में पहुँचे—वह बेंच जहाँ वे कभी घंटों बैठा करते थे।
रुद्र रुक गया। वह उसके सामने खड़ा हो गया, ढलते सूरज की रोशनी को रोकते हुए।
“मायरा...” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
उसने प्रश्न भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।
जेब से एक छोटी सी अंगूठी निकालते समय उसके हाथ हल्के से कांप रहे थे। एक साधारण सी अंगूठी, जिसमें एक छोटा सा क्रिस्टल का टुकड़ा जड़ा हुआ था।
वह घुटनों के बल बैठ गया।
किसी स्मृति के सामने नहीं, बल्कि उस महिला के सामने जिसने उसके पास वापस आने के लिए मृत्यु से लड़ाई लड़ी थी।
“हमने मौत देखी है। डर देखा है। झूठ देखा है। लेकिन एक बात हमेशा सच रही है... तुम्हारा प्यार। क्या तुम... मेरे जीवन की सच्चाई बनोगी? हमेशा के लिए?”
मायरा के चेहरे से आंसू बहने लगे। वह गायब नहीं हुई। वह हवा में विलीन नहीं हुई।
वह उसके बगल में घास पर घुटनों के बल बैठ गई और अपनी बाहों को उसकी गर्दन के चारों ओर लपेट लिया।
“हाँ,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी साँसें उसके कान पर गर्म लग रही थीं। “मैं पहले से ही हूँ।”
रुद्र ने उसे कसकर पकड़ लिया। वह ठोस थी। वह वास्तविक थी।
और यही एकमात्र सत्य था जो मायने रखता था।
"Alok and Riya"

रिया अपने लैपटॉप पर कुछ टाइप कर रही थी।
“क्या यह आपके चाचा का शोध है?” आलोक ने पूछा।
“हां। मैं इसे गुमनाम रूप से प्रकाशित कर रहा हूं। दुनिया को कम से कम सच्चाई का कुछ हिस्सा तो पता होना चाहिए।”
आलोक ने उसका हाथ पकड़ा। अचानक उसे एक दृश्य दिखाई दिया—रिया एक बच्ची के रूप में अपने चाचा के साथ खेतों में दौड़ रही थी और हंस रही थी।
“चलो वहाँ चलते हैं,” आलोक ने कहा।
"कहाँ?"
“उसे उसके गांव ले जाओ। तुम्हें इस मामले को खत्म करने की जरूरत है।”
रिया मुस्कुराई और सिर हिलाया। "और आप?"
“मुझे तुम्हारी जरूरत है,” उसने जवाब दिया।
वे बाद में उस गाँव में गए। नदी किनारे बैठ गए। रिया ने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसने कहा, "अब अच्छा लग रहा है।"
आलोक को इसका एहसास हुआ—अकेलेपन से जुड़ी उसकी अपनी यादें अब धुंधली पड़ने लगी थीं।
"मयंक की वापसी"
सामने का दरवाजा खुला था। उसकी माँ उसके सामने खड़ी थी। “तुम इतने दिनों से कहाँ थे?” उसकी आवाज़ में शिकायत से ज़्यादा चिंता थी।
मयंक कुछ बोल नहीं सका। उसने बस उसे गले लगा लिया।
कई वर्षों में पहली बार वह रोया।
उसके पिता ने उसके कंधे पर हाथ रखा। "सब ठीक है?"
“अब समय आ गया है,” मयंक ने कहा।
उस रात, वह अपने कमरे में बैठा और अपना लैपटॉप खोला... फिर उसे बंद कर दिया। आज उसे किसी स्क्रीन की ज़रूरत नहीं थी। उसे बस घर की ज़रूरत थी।
"कबीर का फैसला"
एक खाली हॉल। दीवारों पर ताज़ा पेंट की महक। बीच में एक पंचिंग बैग।
कबीर ने एक बोर्ड टांग दिया—
"“Brijesh’s Den”"
झुग्गी-झोपड़ियों से कुछ बच्चे अंदर आए।

"भाई, क्या हमें यहाँ प्रशिक्षण मिलेगा?"
कबीर मुस्कुराया। "हाँ। मुफ़्त में।"
उसने सोचा—बृजेश भी यही चाहता होगा। शाम को रुद्र वहाँ आया। वे चुपचाप बैठे रहे। कबीर ने कहा, “हमने बहुत कुछ खो दिया।”
“हां,” रुद्र ने उत्तर दिया, “लेकिन हमने खुद को पा लिया।”
"स्मारक"
कॉलेज के पास एक छोटा सा स्मारक बनाया गया था। उस पर नाम खुदे हुए थे—बृजेश, रोहित सिंह, डीन, 2009 के पीड़ित। पांचों उसके सामने खड़े थे। हवा थम सी गई थी।
रिया ने एक फूल रखा।
आलोक ने अपनी आंखें बंद कर लीं।
मायरा ने गहरी सांस ली।
मयंक ने मौन भाव से अपना सिर झुका लिया।
कबीर ने अपनी मुट्ठी भींच ली।
रुद्र ने उन सभी को देखा।
उन्होंने कहा, "अब शांति है।"
"अंतिम दृश्य"
वही कैफे। वही टेबल।
हंसी की आवाज गूंज उठी।
वेटर ने पूछा, "आप सब आज बहुत खुश लग रहे हैं।" आलोक ने जवाब दिया, "हां... आज सचमुच बहुत खुश हैं।"
उनकी कलाई पर सजे क्रिस्टल के कंगन हल्की रोशनी बिखेर रहे थे। उन पाँचों ने अपने हाथ मेज पर एक साथ रख दिए। क्रिस्टल की रोशनी थोड़ी और तेज हो गई।
किसी ने कुछ नहीं कहा।
रुद्र ने उन सभी को देखा।
मायरा उसके बगल में थी।
रिया ने आलोक का हाथ पकड़ लिया।
कबीर मुस्कुरा रहा था।
मयंक को शांति का अनुभव हो रहा था।

रुद्र ने धीमी आवाज़ में कहा—
“यह मामला तो बंद हो चुका है... लेकिन हमारी कहानी? यह तो अभी शुरू ही हुई है।”

समर्पण

जो लोग रुके रहे उनके लिए।
जो लोग चले गए उनके लिए।
और मेरे उन हिस्सों के लिए जो इन दोनों से बच गए।

पावती

मेरे आस-पास के लोगों के मौन समर्थन, ईमानदार बातचीत और अदृश्य प्रोत्साहन के बिना यह पुस्तक अस्तित्व में नहीं आ पाती।
इस कार्य को पूरा करने में जितना समय लगा, उस दौरान मेरे परिवार और मित्रों के धैर्य, विश्वास और समझ के लिए मैं उनका तहे दिल से आभारी हूँ। आपकी उपस्थिति मेरे लिए बहुत मायने रखती थी।
मुझे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित करने वाले सभी लोगों को धन्यवाद।
और पाठकों को, इस कहानी को अपना समय और ध्यान देने के लिए धन्यवाद।
— आशीष सिंह नायल

लेखक का नोट

इस पुस्तक की शुरुआत एक विचार के रूप में हुई और धीरे-धीरे यह एक बहुत ही व्यक्तिगत अनुभव में तब्दील हो गई। इसे लिखते समय मैंने पाया कि कहानियाँ अक्सर उन सच्चाइयों को उजागर करती हैं जिन्हें हम अनजाने में अपने भीतर समेटे हुए होते हैं।
मुझे उम्मीद है कि इन पन्नों में कहीं न कहीं आपको कोई ऐसा पल मिला होगा जो आपके साथ रह गया हो, कोई ऐसा विचार जो आपके मन में बस गया हो, या कोई ऐसी भावना जो आपको जानी-पहचानी सी लगी हो।
पढ़ने के लिए आपका शुक्रिया।
— आशीष सिंह नायल